

श्रीमते निम्बार्काय नमः ॥

अथ अमरकोष भाषा ॥



अर्थात्

अमररघुनाथकल्पद्रुम

(दोहा) श्री श्री श्री निम्बारक जगजाहिर यशवन्त ॥ गुरु घनश्याम मनायकै गावत चतुरासन्त १ भजमन श्रीसर्वेश्वर राधाकृष्ण दयाल ॥ परशुराम परसादते पाञ्जित गोपाल २ (सोरठा) श्रीराधावर सोय मुदमंगल मीन्द्र ॥श ॥ चतुरदास जगजोय जोयलिया जगदीश ३१ (१ दोहा) श्रीगुरु सन्तमहन्त पद करके कोटि प्रणाम ॥ अरजकरूं करजोरके ग्रन्थ मनोरथ काम ४ अमरकोष भाषारच्यो चतुरा हिय धरनेम ॥ निम्बारक निर्मलपद पायो पूरण प्रेम ५ बन्दौं शेश महेश अज सुरपति गिरा गणेश ॥ सर्वदेव रक्षाकरें चतुराबालक वेश ६ (अथ संवत्विक्रमी) चन्द्र ग्रह अरु वेद त्रय शुक्ल त्रय जान ॥ चतुरदास भाषा रच्यो अमरकोष

परमान ७ (अथ भूमिकावर्णन) जम्बूद्वीप सुहावनो भारतखण्ड अनूप ॥ देशमालवा पश्चिम पुरी अवन्ती रूप ८ उज्जनते षट योजन रत्नपुरी रतलाम ॥ श्रीमहराजधिराजका श्रीरणजीतहि नाम ९ सूर्यपोलके निकट में है प्यारे ममधाम ॥ रामगंग माता पिता बन्धू श्रीघनश्याम १० अवलेटा आनन्दपुर महाराज रघुनाथ ॥ धर्म्मधुरन्धर धर्म्ममय दिनकर से विख्याथ ११ (अथ अमरकोष की महिमा) अमर अमर वर्णन कियो अमरहोय देखन्त ॥ विद्यारूपी गुप्तधन पायो चतुरासन्त १२ अमर अमर की खानिहैं नामरूप जहँरत्न ॥ ढूंढ़तहैं कोइ जौहरी उरधारे कर यत्न १३ सागररूपी अमरहैं नाम नीर गम्भीर ॥ जे भीतर आनन्दहै मुक्ता कांचकथीर १४ अमरकोष अमरापुर नाम रूप जहँ देव ॥ दिव्यदृष्टिसे देखलो करो अमरकी सेव १५ मानसरोवर अमरहैं पढ़े सो हंसा जान ॥ सो जाने सब अर्थको चतुरदास परमान १६ अमर अमर अमरेश नृप रच्यो संसकृतमाय॥ताकोलेभाषाकियो चतुरदासगुणगा[illegible] अमरकोषकेपढ़े बिन अर्थ न पायेएक ॥ चतुर[illegible] कहें निश्चय करके देख १८ सम्पूरण ब्रह्माण्ड [illegible] नाम बिस्तार ॥ पढ़त पण्डिता पण्डिता पावे [illegible]रंजनहार १९ आपपढ़नको ये रच्यो अमरकोष आनन्द ॥ चतुरदास मम नामहै सुमिरों श्रीगोविन्द २० नाममात्र वर्णन करूं पठन करहु धरध्यान ॥ पावो पूरणनामपद चतुरदास आसान २१ चतुर नाम कल्पद्रुम स्वर्गवर्ग परमान ॥ चतुरदास वर्णन करे सुमिरौ श्रीभगवान २२

(अथ स्वर्गके नाम) स्व त्रिदिव त्रिदशालय नाक स्वर्ग सुरलोक ॥ त्रैविष्टप द्यो द्यौ कहे बसें देवतज शोक २३ (अथ श्रीदेवताओं के नाम) अमर देव त्रिदशा विबुध निर्ज्जर सुर त्रिदिवेश ॥ सुमन सुपर्व्वा दिविसत आदित्तेय सुरेश २४ अदितीनन्दन दीवका आदित्य लेख गिरबान ॥ ऋभु अस्वप्नक्रतुभुक देवत देवता जान २५ दानवारि वृन्दारक अमृतानधह जान ॥ बर्हिर्म्मुख असरर्त्यये चतुरा किया बखान २६ (अथ गणदेवताओंके नाम) आदित्य विश्व वसु तूषित आभा सुर सतसाध्य ॥ अनिलरुद्र महराजिक पूर्व्वदेव सुर आध्य २७ (अथ देवजातियोंकेनाम) यक्षरक्ष विद्याधर किन्नरनाम पिशाच ॥ गन्धर्व्व अप्सरा जानिये गुहक सिद्ध भूताच २८ (अथ दैत्योंकेनाम) असुरदैत्य दानव दनुज इन्द्रारी दितिसूत ॥ शुक्र शिष्य दैतेय बल सुर द्रोही अदभूत २९ (अथ बुद्धके नाम) सर्व्वज्ञ सुगत बुध जानिये धर्म्मराज भगवान ॥ समन्तभद्र जित तथागत मारजित लोकजितान ३० अद्ववादि दशबलसुनी षडभिज्ञोये मुनीन्द्र ॥ विनायक शास्ता श्रीघन चतुराकहे दुलीन्द्र ३१ (अथ शाक्यसिंहकेनाम) शाक्यमुनी अरु शाक्यसिंह हैं सर्वारथ सिद्ध ॥ अर्कवन्ध्य सौदोदनी मासुत गोतम ऋद्ध ३२ (अथ ब्रह्माजीकेनाम) ब्रह्म आतमभू स्वयंभू परमेष्ठी सुरज्येष्ठ ॥ हिरण्यगर्भ लोकेश येपितामहा अजश्रेष्ठ ३३ प्रजापती चतुरानन कमलासन धातार ॥ अब्जयोनि अरु द्रुहिणो सदानन्द करतार ३४ वेधीविधाता विश्वसृट्कमलनाभ औविरञ्च ॥ नाभी जन्मा-

ण्डज षिधी रजोमूर्ति कमलश्च ३५ कमलोद्भव पुरवोनिध अगम निगम निर्वान ॥ सत्यकोहंसा वाहन चतुरमुखा परमान ३६ (अथ श्रीविष्णुनारायण के नाम) कृष्ण विष्णु नारायण दामोदर हृषिकेश ॥ वैकुंठो विष्टरस्रवा केशव माधव रमेश ३७ दैत्यारी गरुड़ध्वज पुण्डरीक गोविन्द ॥ स्वभु अच्युत पीताम्बर शार्ङ्गी शिरी मुकुन्द ३८ विष्वक्सेन जनार्दनः उपिन्द्र इन्द्रवर जान ॥ चक्र पाणि श्रीचतुरभुज पद्मनाभ भगवान ३९ बासुदेव त्रैविक्रम मधुरिपु देवकिनन्द ॥ शौरी श्रीपति श्रीधर पुरुषोत्तम आनन्द ४० कंसाराति अधोक्षज वनमाली विश्वेश ॥ विश्वरूप विश्वंभर कैटभजित विधु वेश ४१ पुराणपुरुष यज्ञहि पुरुष नरकान्तक जगईश ॥ जलशायी मुरमर्दन लोकनाथ जगदीश ४२ मुरलीधर मोहन हरिगिरिधर श्रीगोपाल ॥ शिरीवत्सलाञ्छन प्रभु चतुरा दीनदयाल ४३ सर्वेश्वर सर्वोमही जपजग जाहिर जीव ॥ अष्ट पहर चौंसठ घड़ी चतुरा जपले पीव ४४ (अथ श्रीवसुदेव के नाम—चौपाई) आन[illegible] दुन्दुभीह गुणवन्ता ॥ वसूदेव चातुरबलवन्ता ४५ (अ[illegible] बलभद्रजीकेनाम—दोहा) बलभद्रो बलदेव बल रेवतिरमणा राम ॥ प्रलम्बघ्न अच्युताग्रज कामपाल आराम ४६ हलायुधरु नीलाम्बर रोहिणेयतालांक ॥ हल मूशल संकर्षण कालिंदि भेदन सांक ४७ सीरपाणि भी इन्हींका नामहै (अथ श्रीकामदेवकेनाम) विश्वकेतु मिनकेतन मदनो मनमथ मार ॥ कन्दर्प दर्प अनंग प्रे काम पञ्चशर सार ४८ प्रद्युमन स्मर ब्रह्मसू

रतिपति मनसिज मान ॥ मकरध्वज सू आत्मभू अनन्य पुष्प धनवान ४९ शम्बरारि नाम भी कामदेवका है ॥ (अथ श्रीअनिरुद्धकेनाम) परम मनोहर रूपमें अनिरुध हरिका नन्द॥ऊषापति चातुर भजो पूरण परमानन्द ५० (अथ श्रीलक्ष्मीके नाम) लक्ष्मी श्री पद्मालया पद्मा कमला मात ॥ लोकमात मा इन्दिरा सिंधुसुता विख्यात ५१ क्षिरोदतनय हरिकीप्रिया रमा भार्गवो जान॥ लोकजननि जगतारनी चतुरदास परमान ५२ (अथ श्रीविष्णु नारायण के पास जो वस्तु हैं उन्हों के नाम–चौपाई) विष्णु तीरका शंखसुजाना ॥ पंचजन्य करधरे नराना ५३ चक्रसुदरशन उनका भाई॥ पद्मकमल करधेर कन्हाई ५४ कौमोदकी गदा करनामा ॥ खड्गनन्दका उनकर धामा ५५ मणि उनकी कौस्तुभ जगजाहर ॥ है श्रीवत्स चिह्न छातीपर ५६ विष्णु धनुष शारंग सुजाना ॥ चतुरदास जन करे बखाना ५७ (अथ विष्णुके घोड़े के नाम–दोहा) शैव्य नाम सुग्रीव मेष पुष्प बलवान ॥ बलाहक्क चातुर कहे चारनाम हैचान ५८ (अथ विष्णु के सारथाकी नाम) दारुक्क मन्त्री उद्धव विष्णु सारथी जान ॥ हरिका हाथी बनिज है चतुरदास जियठान ५९ (अथ श्रीगरुड़ के नाम) गरुत्मान गरुड़ सुपर्ण पन्नगाशना जान॥ नागन्तकरु खगेश्वर विष्णुरथा परमान ६० सुवरणपंख वैनतेय बलतारक्ष त्रयलोक ॥ चतुरदास वन्दनकरे भवभय भंजन शोक ६१ (अथ श्रीमहादेवके नाम) शम्भु ईश पशुपति शिव शुली महेश्वर खण्ड ॥ ईश्वर सर्व ईशान

हर शंकर गिरिसो मृण्ड ६२ भूतेशखण्ड परशु धुर्जटी
मृत्युञ्जय कृत्तिवास ॥ चन्द्रशेखर प्रमथाधिप पिनाकीह
परकास ६३ उग्र कपर्दि कपालभृत् श्रीकंठा सितिकंठ ॥
बामदेव महदेव ये विरूपाक्ष निलकंठ ६४ त्रैलोचन
सर्वज्ञ अज कृशानुरेता जान ॥ नीलोहित अरु स्मरहर
त्र्यम्बक भर्ग प्रमान ६५ व्योमकेश त्रिपुरान्तक अनंग
रिपु भवभीम ॥ उमापती गंगाधर क्रतुध्वंसी जनधीम
६६ स्थाणु वृषध्वजहै सदा रुद्ररूप महराज ॥ कैलासी
जन चतुरका सुनत सुधारे काज ६७ (अथ जो वस्तु शिव
के पासहैं उनके नाम—चौपाई) शिवकी जटा कपर्दक
जानो ॥ शिवका धनुष पिनाक पिछानो ६८ और नाम
अजगव दरशाई ॥ प्रथम पारषद शिवके भाई ६९ (अथ
ब्रह्मादि शक्तीके नाम)(दोहा) बाराही वैष्णविसदा अरु
ब्राम्ही कौमारि ॥ इन्द्राणी चामुण्डका माहेश्वरि हियधा
रि ७० (अथ ऐश्वर्य्य का नाम) विभूतिभूती ऐश्वरय
तीन नाम त्रयलोक ॥ चतुरभेद दूजानहीं हिरदे धरिये
रोक ७१ ॥ (अथ अष्टसिद्धी के नाम) अणिमा महिमा
गरिमता लघिमा प्राप्ति प्रकाम्य ॥ वशीकरण अरु ई[illegible]
ता अष्टसिद्धि ये दाम्य ७२ (अथ श्रीपार्व्वती के नाम)
उमा गौरि कात्यायनी काली हैमवति येह ॥ शिवाभवा-
नी चण्डिका अम्बा अपरण तेह ७३ रुद्राणी शर्वाणि
सत सब मंगलकी खान ॥ दुर्गा पारवति ईश्वरी मृडा-
नीक अर्य्यान ७४ दाक्षायणि पुनि गिरिसुता मेनकात्म
गिरिजान ॥ जै शंकर अर्द्धंगिनी चतुराकरे बखान ७५
(अथ श्रीगणेशजी के नाम) विघ्नराज औ विनायक

द्वैमातुर गणधीप ॥ एकदन्त लम्बोदर हेरंब गजानन दीप ७६ (अथ स्वामिकार्त्तिक के नाम) महासेन कार्त्तिक सत शरजन्मारु स्कन्द ॥ पारवति नन्द षडानन सेनानी गुह छन्द ७७ तारकजित शिखिवाहन अग्नीभू बहुलेय ॥ क्रौञ्चविदारण शक्तिधर कूमारू विशखेह ७८ षाण्मातुर भी इन्हीं का नाम है (अथ श्री नन्दीश्वर के नाम) शृङ्गी भृङ्गी नन्दिक नन्दिकेश्वर जान ॥ तुण्डी रिटि हरवाहन न्हाद्यो लौकिक मान ७९ (अथ इन्द्र के नाम) इन्द्र पुरन्दर हरिहय मरुत्वान् मघवान ॥ विडौजपाकशासन सदा वृद्धश्रवा ऋभुक्षान ८० सुनासीर जिष्णु पुरुहूत लेखर्षभ अरु शक्र ॥ दिवस्पति शतमन्यु वृषा सुत्रामा सरवक्र ८१ वास्तोष्पति वज्री वसव गोत्राभित वृत्रहान ॥ सुरपति शचिपति नाम ये बलाराति सतजान ८२ जंभेदी सुरहाटनन मुचिसूदन बलवन्त ॥ शक्रदनो दुश्चावन तुराषाट गुणवन्त ८३ मेघावाहन जानिये सहस्राक्ष सुरनाथ ॥ चतुरदास श्री कंदन कर सुरपतिका साथ ८४ (अथ इन्द्राणी व इन्द्रपुरी नाम चौपाई) पुलोमजा शचि इन्द्राणी सत ॥ इन्द्रपुरी अमरावति श्रीमत ८५ (अथ इन्द्रकेपास जो वस्तु है उसके नाम) उच्चैश्रवा इन्द्रका घोड़ा ॥ मातलिनाम सारथी जोड़ा ८६ इन्द्रबाग नन्दनवन जानो ॥ वैजयन्त गहवर जनमानो ८७ इन्द्रपुत्र चातुर गुणवन्ता ॥ पाकशासनी नाम जयंता ८८ (इन्द्रके हाथीका नाम—दोहा) ऐरावत अहरावण अभ्रमुवल्लभनाम ॥ गजरु अभ्रमातंग ये श्रीसुरपतिकी धाम ८९ (अथ इन्द्र के वज्रका

नाम) वज्र कुलिश शतकोट पवि भिदुर ह्रदानी जान ॥
स्वरू शम्ब दम्भोलिका अशनी चतुरामान ९० (अथ
विमान औ सुर ऋषि देवसभा और अमृतके नाम—चौ-
पाई) व्योमयान शिविमान बखाना ॥ ऋषिनारद
सुरपति ने ठाना ९१ सुधर्म्मा देवसभा सतनामा ॥
पियूष सुधा अमृत सुरधामा ९२ (अथ स्वर्गगङ्गा के
नाम) मन्दाकिनि वियदगङ्गा माई ॥ सुरदिर्घा स्वर्नदी
सुहाई ९३ (अथ सुमेरुपर्वत का नाम—दोहा) मेरु सु-
मेरु सुरालय रत्नसानु हेमाद्र ॥ पंचनाम सुम्मेरु के
चतुरा वरणे आद्र ९४ (अथ देववृक्षों के नाम) पारि-
जात मन्दारक कल्पवृक्ष सन्तान ॥ हरिचन्दन चातुर
कहे मिले भाग्य परमान ९५ (अथ सनत्कुमारके नाम-
चौपाई) वैधाता अरु सनत्कुमार ॥ आदि ऋषिन का
नाम उचार ९६ (अथ अश्विनीकुमार के नाम—दोहा)
अश्विनी सुत स्ववैंद्यहै दस्र रु आश्विनजान ॥ आश्विने-
य नासत्यहै चतुराकेरे बखान९७ (अथ अप्सराके नाम)
स्वर्वैश्या अरु अप्सरा बहुत नाम इनकेर ॥ मेनकरंभा
उर्व्वशी घृता सुकेशी हेर ९८ (चौपाई) तिलोत्त
अरु मञ्जूघोष ॥ ये नवनाम दिखाये कोष ९९ (ग-
न्धर्वों के नाम) हाहा हूहूनाम दोहूजन ॥ गन्धर्वों के
नाम सुनो मन १०० (अग्नि के नाम—दोहा) वैश्वानर
औ धनञ्जय वह्नि अग्नि वीतिहोत्र ॥ तनुनपात ज्वालन
सदा जातवेद जगजोत्र १०१ अनल कृशानू पावक द-
नुज शुक्र शुचि नाम ॥ कृपटियोनि अरु शुष्मा बर्हि
शेखावन दाम १०२ आश्रयाश बृहभानुका कृष्णवर्तमा

जान ॥ शोचिष्केश सप्तार्च्चिहि उषर्बुधा भवभान १०३ रोहिताश्व वायूसखा आशु शुक्षणीमात ॥ हिरण्यरेत हव्यवाहन विभावसू जनजात १०४ चित्रभानु अप्पित्तहा हुतभुक दहन प्रमान ॥ जय जगतारन तरनकी अग्नी एक प्रधान १०५ (वड़वानलके नाम—चौपाई) और्व्व नाम वड़वानल वाड़व ॥ चतुरदास सतकहै सो मानव १०६ (अग्निकीज्वालाके नाम) ज्वालशिखा अर्च्ची बलवन्ता ॥ कील हेति ज्वाला यशवन्ता १०७ (अग्नि की चिनगारिनके नाम) स्फुलिङ्ग अग्नीकण सन्त ॥ चिनगारिनके नाम अनन्त १०८ (जलनकेनाम) सन्तापरु संज्वर जल मान ॥ अग्नीजल चातुर जगजान १०९ (यमराजके नाम—दोहा) धर्म्मराज पितृहपती समवर्ती यम काल। यमुनाभ्राता दण्डधर श्राद्धदेव प्रेतपाल ११० परेतराट् औ अन्तक कृतान्त पुनि यमराड़ ॥ वैवस्वत औ शमन सत बड़े जक्त यमधाड़ १११ (राक्षसोंकेनाम—चौपाई) कोणप राक्षस अस्रप क्रव्याद॥ रात्रिंचर यातुधान राक्षाद ११२ पुण्यजन्न असुर निकषात्म करबुर ॥ यातुनैर्ऋत रजनीचर बलपुर ११३ (वरुण के नाम—दोहा) वरुण प्रचेता अप्पती यादसाम्पति जान ॥ पंचम पाशी नाम ये चतुर कियो परमान ११४ (पवन के नाम) श्वसन स्पर्शन वायु बल मातरिश्व पवमान ॥ गन्धवाह सत सदागति पृषदश्वा अशुगान ११५ अनिल समीर समीरण मारुत मरुत विख्यात ॥ जक्त प्राण नभस्वान वत पवन प्रभञ्जन वात ११६ गन्धवह भी नाम पवनकाहै (आंधी

का नाम–छन्द) प्रकम्पनभाई ॥ चतुर सिखाई ११७ (वर्षाकी आंधीका नाम–चौपाई) झंझावात अरु वर्षा माई ॥ वायूप्राण हृदयबिचगाई ११८ वायूगुदा अपान सयाना ॥ वायू नाभीचलै समाना ११९ वायू कण्ठ उदानसमाई ॥ सर्व शरीर व्यान बतलाई १२० (वेग के नाम) स्पद नाम तर जव रय जान ॥ रंह वेग चातुर परमान १२१ (शीघ्रताकेनाम) क्षिप्र क्षुत्र अरु सत्वर जान ॥ शीघ्र लघू चातुर जन मान १२२ अविलम्बित तूरण असुन्नात ॥ तव ऋतु नाम चपलता ठान १२३ (नित्य के नाम–दोहा) सन्तत सत्त अनारत अविरत अनिश अवित्य ॥ अनवरतरु अश्रान्त ये अजस्र नाम हैं नित्य १२४ (वारंवारकेनाम) अतिशय अतिबल अत्यरथ अतिमात्ररु भर भृंश ॥ गाढ़ बाढ़ उद्गाढ़ दृढ़ नितान्त एकान्ततिंदश १२५ (कुबेरके नाम) त्र्यम्बकसख गुह्यकेश्वर यक्षराट कुबेर ॥ धनद धनाधिप वैश्रवण मनु सधर्म्म सत सेर १२६ किन्नरेश पौलस्त्य ये राजराज श्रीद जान ॥ पुण्यजनेश्वर ऐलबिल नरवाहन परमान १२७ (कुबेरकी वस्तुओं के नाम—चौपाई) बाग चैत्ररथ जनकुबेरका ॥ नलकूबर सुतजान मेरका १२८ इनका देशनाम कैलास ॥ अलकापुर निजग्राम निवासा १२९ पुष्पकनाम विमानबखाना ॥ चतुरदास सुमिरो भगवाना १३० (किन्नरोंकेनाम–दोहा) किम्पुरुष किन्नर बली तुरंगवदन मयुराज ॥ चतुर नाम चातुर कहे बाल पढ़नके काज १३१ (निधियों के नाम चौपाई) निधि शेवधि ये सुनो सयाना ॥ निधियों भेद

कह्यो परमाना १३२ (निधियोंकेभेद—दोहा) महापद्म अरु पद्म ये शंख मकर औ मुकुंद ॥ खर्व नील कच्छप कहे नवमान्नाम सोकुंद १३३ (कविरुवाच) रामदास सुत चतुरने रच्यो ग्रंथ विस्तार ॥ स्वर्ग वर्ग पूरण भयो अमरकोष अनुसार १३४ ॥

इति श्रीजम्बूद्वीपेभरतखंडेमालवदेशेअवंतिकामहाक्षेत्रेरतलामनगरे वैष्णवहरिव्यासोनिम्बार्कमतानुयायीमहन्तश्रीरामाजीनन्द चतुरदासविरचितेग्रन्थश्रीअमररघुनाथकल्पद्रुमकोशेस्वर्ग वर्गवर्णनोनामप्रथमोऽध्यायः १ ॥

अथ श्रीव्योमवर्गप्रारंभः ॥

(दोहा) सर्वलोक सर्वेश्वर छायरह्यो सरबंग ॥ विश्व नाथ सर्वेश को शरण सकल गुण गंग १ (आकाशके नाम) द्यो द्यौ अम्बर पुष्कर व्योम अभ्र आकास ॥ नभ अनन्त सुरवर्त्मा वियत विहाय विहास २ अन्त-रिक्ष विष्णुपद नाकरु गगन ख जान ॥ धूमिलके चातुर गुणी अद्भुत आदि बेवान ३ व्योम वर्ग पूरण भयो शुभमुहूर्त के साथ ॥ रामदाससुत चतुरने गायो यादवनाथ ४ ॥

इति श्रीजम्बूद्वीपेभरतखंडेमालवदेशेअवंतीमहाक्षेत्रेरतलामनगरे वैष्णवहरिव्यासोनिम्बार्कमतानुयायीमहन्तश्रीरामाजीनन्द चतुरदासविरचितेग्रन्थश्रीअमररघुनाथकल्पद्रुमकोशेव्यो मवर्गवर्णनोनामद्वितीयोऽध्यायः २ ॥

अथ दिग्वर्गप्रारंभः ॥

(दोहा) श्रीमुकुंदब्रजचंदको बन्दअन्धमतिमन्द ॥ चतुरदासदिलसेरटै सुनश्रीआनँदकन्द १ (दिशाओं के

नाम) आदिदिशा वर्णन करै चतुरदास धर ध्यान ॥ दिक आशा काष्ठा हरित ककुभ पांच परमान २ (चारों दिशाओं के नाम) प्राची सो पूरब दिशा अवाचीदक्षिण देश ॥ प्रतीची पश्चिम जानिये उदीची उत्तरभेश ३ (दिशोत्पन्न वस्तुकेनाम) दक्षिणदिशि उत्पन्नभइ अवाचीनयहनाम ॥ उत्तरमेंउत्पन्नभइ उदीचीनगुणधाम ४ प्रतीचीन पश्चिमहुई पूरबभइप्राचीन ॥ चतुरदासरचनारची अमरकोष परबीन ५ (पूर्वादि दिगीशों के नाम) पूरबका इन्दरपती अग्नि अग्निही कोन ॥ दक्षिण में यमराजहैं नैऋतनैऋतमोन ६ पश्चिम में श्रीवरुणजी बायब पवन अनूप ॥ उत्तर बीच कुबेरजी ईश ईशान स्वरूप ७ (पूर्वादि दिशाओं के दिग्गजों के नाम) पूरब में ऐरावत अग्निकोण पुण्डरीक ॥ दक्षिण वामननाम ये नैऋत कुमुदा दीक ८ पश्चिम अंजन अतिबली पुष्पदंत बायब्ब ॥ सार्व्वभौम उत्तरदिशासुप्रतिईशानब्ब ९ (दिग्गजोंकी स्त्रियों के नाम) अभ्रसु पूरबकी प्रिया कपिला अग्नीकोन ॥ पिंगला दक्षिण देश में अनुपम नैऋतजोन १० ताम्रकर्णि पश्चिम त्रिया शुभ्रदन्ती ये बयान ॥ उत्तरअंगना जानिये अंजनवति ईशान ११ (कोणोंकेनाम—छंद) विदिकमान ॥ अप दिशाठान १२ (बीचकेनाम—चौपाई) अंतरालअभ्यंतरगाया ॥ बिचकेनाम चतुरदरशाया १३ (घेरोंकेनाम) चक्रवाल मण्डल परमानी ॥ चतुरदास गावेनिरबानी १४ (बादरों के नाम—दोहा) अभ्र मेघ वारिवाह धाराधरजलमूक ॥ स्तनयित्नु बलाहक जलधर घन

भवसूक १५ तड़ित्वान अरु अम्बुभृत वारिद जिमुत मुदीर ॥ धूमयोनि चातुर कहे इनसे बरसत नीर १६ (मेघपंक्तिन के नाम) मेघमाल कादम्बिनी वस्तुमेघ उतपन्न ॥ एकनाम अभ्रियअहै अतिउपजाऊ अन्न १७ (गर्ज्जने के नाम) स्तनि गर्ज्जित रसितहै घहरावे घनघोर ॥ घननन जनचातुरकहे दादुर करत किलोर १८ (बिजली के नाम) तड़ित सुदामिनि विद्युत चपलाशम्प सुजान ॥ ऐरावति अरु चञ्चला ह्लदा निह्लदरशान १९ क्षणप्रभा अरु शतह्लदा बिजुलीनाम प्रवीन ॥ चतुरदास दरशै तभी जब जल चढ़ै नवीन २० (वज्रके शब्द का नाम) नामवज्र निर्घोषये स्फूर्जथु परमान ॥ वज्र शब्दकेनामदो चतुरा रचे सुजान २१ (वज्रकीअग्निकेनाम) मेघज्योति अरु इरम्मद वज्र अग्निके नाम ॥ चतुरदास चातुर कहे बसअपने निज ग्राम २२ (इन्द्रधनुषकेनाम—चौपाई) ऋजु रोहित धनुषा करनामा ॥ इंद्रायुध चातुर गुणग्रामा २३ शक्र धनू धजवंत बखाना ॥ इंद्रधनुष के नाम प्रमाना २४ (वर्षाकेनाम) वृष्टी वर्षा बर्खा मान ॥ नाम तीनचातुर पहिंचान २५ (झरीकेनाम) अवग्राह अवग्रह गुणवंत॥ झरी नाम चातुर जन संत २६ (निरंतर मेघधाराके नाम) धारा सम्पातक आसार ॥ नाममेघधाराविस्तार २७ (फुहाराकेनाम) शीकरफुहारा नामसुजान ॥ चतुरकही जन निश्चैठान २८ (आकाशसेगिरेहुयेपत्थ-रोंकेनाम) वर्षोपल करका यहजानो ॥ ओलागड़ागार पहिंचानो २९ (गझपनाकेनाम—दोहा) अन्तरधाम्रा-

च्छादन तिरोधान अपिधान॥ अन्तरद्धि अपधारण व्या-
वधान पीधान ३० (चन्द्रमाकेनाम) चन्द्रचन्द्रमाश-
शिधर कुमुदबांधवासोम॥ इन्दुहिमांशुनिशापति ओस
धार विधु जोम ३१ जैवातृक ग्लौ क्षपाकर अब्ज कला-
निधिजान॥ नक्षत्रेश द्विजराजे ये शुभ्रांशू सुखदान३२
(चौपाई) मृगांक सुधांशू नाम पियारा॥ चन्द्रनाम
चातुर बिस्तारा ३३ (चन्द्र १६ कला) (चन्द्रमण्डल
केनाम—छन्द) मण्डल बिम्ब॥ चातुरइम्ब ३४ (खंड
के नाम—चौपाई) अर्द्ध खण्ड भित सकल सराई॥
चतुरदास चातुर दरशाई ३५ (समभाग के नाम—
छन्द) अर्द्धमगाया॥ चतुरलिखाया ३६ (उज्यरियाके
नाम—चौपाई) नाम कौमुदी ज्योत्स्ना सता॥ अरु चंद्रि-
का तिसरिये मता ३७ (निर्म्मलताकेनाम) प्रसन्नताहै
निर्म्मल नाम॥ चतुरदास गावो सिय राम ३८ (चिह्न
के नाम—दोहा) कलंक लक्षण लाञ्छन अंक चिह्न है
मान॥ लक्षम जन चातुर कहै समझलेहु गुणवान ३९
(अतिशोभाकेनाम) सुषमा शोभा द्युति छवी कांती
ये परवीन॥ चतुरदास हरि हाथहै शोभा सब गुण
दीन ४० (पालाकेनाम) तुहिन तुषार निहार हिम
अवश्याय मिहिकान॥ चतुरदास प्रालेय इक पालाका
परमान ४१ (महापालाकेनाम—चौपाई) हिम संहति
हीमानी जानो॥ महापालके नाम बखानो ४२ (जूड़
केनाम—दोहा) हिम तुषार शीतल शीत जड़शिशिरस
तमान॥ सुखीम रूपचातुरकहै भज भयभंजन भान ४३
(ध्रुवकेनाम—चौपाई) औत्तानपादिध्रुवकेशुभनाउ॥

सबतारनके नाम दिखाउ ४४ (अगस्त्यकेनाम) कुंभ संभवनाम अगस्ता ॥ मित्रावरुणी चतुरामस्ता ४५ (अगस्त्य की स्त्री के नाम) लोपामुद्रा अमर बताई ॥ चतुरदासने भाषा गाई ४६ (नक्षत्रोंकेनाम) तारा तारक ऋक्षभमान ॥ उडुनामा नक्षत्रहि जान ४७ (अश्विन्यादिकेनाम) दाक्षायणी नामइकभाई ॥ अश्वि-न्या द्वितियादरशाई ४८ (अश्विनीकेनाम) अश्वयुक अश्विनिनामसुजाना ॥ अश्विनिनाम दोय जगठाना४९ (विशाखा के नाम) राधा और विशाखा जानो ॥ नाम विशाखा के दोउमानो ५० (पुष्यकेनाम) शिष्या सि-ध्य पुष्य परबीन ॥ पुष्यनाम त्रिय चातुर चीन ५१ (धनिष्ठाकेनाम) निष्ठश्रविष्ठा नामपुकारे ॥ नामधनि-ष्ठाके विस्तारे ५२ (पूर्वाभाद्रपद उत्तराभाद्रपद के नाम) भाद्रपदा अरु प्रोष्ठपदाये ॥ दोऊनाम सकल मनभाये ५३ (मृगशिर के नाम) आग्रहायणी मृगशिर मानो ॥ मृगशीर्षक त्रय नाम पिछानो ५४ (मृगशिर के मस्तकपर रहने वाले नक्षत्रोंकेनाम) इल्वलनाम शी-शपररेवे ॥ चतुरा चेतचेत गुणकेवे ५५ (बृहस्पति के नाम–दोहा) गुरु धिषण गीष्पति यही वाचस्पति जिव जान ॥ सुराचार्य्य हैं बृहस्पति आंगिरस चित्रशिखान ५६ (शुक्रकेनाम) शुक्र दैत्य गुरु काव्य कवि उशना नामउचार ॥ भार्गव जन चातुर कहै शुक्रनाम विस्तार ५७ (मंगलकेनाम) भौम अंगारक महिसुत लोहितांग अरु कुंज ॥ मंगलग्रहके नामये चतुरागावे पुंज ५८ (बुधकेनाम–चौपाई) रोहिणेश अरु सौम्य सुजाना ॥

बुद्धदेव त्रयनाम बखाना ५९ (शनिकेनाम) सौरि शनिश्चर छायानन्द ॥ तीननाम सुमिरो आनन्द ६० (राहुकेनाम) स्वर्भानू विधुन्तुदतमराहू ॥ सैंहिकेय ये नाम प्रभाहू ६१ (सप्तऋषिनकेनाम) पुलह पुलस्त्य अंगिरा अत्री ॥ क्रतु वाशिष्ठ मरीची सत्री ६२ सप्त ऋषिनका नाम सुजाना ॥ चित्रशिखंडी सब जगमाना ६३ (राशिउदयका नाम) राशीउदय नाम ये लग्न ॥ चतुरदास गावे जनमग्न ६४ (राशियोंके नाम—दोहा) मेष वृषभ मिथुनेश कर्क सिंह कन्या परमान ॥ तुल वृश्चिक धन मकरजन कुम्भ मीन पहिंचान ६५ (सूर्य के नाम—दोहा) सूर्य सूर रवि भास्कर दिनकर देव द्यास ॥ अरुण अर्यमा ग्रहपति लोकबन्धु सवितास ६६ द्वादश आत्म अहरुकर ब्रध्न प्रभाकर दंड ॥ आदित्य विभाकर मित्र ये मारतंड महिमंड ६७ उष्णरश्मि पुष दिनमणी अर्क दिवाकर भानु ॥ विवस्वान त्विषाम्पति भासवान त्रियतानु ६८ कर्म्मसाक्षि जगचक्षु ये अंशुमालि खद्योत ॥ अब्जिनिपति पिंगल भग मिहिरि अरुण जगजोत ६९ चित्रभानु ये विरोचन विभावसू सप्ताश्व ॥ लोकबान्धव धामनिधि प्रद्योतन हरिदाश्व ७० विकर्तन इन तपन ये अहर्पती प्रभु हंस ॥ सहस्रांशु अरु द्युमणि चतुरदास भजअंस ७१ (सूर्यपाश्र्ववार्त्तियों के नाम—चौपाई) माठर पिंगल दण्ड कहावे ॥ सूर्यपास चातुर दरशावे ७२ (सूर्य केसारथी के नाम) अरुण काश्यपि गरुड़ाग्रज ॥ अनुर नाम सुरसूत ये व्रज ७३ (सूर्य के मण्डल अर्थात् जो कभी कभी उनके चारों ओर घेरासा

बनजाता है उसके नाम) परीवेष उपसूर्यकजान ॥ परिधी नाम तीन परमान ७४ (सूर्यकिरण के नाम-दोहा) किरण उस्र अंशू मयुख गभस्ति घृणि भानु ॥ घृष्णि कर मरीचि ये दीधिति सब जगजानु ७५ (दीप्तिकेनाम) भाभा छवि द्युति रुचि रुक शोचि प्रभा प्रभाह ॥ द्युति दीप्ती अरु त्विद यहै चतुरदास चितचाह ७६ (अथ घामकेनाम-चौपाई) आतप द्योत प्रकाश प्रवीना ॥ घाम नाम चातुर जगचीना ७७ (गुन्सत अर्थात् थोड़ेगर्म के नाम) कोष्ण कवोष्ण कटुष्णाक जान ॥ मन्दोष्णक चातुर जगमान ७८ (बहुत गर्मके नाम) तीक्षण तिग्म नाम खर जान ॥ बहुत गर्मकेनाम प्रमान ७९ (दोपहर की झलझलाटके नाम) मरीचिका मृगतृष्णामित ॥ चतुरदास गुण कथे निचिंत ८० दिग्ग वर्ग्ग पूरण भयो निम्बारक परताप ॥ रामदास चातुर कहे मिट्यो सकल संताप ८१ ॥

इति श्री जम्बूद्वीपेभारतखण्डेमालवदेशेअवन्तिकामहाक्षेत्रेरतलामनगरे वैष्णव हरिव्यासी श्रीमन्निम्बार्कमतानुयायी महन्तश्रीरामाजीनन्दचतुरदासविरचिते भाषाग्रंथश्रीअमररघुनाथकल्पद्रुमदिग्वर्गवर्णनोनामतृतीयोऽध्यायः ३ ॥

अथ श्रीकालवर्ग्ग प्रारंभ ॥

(दोहा) श्रीगुरुदेव दिवाकर निम्बारक भगवान ॥ चतुरदास वन्दनकरे पूरण प्रेम पिछान १ (समयके नाम-चौपाई) समय कालदृष्टी यह मानो ॥ नाम अनेहा चातुर ठानो २ (परीवाकेनाम) पक्षति प्रतिपत् परिवानाम ॥ चतुरदास गावत गुणधाम ३ (प्रतिपदादिकोंकेनाम-छन्द) तिथिनामजान ॥ चातुर सुठान ४

(दिनके नाम–चौपाई) वासर दिवस अहः दिन जान॥ घस्र नाम चातुर पहिंचान ५ (प्रातःकालकेनाम) उ-षःकल्य प्रत्यूष कहावे॥ अहर्म्मुख उठ हरीहर गावे ६ (सन्ध्याके नाम) सन्ध्या सायम शामये दिनान्त॥ पि-तृप्रसू सुमिरो श्रीकान्त ७ (प्रातःसन्ध्याका नाम—छन्द) प्राह्णनाम॥ प्रातधाम ८ (मध्याह्न सन्ध्या के नाम) मध्याह्न एक॥ यह नाम पेख ९ (सायंसंध्याका नाम) अपराह्ण चीन॥ सन्ध्या येतीन १० (इनतीन सन्ध्याके नाम) त्रिसन्ध्या सत॥ चतुराये मत ११ (रा-त्रिकेनाम–दोहा) निशा शर्वरी तम तमा रजनी रजनि क्षपान॥ रात्री क्षणदा यामिनी तमी त्रियामा जान १२ (चौपाई) निशिथिनी नाम तमस्विनी बखान॥ विभा-वरी रात्री निरबान १३ (अन्धियारी उजियारी रात्रीके नाम–दोहा) अँधियारी को नाम ये सुनो तमिस्रा मि-न्त॥ ज्योत्स्नी उजियारी का चतुरारव्ये निचिन्त १४ (वर्त्तमान दिन रात्रिका नाम–छंद) पक्षिणी जान॥ चातुर बखान १५ (बहुत रात्रियों के नाम) गुणरात्रि सत॥ चतुरा ये मत १६ (रात्रिके प्रथमभागके नाम–चौपाई) रजनीमुख परदोष कहावे॥ प्रथम भाग ये च-तुरागावे १७ (अर्द्धरात्रिके नाम) अर्द्धरात्र निशिथोम प्रवीना॥ चतुरदास गावे जगचीना १८ (पहरके नाम) यामपहरकेनाम दिखाये॥ अमरकोषमें जेते गाये १९ (प्रतिपत्पंचदशी के योगका नाम) पर्व परब सन्धी यह जान॥ पंचदशी पूरण पहिंचान २० (अमावास्या और पूर्णमासी के नाम–दोहा) अमावास्य पूनमतिथि

पंचदशी पक्षान्त ॥ पूर्णमासी ये पूर्णिमा पूनम नाम सोतांत २१ (कलाहीन पूर्णिमाके नाम–चौपाई) कलाहीन पूनम को भाई ॥ नाम अनुमती जग दरशाई २२ (कलासहित पूर्णिमाका नाम) कलासहित का राका नाम ॥ चतुरदास भज श्यामाश्याम २३ (अमावास्या के नाम–दोहा) अमावास्या ये अमावसी दर्शअमावास्यान ॥ अमावासी अरु अमामसी अमामासी आमान २४ सूर्येन्दुसंगम भी अमावस का नामहै (चतुर्दशीके दिनकी अमावास्याका नाम–चौपाई) चतुर्दशीके दिन की भाई ॥ सिनीवाली यह नाम सिखाई २५ (पराअमावास्याके नाम) कुहूनाम कुहु दोऊजान ॥ पराअमावास्या पहिंचान २६ (ग्रहणों के नाम–दोहा) सोपप्लव उपरक्त ग्रह उपराग नाम ग्रहणेश ॥ अग्न्युत्पात उपाहित धूमकेतु यह देश २७ (सूर्य्य चन्द्र के एकत्र रहने का नाम–चौपाई) नाम पुष्पवन्तौ पहिंचान ॥ सूर्य चन्द्र एकत्रहि ठान २८ (पलकका नाम दोहा) प्रथम नाम यह निमेष है निमेष अष्ट दश काष्ट ॥ तीसकाष्टते कलायक तीसकला क्षण पाष्ट २९ द्वादशक्षण मुहूर्त्तयक मुहूर्त्ततीस अहोरात्र ॥ पंचदश अहोरात्रसे पक्षहोय परमात्र ३० शुक्लकृष्ण दो पक्षहैं मक्षनामहै मास ॥ दोय मास को नाम ऋतु ऋतु त्रय अयन सुदास ३१ अयन होय दक्षिणायन उत्तरायन परमान ॥ दोयअयन का नाम थे संवत्सर यकजान ३२ एक पलसेले संवत्सर का प्रमाणपूरण (तुला मेष संक्राति के नाम–चौपाई) विषुवतविषुव नामसंक्रांत ॥ चतुरदास सुमिरो श्रीकान्त

३३ (अगहन के नाम) मार्गशीर्षसहाःमार्गये ॥ आग्रहायणिकनाम अगहनये ३४ (पौषके नाम) पौषतैष त्रिश्रंगानाम ॥ सहस्यपूस अति प्यारोधाम ३५ (माघ के नाम) तपाःमाघ माहवलवन्त ॥ प्रागमकर जब न्हावे सन्त ३६ (फाल्गुन के नाम) फाल्गुन तपस्य फाल्गुनी मान ॥ फागुन मस्त फाग हिये ठान ३७ (चैत्र के नाम) चैत्रचैत्रिक अरु मधुमास ॥ चैत चेत भज चातुरदास ३८ (वैशाखके नाम) राधनाम माधव वैशाख ॥ चतुरनाम रसअमृतचाख ३९ (ज्येष्ठके नाम) ज्येष्ठ शुक्ल अरु जेठबखान ॥ चतुरदास गावो भगवान ४० (आषाढ़के नाम) शुचि अषाढ़ के नाम पुनीता ॥ अरु आषाढ़ कहत रसरीता ४१ (सावनके नाम) नभानाम श्रावण श्रावणिक ॥ सावनगिरे मेघ घन कणिक ४२ (भादौंके नाम) भादौं भाद्व भाद्र प्रौष्ठपद ॥ नभस्यनाम जानोभाद्रपद ४३ (क्वारके नाम) आश्वयुज आश्विन आसौज ॥ कुवार इषपावे जगमौज ४४ (कार्त्तिक के नाम) कार्त्तिकिककार्तिकपुनिऊर्ज्ज ॥ बहुल कहे जानो जग सूर्ज्ज ४५ (अगहन पूसकी ऋतुके नाम) अगहन पूस नाम हेमन्त ॥ चतुरदास गुणगावत सन्त ४६ (माघ फाल्गुनकी ऋतुका नाम) माघ फाल्गुन शिशिर कहावे ॥ फगुवाफेल मानवीगावे ४७ (चैत्रवैशाख की ऋतुके नाम) पुष्प समय सुरभीह वसन्त ॥ चैतमास वैशाख सुसन्त ४८ (ज्येष्ठआषाढ़की ऋतुकानाम) ज्येष्ठ आषाढ़ नाम ग्रीष्महै ॥ चतुरदास दासनको गमहै ४९ ऊष्मक ऊष्ण ऊष्णागम तप ॥ ऊष्णोपगम निदाघ सो

नृप ५० (श्रावण भादौंकी ऋतुका नाम) प्रावृट्वर्षा नाम कहावे ॥ श्रावणमास भादवेंगावे ५१ (क्वारकार्त्तिककी ऋतुके नाम) कुवार मासऋतु कार्त्तिक जान॥ नाम शरद रमते भगवान ५२ (वर्षके नाम--दोहा) संवत्सर वत्सर शरत अब्दसमाहायन्न ॥ वर्ष नाम चातुरकहे धरकरनीका मन्न ५३ (मनुष्य देवता मन्वन्तरों के प्रमाण) एक रात्रिदिन मनुष्यको सोहिंपित्रन करमान ॥ एकवर्ष नरलोकको देवराति दिनजान ५४ सहस्र चतुर्य्युग देवका ब्रह्माकी दिनरात ॥ कल्प एक ताको कहे चतुरदास विख्यात ५५ (देवताओं के ३६० दिन रात्रि का नाम) त्रयसौ साठ दिन देवके दिव्यवर्ष यक होय ॥ ऐसे द्वादश सहसका चतुर्युग नरकाजोय ५६ (दिव्यवर्ष एक मन्वन्तरका नाम) दिव्यवर्ष इकहोतर गयेमन्वन्तर एक ॥ बड़ावर्ष हरिका अरु सो नहिं बरने देख ५७ (प्रलयका नाम–चौपाई) प्रलयकल्प कल्पान्त बखानो ॥ क्षयसंवर्त नाम पहिंचानो ५८ (पाप के नाम–दोहा) किल्बिष कल्मष कलुष अहपंकपाप पहिंचान ॥ दुष्कृत दुरित एनअघ वृजिनपाप्माजान५९ (धर्मके नाम–चौपाई) धर्म्म पुण्यश्रेय सुकृत भाई ॥ वृषकरो जन चतुरागाई ६० (हर्षके नाम–दोहा) हर्ष प्रमोद अमोद सुख अमदप्रीति आनन्द ॥ शर्मसम्मद मुतशातये आनन्द श्रूसानन्द ६१ (कल्याण के नाम) स्वश्रेयस शिवभद्रशुभ भाविक भावुक भव्य ॥ कुशल क्षेम कल्याणपद मंगल शस्तसअव्य ६२ (अच्छे के नाम) मतल्लिकातल्लज उद्घमचर्चिकासो प्रकांड ॥ अ-

चक्रके यह नामहैं चतुरदास ब्रह्मांड ६३ (शुभदके नाम-चौपाई) शुभद्रनाम एक अय जानो ॥ चतुरदास निश्चै करमानो ६४ (भाग्य के नाम) दैव दिष्ट नियति विधि भाग्य ॥ भागधेय नाम नरवाग्य ६५ (कारणके नाम) कारणबीज हेतु पहिंचान ॥ तीननाम कारणके मान ६६ (आदिकारणके नाम—छन्द) नाम निदान ॥ चातुर मान ६७ (चैतन्य पुरुष के नाम—चौपाई) आत्मा पुरुष नाम चैतन्य ॥ क्षेत्रज्ञ चातुर जनमन्य ६८ (प्राकृतिके नाम) प्राकृति नाम नाम परधान ॥ नाम प्रधान तीसराठान ६९ (उम्रका नाम—छन्द) उम्मरका दाम ॥ अवस्था नाम ७० (गुणके नाम—चौपाई) सत रज तम त्रय नाम बखाने ॥ चतुरदास ये कोष प्रमाने ७१ (जन्मके नाम) जन्म जनि उत्पति जनु जनन ॥ उद्भव नाममान गुनगुनन ७२ (प्राणीकेनाम) प्राणी जन्तु जन्मी जनु ॥ चेतन नाम शरीरी मनु ७३ (जातिमात्रके नाम) सामान्य नाम जाति अरु जात ॥ जातिमात्र त्रय नाम विख्यात ७४ (व्यक्ति वाचकके नाम) पृथगात्मताय व्यक्ति नाम ॥ व्यक्ति वाचक दोनुहिं दाम ७५ (चित्तके नाम) मन मानस हृदय चित्तचेत ॥ स्वांत हृत नाम नरसेत ७६ (दोहा) रामदासके बालने रच्यो अमर आनन्द ॥ चतुरदास मननामहैं सायकरो गोविन्द ७७ जय जय गुरु निम्बारक जयजय सन्त महन्त ॥ काल वर्ग पूरणभयो गायो चतुरा सन्त ७८ ॥

इति श्रीजम्बूद्वीपेभारतखंडेमालवदेशेअवन्तीमहाक्षेत्रेरतलामनगरेवैष्णवहरिव्यासी श्रीमन्निम्बार्कमतानुयायीमहन्तश्रीरामाजी चतुरदासविरचितग्रन्थ श्रीअमर रघुनाथ कल्पद्रुमचतुर्थोकालवर्गवर्णनोनामचतुर्थोऽध्यायः ४ ॥

अथ श्री धीवर्ग प्रारंभ ॥

(दोहा) मोरमुकुटकर बांसुरी नटवर नन्दकिशोर ॥ चतुरदासके हृदयमें तुमबिनरहै न और १) जयजयजय जगदीशकी जय जगतारण हार ॥ चतुरदास जयजय करे जय ब्रज करन विहार २ (अथ बुद्धिके नाम—चौपाई) बुद्धीमनिषाधिषणा धीह ॥ प्रेक्षामति चितउपलब्धीह ॥ प्रतिपत् शेमुषी संवित मान ॥ ज्ञाति प्रज्ञा चतुराजान ३ चेतना भी याका नामहै (धारणावती बुद्धिके नाम) धारणावती बुद्धि का नाम ॥ मेधाकहै सकल गुणग्राम ४ (मनके कामका नाम) मनके काम कामके नाम ॥ संकल्प सुर्पीजन कहते राम ५ (चित्त की पूर्णताके नाम) चिन्ताभोग मनस्कारन हैं ॥ नाम भजोजगयशतारनहै ६ (विचारकेनाम) नामसङ्ख्याअ-र्थोमान ॥ येविचारके नामसुजान ७ (अपूर्व विचारके नाम) अध्याहार तर्क दोनाम ॥ चतुरदासगावेसियरा-म ८ (संशयके नाम) विचिकित्सा संशय संदेहा ॥ द्वापुरनाम चतुरतायेहा ९ (निश्चयकेनाम) निश्चय निर्णय नाम सुजान ॥ चतुरदास दरशे दरशान १० (परलोक मिथ्या समझनेकेनाम) मिथ्यादृष्टि नास्ति-कतामन ॥ चतुरदास समभयो जग में जन ११ (पर-द्रोहके नाम) द्रोहचिन्तन व्यापाद कहावे ॥ परद्रोही दरशन नहिंपावे १२ (सिद्ध होने के नाम) सिद्धान्ता राद्धान्ता सिद्ध ॥ चतुरदासदेवे हरिऋद्ध १३ (भ्रमके नाम) मिथ्यामति भ्रांति भ्रम जान ॥ इनको छांड़भजो भगवान १४ (अङ्गीकार के नाम—दोहा) आश्रव आगू

संश्रव संव्विद नियमनरचीन ॥ अंगीकार प्रतिश्रव सदा प्रतिज्ञान समाधीबीन १५ अभ्युपगमभी समाधि कोनाम ॥ (मोक्षमें बुद्धि लगानेका नाम—छन्द) ग्यान ज्ञान थे ॥ नामजानये १६ (मोक्षसे बाहर बुद्धि लगानेका नाम) विज्ञान मान ॥ चातुर सुजान १७ (मोक्षके नाम—दोहा) मोक्ष मुक्ति कैवल्य श्रेय अमृत अरु निरबान ॥ निश्श्रेयश अपवर्ग ये चतुरदासजनजान १८ (अज्ञानकेनाम—चौपाई) अहम्मति अज्ञान अविद्या ॥ चतुरदास जानोजन विद्या १९ (पञ्च विषयोंके नाम) रूपरस अरु शब्द सुगन्ध ॥ स्पर्श नाम चातुर जन वन्द २० (इन्द्रियकेनाम) नाम इन्द्रिय पुनि हृषीकी ॥ विषय तीनजानो जन वाकी २१ (कर्म इन्द्रियोंके नाम) गुदा लिंग हस्त अरु पाद । वाणीनाम पांच मरयाद ॥ २२ (ज्ञानइन्द्रियोंके नाम) मन कर्म नेत्र त्वचा जन जान ॥ जिह्वा नाम नासिका मान २३ (कसैला रसके नाम) तुवर कषाय नाम हरन्यादी ॥ कृष्ण कृष्णगुण गाव अनादी २४ (अन्य रसोंकेनाम—दोहा) मधुरजलादिकजानिये सैंधवादिलवणादि ॥ कटुनिम्बादिक जानिये मरिचादिक तिक्तादि २५ अम्लादिक अम्लसोही षटरसनाम सुजान ॥ भवजीवोंके कारणे रचे आदि भगवान २६ (बकुलपुष्प गन्धके नाम—चौपाई) परिमूल पुष्पगन्धी पहिंचान ॥ बकुल नाम जाहर जनठान २७ (कस्तूरीगन्धिका नाम) कस्तूरी आमोद कहावे ॥ जन आनन्दअधिकदरशावे २८ (दूरहिसे जिसकी गन्धि-आवे उसकेनाम) नाम समाकर्षी निरहारी ॥ उड़े सुग-

न्ध दूरसे भारी २९ (उत्तम गन्धि केनाम) घ्राणा तर्पण सुरभी मिन्त॥ इष्ट गन्ध जानो जग सन्त ३० (कर्पूर ताम्बूलादि मुखशोधक गन्धिके नाम) आमोदी मुख-बासन भाई॥ मुखशोधकके नाम दिखाई ३१ (दुर्गन्धि के नाम) पूतिगन्धिका नाम दुर्ग्गन्धी॥ दुगन्धी ये देखो अन्धी ३२ (कच्चेमांसादिक गन्धके नाम) कच्चामांस गन्धिका नाम॥ विस्रंनाम जाने जगदाम ३३ (उज्ज्व-लकेनाम—दोहा) शुक्ल शुभ्र शुचि श्वेतहै विशद श्वेतप-ण्डुर॥ गौर सितहि अवदातहै अवलक्ष धवल यहनूर ३४ अर्ज्जुन हरिण पाण्डुरहै पाण्डूषोडशनाम॥ उज्ज्वलका परमानये चतुरदास रटश्याम ३५ (किंचित् उज्ज्वलका नाम—छंद) धूसरः एक॥ चतुरादेख ३६ (कालेके नाम—दोहा) कृष्णनील श्यामल यह असित श्याम अरु काल॥ मेचक जन चातुरकहै भजलो दीनदयाल ३७ (पीलेके नाम—चौपाई) पीत गोर पीलाकेनाम॥ हरिद्राभ जानो जन दाम ३८ (अथ हराकेनाम) हरितु हरित नाम पालास॥ हरेहरा गावे जनदास ३९ (लालकेनाम) लोहितरोहित रक्तलाल॥ चतुरा सुमिरो दीनदयाल ४० (लालकमलसम रंगकेनाम) लाल कमल समरंगसुजा-न॥ शोण नाम सुमिरो भगवान ४१ (थोड़े लालका नाम—छंद) करुणाएक॥ लालहिपेख ४२ (उज्ज्वल लालकानाम) पाटलआल॥ उज्ज्वललाल ४३ (धूमिले लालरंग के नाम—चौपाई) श्याव कपिस लालधुमेला॥ चतुरदासदे सब को हेला ४४ (कालेमिलित रक्तवर्णके नाम) धूमिल धूम्रनाम ये दोउ॥ लालरक्तमिल बनता

सोउ ४५ (कइरे रङ्गकेनाम–दोहा) पिशङ्ग पिङ्ग पिङ्गल यह कापिलकडु पहिंचान ॥ कड़ार नामचातुरकहे सुमिरो श्रीभगवान ४६ (चित्र वर्ण अर्थात् किरमजीकेनाम) शबल एककर्ब्बुरहै कल्माष करयाद ॥ किर्म्मीर अरु चित्रक रच्यो गुरूपरसाद ४७ रामदास का दासहूं राम दासको खास ॥ सम्पूरण धीवर्ग्ग ये रचिया चातुर दास ४८ ॥

इति श्रीजम्बूद्वीपेभारतखंडेमालवदेशेअवन्तिकामहाक्षेत्रेरतलामनगरेवैष्णव हरिव्यासीश्रीनिम्बार्कमतानुयायीमहन्तश्रीरामाजीनंदचतुरदास विरचितेग्रंथश्रीअमररघुनाथकल्पद्रुमप्रथमकाण्डे धीवर्ग्गवर्णनोनामपंचमोऽध्यायः ५ ॥

अथ श्रीशब्दादिकवर्ग्ग ॥

(दोहा) हरिहरबिधिपदपूजके चतुरदासगुणगाय ॥ शब्दवर्ग्ग वर्णन करूं श्रीगुरुआज्ञापाय १ (श्रीसरस्वतीकेनाम) वाणीवाक्य सरस्वती भाषत वचनरसाल ॥ गिरा भारती लपित गी उक्ती भाषाबाल २ ब्राह्मी अरु हंसासन वच पुनिनाम ब्याहार ॥ देहुदान विद्यामम चतुरारटे मुरार ३ (अथ भ्रष्ट अर्थात् बिगरेहुये शब्दके नाम–छन्द) अपभ्रंश नाम ॥ अतिभ्रष्टदाम ४ (व्याकरण शास्त्रानुसारशुद्ध शब्दकानाम) एकशब्दनाम ॥ व्याकरण दाम ५ (तिङन्त सुबन्तक बटोरेकानाम) वाक्यःबटोर ॥ नाम निहोर ६ (कारकान्वित क्रियाका विकल्प करके नाम) वाक्यही जानो ॥ चतुराठानो ७ (वेदके नाम–दोहा) वेद श्रुति पुनि त्रय कहे आम्नाय आनन्द ॥ चतुरदास वंदन करै जैजै गोकुलचंद ८ (वेदोंकी वि-

धिका नाम--छंद) धर्म्य कहावे ॥ विधि यह गावे ९ (वेदोंकेनाम--चौपाई) ऋकयजुसाम नाम वेदोंका ॥ हैत्रयनाम चतुर भेदों का १०(वेदों के ६ अंग हैं उन्हीं के नाम) शिक्षा कल्प सुनो व्याकरण । ज्योतिषांग तीजानोवरण ॥ छन्दोविच्छितिनामनिरुक्त । चतुर-दास जाने जगमुक्त ११ (ओंकारकेनाम) ओंकार प्रणव नामसुजान ॥ चतुरकहेनिश्चयकरठान १२ (इतिहास केनाम)पुरावृत्त इतिहास कहावे ॥ चतुरदास गोविंद को गावे १३(उदात्तअनुदात्त स्वरितकेनाम)स्वरितनामस्वर सुनोसुजाना॥चतुरदास वरणतगुणनाना १४(तर्कविद्या केनाम) अन्वेक्षिकी तर्क बलवंता ॥ तर्कनामयेचातुर सन्ता १५ (अर्थात् शास्त्रकेनाम—छन्द) दंडनीति ये ॥ नामरीतिये १६ (अनुभवकेनाम--चौपाई) आख्यायिक उपलब्धार्था मन ॥ भक्ति भाव चावोरे जनतन १७ (ये लक्षण जिसमेंहों उसका नाम पुराण है—दोहा) स्वर्ग्ग प्रतिसर्ग्ग रु वंशवर मन्वन्तर कथा सुजान ॥ वंशानु चरित जाके विषे सो पुराण पहिंचान १८ (बड़े वाक्यकीरचनाके नाम--चौपाई) कथाहा वाक्य बड़ा पहिंचानो ॥ श्रोता वक्ता निश्चयठानो १९ (जिस के श्रवण से अन्य अर्त्थ विदित हो उसका नाम) सुनो सुनावो सतकर भाई ॥ सकल अर्त्थ चातुर दरशाई २० अर्त्थ विदित श्रवणन ते होवे ॥ प्रवह्लिका प्रहेलिका ये दोउ जोवे २१ (धर्मबोधार्थ श्लोकों के नाम) धर्म बधावे स्मृतिभाई ॥ चतुरदास सुमिरो रघुराई (अथ संग्रह के नाम) समाहती संग्रह करदेखो ॥ संग्रह शब्द

अर्थकर लेखो २२ (जिसमें कुछ पूराकियाहो उसका नाम-छंद) समस्या जानो । निश्चयठानो ॥ (दुर्यशका नाम-चौ०)किंवदंती सतजन श्रुतिमान ॥ दुर्यशनामच तुरजनजान२३ (समाचारके नाम) प्रवृत्ति वृत्तांत वार्त्ता मित॥ चतुरउदंत नाम जनसंत २४(नामकेनाम)आशा अतिघन आवय जन ॥ धामधोय नाम जानो मन २५ (पुकारनेकेनाम) हूतिहाकारण नामअहवाना॥तीननाम चातुर पहिंचाना २६ (बहुत जनोंके पुकारनेका नाम) वांसुखनामनाम उपन्यास ॥ चतुरदास जनकरतप्रकास २७ (होनहारयोग्य वर्णनके नाम) उदाहार पुनि उपोद्घात ये ॥ होनहारकी जान जातये २८ (सौगंद खानेका नाम) शपन शपथ शोगन जगजानो ॥ सोगनखाननाम पहिंचानो २९ (प्रश्नकेनाम) पृच्छा प्रश्न करोजननीका॥अनुयोग जानोजनजीका ३० (उत्तरकेनाम) उत्तर अरु प्रतिवाक्यबखाने ॥ पण्डित ज्वाबदेत परवाने ३१ (झूठलगाने के नाम) आदिनाम मिथ्याभियोगये ॥ अभ्याख्यान जानो जियोग ये ३२ (मदिरादिपान किसीको लगाने केनाम) अभिशाप मिथ्याभिशंसन ॥ नामदोय जानोंगुणवंसन ३३ (अनुरागजशब्दकानाम-छंद) प्रणाद ॥ अगाद ३४ (कीर्त्ति के नाम-चौपाई) समज्ञा अरु कीरति परवीन ॥ कीर्त्तिनाम चातुर जग चीन ३५ (स्तुति केनाम) नुति स्तव स्तुति स्तोत्र ॥ चतुरदास जैजेहिके गोत्र ३६ (दो तीन बेर कहने का नाम-छंद) आम्रेड़ित ये॥ चतुरानितये ३७(जोरसेपठनके नाम-चौपाई) उच्चैर्घुष्ट जोरसे पठन ॥ चतुरदास

गोविंद का रटन ३८ (शोकभयकामादि युक्त वचन के नाम) नामशोक भयकाजन काकू ॥ चतुर किया भाषा अमराकू ३९ (निन्दा के नाम—दोहा) अपवाद नाम उपक्रोश है परीवाद परिवाद ॥ निन्दा कुत्साग-र्हणा जुगुप्साद निर्वाद ४० (चौपाई) अवर्ण नाम आक्षेप कहावे ॥ चतुरदास गुणवन्ता गावे ४१ (निष्ठु-रभाषण के नाम) निष्ठुर अरु अतिवाद कहावे ॥ नाम पारुष्य जन यश गावे ४२ (चोरी आदि ठगाके डर-वानेका नाम—छंद) भर्त्सन भिन्ता ॥ मोटिहि चिन्ता ४३ (खिझाने के नाम) परिभाषण ॥ सुनोसाशण ४४ (पर स्त्री से मैथुनार्त्थ वार्त्ता करने के नाम—चौपाई) आकारण सुनो आक्षारण ॥ यहिको छांड़ भजो जगता-रण ४५ (सम्बोधन पूर्वक वार्त्ताकरनेके नाम) आभा-षण आलाप कहावे ॥ पूर्वक बात यही जनगावे ४६ (अनर्त्थ वचनका नाम—छंद) प्रलाप जानो ॥ अनर्त्थ ठानो ४७ (अभिशोक युक्त भाषणके नाम—चौपाई) मुहुर्भाष अनुलाप प्रवीन ॥ शोकयुक्त भाषणयेचीन ४८ (रोनेकानाम) परिदेवन अरुनामविलाप ॥ रोनारूदन रोवताकाप ४९ (परस्परविरुद्धभाषणकेनाम) विरोधो-क्तिअरु विप्रलाप ये ॥ विरोध परस्पर जानोजगये ५० (परस्परयोग्यभाषणके नाम—छंद) सल्लाप सत्त ॥ यक नाममत्त ५१ (सुन्दर वचनके नाम—चौपाई) सुप्रलाप सुन्दर गुणवन्ता ॥ चतुरदास गावत गुण सन्ता ५२ (छिपेहुये वचनके नाम) अपलाप निह्नव जन जोय ॥ छिपे वचनका अर्थहि होय ५३ (सन्देशके नाम) स-

न्देश वाक्य वाचक यहमिन्त॥ सन्देशनाम जानतजग सन्त ५४ (अमंगल वाक्यका नाम–छंद) रुशतीएते॥ जानोजेते ५५ (शुभ वचनके नाम) कल्पएक॥ चतुर शेख ५६ (अतिमिष्ट वचनके नाम) सान्त्व मिष्ठर॥ जानो ईश्वर ५७ (सम्बन्ध अर्थात् योग्य वचनकेनाम) संगतनाम॥ भजसियराम ५८ (बड़े बोलके नाम–चौपाई) निष्ठुरजान परुष येभाई॥ बड़ाबोल चातुरदरशाई ५९ (शिथिल वचनकेनाम) ग्रामनाम अश्लील गुणवन्ता॥ चतुरदास गावत जनसन्ता ६० (प्रियसत्य वचनकेनाम–छंद) सूनृत्तमान॥ ये सत्तजान ६१ (पूर्वापरविरुद्धवचनकेनाम–चौपाई) क्लिष्टनाम शंकुलगुण राया॥ चतुरदासने भाषागाया ६२ (अधकहे वचन के नाम–छंद) ग्रस्तनाम॥ अधिकदाम ६३ (हलबलहे वचनके नाम) निरस्तजानो॥ नामपिछानो ६४ (थूक सहित बोलनेकानाम) अम्बूकृत॥ जानोभृत ६५ (अर्थ न्यून वचनके नाम) अवद्धजानो॥ न्यून बखानो ६६ (अकथना योग्यकेनाम) अनक्षरसाच्य॥ सोनाम अवाच्य ६७ (झुठाईकेनाम) अहितगाई॥ नामझुठाई ६८ (अप्रतीककेनाम–चौपाई) अविस्पष्ट पुनिनामश्लिष्ट॥ चतुरदास हरिहर धरइष्ट ६९ (झूठके नाम) अनृतझूठ वचन परबीन॥ चतुरदास गावेजगचीन ७० (सत्यके नाम) सत्यतथ्य सम्यक् ऋतुराज॥ चतुरदासगावे व्रज राज ७१ (शब्दकेनाम–दोहा) शब्दनिनाद विरावये ध्वनध्वनि स्वननाद। निनदरुवान रवआरवहै निर्घोषनाम निस्वान ७२ आरावनाम निस्वानहै नरहारकसंराव॥

शब्दसत्य श्रीकृष्णको ज्ञानध्यान धरगाव ७३ (वस्त्र और पत्तोंकी मरमराहटकेनाम—छंद) मर्मरमानो ॥ नामपिछानो ७४ (गहनाकीखनखनाहटके नाम) शिञ्जित मिन्ता ॥ नामगुनन्ता ७५ (वीणादि शब्दोंकनाम—दोहा) निक्कण निक्कारण कण क्काण बखान ॥ कणन जन चातुर कहे वीणा शब्द सुजान ७६ निवारण भी वीणाको नामहै ॥ (केवल वाणी के बाजाको नाम--चौपाई) प्रक्काण प्रक्कण प्रक्कणन ॥ उपक्कणादि वीणाबनन ७७ (बड़े हल्लाका नाम) कोलाहल कलहल जनजान ॥ हल्लाकर गावो भगवान ७८ (पक्षियों की बोली का नाम) रूत बाशित चातुर जनजान ॥ ये बोली पक्षी परमान ७९ (प्रतिशब्द अर्थात् गुञ्जके नाम) प्रतिध्वन प्रतिश्रुत नाम पियारा ॥ गुञ्ज शब्द के नाम उचारा ८० (गाने का नाम--छंद) गीतगान ॥ सत्तमान ८१ (दोहा) राम दास महराजका खानाजाद गुलाम ॥ चतुरदास इनकी कृपाभजतासीताराम ८२ शब्दवर्ग्गपूरणभयोनिम्बारक नाम आदिकाण्ड अमरातणाहरी सुधारण आप ८३ ॥

इति श्रीजम्बूद्वीपेभारतखंडेमालवदेशेअवन्तीमहाक्षेत्रेरतलामनगरेवैष्णवहरिव्यासी श्रीनिम्बार्कमतानुयायीमहन्तश्रीरामाजीनन्दचतुरदासविरचितग्रन्थ श्रीअमर रघुनाथ कल्पद्रुमआदि काण्डेशब्दवर्ग्गवर्णनोनामषष्ठमोऽध्यायः ६ ॥

अथ श्रीनाट्यवर्ग्ग प्रारम्भः ॥

दोहा ॥ गोविन्दचन्द व्रज नन्दको बन्दचतुर चित चाय । नाट्यवर्ग्ग वर्णन करूं श्रीगुरुपदरज ध्याय १ (बाजा वा कंठसे गानेका नाम) मध्यम ऋषभ निषाद

ये पञ्चम अरु गंधार॥ धैवत खड्ज सुजानये चतुरदास विस्तार २ (इन्होंकी बोली-कुण्डली) इनमें बोली कुंजरताका रूप निषाद। गौकीबोली ऋषभहै सुनोसकल मरियाद॥ सुनोसकल मरियाद छागकी है गंधारा। मयुरोकी है षड्जक्रौञ्चकी मध्यमप्यारा॥ चतुरा घोड़ेधैवतकोकिल पञ्चमआद। जानतहै कोइ जौहरी साधुसन्त संवाद ३ (अथ सूक्ष्मशब्दका नाम-छन्द) नामकालकी॥ शब्दमालकी ४ (प्रियमीठी बोलीकानाम) कल यह जानो॥ चतुरामानो ५ (गम्भीर शब्दका नाम-चौ०) मन्द्र एक गम्भीर कहावे॥ गम्भीर शब्दको कविजन गावे ६ (अत्युच्च शब्दका नाम) अत्युच्च शब्दका नाम उचारू॥ तार नाम एकहि विस्तारू ७ (वाद्यगानादिके एकसंग तालस्वर का नाम) सुनो तालस्वरका निजनाम॥ एततालकवि कहे विश्राम ८ (वीणाके नाम) विपञ्ची बल्लकीवीणा नाम॥ लेकर भजोश्री श्यामा श्याम ९ (वीणाका लक्षण ७ तारहोते हैं जिस वीणादि के नाम) सप्त तार वीणा परसोवे॥ तत येनाम तेहीका होवे १० (मुरजादिक अर्थात् मृदङ्गादिक के नाम) मृदङ्ग नाम आनद्धमिन्ता॥ हरियश गावे लेकर सन्ता ११ (वन्श्यादि के नाम) वन्श्यादि सुषिर दरशावे॥ वन्श्यादिक दोउनाम कहावे १२ (झाँझ मंजीरादिके नाम) धन तत सुषिर आनद्ध घन थे॥ इनसे मजा लूटता मनये १३ (मृदङ्गके नाम) मृदङ्गा अरु मुरजा मिरदंगी॥ करले भजो श्याम बहुरंगी १४ (मृदंग के तीन भेदहैं) अंका अरु आलिंगा जानो॥ ऊर्ध्वक

तीजा पहिंचानो १५ (दोहा) गोद लेह अंकावजे आलिंग्य आलिंगान ॥ उच्चमुखहिं बाजावता ऊर्ध्वक पहिंचान १६ (इनके लक्षण) हरीतकीके डौलसम अंका जान सुजान॥ जववल मध्ये ऊर्ध्वक गोपुच्छा आलिंगान १७ (डंका के नाम-चौपाई) यशः पटह ढक्का दरशावे ॥ चोवशोर घनघोर बजावे १८ (तुरुही के नाम) तुरुही दुन्दुभि भेरी जान ॥ चतुरदास गावे भगवान १९ (नगाराके नाम) आनक पटह नगारा गाजे ॥ नौबत नाम जगत में छाजे २० (जिससे वीणादि बजातेहैं उसका नाम-छन्द) कोणा राजे॥ वीणा बाजे २१ (वीणाकी डांडीका नाम) डांड़ी प्रबल ॥ जानो नवल २२ (वीणाके नीचे जो गोलगोल चर्म्म से मढ़ा हुआ होताहै उसके नाम-चौपाई) ककुभ प्रसेवक दोनोंनाम ॥ सुमिरो रामचढ़ो-गे धाम २३ (अथ वीणाके सर्व्वांग के नाम) कोलंब-क वीणाका अंग ॥ याते लहर उठत जू गंग २४ (वीणा के जहां तार बांधे जातेहैं उसके नाम) उपानाह अरु निबन्धनराय। तारठौर खूंटी दरशाय २५ (डमरूके नाम बड़ेडमरूके नाम) डमरू डीमरू छोटाजान ॥ मडू नाम डीमरू बड़मान २६ (डिमडिमी के नाम-छन्द) डिण्डीम जानो ॥ डिमडिम मानो २७ (झांझके नाम) झांझर भिन्त ॥ झांझा सन्त २८ (मर्द्दलका नाम) प-वल अनोखा ॥ मर्द्दल चोखा २९ (अथ हुडुकका नाम) हुडुक भनन्ता ॥ गावत सन्ता ३० (नरसिंहाका नाम) गोमुख गावे ॥ नरसी हावे ३१ (नाचने वालेके नाम-चौपाई) लासिका नाम नर्तकी जान ॥ नाचै तेहिका

नाम पिछान ३२ (अथ धीरे धीरे नाचने का नाम ॥ और शीघ्र नाचका नाम) तत्व नाच धीरे का नाम ॥ अथोनाच शीघ्र ये दाम ३३ (मैंझसू नाचका नाम २ समय रूपत्रय का प्रमाण नाम) अँझसू नाच नाम घन गावे ॥ ताल समय परमाण दिखावे ३४ (बाजा और नाचका एक संगताल टूटनेके नाम) ताल टूटनेका लय नाम ॥ मन्या बिखरजावे जनदाम ३५ (नाचकेनाम- दोहा) नटन नाट्य नर्तन यह नृत्य निरत नरमान ॥ लास्य अरु ताण्डव सुनो सप्त नाम निरबान ३६(नाच गीत बाजा इन तीन के नाम-चौपाई) तौर्य्यत्रिका ना- ट्य बखान ॥ नाच गीत बाजा परमान ३७ (स्त्रीवेष- धारी पुरुष नचैया अर्थात् सखीके नाम) अकुंस अरु भ्रुकुंस कहावे ॥ भ्रूकुंस नर त्रय दरशावे ३८ (केवल नाचनेवाली वेश्याके नाम) नाट्याधिकार नाम जगजा- नो ॥ पुनि अज्जुका नाम पहिंचानो ३९ (बहनोई का नाम-छन्द) आवुन मानो ॥ चतुरा जानो ४० (वि- द्वान्‌केनाम) भावनाम ॥ गावधाम ४१ (पिताकानाम) आवुकमान ॥ पिता सुजान ४२ (युवराजकानाम-चौ- पाई) भर्तृदारक नाम कुमारा ॥ युवराज त्रयनाम उचा- रा ४३ (राजाकेनाम) राजा भट्टार्क अरु देव ॥ नित उठकरे कृष्णकी सेव ४४ (राजकन्याके नाम) भृत्य दारिका कन्या मिन्त । राजाकी कन्या गुणवन्त ४५ (अभिषेक कीहुई स्त्रीका नाम-छन्द) देवीजानो ॥ सांची मानो ४६ (आनराजस्त्रियों के नाम) भट्टिनी यासत्त जीया ४७ (ब्राह्मणादि अविद्याके नाम-चौपाई)नाम

सारराप्रिय जनजानो ॥ अब्रह्मण्य राजा परमानो ४८ (माताकेनाम–छन्द) अम्बामात ॥ जननीतात ४९ (कुमारीके नाम) वसुबखानो । बालामानो ५० (श्रेष्ठके नाम–चौपाई) अर्थ्यनाम पुनि मार्षक जान ॥ चतुरदास मारिषपहिंचान ५१ (जेठीबहन के नाम–छन्द) नाम अन्तिक ॥ जान सन्तिक ५२ (नाटककी सन्धियों केनाम–चौपाई) निर्व्वहण निष्ठा नरजान ॥ नाटकसन्धी नाम सुजान ५३ (नीचस्त्रीकेपुकारनेके नाम–छन्द) हण्डे जानो ॥ नीच पिछानो ५४ (च्यरियाके पुकारनेकानाम) हञ्जेनामा ॥ जानोदामा ५५ (सखीके पुकारने में) हलापुकारो ॥ सखी उच्चारो ५६ (इति नाटकाधिकारःयह संज्ञा केवल नाटक शास्त्रहीकी है) (नाचनेके नाम–चौपाई) अङ्गहार नाचनेके नाम ॥ अङ्गविक्षेप दूसरादाम ५७ (भावबताने का नाम) व्यञ्जक नामसों अभिनयजान ॥ भावदिखावन चातुरमान ५८ (भौंहआदि मटकानेका नाम–छन्द) आङ्गिक मानो ॥ भौंह चलानो ५९ (अन्तःकरणके भावका नाम) सात्विक जानो ॥ चतुरामानो ६० (दश रसों के नाम–चौपाई) रसनव भाव एकःवात्सल ॥ ताकेनामकह सुनरेमल ६१ (दोहा) शृङ्गार वीरकरुणा पुनि अद्भुत हास्य भयान ॥ शान्तक रौद्र बीभत्स है वात्सल्य जगजान ६२ (शृङ्गाररस के नाम--चौपाई) शुचि शृङ्गारनाम उज्ज्वल ये ॥ रस शृङ्गारनाम त्रयमलये ६३ (वीररस के नाम) उत्साहवर्द्धन वीर बखानो ॥ ये दोउ नाम वीर के जानो ६४ (करुणारसकेनाम–दोहा) कारुण अरु करुणा घृणा

कृपा दया अनुक्रोश॥ अनुकम्पा चातुरकहे मत करना मन द्रोश ६५ (हास्यरसकेनाम–चौपाई) हास्य हंस अरु हास पिछानो॥ चतुरानाम हास्यरस मानो ६६ (बीभत्सरसकेनाम) विकृत अरु बीभत्स बखानो॥ चतुरदास निश्चयकर मानो ६७ (अद्भुतरसके नाम) विस्मयनाम नाम आश्चर्य्य॥ अद्भुत चित्र बतायेहर्य्य ६८(भयानकरसकेनाम–दोहा) दारुण भीम भयानक भीषण भीषम घोर॥ प्रतिभय नाम भयंकर भैरव रूप निहोर ६९ (रौद्ररसकेनाम–चौपाई) रौद्र उग्र दोउ नाम सुजाना॥ चतुरदास गावे धर ध्याना ७० (भयरसकेनाम) भीती भय त्रास भी भान॥ साध्वसदर जानोगुणवान ७१ (मनके विकारकानाम–छंद) भाव उचारा॥ नाम विकारा ७२ (भावप्रकाशक के नाम) अनुभव जानो॥ भावकठानो ७३ (अहंकार के नाम–चौपाई) अहंकार अभिमान उचार॥ गर्वनामतृतिया विस्तार ७४ (बड़प्पनकेनाम) नामबड़प्पन मानसुजान॥ बड़ानाम भगवतकाठान ७५ (निरादरकेनाम–दोहा) परिभव नाम निरादर तिरस्क्रिया परिभाव॥अवज्ञाह अवमानना अवहेलन रिड़ गाव ७६ (असूक्षण भी नाम निरादरकाहै–चौपाई) व्रीड़ा लज्जात्रपाहीजग॥ चतुरकही अवमन्दाक्षमग ७७(दूसरे से लजानेकेनाम–छंद) अपत्रपा जान॥ लज्जा न मान ७८ (क्षमाकेनाम) तितिक्षान॥ क्षान्ति मान ७९ (परधनलेवे की इच्छा के नाम) नाम अभिध्या॥ चावतरिध्या ८० (ड्युखुराने के नाम) अक्षान्ती ये॥ ईर्षा जीये ८१ (फेलऌगाने

के नाम) असुया मानो ॥ फेल लगानो ८२ (वैर के नाम) विद्विष वैर ॥ विरोध हैर ८३ (शोक के नाम) शुक मन्यु शोक ॥ चतुरा बिलोक ८४ (पछिताने का नाम—चौपाई) पश्चात्ताप नाम अनुताप ॥ विप्रतिसार अमर परताप ८५ (क्रोध के नाम—दोहा) कोप क्रोध अमर्ष रुष क्रोधा प्रतिघा रोष ॥ क्रुद्धरूढ़ नव नाम ये चतुरा वरणे कोष ८६ (शुद्धाचरणका नाम—छंद) शील चाल ॥ शुद्ध बाल ८७ (सिड़ीपनके नाम) चित उन्माद ॥ विभ्रम आद ८८ (प्रेमके नाम-चौपाई) प्रियता प्रेम स्नेह स्वरूपा ॥ शशार्द्द प्रेम नाम नर भूपा ८९ (इच्छा के नाम—दोहा)दोहद इच्छा स्पृहा कांक्ष तर्ष अभिलाष ॥ तृड वाञ्छा पुनि काम ये ईहा मनोरथ लाष ९० (बड़ी इच्छा के नाम—चौपाई) बड़ी लालसा लालस मिन्ता ॥ चतुरदास गुणगावत सन्ता ९१ (धर्म्मचिन्तनके नाम) नाम उपाधि पुनि धर्म्म चिन्ता ॥ चतुरदास गावे गुणवन्ता ९२ (मनकी पीड़ाके नाम) मानसि व्यथा नाम आधी ये ॥ मनकी पीड़ा मनजानी ये ९३ (स्मरणके नाम) चिन्ता स्मृति अरु आध्यान ॥ चतुरनाम सुमिरणके जान ९४ (कामादि से उत्पन्न स्मृति के नाम--छंद) उत्कलिका ये ॥ उत्कंठा ये ९५ (उत्साह के नाम—चौपाई) अध्यवसाय उत्सा उत्साह ॥ चतुरदास अमरा से काह ९६ (असाध्य साधनके उत्साहका नाम) असाध्य साधन उत्सावीर्य्य ॥ चतुरदास गावो हरि हर्य्य ९७ (कपटके नाम—दोहा) दंभ कपट पुनि व्याज ये उपाधि कैतव शाठ्य ॥

निकृती अरु सुकृती सत छद्मरूप कवि छाव्य ९८ (अकर्तव्य के नाम–चौपाई) अनवधानता नाम प्रमोद॥ अकर्तव्ययेजानो जोध ९९ (कौतुकके नाम) कौतूहल कौतुक अरु कुतुक॥ कुतूहल नामकहैजनधुतुक १०० (स्त्रियों के हावके नाम) बिब्बोक विलास ललित नर देखो॥ लीला हेला विभ्रम पेखो १०१ (इनछेहौ हाव का अर्थ–दोहा) भृकुटि नेत्र मुख तीनसे जो कुछ उत्पन होय॥ वाका नाम विलासहै कविजनजानत सोय १०२ (बिब्बोकका अर्थ) अहंकार करके त्रिया करे निरादर कन्त॥ बिब्बोक नामताकागुणी चतुराबरणे सन्त १०३ (ललितकाअर्थ) सर्व्वाङ्ग बहूभांतमे घूम घुमावेमिन्त॥ ललितनाम ताका यह चतुरा बरणत सन्त १०४ (हेलाकाअर्थ) अवगुण पूरब दानता खूब दिखावे पूर॥ हेला कवि ताको कहैं चतुराकहै हजूर १०५ (लीलाका अर्थ) पतिके भूषण वचनका अनूसार आदीक॥ ताका लीला नामहै चतुरदास सतसीक १०६ (विभ्रमकाअर्थ) बोली वस्त्रादिक गुणी उलट पुलट होइजाय॥ विभ्रम ताका नामहै चतुर कहे समझाय १०७ (लीलामात्रके नाम) द्रव केली परिहास ये क्रीड़ा अरु परिहाल॥ मर्म्म नाम लीला कहै बरणे चातुरदास १०८ (ओढ़रके नाम–चौपाई) व्याज लक्ष अपदेश दिखाया॥ ओढ़रकेर नाम परखाया १०९ (बालकोंके खेलके नाम) कुर्दन क्रीड़ा खेला खेल॥ बालखेल की करलेशेल ११० (घामकेनाम–छंद) निदाघ स्वेद॥ धर्म्म वेद १११ (मूर्च्छाके नाम) निष्ट चेष्टता॥ प्रलय इष्टता ११२ (शोकमें मुखादि

झांपनेकानाम—चौपाई) अवहित्था चातुर दरशावै ॥ नाम आकार गुप्तिका गावै ११३ (हर्षसे शीघ्र कार्य्य करनेका नाम) संवेग संभ्रम सतराई ॥ शीघ्रकाज करलेनाभाई ११४ (सम्प्रयोजन हासका नाम—छंद) आच्छुरितये ॥ चतुर मतये ११५ (थोडेहासकानाम) स्मित सदाई ॥ चतुरागाई ११६ (मध्यहासकानाम) विहासित एका ॥ चतुरमजेका ११७ (रोमठाढ़े होनेका नाम—चौपाई) रोमांचसुनरोक उठैया ॥ रोमहर्षण मान कन्यैया ११८ (रोनेकेनाम) रुदित नाम क्रन्दितबलवन्ता ॥ कुष्टनामगावै जनसन्ता ११९ (जृम्भणजँभुवाई के नाम) जृम्भण जृम्भ नाम असुबाये ॥ जँभुआई के नाम लिसाये १२० (अयोग्यवचनके नाम—छंद) विसंवादये। विप्रलम्भये १२१ (लड़काकेबैयाँ याने पैयाँ चलनेके नाम) स्खलन मानो। रिङ्गण जानो १२२ (नींदकेनाम—चौपाई) निद्राशयन स्वप्नसंवेग ॥ स्वाप पांच जाहिर जगलेग १२३ (औंघाईके नाम—छंद) तन्द्रा मानो॥ प्रमिला जानो १२४ (सहित क्रोध भौंह सिकोरने के नाम—चौपाई) भ्रुकुटि अरु भ्रुकुटी जगजानो ॥ भ्रूकुटि भ्रूकुटी पुनि नर मानो १२५ (टेढ़ी दृष्टि के नाम) अदृष्टि नाम दृष्टीका टेढ़ी ॥ चतुरदास लावै मत लेढ़ी १२६ (स्वभाव के नाम—दोहा) निसर्गरु स्वभाव जन स्वरूप प्रकृति मान ॥ संसिद्धि पाण्डु कहे ये स्वभाव पहिंचान १२७ (कांपनेकेनाम—छंद) वेपथु मानो ॥ कम्पयजानो १२८ (उत्सवके नाम) उद्धर्ष उद्धव उत्सव नाम ॥ क्षणमहँ नाम पांच गुणग्राम १२९

(दोहा) दौलत सुत श्रीरामका चतुरा बसे दुआर॥
नाट्य वर्ग पूरा किया सुमिरो सत्यमुरार १३०॥

इति श्रीजम्बूद्वीपेभारतखण्डेमालवदेशेअवन्तीमहाक्षेत्रेरतलामनगरे
वैष्णवहरिव्यासी श्रीनिम्बार्कमतानुयायी महन्तश्रीरामानन्द
चतुरदासविरचिते अथग्रन्थअमररघुनाथकल्पद्रुमप्रथमकाण्डे
नाट्यवर्गवर्णनोनामसप्तमोऽध्यायः ७॥

अथ पाताल भोगीवर्ग॥

(दोहा) शेषरूप नारायण बन्दों जिनके पाँय॥ वर्गभोगि पाताल ये चतुरकहे गुणगाय १ (पाताल के नाम) अधोभुवन पाताल ये नागलोक बलिसद्म॥ कह्यो रसातल पांचवां भज निम्बारक कद्म २ (छेदके नाम) कुहर शुषिर सुषिर बिल छिद्र विवर शुषिसाज॥ राकरन्ध्र शुविवधा सत निर्व्यथन श्वभ्र सुराज ३ (गड़हाके नाम-छंद) अवट बखानो॥ गर्त्त सुमानो ४ (छेदही वस्तुका नाम) शुषिर मान॥ शुषिरजान ५ (अँधियारेका नाम-चौपाई) अन्धकार तम तिमिर बखान॥ ध्वान्त तमिस्र पञ्चजगजान ६ (बड़ी अँधियारी का नाम) अन्ध तमस अँधियारी घोर॥ चतुरा गावे नन्दकिशोर ७ (कम अँधियारी का नाम) अव तामस अँधियारी कम्म॥ चतुर भजो हरिकिर कर गम्म ८ (सर्वत्रव्यापक अन्धकार के नाम) सन्तमस सर्वत्रहव्यापी॥ मेरेपिता राम परतापी ९ (सर्पौं के नाम) काद्रवेय पुनि नाग कहाये॥ नृप अमरेश दोय दिखलाये १० (सर्प्पौं के स्वामीका नाम-छंद) शेश अनन्त॥ चतुर भनन्त ११ (नागराजके नाम-चौपाई) सर्प्पराज वासुकि परधान।

चतुरदास गावे गुणवान १२ (घोणसर्प के नाम-छंद) तिलित्स मान ॥ गोनस जान १३ (अजगर के नाम-चौपाई) अजगर नाम शयु बलधारी ॥ वाहस अहार देत गिरिधारी १४ (पनिहाँ सर्प के नाम) अलगर्द जलव्याल कहावे ॥ अलगर्द पनियां दरशावे १५ (विषरहित दुमुहाँ सर्पके नाम) डुण्डुभ रानिल राजील व्याल ॥ विषसे रहित दोमुहाँ आल १६ (चीतसर्प के नाम) मालुधान मातुलाहीन ॥ चीत सर्पको चातुर चीन १७ (केंचुल छोड़ेहुये सब सर्पों के नाम) मुक्त कञ्चुक पुनि निर्म्मुक्त ॥ चतुरदास गावे गुणभक्त १८ (सर्पके नाम-कवित्त) सर्प हैं भुजंग व्याल कुण्डली फणिन्द नाग आशीविष व्याडरूप विषधर बखानिये १९ दर्वीकर दीर्घपृष्ठ दन्दशूक सरीसृप भोगी गूढ़पात चक्षुश्रवा सो पिछानिये २० बिलशय काकोदर उरग पन्नग अहि पवनाशन जान हरि केंचुकी सुजानिये २१ कुंभीनस लेलिहान चतुरा फणधर भुजंग चक्री पुनि भोगधर नागइन्द्र मानिये २२ (दोहा) आशीविष पुनि गोकरन दोउरस ले भोगीन्द्र ॥ नागींदा अरु जिह्मगा फणिइन्द्रहु योगीन्द्र २३ (चौपाई) फणी भुजंग भुजंगम जानो ॥ जान पृदाकू नाम पिछानो २४ (सर्प के विषादिके नाम-छंद) अहिय जानो ॥ चतुरामानो २५ (फणके नाम) स्फटा फणा ॥ फण येजणा २६ (केंचुलिके नाम) कञ्चुक ॥ निर्मोक २७ (विषके नाम) क्ष्वेड विस्र ॥ गरल तिस्र २८ (वृक्षोंसे उत्पन्न विषके नाम-दोहा) काकोल हलहल हालहल हालाहल पर-

मान ॥ कालकूट सौराष्ट्रिक सौक्किकैयो जान २९ वत्स नाभ परदीपन ब्रह्मपुत्र गुणगाय ॥ दारद ये चातुरकहे दिये नाम दरशाय ३० (गारुड़ि अर्थात् सर्पके झर-वैयाके नाम—मन्त्रादिकसे सर्पके पकड़नेवाले के नाम) जांगुलिक विषवैद्य धनुडिक ॥ व्यालग्राही पुनिअहितुं-डिक ३१ (दोहा) निम्बारक गुरुदेवहैं पिता हमारे राम। पातालवर्ग्ग पूरणभयो चतुर रच्यो गुणग्राम ३२॥

इति श्रीजम्बूद्वीपेभारतखंडेमालवदेशेअवंतीमहाक्षेत्रेरतलामनगरेवैष्णव हरिव्यासी निम्बार्कमतानुयायीमहन्तश्रीरामाजीनंदचतुरदासविर-चितेग्रंथश्रीअमररघुनाथकल्पद्रुमआदिकांडेपातालभोगीवर्ग वर्णनोनामाष्टमोऽध्यायः ८ ॥

अथ श्रीनरकवर्ग्गप्रारम्भः ॥

(दोहा) जयजयजय जगतारण वंकटेश कमलेश॥ चतुरदास शिरनाय पद मांगत दानदिनेश १ (नरकके नाम—चौपाई) दुर्ग्गति पुनिनरकनरन्दा॥ नारक निरय दुष्टहित फन्दा २ (नरकोंकी जातिभेद के नाम—दोहा) तपन अवीचि रौरव महारौरव संहार ॥ कुंभीपाक तामे-सरा कालशूल संघार ३ (नरकनिवासियों के नाम) प्रेत निवासं ॥ चतुर प्रकासं ४ (प्रेतोंकी नदीके नाम) है वैतरणी ॥ अमरावरणी ५ (नरककी अशोभाके नाम) नर्ऋति मानो ॥ अशोभ ठानो ६ (हठसे नरक में ढके-लने और बिगार के नाम) वृष्टि आजु ॥ नर्काकाजु ७ (नरककी पीड़ाके नाम—चौपाई) नाम कारना। सुनोया-तना ॥ तीव्रवेदना। नरक वासना ८ (मनकी पीड़ा के नाम) आबाधा बाधा दुखपीड़ा ॥ व्यथा चतुरजन जा-

नत हीड़ा ९ (मनमति के नाम—छंद) प्रसूतिस जानो॥
अमानस्यमानो १० (शरीरकी पीड़ाके नाम—चौपाई)
आभील कष्टशरीरामिन्त॥ कृच्छ्र चतुरा गावेसन्त ११
(किसी किसी के सम्मतसे ऊपर लिखेहुये ये पीड़ादि
आभीलपर्य्यंत दुःखमात्रके नामहैं—दोहा) रामरामरामा
पिता सुरपुर किया पयान॥ तादिन ते दुखपावते अब
सुनियो भगवान १२ पिता हमारे देव थे शीलवन्त
गुणवन्त॥ श्रीगंगाके उदरसे चतुरा प्रकट्यो सन्त १३
नरकवर्ग्ग पूरणभयो अतिआनन्द मँझार॥ चतुरदास
गुणगायके सुमिरयो सत्य मुरार १४॥

इति श्रीजम्बूद्वीपेभारतखण्डेमालवदेशेअवन्तीमहाक्षेत्रेरतलामग्रामेवै
ष्णवहरिव्यासीश्रीनिम्बार्कमतानुयायीमहन्तश्रीरामाजीनन्द
चतुरदासविरचितेग्रन्थश्रीअमररघुनाथकल्पद्रुमप्रथम
काण्डेनरकवर्गवर्णनोनामनवमोऽध्यायः ९॥

अथ श्रीवारिवर्गप्रारम्भः॥

(दोहा) सिंधुसुताकेनाथसे अरजकरूं करजोर॥ दी-
जैबुद्धिबिलन्द यम वारीवर्ग्ग निहोर १ (श्रीसमुद्र के
नाम—कवित्त) अकूपार पारावार रत्नाकर पारापार
उदधि अपार सिन्धु सागर कहायो है २ जलनिधि स-
मुद्रसार सरस्वान यादपति अर्णव सो उदंवान शोरसो
मचायोहै ३ अपाम्पति अनेक अब्धि सरित्पति अम्बु
आदि चतुरा गुणगाय गाय गायके रिझायो है ४ याइ
सिन्धु सागरते नागर ने मथन कर कमलाले सङ्गुरी
आपनि सिधायो है ५ (समुद्रके भेद—दोहा) क्षीरोद
और लवणोद ये दध्युद पुनि घृतोद॥ सुरोदनाम ईक्षो-

दहै स्वादुदहै जगमोद ६ (जलके नाम—कुण्डलिया)
आप वार वारी वर सलिल सरिल तोयमान ॥ अमृत
जीवन भुवन वन पयजल कमलअखान ७ पयजल कम-
लअखान अर्ण पुष्कर पस्वीना ॥ कबन्ध उदक दकपाथ
अम्बु घनरस रसभीना ८ सर्वतोह मुख पानीय नीर
नारअरु क्षीर ॥ अम्बुशम्बर सम्बर मेघ पुष्प वलवीर
९ (चौपाई) कबन्ध किलाल नाम ये नीरा ॥ चतुरदा-
स जग जीवन हीरा १० (जल विकारके नाम—छन्द)
अम्मय नामा ॥ आप्य सुदामा ११ (लहर के नाम—
चौपाई) भङ्ग तुरङ्ग ऊर्मि बलवन्ता ॥ विचिअरुवीचिना-
मगुण सन्ता १२ (बड़ी लहरके नाम—छन्द) कल्लोल ॥
उल्लोल १३ (कुण्डके नाम) आवर्त जान ॥ यह कुण्ड
मान १४ (बुन्दके नाम—चौपाई) पृषत बुन्दबिन्दु पृ-
षतान ॥ विप्रुट नामजपो भगवान १५ (भँवरपड़े जिस
के नाम) भ्रम भँवरा जल निर्गम सन्त ॥ बकपुट भेद
बक गुणवन्त १६ (नदीके किनारे केनाम) कूल रोध
तट तीर अनूपा ॥ रोधदीनाम प्रतीर स्वरूपा १७ (उ-
सपारका नाम—छन्द) उसपार पार ॥ यहि नामसार १८
(इस पारका नाम) अवार अनूप ॥ ये नामहि भूप १९
(नदीके घाटका नाम) घाटहि घाट । जान सुठाट २०
(रेताके नाम) रेता छिपज ॥ भेषहै अज २१ (जल-
गतभूमिकी नौकाके नाम) अन्तरीपये ॥ जलजमीपये
२२ (चढ़ावेका नाम) पुलिनभाव ॥ हैचढ़ाव २३ (बा-
लुकाधिकस्थानकेनाम) सिकतासय ॥ सैकत कय २४
(कीचके नाम—चौपाई) पङ्क सादं कर्दम जम्बाल ॥

लिषद्धर बरणत है जनबाल २५ (परबाहाका नाम)
जलोच्छ्वास परिवाहकहावे ॥ परिताहनाम चतुरद-
शावे २६ (चूहाके नाम–छन्द) विदारक मान ॥ सो
कूपक जान २७ (नौकासे उतारने योग्य जलका नाम
नाव्य बखानो ॥ चतुराजानो २८ (नाव के नाम–
दोहा) नौ तरणी पुनि तरणिका तरि तरी समझो
नाव ॥ चतुरदास चढ़ नाम नव अमरापुर को धाव
२९ (अथ घन्नई के नाम–चौपाई) उडुप कील प्लव
परवीना ॥ घन्नाई ये नाम नवीना ३० (सोताका नाम–
छंद) स्रोतमान ॥ सोतजान ३१ (उतराई के नाम)
अस्तर जानो ॥ आतर मानो ३२ (पत्थर वा काष्ठ नि-
र्मितनौकाकारके नाम॥ द्रोणाद्रुणी ॥ द्रोणी सोणी ३३
(नावतैंबनेवाले आदमीके नाम–चौपाई) नाम पोत-
वणिक जगजानो । सांयात्रिक दूजा पहिचानो ३४)
(खेवैया के नाम) कर्णधार नाम नाविकाये ॥ खेवैया
चातुर दरशाये ३५ (नौका पीछे लकड़ी घुमावे उसका
नाम) नियामक नाम पोतवाहमान ॥ नौकापीछेलकड़ी
जान ३६ (जिस खूंटासे नौकाबांधीजातीहै उसकानाम)
गुणवृक्षक कूपक दरशाया ॥ नौकाबांधि कठोर दिखाया
३७ (डाँडके नाम) नौकादण्ड क्षेपणीसन्त ॥ चतुरदा-
सगावे भगवन्त ३८ (करिया के नाम) नाम कैनि पातक
जन मानो ॥ करियाकेरःअरित्रजानो ३९ (फरुहा के
नाम) काष्ठकुदाल अभ्रिका भाई ॥ चतुरदास गावो रघु-
राई ४० (जिससे नौकाका जल उलचा जावे उसके नाम)
सेकपात्र सेचन जलडारे ॥ चतुरदास जन कहत पुका-

२४१ (नाव आधीका नाम) अर्द्धनाव पुनि आधीबाजे॥
आधी नाव यही जगराजे ४२ (जो नाव लायक जलमें
न हो उसके नाम—छंद) अतिनु लायक॥ नहिं जलशा-
यक ४३ (निर्म्मल के नाम) अच्छा जानो॥ प्रसन्नः
ठानो ४४ (मेलेके नाम) आबिल अनच्छ॥ कलुष
मलच्छ ४५ (गहरे के नाम) गम्भीरं गम्भीर॥ निम्न
हम्मीर ४६ (उथले के नाम) नाम उत्तान॥ उथला
मान ४७ (अथाहका नाम) अतलस्पर्शा॥ नाम अथ-
र्शा ४८ (मल्लाह के नाम) कैवर्त्त दास॥ धीमर मलास
४९ (जालके नाम) जलआनाय॥ जाल बलाय ५०
(सुतरीसनके नाम) पवित्रकमान॥ सनसूत्रजान ५१
(जिसमें मछली धरीजायँ उसका नाम—चौपाई) मत्स्या
धानी नाम कुवेणी॥ दुष्ट चलावे जहां तरवेणी ५२
(कटियाकेनाम) बड़िशा बड़िशी बड़िश बखान॥ मत्स्य
वेधन बलीयाजान ५३ (मछली के नाम—दोहा) मीन
मत्स्य बैसारिणी अण्डज शकुली मान॥ झख बिसार
पृथुरोमये मछली ले पहिंचान ५४ (मछली के बच्चे के
नाम—छन्द) शकुलार्भक॥ गंडक सर्क ५५ (जलचारी
मत्स्य के नाम) सहस्र दंष्ट्र॥ पाठीन कंष्ट्र ५६ (सूस
के नाम) शिशुक उलूपी॥ शूशक जलपी ५७ (चेल्ह-
वाके नाम—चौपाई) चिलि चिम चिलि चमहै नलमीन॥
चिलि चिमि नाम कुहेपरवीन ५८ (सहरी के नाम) स-
हरी शफरी प्रोष्ठी जन्त॥ चतुरदास गावे गुणवन्त ५९
(छोटी मछली के नाम—छन्द) पोताधान॥ छोटीमान
६० (रोहूके नाम) रोहितरोहू॥ मछलीसोहू ६१ (म-

गरी के नाम) मद्गुर मगरी ॥ मछलीसोअगरी ६२ (सौराके नाम) सौरी शाल ॥ मच्छी माल ६३ (राया मछली का नाम) राजिव राजीव ॥ राया ताजीव ६४ (सौराके नाम) शकुल मानो ॥ सौराठानो ६५ (बड़ी भारी मछली के नाम) तिमि अच्छी ॥ बड़ी मच्छी ६६ (तिमिके लीलनेवाली मच्छी के नाम) तिमिंगिल अच्छा ॥ भारी मच्छा ६७ (सर्व्वजलजन्तु के नाम) यादसनामा ॥ जन्तूदामा ६८ (शिरस के नाम) शिशुमार नाम ॥ सरसका जान ६९ (ओदके नाम) ओदकउद्र ॥ नामच्छाशुद्र ७० (मगर के नाम—चौपाई) मगर नाम मगराका एक ॥ चतुरलिख्यो अमराको देख ७१ (ककरकट के नाम—दोहा) कर्क्कटक कर्क्कट येहैं कर्क्कड परमान ॥ कुलिर कर्क्कक कुलीर ग्यँगटा की पहिंचान ७२ (कछुवाके नाम—छंद) कमठ कच्छप ॥ कूर्म रच्छप ७३ (घरियार के नाम) ग्राह घरियार ॥ पुनि अबरार ७४ (नाकके नाम) कुंभीर नक्र ॥ जानोयसक्र ७५ (कयचुवाके नाम—दोहा) महीलना गंडूपद किञ्चुलक जल माय ॥ किञ्चुलिक किञ्चूलुक नाम केचुवागाय ७६ (गोहके नाम—छंद) निहाका कह ॥ गोधिका यह ७७ (जलजोंक के नाम—चौपाई) नाम रक्तपातु जलजोक ॥ पुनि जलौका जानतलोक ७८ (समुद्रकी सीपकानाम—छंद) शुक्ति फोट ॥ मुक्ता जोट ७९ (शङ्खके नाम) शङ्ख दाम ॥ कम्बु नाम ८० (छोटेशंखके नाम—चौपाई) क्षुद्रशङ्ख अर शङ्खनखाये ॥ नामशङ्ख नख अमर दिखाये ८१ (जलसूती के नाम) जलशूक्ति

शाम्बुक शम्बूक ॥ शम्बूक चतुरा गावे धूक ८२ (मेडुका के नाम) वर्षाभू दर्दुर शालूर ॥ मेढूक्कप्लव भेक दादुर ८३ (केचुई के नाम--छंद) गण्डपदी यह ॥ नाम शिलातह ८४ (म्यचुकुरी के नाम--चौपाई) भेकी वर्षा-भ्वी अनूपा ॥ चतुरदास गावै श्रीभूषा ८५ (कछुई के नाम) कमठी दुलि कछुहा का नाम ॥ कछुही चतुरा जनपतदाम ८६ (झींगी के नाम--छंद) भृङ्गी देखा ॥ शिङ्गी एका ८७ (झिकघा के नाम--चौपाई) दीर्घकोशिका दुर्नामा धन ॥ चतुरदासगावे ज्ञानीमन ८८ (तड़ाग झीलादि सब जलाशयों के नाम) जलाधार पुनि जला-शायनी ॥ जलशायो नाम यामुनी ८९ (कुंडके नाम--छंद) कुंड श्वीन ॥ हृदयहचीन ९० (कूप के निकट जो कीच होतीहै उसके नाम) निपानचाव ॥ नाम आ-हाव ९१ (कुवांके नाम--चौपाई) उदपान कूप प्रहि अंधून ॥ कुवा चतुर कहत जनमून ९२ (कुवांकी पाटि के नाम) त्रिका कूपपाटी पात्र ये ॥ चतुर कूप पाटीसात्र ये ९३ (पक्की जगत के नाम--छंद) वीनाह जानो ॥ बि-नाहमानो ९४ (चौकोन तालके नाम) खाताबरणी ॥ अरु पुष्करणी ९५ (देवालय के समीपवाले ताल के नाम) येआखात ॥ देवखात ९६ (जिस तालाब में कमलहों उसके नाम) पद्माकरये ॥ तड़ागहरये ९७ (सामान्यतड़ाग के नाम--चौपाई) सरसी सरकासार कहावे ॥ सामान्यताल कविजन दरशावे ९८ (छोटी तलैया के नाम) वेशन्त पल्वल नाम तलाई ॥ अल्पसर चातुरजनगाई ९९ (बावली के नाम) वापी नाम दीर्घि-

काकहे ॥ बावल बावड़ीह जन यहे १०० (खांवाके नाम-छंद) खेयमानो ॥ परिखा जानो १०१ (बांधके नाम-चौपाई) नाम अधार बांधके मिन्ता ॥ चतुरदास गावे गुणसन्ता १०२ (थाल्हाके नाम) आलबाल अलबाल बखानी ॥ आवाप आवाल सोज्ञानी १०३ (नदीशब्दके नाम-कुण्डलीवृत्तं) सरितानदी तरङ्गिणी तटनी धुनी पुकार ॥ स्रोतस्विनी स्रोतासती ह्रदीह्रदानी भार १०४ ह्रदीह्रदानी भार रोधवक्रानिर्झणी। अपगा निम्नगाजान आपगा गुणिजनवरणी १०५ द्वीपवती स्रवती सती सरस्वती विस्तार ॥ नाम कूलङ्कषा मानिये चतुरा अपर स्पार १०६ (गंगाके नाम-दोहा) विष्णुपदी भागीरथी जह्नुसुता श्रीगङ्ग ॥ सुरनिम्नगारु त्रिपथगा भीमास सर्वङ्ग १०७ (चौपाई) त्रिस्रोता सुरसरी जग माई ॥ चतुरदास जन तारन आई १०८ (यमुना के नाम-दोहा) कालिन्दी यमुनासती रवितनया जग जान ॥ शमनस्वसा यमनोतरी व्रजवल्लभको प्रान १०९ (नर्म्मदाके नाम-चौपाई) सोमोद्भवा नर्म्मदा रेव ॥ मेकल कन्यका जनजससेव ११० (जिसनदी में सदा सर्वदा जलरहै उसका नाम) सदानीर नाम करतोया ॥ श्रीस्ममायसु केनहिं सोया १११ (सहस्रबाहु की नदी का नाम) सैतवाहिनी बाहुदा मिन्त ॥ सहस्रबाहुनी नदी पुनिन्त ११२ (शतलजके नाम-छन्द) शतद्रु मानो ॥ शुनुद्रिजानो ११३ (व्यासानदी के नाम) विपाट विपाशा ॥ व्यासा दाशा ११४ (शोणभद्रकेनाम-चौपाई) हिरण्यबाह शोणसतवन्ती ॥ शोनभद्र जानो

गुणवन्ती ११५ (नहरके नाम) कुल्या सरावती मह-
मन्ता ॥ नहरनाम चातुरबलवन्ता ११६ (बेत्रवतीनदी
के नाम) वेत्रवती सतनामहिएका ॥ हरिको भजो तनो
अघलेखा ११७ (चिनावके नाम–दोहा) चन्द्रभाग
शारावती चन्द्रभागी भवनेश ॥ चान्द्रभागा भावसे च-
तुरागादेश ११८ (सरस्वतीके नाम–छन्द) सरस्वती
ये ॥ धर्मयतीये ११९ (कावेरीके नाम) कामेरी ॥ का-
वेरी १२० (नदीमिलाप सङ्गमके नाम–चौपाई) प्रथम
नाम सम्भेद्बखाउ ॥ सिन्धुसङ्गम दुतिया गाउ १२१
(पनारे के नाम) प्रणाल प्रणाली अल्प्रलार ॥ चतुर
पनारिका विस्तार १२२ (देविका नदीमें जो जो उत्पन्न
हों उसका नाम–छन्द) दाविकजानो ॥ देविक मानो
१२३ (सरयूमें जो जो हैं उनके नाम–चौपाई) सारव
सर्व नदिन में राजै ॥ श्रीकाअनुज जग्तमें बाजै १२४
(कुईके नाम) कुई सौगंधिक पुनि कुल्हार ॥ कह्लार
नाम चातुर विस्तार १२५ (लालीकुईके नाम) रक्त
सन्ध्यक पुनि नाम हल्लाक ॥ लालकुई चातुर जनभाख
१२६ (कुमुद कमल साधारन के नाम–छन्द) उत्पल
मानो ॥ कुवलय जानो १२७ (कालेकमल के नाम–
चौपाई) इन्दिवर नीलाम्बुजन्म ॥ इन्दीवर विचारो
मन्म १२८ (उज्ज्वल कमल व कमलोंके कुन्दके नाम)
कुमुद पुनिकैरव शोभासत ॥ शालुक नामकन्द कायेमत
१२९ (जलकुंभी व कुंभी सेवालके नाम) वारीपर्णीजल
कुम्भी ये ॥ शैवाल पुनी शैवाल बली ये १३० (कुमुदिनी
व कुमुदयुक्त देशके नाम) कुमुद्वती नाम कमोदनठानो ॥

कुमोदिनी चातुर पहिंचानो १३१ (कमलिनीके नाम) नडिनीनलिनी त्रिसिनीमान ॥ कमलिनी नाम चतुर जन जान १३२ सरोजिनी पद्मिनी प्रबीन ॥ कमली नामस-मयेचीन १३३ (कमलमात्र के नाम–दोहा) पद्मकम-ल शतपत्र ये सहस्रपत्र अरविन्द ॥ पुष्करराजिवविश्र सुन महोत्पल नरचन्द १३४ पंकेरुह अरु तामरस सरसीरुह कोवल्ल ॥ अंभोरुह चातुर कहे सह कमलन कादल्ल १३५ (चौपाई) सारस नाम कुशेशय जान ॥ नलिन चढ़े भगवत्त को मान १३६ (उज्ज्वल कमलके नाम) सितांभोजपुंडरीक नाम ॥ भाषाकिया रतनपुर ग्राम १३७ (लालकमल केनाम) रक्तोत्पल रक्तसरोरुह॥ कोकनन्द साहरसतमोरुह १३८ (कमलकी डांड़ीके नाम–छन्द) नालानली॥ चालमली १३९ (भसीड़के नाम–चौपाई) मृणाली अरु बिष बिस गाई ॥ चतुर मृणालनाम दरशाई १४० (कमलादिके समूह केनाम–छन्द) शण्ड मान ॥ खण्डजान १४१ (बलको नाम) खण्ड एक ॥ नाम देख १४२ (कमलकी जड़के नाम–चौपाई) सिफाकन्द करहाट कहावे॥ चतुरदास सबको दरशावे १४३ (कमलपुष्प मध्यमें झिलमल होतीहै उ-सका नाम--छन्द) किञ्जल्क देख ॥ चातुर विशेख १४४ (कमल के नई पत्ती व कमलाक्ष के नाम--चौपाई) सं-वर्तिका नाम नवदलये ॥ वंटीक कवलाक्षरी सबलये १४५ (दोहा) रामाजी महराज ये महराणी श्रीगङ्ग॥ चतुरदास मतिमन्द को इनते बनियो अङ्ग १४६ अंग हमारे संगहै रंग हमारो श्याम ॥ संग सदा निम्बारक

चतुरापावै राम १४७ वारिवर्ग्ग पूरणभयो जलजन्तू विस्तार ॥ आदिकाण्ड के बीचमें दशवर्ग्गोंका सार १४८ स्वर्ग वर्ग व्योमादि का दिग तृतिया पहिंचान ॥ काल वर्ग्ग धीवर्ग्ग ये शब्दवर्ग्ग निरवान १४९ नास्व भोगि पातालये नरक वारिवर्ग्गान ॥ आदिकाण्ड अध्यायदश चतुरारचे सुजान १५० (सोरठा) रत्नपुरीरतलाम राज करे रणजीत नृप ॥ जहँ सज्जन मम धाम वहां बनायो कोषये १५१ श्रीनिम्बारकगाय हरि अर्पण कीना यही॥ शुद्धकरो कविराय बालक चतुरा जानिके १५२ ॥ दोहा॥ चतुर नामकल्पद्रुम राख्योनाम विचार ॥ चतुरदासकी आशाको पूरो कृष्ण मुरार १५३ (छन्द) श्रीहरिगावो॥ मुक्तिमनावो १५४ आनंदपावो॥ चातुर ध्यावो १५५॥

इति श्रीजम्बूद्वीपेभारतखण्डेमालवदेशेअवन्तीमहाक्षेत्रेरतलामग्रामे वैष्णवहरिव्यासीश्रीनिम्बार्कमतानुयायीमहन्तश्रीरामाजीचतुर दासविरचितेग्रन्थश्रीअमररघुनाथकल्पद्रुमआदिकाण्डे वारिवर्गवर्णनोनामदशमोऽध्यायः १० ॥

इति अमरकोषभाषायां प्रथमकाण्डःसमाप्तः १ ॥

अमरकोषभाषा

अर्थात्

अमररघुनाथकल्पद्रुम

दूसराकाण्ड

भूमिवर्ग्ग प्रारम्भः ॥

(दोहा) श्रीसर्व्वेश्वर गायके निम्बारक गुरुदेव ॥ चतुरदास अरजी करे करूं चरणकी सेव १ जयभूमी जगतारणी जय जगरक्षक मात ॥ रामदाससुत चतुरका ग्रंथकरो विख्यात २ (पृथ्वी के नाम—कवित्त) भूमि भूमी अचला अनन्ता भू अखण्ड मात क्षोणि क्षौणि क्षोणी ज्यारु धर्म्मकी निसेनीहै ॥ धरती धरा धरणिधरनी धात्री धारत्री विश्वम्भरा वसुधा पै त्रवेनी है ॥ अवनि रत्नगर्भा अवनी महि मही ईला विपुला वसुमती भूमिभारकी सहेनी है ॥ पृथ्वीक्षमा गोत्रा उरबीःजगतीरसागौ अस्थिरा थिरामेदिनी सोकुंभनी धरेनी है १ (दोहा) सर्व्वसहा अरुकाश्यपि वसुंधराकूमान ॥ भूतधात्रि सागर वरा क्षिती गहवरीजान २ (मिट्टी व अच्छी मिट्टीके नाम—चौपाई) मिट्टी मृतिका मृतः बखाने ॥ मृत्स्ना मृत्सा अच्छीजाने ३ (जिसमिट्टीसे अच्छाअन्नउपजे उसके नाम व लोन के नाम) उपजाऊ उरवरा बखानी ॥ ऊषःक्षार मृत्तिका जगजानी ४ (ऊषर के स्थान के नाम) ऊषवान ऊषर बतलाई ॥ स्थल स्थली जान जगमाई ५ (मारवाड़ आदिनिर्ज्जल देशके बिन जोते खेतके नाम) मरुधन्वा

निर्ज्जलये देश ॥ अप्रहतखिल जान नरेश ६ (जगत् के नाम–दोहा) जगती लोक पुनि जगतहै विष्टप बी-ष्टप जान ॥ भुवननाम चातुरकहे या जपले भगवान ७ (हिंदुस्तान के नाम) हिमालय गिरिसे दक्षिण सिन्धू उत्तर देश ॥ ताको जन भारतकहे चतुरा जपै महेश ८ (दक्षिणदेशका नाम) शरावती के पूर्व्व दक्षिण का यह नाम ॥ प्राच्य भेद चातुर कहैं भज श्री श्यामा श्याम ९ उससे पश्चिम देशका नाम उदीच्या मान ॥ चतुरदास की मानके भजले श्रीभगवान १० (फारसका कुलरुम आदिदेशों के नाम–चौपाई) प्रत्यन्त म्लेच्छ देशको गाया। चतुरदासने शब्द सुनाया ११ (पश्चिम देशके नाम–दोहा) विंध्याचल से उत्तर हिमालय से दक्षीन ॥ कुरुपूरव परयाग से देशपश्चिमा चीन १२ मध्यदेश अरु मध्यम है ताहीका नाम ॥ चतुरदास जिनमें बस गावो सीताराम १३ बंगाल सिन्धुसे पश्चिम अरब सिन्धुसे पूर्व ॥ हिमालयसे दक्षिणादेश। विंध्याचलसे ऊर्व १४ (उत्तर देशका नाम–चौपाई) पुण्य भूमि आ-र्य्यावर्त्तजान ॥ उत्तरदेश नाम परमान १५ (राजा के देशमात्र के नाम) नीवृतजन पदनाम महीपा ॥ उपव-र्त्तन विषयदेशहै जीपा १६ (नड़ाधिकदेश जहा बहुत कुमुदहों उस देशका नाम) नड़वान् पुनि नडवल यह देशा ॥ कुमुद्वान यह देश दिनेशा १७ (जहांबहुतसे बेतहों व जहां हरीघासहो उसदेशके नाम) बेतस्वान नाम सहतावन ॥ शाद्वल नाम हरेलीयेजन १८ (बो-दहदेश व जहां बहुत पानीहो उसदेशके नाम) पंकिल

चतुरदास दरसावै ॥ जलप्रायअनुपचैन जहँपावै १९
(काछा व बरुहेदेशके नाम) कच्छदेश काछाका जा-
न ॥ शर्करा अरु शर्करिलमाम २० (बरुहे देशादि व
सिटकिहे देशके नाम) शर्करावान् शार्कर मिन्ता ॥
सिकतासिकतिल जान न चिन्ता २१ (सिटकिहे देशके
बर्त्तनआदि व जहां वर्षा न होय केवल नदीसे खेत
सींचिजावै उसकेनाम) सैकत सिकतावान बखाना ॥
मामनदीमातृक पहिंचाना २२ (जहां वर्षाहीके जलसे
सींचिजावै उसके नाम व धर्मात्मा राजाके देशके नाम)
नाम देवमातृक मनसन्ता ॥ राजन्वान् बाहा नहिंचिन्ता
२३ (सामान्य राजाके देशका व गोठकेनाम) राजवा-
न्स्यामानक जानो ॥ गोस्थान गोष्ठ पहिंचानो २४ (जहां
पर्वकालमें गौ रहीहों उसकानाम व नदीपर्वतादिके पास
कीभूमिकेनाम) गोष्ठीन नाम ताहिका भाई ॥ पर्यंतभु
अरु परिसर भाई २५ (पुलकेनाम व बामी वा ब्यभौरी
केनाम) आली आलिसेतुहै नीक ॥ बामलूर नाकु वल्मीक
२६ (गलीकेनाम–कुंडलिया) अयन मार्गा वर्त्मःपन्था
पन्थहि बाट ॥ पदवी पदबी आध्वा सरणी सृतिःसपाट
२७ सरणीसृतिः सपाट पद्धतीशरणी जानो ॥ पद्याप-
द्धतिमानबर्तनी बर्तन मानो २८ वर्त्मी पुनि वर्त्मनि
एक पदी पुनि राह ॥ चतुरबाट सम्हारके अपनी जोवो
जाह २९ (अच्छीगलीके नाम) अतिपन्था पुनि जान
सुपन्था ॥ सत्पन्था सतपथ हरिकन्था ३० (खराब
गलीकेनाम) कुपथ विपथ कापथहै व्याध्व ॥ दूर्ध्व क-
दध्वरु खोटीआध्व ३१ (जहांगली न होय उसका नाम

व चौहट्टा व चौकके नाम) अपथ अपन्थ गली न वहां पै ॥ शृङ्गाटकचतुष्पथाजहांपै ३२ (जहांबड़ीदूर तक छाया व जल व मनुष्यादि न हों उस मार्गका नाम व चोरआदि कंटकादियुक्त मार्गकानाम) प्रान्तरनाम कठिनकी बाटा ॥ कान्तार चोर कटकैया घाटा ३३ सौकोस व चारसौ हाथकानाम) गव्यूतिहि सौकोस सनन्दा ॥ नल्वहाथ सौयोजनवन्दा ३४ (राजमार्गअर्थात् सड़क व ग्रामके निकासका नाम) संसरणनाम घण्टापथजान॥ उपनिष्करहि निकास पिछान ३५ (द्यावा भूमिके नाम-दोहा) द्यावा पृथिव्यौ रोदस्यो द्यावा भूमी गाय ॥ दिवस्पृथिव्यौ रोदसी चतुरा कहे बनाय ३६ (क्षार समुद्र केनाम-चौपाई) लवणाकर रूमा गञ्जाये ॥ तीननाम चातुर दरशाये ३७ द्वितियकांड मंझार ये भूमीका इतिहास ॥ रामदासका बालका चतुरा बरणेखास ३८ ॥

इति श्रीजंबूद्वीपेभारतखंडेमालवदेशेअवन्तिकामहाक्षेत्रेरतलामनगरेवैष्णव हरिव्यासीमहंतश्रीरामाजीनंदचतुरदासविरचितेभाषाअमररघुनाथ कल्पद्रुमद्वितीयकांडे श्रीभूमिवर्गप्रथमोविश्रामः सम्पूर्णः १ ॥

अथ श्रीद्वितीयकांडे पुरवर्गप्रारम्भः ॥

(दोहा) राधामाधव गायगुण श्रीजीको शिरनाय ॥ पुरवर्गहि वर्णनकरै चतुरदास गुणगाय १ (राजधानी केनाम) पूः पुर पुरी पुरियह नगरी पत्तन जान ॥ पुट भेदन स्थानीनिगम नगर चतुरजनमान २ (राजधानी कोछोड़ अन्यपुर व वेश्याके स्थानका नाम-चौपाई) शाखानगर चतुरजनदेश॥ वेश्याजनहि समाश्रयवेश३

(बाजारके नाम व जहां बाजार न हो पर वस्तु बिकती हो उसकेनाम) आपण निषद्या हट्ट बजारा ॥ पण्य वीथिका विपणि पियारा ४ (बीचग्रामकी गली के नाम व रकबाके पछेड़ के नाम) बिशिखा रथ्य प्रतोलीनाम ॥ वप्र नाम चयकहे सो दाम ५ (रकबा के नाम) वरण साल साला विस्तारा ॥ प्राकार नाम बोलै संसारा ६ (ब्योराही वा ब्यनई के नाम व भीति वा दीवार केनाम) प्राचीन नाम प्राचीर बताया ॥ कुड्यरुभित्ति नाम दरशाया ७ (जिसभीति में पुष्टनार्थ हड्डी रक्खी गईहो उसका नाम) एडूकएडुकण्डोक जान ॥ चतुरकही निश्चय करमान ८ (घरके नाम—कुंडलीछंद) गेहरुगृह उदवासित वेश्म सद्म आगार ॥ पस्त्यवस्त्य अरु सदनये पुनि निशान्त घरसार ९ पुनि निशान्त घरसार निकेतन गृह गुणवन्ता ॥ सदन भवन विस्तार नाम मन्दिर जनसन्ता १० आलय रूप अगारये नितय नाम निस्तार ॥ निकाय जन चातुर कहे सुमिरो सिरजन हार ११ (सभामन्दिर के नाम चौपाई) वासकुटी कुट कुटिःबखानी ॥ शाला सभानामहै ज्ञानी १२ येभी किसी के मत के माई ॥ हैं षटनाम भवनके भाई १३ (चौक के नाम व मुनियोंकी कुटी के नाम) चतुश्शाल सञ्जवनागाई ॥ पर्णशाल पनि उटजा भाई १४ (यज्ञशाला व घोड़सार के नाम) चैत्य आयतन जन सचगाई ॥ वाजिशाल मन्दुरा बताई १५ (राजघर व पौशाला के नाम) शिलिपशाल आवेशन मिन्ता ॥ पानीय शालिका प्रपा अनन्ता १६ (विद्यार्थी अतिथि आदिके गृह व जहां दारू बनै और घरी

जावे उस गृह के नाम) विद्यार्थी अतिथी मठगेह ॥ म-
दिरागृह गञ्जा जहँ केह १७ (घरके बीच के नाम व सूति-
कागृहके नाम) गर्भागार वासगृह जान ॥ अरिष्ट सूति-
का गेह बखान १८ (पक्कीगच व अटाली के नाम) कुट्टिम
नाम नाम निरवान ॥ चन्द्रशाल शीरोगृह जान १९
(झरोखा व मंडपके नाम) वातायन गवाक्षका मिन्ता ॥
जनाश्रया मंडप गुणवन्ता २० (धनवालों के गृह के नाम
व देवता और राजाओं के घरके नाम) हर्म्य स्वस्तिका
अटालिकाये॥ पुनिप्रसाद नृपभवनबताये २१ (राजाओं
के गृहकेनाम) राजसदन सौधा उपकार्या॥ उपकारिका
नाम नृप धार्या २२ (राजद्वारके चार दरवाजाहोवें उसके
नाम दुमहला पंचमहलादिक के नाम) चारि द्वारका
स्वस्तिक नाम ॥ सर्व्वतोभद्र कहे गुणश्याम २३ (जो
गोलाकार बँगलानुमाहो उसका नाम) नन्द्यावर्त जान
गोलारा ॥ चतुरा ये बँगला विस्तारा २४ (राजगृह के
भेद–दोहा) विस्तीरण सुन्दर यह विच्छन्दक परमान॥
त्रिच्छर्दक रूचकये वर्द्धमान जनजान २५ (जहांराजा-
ओंकी स्त्रियांरहैं उसके नाम–चौपाई) अवरोधन अन्तः-
पुरगाई ॥ शुद्धान्तः अवरोध बताई २६ (अटारी व
चौपारिके नाम) अट्टक्षौम क्षोमसत जाण॥ अलिंद आ-
लिंद प्रघण प्रघाण २७ (देहरी अर्थात् चौखट के नाम)
गृहावग्रहणी देहलि मिन्ता ॥ चतुरदास गुण गावत स-
न्ता २८ (आंगन के नाम) अंगन अंगण चत्वर गावे॥
प्रांगण अजिर दिया दरशावे २९ (अथ लतखोरा व
उतरंग का नाम) शिलानाम लतखोरा एक ॥ उतरंग

नासा नामहिपेख ३० (खिड़की व बगलके द्वारके नाम) अन्तर्द्वारि प्रक्षन्नहि मानी ॥ पक्षद्वार पक्षक पहिंचानी ३१ (वरौंनी व छानीके नाम) वलिक नीध्र यह नाम प्रमाना ॥ छदिअरु पटल छानिको जाना ३२ (छज्जा के नाम) बलभी बड़भी बलभिःजान ॥ गोपानसी च-तुर परमान ३३ (कबूतरखाने के नाम व मुहार के नाम) बिटंक कपोत पालिकासार ॥ द्वा द्वार प्रतीहार प्रतिहार ३४ (वेदी व घरके बाहरवाले फाटकके नाम) वितर्दि नाम वेदीका देखो ॥ तोरण बहिर्द्वार घरलेखो ३५ (नगरके बाहरके फाटकके नाम व खजुराके नाम) गोपुर पुर द्वारहि परमान ॥ हस्ति नखा हस्तीनख जान ३६ (कथँवाराके नाम) अरर कपाट कपाट कपाटी॥ अररि कथँवार नाम यहि छांटी ३७ (बेड़ना वा घन्ना व। सररि के नाम व मिट्टी पत्थरआदि की सीढ़ीके नाम) अर्गलाइ अर्गलजन जान ॥ आरोहण सोपान बखान ३८ (काठकी सीढ़ीके नाम) निश्श्रेणीनिःश्रेणिहि सन्त ॥ अधिरोहिणी कहे गुणवन्त ३९ (बढ़नी या झाड़ू व करकट कूड़ाके नाम) सम्मार्ज्जनि शोधनी सरूपा ॥ संकर अवकर कूड़ा कूरा ४० (निसरने व पैठनेके नाम) मुख निस्सरण सुनो सतवन्ता ॥ सन्निवेश निष्कर्षण सन्ता ४१ (ग्राम व घरकी भूमिका नाम) ग्राम संवसथ चतुर बतावे ॥ घरकी भूमि वास्तु दरशावे ४२ (ग्वैंड़े कीभूमि व सीमाकेनाम) उपशल्य नामजानोगुणवन्ता ॥ ग्रान्तसीमा सीमा सतवन्ता ४३ (अहीरों के ग्रामके नाम) आभिरपल्लि घोष घननाम ॥ अमरकह्यो चातु-

कसीसहि पुनिवाहार ॥ चतुरदास कीन्हा विस्तार २१ (जहां कि बहुत लता तृणादिसे घिरीहों उसके नाम) निकुञ्ज कुञ्जये चतुरा गावे ॥ शैलवर्ग पूरण दरशावे २२॥

इति श्रीजम्बूद्वीपेभारतखण्डेमालवदेशेअवंतीक्षेत्रेरतलामनगरेहरिव्यासी वैष्णवरामाजीनंदचतुरदासाविरचितेग्रंथश्रीअमररघुनाथकल्पद्रुमभाषाद्वितीयकांडेशैलवर्गेतृतीयोविश्रामःसम्पूर्णः ३ ॥

अथ वनौषधिवर्गप्रारम्भः ॥

(दोहा) जयवल वनमाली प्रभू मही वाटिका बाग॥ ताते ओषधि चूनके चतुरा लीन्हीं मांग १ (वनकेनाम) विपिन गहन कानन वन अटवी अटविःजान ॥ चतुरदास आरण्य इक ये वननाम बखान २ (बड़ेवन व घर के समीप बनाये हुये वनके नाम—चौपाई) अरण्यानी रूप महारण सन्ता ॥ गृहाराम निष्कुट बलवन्ता ३ (गृह समीप जो वन होय उसका नाम और जहां राजा के नौकर चाकर और उनकी वेश्या रहैं उनके नाम) उपवन पुनि अराम वाटीका ॥ वृक्ष वाटिका है जहँनीका ४ (जहांराजा स्त्रियों के साथ क्रीड़ा करे उस वनके नाम) उद्यान पुनि आक्रीड़ सघन वन ॥ चतुरदास आरामी क्षां तन ५ (पंक्तिके नाम—दोहा) वीथी विथि अलिआवली आली आवलि जान॥ पंक्तिहिश्रेणी श्रेणिका पंक्ती चतुरा मान ६ (वनलकीर और वनके झुंडके नाम—चौपाई) लेखारेखा राजिव जान ॥ वन्या नाम झुंडका मान ७ (अंखुआके नाम) अंकुर पुनि अंकूर सो सन्त ॥ अँखुवा सुन चतुरा बलवन्त ८ (वृक्षों के नाम—दोहा) शाल साल शाखी द्रुम वृक्ष तरू पा-

लाश ॥ द्रु आगम विटपी कुट महिरुह पादप ताश ९ (जो फूल करके फरैं जैसे आम्रादि व विना फूल करके फरैं जैसे गूलर कटहर उनके नाम-चौपाई) फूल सहित वानस्पति जान ॥ बिनफूल का वनस्पति मान १० वृक्षमात्रों को भी वनस्पति कहते हैं (अन्नके नाम व फरैया वृक्षके नाम) ओषधि ओषधी अन्नवृताथा ॥ फलेग्रही आवन्ध्य हि गाथा ११ (नहींफरैं उनके नाम व फरेहुये वृक्षके नाम) बन्ध्या बन्ध्य अफल अवकेसी ॥ फलिन फली फलवान घनेसी १२ (फूलवाले वृक्ष के नाम-दोहा) उत्फुल सम्फुल प्रफुल्लित स्फुटहि पुल्ल व्याकोष ॥ प्रफुल्ल विकच व्याकोषहै चतुराकही फुलोष १३ (छांटेहुये वृक्षोंके नाम व जिसमें छोटीछोटी डालियां और जड़ैंहों उसके नाम-चौपाई) ध्रुव स्थाणु शंकूहै सेण ॥ क्षुपः जड़ी डारीकावेण १४ (ठूंठकेनाम) स्तंबरुगुल्म नाम गुणवन्ता ॥ चतुरदास गुण गावतसन्ता १५ (बँवरके नाम-दोहा) वल्ली बल्लि:बेल्लिये व्रतनी लताबखान ॥ प्रतति व्रतती मानमन चतुरा किया सुजान १६ (बड़ी लम्बी बँवरिके नाम-चौपाई) उलप गुल्मिनी विरुत बखान ॥ हरिव्यासी चातुरकीमान १७ (वृक्षोंकी उँचाई के नाम) उच्छ्रय पुनि उत्सेध प्रमान ॥ उच्छ्रयनाम चतुर सतमान १८ (वृक्षकी पींड व वृक्षकी डालके नाम) प्रकाण्ड स्कन्धनाम कहलावे ॥ शाखा लता जगत यशगावे १९ (मोटेजड्डा व जड़के नाम) स्कन्धरु साखा शाखा मान ॥ शिफा जटा जड़ को पहिंचान २० (बरोह व टेराके नाम) बरोह पुनि

अवरोह सुजान ॥ शिखर शिरोग्रहि टेरामान २१ (मि-
ट्टीके भीतरकी जड़ व गुद्दाके नाम) मूल बुध्नहै अंघ्री
नामक ॥ मज्जासार गुदाहै दामक २२ (बकला व काठके
नाम) त्वक् त्वच नाम बलक वल्कलये ॥ दारु काष्ठ काठ
मिलसबये २३ (ईंधन व यज्ञादिक के ईंधनके नाम)
इध्म एध इन्धनजन सन्ता ॥ समित एध इन्धन यज्ञन्ता
२४ (खंदिला के नाम) निष्कुह नाम कोटर गुणवाना ॥
चतुरदास गावे भगवाना २५ (मंजरी के नाम-दोहा)
बल्लरि बलरी मंजरी मंजरि यह जगजान ॥ चारनाम
चातुर कहे गायगाय भगवान २६ (पत्ताके नाम) पत्र
पलाश छदनदल छन्द ॥ वर्ण चतुरजन गावत बन्द २७
(पल्लव व डारों के फैलवे के नाम) पल्लव किशलय मानो
मिन्त ॥ विटप नाम विस्तारा सन्त २८ (फल व ढ्योंराके
नाम) फल फर सस्य शस्य यह नामा ॥ प्रसव बन्धनअरु
वृन्तक दामा २९ (कच्चे व सूखे फलके नाम) कच्चे फल
शलाटुहै भाई ॥ सूखेफल येवान कहाई ३० (नईकली
व विना फुलानी कली के नाम) क्षारक जालक नाम ब-
नाये ॥ कलिका कोरक कोष बताये ३१ (गुच्छा व अध-
फुलानी कली के नाम) गुच्छक पुनिस्तवक बतलाये ॥
मुकुलरु कुड्मल नाम दिखाये ३२ (फूलके नाम) सु-
मनरु पुष्प कुसुम गुणवन्ता ॥ प्रसून नाम चातुर जन
सन्ता ३३ (फूलके रस व फूलकी धूलिके नाम) पुष्प-
करस मकरन्द कहावे ॥ सुमनोरज पराग दरशावे ३४
(हर्रके फल व पीपरके फलके नाम) हरितकि नाम हर्र
फल मिन्ता ॥ आश्वथ फल पीपल का सन्ता ३५ (बां-

सके फल व पकाड़िया के फलका नाम) वैष्णवफल बांसे का जानो ॥ ह्लक्ष पकाड़ियाको पहिंचानो ३६ (बरगद व पांखी के फलका नाम) फल बरगद न्यग्रोध बताया॥ ऐंगुद पांखीकर दरशाया ३७(भटकटैया व फरेंदाके फल का नाम) बाहेत नाम भटकटैया जान ॥ जम्बुजम्बू जाम्बव मान ३८ (जातीफलके नाम) जातीफल जाती गुणवन्ता ॥ चतुरदास गावत जन सन्ता ३९ (पीपरके नाम–दोहा) चलदल पिप्पल अश्वत्थ बोधि द्रुम दरशाय ॥ नाम कुंजराशन इक चतुरदास गुणगाय ४० (कैथा के नाम) कपित्थ कवित्थ मन्मथ यह ग्राही दधित्थ बखान ॥ दन्तशाठ दधिफल कहे नाम पुष्प फल जान ४१ (गूलरके नाम) जन्तूफल यज्ञांग है हेम दुग्धका जान ॥ उदुम्बरी अरु उडुम्बरी गुलरी नाम बखान ४२ (कचनार के नाम) युग पत्रक चमरीक है कोविदार कचनार ॥ पुनि कुदाल चातुर कहे पांचनाम विस्तार ४३ (छतिवनके नाम) विषमच्छद शारद कहे सप्तपर्ण जगजान ॥ विशलत्वक चातुर गुणी शारदीह संतमान ४४ (किरवार अमलतास के नाम) आरग्वध आरग्वधे आर्ग्वध अरु शम्पाक ॥ राज वृक्ष शाम्पाकये चतुरा दीनी शाक ४५ आग्वेत चतुरंगुलः व्याधिघात कृतमाल ॥ सुपर्णक सुवर्णक नाम ये चतुरा रचे रसाल ४६ (जंभीरी निम्बूके नाम) जम्बिर पुनि जम्बीर ये दन्ताशठ जंभीर ॥ जंभल जंभर जंभये चतुरा वरणत वीर ४७ (वारुण के नाम–चौपाई) वरुण कुमारक वरुणा सेतु ॥ तिक्तशाक चातुरजन हेतु ४८ (नाग-

केसर के नाम) पुन्नाग पुरुष केसर केशर ये ॥ देव
वल्लभ पुनि तुङ्ग रङ्गये ४९ (बकैना के नाम) कही
निम्बतरु अरु परिजातक ॥ पारिभद्र मन्दार महाशाक
५० (तिशवनके नाम-दोहा) स्यन्दन नेमी नेमि-
का अति मुक्तक रथद्रुजान ॥ बंजुल अरु पुनि तिनि-
शहै चित्रकृत अमर बखान ५१ (अम्बार के नाम-
चौपाई) आधातक पीतन कपितनये ॥ आम्रातक पुनि
अम्बारकये ५२ (महुआके नाम) मधुद्रुम मधुल
मधुक मनराया ॥ मधुल मधुक गुड़ पुष्प बताया ५३
वानप्रस्थ मधुष्ठील जानो ॥ अष्टनाम महुआके मानो ५४
(पहाड़ी महुआके नाम) मधुलक नाम चतुर दरशावे ॥
महुआ यक पहाड़ि पदपावे ५५ (पीलूके नाम) पीलू
गुड़फल स्रंसीगाई ॥ पीलुनाम सबही मनभाई ५६ (प-
हाड़ी पीलूके नाम-दोहा) अक्षोड़रु अक्षोटये कन्दरा-
ल कर्प्याल ॥ आक्षोड़ आचोटज आखोटक यहबाल ५७
(अंकुहर के नाम-चौपाई) अङ्कोटरु अङ्कोठ निको-
चक ॥ अङ्कोल नाम जानोह निकोठक ५८ (छिउलके
नाम) पलाश किंशुक पर्ण बताया ॥ बातपोथ चातुर
दरशाया ५९ (वेतके नाम) वेतस रथ शित वानिरवे-
तू ॥ अभ्र पुष्प बंजुल विदुलेतू ६० (पानीके वेतके
नाम) अम्बूवेतस पुनि परिव्याध ॥ विदुलनाम नदिये
पुरसाध ६१ (सहिंजने के नाम-दोहा) सोभाञ्जन
सौभाञ्जन शोभाञ्जन शौभाञ्ज ॥ तीक्षण गन्धक आक्षिव
शिग्रु मोचक आच्छाञ्ज ६२ (लाल फूलवाले सहिंजन
व रीठीके नाम-चौपाई) मधुशिग्रु फूललाल बतलावे॥

फेनिल अरिष्ट रीठीगावे ६३ (बेलकेनाम) शैलुष मालुर शांडिल्य श्रीफल ॥ बिल्व नाम चातुर जन येबल ६४ (पकरियाके नाम) पर्कटीहै पर्कटि जटि जटी ॥ प्लक्ष नाम चातुर हटि हटी ६५ (बरगदके नाम) बहु पातरु न्यग्रोध बखानो ॥ बटका नाम चतुर नयमानो ६६ (लोध के नाम–दोहा) गालव शाबर साबर तिरिटलोध्र यह जान ॥ तिल्व नाम मार्ज्जन पुनि लोध्रनाम निरवान ६७ (आमके नाम–चौपाई) आम्र रसाल रशाल दिखाया॥ चूत नाम आमहि बतलाया ६८ (सुगन्धित आम का नाम) सहकार नाम सुगन्धित आम॥ चतुरदास गावे घनश्याम ६९ (गूगुल के नाम) कौशिक कुम्भ नाम गूगुल पुर॥ लुखलक गूगुल जान जहां नर ७० (लसोढ़ाके नाम) शेलु सेलु श्लेष्मातक शीत ॥ बहुवारक उद्दाल जानो बीत ७१ (चिरौंजी के नाम–दोहा) राजादन राजातन धनुष्पट धनुप्पटजान ॥ पियाल प्रियाल प्रमान है सन्न कद्रु परमान ७२ (खंभारि के नाम) गंभारी काभारिका सर्वतोभद्राकार ॥ काश्मरी पुनि काश्मरी मधुपर्णिका पुकार ७३ (चौपाई) काश्मर्य्य श्रीपर्णी जान॥ भद्रपर्णी पुनि नाम बखान ७४ (बेरकेनाम) कोली कोलि अरु कोला बदरी॥ कर्कन्धु नाम करकधूः सदरी (बेरके फलके नाम) बदर कोल कूबल सौवीर॥ सौवीर्य्य फेनिल घोण्टा धीर ७६ (कँटाय के नाम–दोहा) स्वादुकंटकरु ग्रन्थिल सुवा वृक्ष पहिंचान॥ वोकंकत वैकंकत व्याघ्रपात जन जान ७७ (नारंगीके नाम–चौपाई) भूमि जम्बुका पुनि नारंगी॥ नादेयि ऐरावत

हैं जंगी ७८ (तेंदूके नाम) तिन्दुकी तिन्दुक कालसि
कंधा ॥ स्फुर्जक शिनि सारक बन्धा ७९ (कडुवे तेंदू
के नाम) काकहि तिन्दुक काक्का पीलुक ॥ कुलक नाम
है पुनि काकेन्दुक ८० (कठियाडरि के नाम) मुष्ककमो
क्ष पाटली घंटा ॥ झाटल गोलीढ़ घंटा पाटंटा ८१ (ति-
लक व झाऊके नाम) श्रीमान तिलक पुनि क्षुरक जान॥
पिचुल पुनः झाबुक जसमान ८२ (कैफराके नाम)
श्रीपर्णिका कुमुदिका कुंभी ॥ कैडर्य्यरु कंकल कठरंभी
८३ (पठियालोधके नाम) क्रमु कहे पट्टीनाम विचार॥
पाट्टिकाख्य नाम त्रयरार ८४ लाक्षा प्रसादन चौथा मि-
न्त ॥ चतुरदास गुणगावत सन्त ८५ (पाइर्वपिप्पल
वा तूत के नाम) तूद नूद यूप हैं ब्रह्मदारु ॥ ब्रह्मण्यं
तुल क्रमुदअवतारु ८६ (कदम्बकेनाम) हलिप्रिय
प्रियक कदम्ब सुजान ॥ नीपनाम कागद परमान ८७
(भिलावांकेनाम) वीरवृक्ष अरुष्कर अग्निमुखिया ॥
भल्लातकी भिलावां ढ्रसिया ८८ (गेठीके नाम) कन्द-
राल कपितन पलक्षये ॥ गर्द्दभांड सूपाइर्वक गठये ८९
(अमिली के नाम-दोहा) तिन्तिलीः तिन्तिडीका अ-
म्लीक चिञ्चाजान ॥ आम्लिक अम्लिक आम्लिका ये
अमलीकप्रमान ९० (विजयसारके नाम) सर्ज्जक अ-
सन आसन यह पीत सारक पहिंचान ॥ जीवक बन्धुक
पुष्पहे प्रियकजान यशवान ९१ (साखूकेनाम) स-
स्यसम्बर शस्यसंबर ये अश्वकर्ण का शाल ॥ सर्ज्ज
साल पुनि कार्श्यक कार्य्यनामये आल ९२ (अर्ज्जुन
वृक्ष केनाम-चौपाई) नदीसर्ज्ज पुनि वीरतरु अर्ज्जुन॥

ककुभ इन्द्रद्रु नाम कतरजुन ९३ (खिन्नीकेनाम) क-
लाध्यक्ष राजादन नाम ॥ क्षीरीका चातुर गुणदाम ९४
(पांखीकेनाम) तापसतरु इंगुदि जनगाथे ॥ इंगुदि
नाम चतुरदरशावे९५ (भोजपत्रवृक्षकेनाम) भुर्ज्ज च-
र्मी मृदुत्वक् त्रयनाम ॥ चातुरजन गावो सियराम९६
(सेमरकेनाम) शाल्मलि शल्मलि शल्मल मोचा ॥
स्थिरायु पूरणी पिच्छिलोचा ९७ (सेमरके गोंद व का-
ले सेमरकेनाम) पिच्छा शाल्मलिवेष्ट बखान ॥ रोचन
कूट शाल्मली सुजान ९८ (कञ्जी के नाम) नक्तमाल
चिरिबिल्वि करञ्ज ॥ रक्तमाल चिरिबिल्व हरञ्ज ९९
करजभी याका नामहै (कञ्जाकेनाम--दोहा) पूतिकरज
पूतीकरज पूतिक पुनि करञ्ज ॥ कलि मारक पूतीक
पुनि प्रकीर्य्य नाम यह कञ्ज १०० (कञ्जा के भेद-
चौपाई) अंगार वल्लरी अरु षड्ग्रन्थ ॥ मर्कटि चतुरा
गावे सन्त १०१ (गुलेनारके नाम) रोही रोहितक
प्लीह शत्रुसत ॥ दाड़िम पुष्पक जानो जनमत १०२
(खैरकेनाम) बालतनय गायत्री जान ॥ खदिर दन्त
धावन पहिंचान १०३ (रीवांके नाम) विट्खदिररु
अरिमेद बताई ॥ रीवांनाम चतुर दरशाई १०४ (दू-
धियाखैर के नाम) करदरु सोमवल्क गुणगाया ॥ दु-
धियाखैर चतुर दरशाया १०५ (रेड़केनाम--दोहा)
व्याघ्रपुच्छ एरंडये गन्धर्व हस्तक जान ॥ उरुबूक उरु-
बुक रुबुकये रुबुक रुचक परमान १०६ वर्द्धमान पंचां-
गुल चित्रक चंचू आम ॥ व्याडम्बक व्याडम्बनअमंड
मंड यहनाम १०७ (छोटी समी और समीके नाम)

छोटी सभी समीर कहाये ॥ सक्तुफला शीव्रासमिसाये १०८ (मैनफल के नाम–दोहा) पिंडीतक मरुवक मदन करहाटक गुण गाय ॥ शवसनशल्य चतुर कहे मैनफरा दरशाय १०९ (देवदारुके नाम) देवदारु परिभद्र पुनि काष्ठदारु दरशाय ॥ द्रुकिलिम पीतादारुक शक्र पादपा गाय ११० (चौपाई) भद्रदारु सतमा सुजान ॥ देवदारु का यह परमान १११ (पाडरिके नाम–दोहा) मोघ अमोघा पाटली काचस्थालीरुह ॥ कृष्णवृन्तारुपाटला कुबेराक्ष पटलूह ११२ (काकुनि के नाम–कुण्डलिया) महिलाह्वया लताफली गोवन्दनी पुकार ॥ श्यामा गुंद्रीप्रियंगू विष्वक्सेना सार ११३ विष्वक्सेनासार नाम फलिनी बतलाया ॥ गंधफली कारंध प्रियक सब जन ने पाया ११४ चतुरदास काकूनि का दिये नाम दरशाय ॥ श्रीमोहन महराजने रची ओषधी आय ११५ (सरिवनके नाम–दोहा) शोणक शोनक सोनक स्योनाका है शुकनास ॥ दीर्घवृन्त शौनाक ये अरलु अरटु जनदास (चौपाई) टुंटुक पुनि पत्रोरण मान ॥ मण्डूक पर्णकवंगंजान ॥ कुटन्नटा नट अक्ष कहावे ॥ चतुरदास आनँद गुण गावे ११६ (अंवराके नाम) आमलकी आमलका अम्ब ॥ तिष्यफला अमृतासोरम्ब ॥ वयस्थाभी अंवराका नामहै ११७ (बहेरा के नाम) अक्षातुष कर्षफल मिन्ता । भूतावास कलिद्रुम सन्ता ॥ विभीतक नाम बिभीतक जान ॥ चतुरदास कीन्हा परमान ११८ (हर्रेके नाम–दोहा) पथ्यपूतना अमृता शिवा हरीतकि मान ॥ हैमवती श्रेयसी चित कायथ अ-

व्यत्थान ११९ (सरलाके नाम) सरला पुनि पुतिका-
ष्ठक नाम ॥ पीतद्रु चतुर कहे गुणग्राम १२० (कठच-
म्पा के नाम) करणीकार द्रुमोत्पल मिन्ता ॥ पुनि परि-
व्याध कहे गुण सन्ता १२१ (बड़हर के नाम) डुहुडुहु
लकुच लिकुच नरमान ॥ रचियाश्री वनमाली जान
१२२ (कटहरके नाम) कण्टकिफल फलसा गुणगाय ॥
कंटकफल पनसा दरशाय १२३ (समुद्रफलके नाम)
अम्बुज पुनि हिंजला निचूल ॥ नाम समुद्र फलहि के
मूल १२४ (कठूमरिके नाम) काकोदुम्बरिका पुनि फ-
ल्गु ॥ जघनेफल मलयू मलुपूनगु १२५ (नींबके नाम-
दोहा) अरिष्ट सर्वतोभद्र ये पिचूमर्द पिचु मन्द ॥ हि-
ङ्गुनिर्य्यासहि मालक निम्ब आदि आनन्द १२६ (सिर-
सई वा सीसमके नाम) अगुरु पिच्छिलाशिंशपा कपिला
अगुरूजान ॥ भस्मगर्भ अरु शिंशुपा सीसम सरसी
मान १२७ (शिरसा के नाम-चौपाई) शिरिष कपी-
तन भण्डिल मान ॥ भाण्डिर भण्डिल चातुर जान १२८
(चम्पाके नाम) चम्पा चम्पक चम्पय सन्त ॥ हेम पु-
ष्पहै बुद्धीवन्त १२९ (चम्पाके फूलका नाम) गन्धफ-
ली चम्पाका फूल ॥ एक नाम जग जाहिर मूल १३०
(मौनशिरी के नाम) केसर केशर बकुल बखान ॥
चतुरदास कीन्हा परमान १३१ (अशोक के नाम)
वञ्जुल नाम अशोक सुजान ॥ लिखिये अमरकोष अनु-
मान १३२ (अनारके नाम) दालिम डालिम करक सु-
जाना ॥ दाड़िम पुनि दाड़िम्ब बखाना १३३ (नागके-
सरके नाम) नागकेसररु केसरचाम्पय ॥ कांचनाह्वे

नाम सुआलय १३४ (जाहीके नाम) जया जयंती नादेयि नाम ॥ वैजयन्तिका तर्कारि दाम १३५ (अरणी के नाम) अग्निमन्थ कर्णीका जय ॥ श्रीपर्णागणिकारि कतय १३६ (कुरैयाके नाम) गिरिमल्लिका नाम पुनि वत्सक ॥ कुटज सक्र जन चातुर केतक १३७ (इंद्रय-व अर्थात् कुरैयाके फलके नाम) कलिंग नाम इन्द्र यव भाई ॥ भद्रयवा तृतिया दरशाई १३८ (करौंदाके नाम) कृष्णपाक फल पुनि करमर्दक ॥ आविग्न सुषेण अविग्ना अर्दक १३९ (तमालके नाम) तापिछ पुनि ता-पिंज तमाल ॥ कालस्कन्ध बनायोलाल १४० (म्योड़ी के नाम) सिन्धुक सिन्दुक सिन्दुवार ये ॥ इन्द्र सुरिस पुनि इन्द्र सुरसये ॥ निर्ग्गुण्डी निर्ग्गुण्ठी भारी ॥ इन्द्रा-णिका नाम विस्तारी १४१ (ब्रन्दाल वृक्ष जो गुजरात में गौड़ीनाम से प्रसिद्धहै उसके नाम–दोहा) वेणी गु-रागरी सुना देवताड़ जीमूत ॥ गरागरी अगरी खरा करेन कोऊलूत १४२ (घुइयांकेनाम–चौपाई) श्रीह-स्तिनियहनामभुरुण्डी ॥ घुइयाँनाम सुनोजन डण्डी १४३ (बेलाके नाम) शीतभीरु भूपदी मल्लिका ॥ शतभीरू तृण शून बल्लिका १४४ (वनबेलाके नाम) नाम आस्फोता दरशाया ॥ आस्फोटा द्वितियादिखला-या १४५ (म्यवाड़ीके नाम) शेफालिकासुवह निर्ग्गु-ण्डी ॥ सीफालिका नीलनर वण्डी १४६ (उजलीन्य-वाड़ी के नाम) भूतवेशि पुनि श्वेतहि सुरसा ॥ चतुर-दासने अम्मर परसा १४७ (जुहीके नाम) गणिक यूथिका नाम मागधी ॥ अंबष्ठा जन कही कागधी १४८

(पीले फूलकी जुहीका नाम) हेमपुष्पिका कह गुणधाम। पीलापुष्प जुहीका नाम १४९ (बसन्ती के नाम) पुण्ड्रक लता माधवी जान ॥ वासन्ती अतिमुक्त सुजान १५० (चमेलीकेनाम) सुमना जाती सुमना जाती ॥ मालतिनाम चमेली वार्ता १५१ (वर्षाकीबेलीकेनाम) नवमालिकासप्तलाजान ॥ चतुरा वर्षाबेलि पिछान १५२ (कुन्दकेनाम) कुन्द माध्य दोउ नाम बखान ॥ कुन्दाके-रानामसुजान १५३ (दुपहरिकेफूलके नाम) रक्ताब-न्धुक बन्धू मिन्ता ॥ नाम बन्धुजीवक जनसन्ता १५४ (घिउकुआरि व कटसरैया के नाम) सहा कुमारी नर-णी जान ॥ महासहा अम्लान पिछान १५५ (लाल कटसरैया के नाम) कुरुवककुरवक नाम दिखाया ॥ च-तुरदास दासन हितगाया १५६ (पीली कटसरैया के नाम) कुरण्टका कुरुंटकजान ॥ चतुरदास कीन्हा पर-मान १५७ (नीलीझिंडी के नाम) आरतगलपुनिदासी नाम ॥ अर्तगलापुनिवाणादाम १५८ (झिण्डीमात्र के नाम) सैरेयक सैरीयकजान ॥ झिंडी नाम कहे परमान १५९ (लालझिंडीका नाम) कुरुवक लाल झिंडिका नाम ॥ चतुरदासकह भजसियराम १६० (पीलीझिंडी के नाम) कुरंटक नाम सहचरी जान ॥ सहचर नाम तीसरा मान १६१ (गुड़हरके पुष्प के नाम) ओड्र-पुष्प नामहि पहिंचान ॥ जपापुष्प द्वितिया यह जान १६२ (तिली के पुष्प का नाम) वज्रपुष्प तिलिका पहिंचान ॥ चतुरदास भज ले भगवान १६३ (कँद-इल के नाम—दोहा) प्रतीहास प्रतिहास ये हयमारक

करवीर ॥ चंडातरु शतप्रास ये चतुर कहे धरधीर १६४ (करील के नाम—चौपाई) क्राकल नाम करीर कहाया ॥ ग्रन्थिल भेद चतुर दरशाया १६५ (धतूर के नाम—दोहा) उन्मत्त धर्त धत्तूरय धूर्त्त मदन मातूल ॥ कनकाह्वय धुस्तर यह कितवजान नरसूल १६६ (धतूरे के फलका नाम—चौपाई) मातुल पुत्रक ये बलवन्ता ॥ चतुरदास गुण गावत सन्ता १६७ (बिजौरा निंबू के नाम) बीजपूर फलपूर बखाना ॥ मातुलुंग पुनि रुचक सुजाना १६८ (देवना के नाम) मरुबक नाम समीरण सन्त। जम्बिर जंभिर मानो अन्त ॥ प्रस्थपुष्प फाणिज्जक जानी। चतुरदास निश्चय कर मानी १६९ (बबई के नाम) कठिञ्जर पुनी कुठेरकमान ॥ पुनि पर्णास चतुर जगजान १७० (उजली बबई के नाम—छंद) अर्ज्जक एक॥ धरमनटेक १७१ (चीतके नाम—चौपाई) वह्निसंज्ञक अरु चित्रकपाटी ॥ कंठपड़ी करलेहु सपाटी १७२ (मदार के नाम—दोहा) अर्क्काह्व आस्फोटक वसुक अरु वसूक अस्फोत ॥ अर्क्कपर्ण मन्दार है विकिर्ण विकीरण होत १७३ (उजले मदार के नाम—चौपाई) अलर्क्कपुनी प्रतापसगावे ॥ उजले मंदारक दरशावे १७४ (गूमाके नाम) शिवमल्लीपशुपत एकाष्ठिल ॥ बुक बकबसू जानलो जगमिल १७५ (बांदाके नाम) वृक्षरुहा वन्दा वृक्षादनि ॥ जीवन्तिका जान जगतासनि १७६ (गुर्चके नाम) छिन्नरुहा वत्सादनि नाम ॥ गुडुची अमृतगुडूचीदाम ॥ तंत्रिकनामषटहिगुणवन्ता ॥ चतुरदास गुण गावत सन्ता १७७ (दोहा) सोम-

वाह्लि जीवन्तिका मधुपर्णी परमान ॥ विशल्या पुनि दश-
मा यह गुरुची नाम सुजान १७८ (चिनार के नाम)
सूर्व्वा देवी मधुरसा मुर्व्वी मोरट जान ॥ स्रवा तेजनी
श्रुवा सत मधूलिका जन मान १७९ (चौपाई) मधु-
श्रेणी गोकर्णी भिन्त ॥ पीलूपर्णी चतुरा सन्त १८०
(पाढ़ीके नाम) अविधकर्णिविधकर्णी भाई ॥ अम्बष्ठा
श्रेयसी गनाई ॥ स्थापनीरसापाढ़ा ये ॥ चतुरदास गावे
गुणिया ये ॥ एकष्ठीला पापचेलि जन ॥ प्राचीना वन
तिक्तिक गुणि मन १८१ (कुटकी के नाम) कठम्बरा
पुनिकटंभरागुन ॥ आसौकरोहिणीकटुजाहिरसुन १८२
कटुरोहिणी अशोका नाम ॥ पुनि रोहिणी सुनो गुणधाम
१८३ कृष्ण भेद पुनि कृष्णहि भेद ॥ मत्स्य पिता चक्रां-
गी वेद ॥ शकुलादनी चतुर दरशाई ॥ नाम पढ़ो रघु-
वर गुणगाई १८४ (क्यँवाच के नाम) अजहा जड़ा
अवण्डादेख ॥ प्रावृषायणी कँडुरापेख ॥ आत्मगुप्त पुनि
है कंडूरा ॥ ऋष्यप्रोक्त कपिकच्छू पूरा ॥ शूक शिम्बि शुक
शिम्बा नाम ॥ कच्छु मर्कटी भजु सियराम १८५ (सू-
सरिके नाम—दोहा) सुतश्रेणी शम्बरिवृषा चित्रा उप-
चित्राश ॥ द्रवन्ती रवडा चण्डा मूषपर्णि परकाश १८६
(चौ०) प्रत्यकश्रेणि न्यग्रोधी जान ॥ चतुरदास लि-
खिया परमान १८७ (लहचिचिंड़ा के नाम—दोहा)
मयूरकआधा मार्ग्गव अपामार्ग शिखरीक ॥ केशपर्णी
अधामार्गव पुनि जानो किणिहीक १८८ (चौपाई)
प्रत्यकपर्णी खरमंजरी ॥ चतुरदास गाया चिचिंड़री
१८९ (भारंगी के नाम—दोहा) फंजिक बर्द्धक हञ्जिका

ब्रह्मयष्टिका मान ॥ ब्राह्मणि पद्मा भारगी अंगारवली पहिंचान ॥ वालेय शाक अरु बर्ब्बर नामभी भारंगी काहे १९० (मँजीठके नाम–चौपाई) विकस नाम मंजिष्ठा विकषा ॥ कालमेषिका जंगी दिकषा ॥ योजनवलि भंडीरी भंडी ॥ समंग मंडुकपर्णी डंडी १९१ (यवासा के नाम) यास यवास दुस्स्परश मिन्ता ॥ धन्वयास धनुर्यासा अन्ता ॥ रोदनि चोदनि कच्छुर नाम ॥ कुनाशक पुनि दुरालभा दाम ॥ समुद्रान्ता भी यहीहै १९२ (पिथिवन के नाम) धावनि कलशी कलसी धावनि ॥ पृथकपर्णि पुनि गुहा सुहावनि ॥ क्रोष्टु विन्न सिंहपुच्छि सुजाना ॥ अंघ्रिवल्लिका चित्र प्रणाना १९३ (भटकटैया के नाम) कंटकारिका बृहती व्याघ्री ॥ निदिग्धिका रुप्टसोसत साघ्री ॥ प्रचोदनी कुलि क्षुद्रा मान ॥ दुःस्पर्शा राष्ट्रिका बखान १९४ (नीलके नाम) क्लीतकिका नीली पुनि काला । मधुपर्णिक ग्रामीणा बाला ॥ श्रीफलि तुत्थ रञ्जनी जान । दोला द्रोणी तुणी मिलान ॥ नीलनी भी याको नाम है १९५ (बकुची के नाम) कृष्णाफला सुवल्लि कलमेषी । अवल्गुजा सोमराजी तेषी ॥ सोमवल्लिका कालवेषिजन । बकुची पूतिफली बगुजीवन १९६ (पीपरके नाम–दोहा) कृष्णा चपला मागधी उपकुल्या वैदेहि ॥ कणा रुडषणाऊषणा पिपली शौंडीसेहि १९७ कोला पिपली नाम सुजाना ॥ चतुरदास रचि कहे प्रमाना १९८ (गजपीपरके नाम) ग्रशिर कोलवल्ली कपिवल्ली ॥ करिपिप्पली श्रेयसी मल्ली १९९ (चावके नाम) चव्य चव्या चविका चविकी है ॥ चविक नाम चातुर

जनई है २०० (घुँघुची के नाम) काकचिञ्चि ककचि-
ञ्चिहि गुञ्जा ॥ काकचिञ्च कृष्णल हरहुञ्जा २०१
(गूखुरके नाम) पलंकषा पुनि ईक्षूगन्धा। श्वदंष्ट्रारु
गोकंटक बन्धा॥ गोक्षुरक स्वादूकंटक जत। नव शृङ्गाट
नाम चातुरमत २०२ (अतीसके नाम) अरुण महौषध
अतिविषशृङ्गी। उपविष विषा सो प्रतिविष दृङ्गी॥
विश्वाभी इसी का नामहै २०३ (दूधी के नाम) दुग्धिक
नाम क्षीरवी सन्त॥ चतुरदास गावत गुणवन्त २०४
(शतावरी के नाम) नारायणि इन्दीवरवरी। शतावरी
शतमूली सरी॥ अहेरु अभीरु अभीरूपत्री। बहु सुत
ऋष्यप्रोक्ता यत्री २०५ (दारुहरदीके नाम—दोहा)
कालीयक कालेयक पीतद्रु हरिद्रू जान॥ दार्व्वी पुनी प-
चम्पचा पर्ज्जनीय पहिंचान २०६ (चौपाई) पचंपचा
पुनि दारुहरिद्रा॥ चतुरदास गुण गावत मद्रा २०७
(बचके नाम) षड्ग्रन्था गोलौमी वचा॥ शतपर्विक
उग्रगन्धा कचा २०८ (उजलीबचका नाम) हैमवती
उजलीबचनाम॥ चतुरदास गावे सियराम २०९ (रूस
के नाम—दोहा) वासिकसिंही वासिका वैद्यमात परमा-
न॥ वासक वृष सिंहास्यहै वाजीदन्तक जान २१०
(चौपाई) अठरुष अटरुष नाम बखाना॥ दश अवतार
नाम जगजाना २११ (विष्णुकान्ताके नाम—दोहा)
अस्फोता गिरिकर्णिका अपराजित अस्फोत॥ विष्णुका-
न्तानाम है पांचनाम जगजोत २१२ (तालमखाना के
नाम—चौपाई) कोकिलाक्ष इक्षूगन्धा ये॥ काण्डेक्षु क्षुर
इक्षुर पाक्षये २१३ (सौंफके नाम—दोहा) छत्रामिसि

मिसी मिशि मिशी शीतशिवा सतरूप ॥ नाम मिश्रेया मधुरिका शालेय सौंफ अनूप २१४ (सैंहुड़ा के नाम) सैंहुड़ सीहुंड सिहुंड ये शीहुंड़ वज्र जगजान ॥ स्नुक स्नुही स्नुहि स्नुहा गुड़ा गुड़ी परमान ॥ समन्तदुग्धाभी याको नामहैं २१५ (बायबिड़ंगके नाम) वेल्ल अमोघा मोघा विड़ङ्ग तन्तुल जान ॥ चित्रतंडुला तण्डुल कृमिघ्न सांचीमान २१६ (बरियाराके नाम—चौपाई) वाट्यालका बला यह नाम ॥ दोय नाम बरियाली दाम २१७ (सनईके नाम) शणपुष्पिका नाम घंटारव ॥ सनई नाम सुनो सब साधव २१८ (दाखके नाम) द्राक्षा स्वाद्वी पुनि मृद्वीका ॥ गोस्तना मधुरस गोस्तनीका २१९ (श्वेतत्रिधाराके नाम—दोहा) सरला पुनि त्रिपटा कही त्रिवृता त्रिपुटी जान ॥ रेचनी त्रिवृत् श्रीभंडी सर्व्वानुभूति पहिंचान २२० (काले त्रिधाराके नाम) श्यामा पुनी सुषेणिका कालमेषिका सन्त ॥ पालिंदी पालिन्धिका सुषेणीका गुणवन्त २२१ (चौपाई) काला मसूर विदलाजान ॥ नाम अर्द्धचन्द्रा परमान २२२ (जेठीमधुके नाम—दोहा) यष्टिमधुक मधुयष्टिका क्लीतक मधुक सनन्द ॥ वेदजान जेठीमधु चतुरा गावे चन्द २२३ (कृष्णभकूष्माण्ड व शुक्लभकूष्माण्ड के नाम) क्षीरशुक्लारु विदारी क्रोष्टी कही सुजान ॥ महश्वेता ऋक्ष गन्धिका क्षीर विदारी मान २२४ (जलपीपर के नाम) तोयपिप्पली शारदी शकुलादनी स्वरूप ॥ जाङ्गलिक यह नामहैं चतुर कही जगभूप २२५ (मयूरशिखा वा अजमोद के नाम) मयुर लोच मस्तक यह लोच मर्कटा

सार॥ खराश्वारु कारवी पुनि दीप्य दरश कर प्यार
२२६ (कारी शाम्ब के नाम) गोपी श्यामा शारिवा
गोप अनन्ता गाय॥ पुनि उत्पल ये सारिवा सरिवादिया
दिखाय २२७ (वृद्धौषधि के बणीके नाम-चौपाई)
ऋद्धि सिद्धि योग्य परमान॥ चौथा नाम लक्ष्मीजान
२२८ (केलाके नाम-दोहा) कदली कदला कदल ये
अंशुमत्फला सुबच्छ॥ रंभा मोचा काष्ठिला वारणबूसा
अच्छ २२९ (वनमूंग के नाम-चौपाई) सहाकाक
मुद्रा सतवाले। मूंगपर्णि परवीन रसाले २३० (वनभां-
टाके नाम-दोहा) वार्ताकि वार्त्ताहिंगुली वार्ताकु वार्ताक॥
भंटाकी पुनि सिंहिये द्रुमधर्षिणी सनाक २३१ (रासन
के नाम) सुरसा रास्ना सुगन्धा नाकुलि नकुलेष्टान॥
भुजगाक्षी क्षत्राकी गन्धनाकुली जान॥ सुवहानाम भी
याकोहै २३२ (शालपर्णी वा सरिवनके नाम) विदा-
रिगन्धा अंशुमति शालपर्णि ध्रुवान॥ विदारिगन्धा
पर्णी स्थिरा नाम परमान २३३ (कपास के नाम व व-
नकी कपासनरमाके नाम) समुद्रांत कार्प्पासी तुण्ड
केरि बदरार॥ भारद्वाजी वन यह चतुर करै विस्तार
२३४ (काकराशृङ्गी के नाम-चौपाई) शृङ्गीऋषभ
नाम वृषवारा॥ तीन नाम शृङ्गीके प्यारा २३५ (कँकही
के नाम-दोहा) नागबला गांगेरुकी ह्रस्वगवेधुका मान॥
झषा नाम बातुरकहे भजके श्रीभगवान २३६ (श्वेत
तुरई व पीले फूलकी तुरई के नाम-चौपाई) धामा-
र्गव घोषक जनसन्ता॥ महाजालि अरु नितु तुरी-
वन्ता २३७ (चिंचिड़ा के नाम) ज्योत्स्नी जालीका है

नाम ॥ ज्योत्स्ना पटोलिक को दाम २३८ (भूमिजा-मुनि व काकजंघा अर्थात् कौवाढोढ़ी के नाम) भूमि जम्बुका नादेय नाम ॥ काकनास काकाङ्गीदाम २३९ (करियारी और हंसपदी के नाम) अग्निशिखा जानो लाङ्गलिका ॥ गोधपदी पुनि सुवहा हसिका २४० (मू-सरि व मेहाश्रृङ्गी के नाम) तालमूलिका मुसलीजान ॥ अजश्रृङ्गीरु विषाणीमान २४१ (गोभी व नागबेलिके नाम) गोजिह्वा दार्विका दार्विक ॥ ताम्बुलबली नाग-बलि सार्विक २४२ (गँगनधूरि के नाम—दोहा) द्विजा हरेणू रेणुका कौन्ती कपिलासार ॥ भस्सगन्धिनी गंगनः चतुर करी विस्तार २४३ (मूसघरक नाम—चौपाई)ऐलेय पुनि एलुवालुकये ॥ सुगन्धि हरिवालुक बालुकये २४४ (पलाकी के नाम—दोहा) मुकुन्द कुन्द कुन्दु यह कुमुंद कन्दरू जान ॥ कन्दरून चातुरकहे पालंकी जगमान २४५ (नेत्रबाला के नाम—चौपाई) बालकेश अम्बूहीवेर ॥ बर्हिष्ठ उदीच्य नाम नरहेर २४६ (शिलाजित पथरच-टाके नाम) अश्मपुष्प शित शिव शैलेय ॥ कालानुसा-र्य वृद्ध गुरुसेय २४७ (मुरेठी वा तालीसपत्रके नाम) दैत्यगन्ध कुटि मुरा गन्धिनी ॥ तालपर्णि सो सुनोनन्दिनी २४८ (सालके नाम) गजभक्ष्या गजभक्षासुरभी ॥ सुर-भिरसा सुवहा आपुभी २४९ शल्लकीरु शिल्लकी महेर-णा॥महेरणा कुन्दुकी सोजण॥ ह्लादिनि ह्लादिनि जानमहं-ता ॥ चतुरदास गुणगावतसंता २५० (धवई के नाम) अग्नीज्वाला धातुपुष्पिका ॥ सुभिक्षधातकी जान उषि-२५१ (इलायचीके नाम) एला चन्द्रवाल निष्कुटी ॥

पृथ्वीका नाम बहूला भुटी २५२ (गुजराती इला-यची के नाम) उपकुञ्चिक तुत्थात्रिपुटाजन ॥ त्रुटि को रंगी त्रुटी समझमन २५३ (कूटके नाम–दोहा) व्याय व्याधि कुष्टा बया पारिभाव्य मवजान ॥ आय पालका उत्पल चतुरकिया परमान २५४ (शंख कौड़िला हुला के नाम–चौपाई) शंखवनी केशनी बखानी ॥ नाम चोर पुष्पी जगमानी २५५ (भूम्यामलकी अर्थात् अंबरी के नाम) झटामला अंझटा शिवासत ॥ तालि तमाल-क वितुन्नका मत २५६ (गुलाब के नाम–दोहा) प्रपौं-डरिक पौंडर्य्य गुण पंडर्यक परमान ॥ वर्णन नाम गुला-बके सुनो सकल धरकान २५७ (तुनिके नाम) कुणि तुणि और कुबेरक तुन्नकच्छ जगजान ॥ नन्दिवृक्षका-न्तालक नन्दी वृक्षा मान २५८ (धनहरी के नाम) क्षेमधनहरी राक्षसी गुणहासक गुणवान ॥ चंडापुनि दुष्पत्रका चतुरा करे बखान २५९ (नखाख्य गन्ध द्रव्य के नाम) व्याडायुध पुनि व्याघ्रनख व्यालायुध कविजान ॥ करज चक्र कारक यह चतुरदास परमान २६० (पवारीके नाम) विद्रुम लता सुषीरये नलीनही धमनीह ॥ नाम कपोतांघ्री यही अञ्जन केशीजीह २६१ (ककूदनि के नाम) हट्ट बिलासिनि शुक्ति ये शंखहूनन-खयैन ॥ नखी कोलदल खूर ये चतुरा गावत बैन २६२ (अहीँ के नाम) मृत्तालक मृत्तालका तुवरि काह तुव-रीह ॥ सुराष्ट्रजा काक्षी गुणी मृत्स्नाहै भवनीह २६३ (मोथाके नाम) दशपुर दसपुर दासपुर कैवर्ती गोपूर ॥ व.नेय छत्र कुटन्नट परि ये लव गोलूर ॥ मुस्तक नाम भी

याकोहै २६४ (कुकुरौंधा के नाम) ग्रन्थिपर्ण शुकवर्ही वर्हिपुष्प कुक्कूर ॥ शुकवर्हा पुनि पुष्पहै स्थौणेयाजग-नूर ॥ वर्हिष्पुष्प भी याको कहैं २६५ (स्परकके नाम) स्पृक्का देवी लघुलता पिशुना मारुन्माल ॥ कोटिवर्ष लंकोपिका वधू समुद्रा ताल २६६ (जटामांसीके नाम) जटामांसी जटिला मिसी लोकशा जान ॥ मसि कहिये पुनि तपस्विनी गुणिजन गुणकर मान २६७ (तेजके नाम) त्वक्पत्रः उतकट पुनी त्वचा भृङ्ग भवबीच ॥ च ञ्चो रूप बरांगक चतुरा समझो सीच २६८ (कचूर के नाम--चौपाई) करंचुरक द्रावीड़क नाम ॥ कालपक कहे कवीजन दाम ॥ वेध मुख्यक भी याही का नामहै २६९ (सबअन्न और इलाजमात्रका नाम) ओषधि सब अन्नों के नाम ॥ औषध नाम इलाजहि दाम २७० (तर्कारीमात्र व चौराई के नाम) शाक सकल तरकारीजान ॥ तण्डु-लीय अल्प मारिष मान २७१ (इन्द्रपुष्पी के नाम) अग्नि शिखा वीशल्या फलनी ॥ नाम अनन्ता जानो सुगनी २७२ शक्र पुष्पिका नाम बताया ॥ चतुर दास हरिव्यासी गाया २७३ (विधारके नाम–दोहा) छग-लांत्री वृधदारक ऋष्यगन्ध जनगुञ्ज ॥ नाम अक्षगन्धा यह आवेगी नरपुञ्ज २७४ (छुचौंटाके नाम–चौपाई) मत्स्याक्षी ब्राह्मी जनजान ॥ सोमवल्लरी बयस्था मान २७५ (मकोई व मूंगके नाम–दोहा) हेमवती पटु प-र्णिका स्वर्णक्षीरि हिमवन्त ॥ मासपर्णि हय पुच्छ का कम्बोजी महसन्त २७६ (कुंदुरूके नाम) रक्तपला पिलु पर्णिका तुंडिकेरि सतमान ॥ नाम बिम्बिका चतुर ये

चारनाम जगजान २७७ (बबई के नाम) कवरी तुङ्गी बरबरा खरपुष्पा जियजान॥ अजगन्धिका विचार ये चतुर दास जनमान २७८ (कोलिन्दण व अम्लोना वा चूकके नाम) रास्नायुक्तरसा सुवह एलपर्णि परवीन २ अम्लोणिका दन्तशठ अम्बष्टा चँगरीन॥ चुक्रिका भी याहीका नामहै २७९ (अंविलबेत के नाम—चौपाई) सहसबेधि शतवेधी चुक्र॥ नाम अम्लबेतसये शुक्र २८० (अँविलबेतके लजारूकेनाम) गंडकारि सामंगा खदरी॥ नमस्कारिनरमेहै सदरी २८१ (जिसे गुर्ज्जरदेशमें दोड़ी कहतेहैं उसओषधि के नाम) जीवनीय जीवा जीवन्ती॥ मधुस्रवा जीवनी भवन्ती २८२ (जीवकके नाम) कूर्च शीर्षजीवकशृङ्गासन। ह्रस्वांगमधूरकसुनजानोमन २८३ (चिरायताके नाम) किराततिक्त पुनि भूनिम्बातस॥ कही अनार्य्यतिक्त सुनिये जस २८४ (सीहुंड़ भेदके नाम—दोहा) चर्मकषा भुरिफेना विमल सातला जान॥ शातलाह पुनिसप्तला चतुराकरे बखान २८५ (काकोलिके नाम—चौपाई) स्वादूरसा वयस्था जान॥ वायमोलि निर्णय करमान २८६ (दँतिया अर्थात् जिसके बीजको जयपाल कहते हैं उसके नाम) मकुलक नाम उदुम्बरपर्णी॥ प्रत्यकश्रेणि दंतिका वर्णी॥ निकुंभ भी इसीका नामहै २८७ (यवाइनि के नाम) उग्रगंध पुनि यवानिका ये॥ ब्रह्मदर्भ अजमोद नराये २८८ (पुष्करमूरके नाम) काश्मीर पुष्करगुणदाना॥ पद्मपत्र जाहिर जग जाना २८९ (कपिला के नाम) पद्मचारणी पद्मचारटी॥ अतिचर अव्यथ जानुजारटी २९० (कलीला

के नाम) कर्कश चन्द्ररोचनी नाम ॥ रक्तांग रेचनी काम्पिल दाम २९१ (चकवड़ वा पवांर के नाम—दोहा) प्रपुन्नाड एडगज यह दद्रुघ्न पन्नाट ॥ उरणाख्य चक्रमर्दक यह पढ़ले पठना पाट २९२ (प्याज के नाम—चौपाई) लतार्क दुद्रुम पलांडु नाम ॥ सुकंदक कहे चतुर जन दाम २९३ (लहसुन के नाम--दोहा) महा कन्दरा सोनक महौषध गृञ्जन जान ॥ लशुन अरिष्ट बखानिये चतुरा कहे सुजान २९४ (गदहपुरैना व विसखपरिया के नाम) पुनर्नवा पहिचानिये शोथघ्नी जग जान ॥ सुनि षलका समार ये वितुन्न नाम परमान २९५ (पटवा वा पटशण के नाम—चौपाई) वातक शीतक अपराजीत ॥ शणपर्णी जगजान कवीत २९६ (मालकांगनी के नाम) कटभी पण ज्योतिष्मति लता ॥ पारवतांघ्री जानतजता २९७ (चिरायता के फल के नाम) त्रायमाण त्रायन्ती वार्षिक ॥ बलभद्रिका सो जानो वार्त्तिक २९८ (वाराहीकन्द के नाम) गृष्टि घृष्टि वाराही बदरा ॥ विष्वक्सेन विचारो सदरा २९९ (भँगिरा के नाम) भृङ्गराज मार्कव जग गाई ॥ भँगिरा केर नाम दिखलाई ३०० (कौंवैया वा कौवाहाड़ी गोड़ी के नाम) काकमाचि पुनि वायसि बात ॥ अमर ढूंढ़ कीन्हा विख्यात ३०१ (सौंफ के नाम) अतिछत्रा मधुरा मिसिमान । शतपुष्पा सित छत्रा जान ॥ अवाक् पुष्प कारवी देखौ । सौंफ नाम जग जाहिर पेखौ ३०२ (कुब्जप्रसारिणी वा चाँदवेल वा पसारिनि के नाम) राजबला सरणाय प्रसरणी ॥ भद्रवलास कटम्भर वरणी ३०३ (चकवत के नाम) जनी

जतूका जतुकृत रजनी ॥ चक्रवर्ति संस्पर्शा बरनी ३०४ (कचूर के नाम) गन्धमूलि षडग्रन्थी शटी ॥ कर्चूर पलाश कहे जग तटी ३०५ (करेला के नाम) कारवेल्ल काठिल्का सन्त ॥ सुषवी चतुर कहे गुणवन्त ३०६ (परवर के नाम) पटु पटोल तिक्तक जन गाया ॥ कुलक नाम चातुर दरशाया ३०७ (कुम्हड़ा व ककरी के नाम) कूष्माण्डक कर्कारु नाम ॥ उरवारु कर्कटी ललाम ३०८ (करुईलौकी के नाम) ईक्ष्वाकु जग नाम दिखाया ॥ कटुतुम्बी द्वितिया मन भाया ३०९ (लौकी के नाम) तुम्बी पुनी अलाबू नाम ॥ चतुरदास सुमिरो घनश्याम ३१० (जेठऊ ककरीके नाम) गोडुम्बा गोडुम्बा जान॥ गवाक्षि चित्राहै परमान ३११ (इँदारुणि के नाम) इन्द्र वारुणी नाम विशाला ॥ चतुरा सुमिरो दीनदयाला ३१२ (सूरण वा काँद के नाम) सूरण शुरण कन्द गुणवन्त ॥ अर्शोघ्नहि जानो बलवन्त ३१३ (गँडरी व करँबुआ के नाम) समष्ठिका पुनि गंडिर गाय ॥ कलम्बी नाम जान जगमाय ३१४ (पोइ व मूलिके नाम) उपोदिका पोईका नाम ॥ मूलक मूली कर जग दाम३१५ (हिलसा व बथुई के नाम) हीलमोचिका हिलकर जान वास्तुक बथुईकर पहिचान ३१६ (दूबके नाम-दोहा) दुर्वा पुनि सतपर्विका रुहा अनंतामान ॥ सहसवीर्य पुनि भार्गवी चतुर कही जग जान ३१७ (उजली दूब के नाम) गोलोमी शत वीर्य्या शकुलाक्षक जन जान ॥ गण्डाली चातुर कहे उजली दूबा मान ३१८ (मोथाके नाम-चौपाई) मुस्ता मुस्तक मेघहिनामा ॥ कुरुविन्द

कह गुणिया गुणदामा ३१९ (नागरमोथा के नाम) भद्रा भद्रमुस्तकहि गुन्द्रा ॥ नागरमोथा नामहि मुन्द्रा ३२० उच्चटा पुनि चूडाला देख ॥ नाम चक्रलो जाहिर पेख ॥ ये भी मोथा विशेष के नाम हैं ३२१ (बांस के नाम–दोहा) वेणु तृणध्वज शतपरब मस्कर तेजन ताज॥ त्वचीसार कर्मार ये यवफल वंश समाज ॥ त्वक्सार भी याको नामहै ३२२ (जो छेदमें वायुजाने से शब्दकरने लगे उन बांसोंका नाम व गांठि वा पोर के नाम) उन बांसोंका कीचक नाम ॥ ग्रन्थीपर्व्व परूटक दाम ३२३ (रामशर वा सरहरी के नाम व कासके नाम) धमनपोट गलनड़ है आस ॥ इक्षूगन्ध पोटगल कास ३२४ (बगई व ऊँखके नाम) बल्वज बगई कर पहिंचान ॥ इक्षूपुनी रसाल बखान ३२५ (पौंड़ा ऊँख व केतारा ऊँखके नाम) पुण्ड्रः पौंड़ा ऊँख कहावे ॥ पुनि कांतार केतार दिखावे ३२६ (गांड़र के नाम) बीरणपुनी बीरतरसन्त ॥ चतुरदास गावे गुणवन्त ३२७ (गांड़रे की जड़के नाम–दोहा) लामज्जक औ जलाशय लघुलय नाम उशीर ॥ अमृणाल अभया नलद अवदह शेव्य सभीर ॥ इष्टकापथभी को नामहै ३२८ (नड़ादि गर्मुच्छ्यामाकादि व कुशके नाम–चौपाई) तृण ये नाम समारोयत्र ॥ कुशकुथ दर्भयपुनी पवित्र ३२९ (रोहिष के नाम) कतृण पौर सुगन्धी ध्याम ॥ देवहि जग्धक रोहिष नाम ३३० (पानीके खरके नाम) अतिछत्रा पालघ्नाछत्रा ॥ मालातृणक भूस्तृण यत्रा ३३१ (नये खर व घास के नाम) शष्प पुनि नाम बालतृणजान॥

यवसघास दोउ नाम पिछान ३३२ (खरमात्र व खरही का नाम) अर्जुनतृण खरमात्रक नाम ॥ तृण्या नाम खरहिका दाम ३३३ (नरईआदिके बटोरवतारके नाम) नड्य नाम नरआदिक मान ॥ तृणराज ताल तारहिको जान ३३४ (नारियल के नाम) नालिकेर अरु लांगलिनाम ॥ चतुर बतावे भजसियराम ३३५ (सुपारी के नाम) खपुर पुंग पुंगीफल जान ॥ क्रमुक गुवाकहि घोटामान ३३६ (सुपारी के फल व खजूरि के नाम) उद्वेग सुपारी के फलमिन्त ॥ खर्ज्जुर केतकि तालीसन्त ३३७ (दोहा) खर्जूरी तृण अष्टये तृणद्रुम नाम बखान ॥ रामदासके नन्द ने भाषा किया बखान ३३८ देश अवन्ती मालवा रतनशहररतलाम ॥ बन्धु एक घनश्यामहैं चतुरचतुरसमनाम ३३९ ॥

इति श्रीजम्बूद्वीपेभारतखंडेमालवदेशेअवन्तीमहाक्षेत्रेरतलामग्रामे वैष्णवहरिव्यासीमहन्तश्रीरामाजीनन्दचतुरदासविरचिते ग्रन्थश्रीअमररघुनाथकल्पद्रुमभाषाद्वितीयकांडे वनौषधिवर्गेचतुर्थोविश्रामसम्पूर्णम् ४ ॥

अथ श्रीद्वितीयकांडेपंचमसिंहादिवर्गप्रारम्भः ॥

(दोहा) श्रीनरसिंहाशिरोमणि जनभक्तनप्रतिपाल॥ जनप्रहलादउबारिया यहिबुधिकरोनिहाल १ (सिंहके नाम) हर्यक्ष केसरी केशरि हरि कंठीरव सिंह ॥ मृगरिपु मृगदृष्टी पुनी मिरगासन भवसिंह २ (चौपाई) पुनिपञ्चास्य मृगेन्द्र कहावे ॥ चतुरदास हरि हरनेगावे ३ (बाघ व तेंदुवाके नाम) द्वीपीव्याघ्र शार्दुल मन्त ॥ मृगावान तर्क्षू जनसन्त४ (सुवरके नाम—दोहा)

भूदारक बाराह किरि सूकर घृष्टीकोल॥ किटिपोत्री ग्रष्टी पुनी दृष्टी घोणी तोल ५ (चौपाई) स्तब्धरोम अरु क्रोड कृपाल॥ चतुरदास गावे ब्रजबाल ६ (वानर के नाम–दोहा) मर्कट वानर कीश कपि प्लवंगप्लवग शाखान॥ मृगबलि मुख कहि गावहीं नाम बनोका ठान ७ (रीछके नाम–चौपाई) ऋच्छ अच्छभल यह बलवंता॥ भल्लुक भल्लूक रिक्ष गुणवन्ता ८ (गैंड़ा के नाम) खड़्गी खड़्ग गंडक दरशाया॥ गुणिजन गुणकर समझे माया ९ (भैंसाके नाम) वाहाद्विषत कासर सैरिभ॥ महिष लुलाय नावभै शिभ १० (सियारके नाम–दोहा) गोमायुः मृगधुर्तकः शिवा फेरु शृंगाल॥ जम्बुकक्रोष्टाभूरिमय फेरब बंचक व्याल ११ (बिलार के नाम) औतूपुनि वृषदंशक आखुभुकः मांजार॥ बिडालनाम चातुर कहे पञ्च नाम बिल्लार १२ (चंदनगोहके नाम–चौपाई) गौधेरगोधय पुनिगोधार॥ चँदन गोहके नाम बिचार १३ (साहीके नाम और उसके रोवांका नाम) शल्यरूप श्वावित जगजान॥ शलली शल शलल सतमान १४ (वातप्रमीवाभेड़हा वा बीग के नाम) बातहिप्रमी बात मृग येन॥ कोकःवृकः इहा मृगवेन १५ (हरिण के नाम) मृगाकुरंग जान जगहरिणा॥ अजिनयोनि वातायुःबरिणा १६ (हन्नीके चर्म मांसादिके और हन्नाके चर्म्मादिके नाम) हन्नी चर्म मांस ऐणेय॥ हनाचर्म ऐणाजस तेय १७ (मृगभेदों के नाम–दोहा) कदली चीन चमूरुहे प्रियक कन्दली जान॥ हरिणः समरुः शैयवन चतुरा करे बखान १८

(काले हरिण व भुवार के नाम) कृष्णसार काला ये रंग ॥ रुरुभुवार कहे जनजंग १९ (नागुण व चीता के नाम) न्यंकु नाम नागूणा जान ॥ रंकु चीत रूपा पहिंचान २० (सावर व गेहींके नाम) सावर शम्बर ये गुणवन्ता ॥ गेहिक रौहिष जान जयन्ता २१ (गौव व पुषिवकेनाम) गोकर्णा गौवाका नाम ॥ पृषत पुषिवये देखेआम २२ (सुन्दर नेत्रवाले हरिण व जल्द चलने वाले के नाम) एण हरिण नीका नैनाधर ॥ ऋश्य जलद चलने को आतर २३ (लालहरिण व सुरहगाय के नाम) रोहित लाल हरिण जगमाने ॥ चमरी गाय सुरेपहिंचाने २४ (मृगभेदोंके नाम—दोहा) राम शरभ सृम्मर शश गवय नाम गन्धर्व्व ॥ मृगभेदों के नाम ये चतुर बताये सर्व्व २५ (कुंडलिया) इनमें महकूजे मृग सो गंधर्वा जान। शरभ लडीसारा गुणी सृमर दौरिया मान ॥ सृमर दौरिया मान राम अतिरसणी गाया। गवय लीलगहरूप शशा चौगड़ा कहाया ॥ चतुरदास मृगमाल के दिये भेद दरशाय। मन अभिलाषा पूरियो सीतापति रघुराय २६ (सिंह हरिण गो महिषादि चौपैया के नाम) चौपैया पशुजाती नाम ॥ चतुर बताये भज सियराम २७ (मूशकेनाम—दोहा) मूषक खनक अधोगन्ता आखूपुंध्वज वीर ॥ उन्दर वृकउन्दुरू पुनि गावत चतुरा धीर २८ (छोटी मुसरी व गिरगिटान के नाम) बाल मूषिका गिरिका मिन्त ॥ सरटा पुनि कृकलासकसन्त २९ (छपकली वा बिस्तुई के नाम) गृहगोधिका नाम मुसलीये ॥ चतुरदास बरणत जग

जीये ३० (मकरी के नाम) तंतुवाय कर्कटक रूप ॥ उरणनाभि ये लुता अनूप ३१ (सोनकिरवा व खनखजूर के नाम) नीलँगु कृमी सोनकी मान ॥ कर्णजलौका शतपदि जान ३२ (दांड़ा व बिच्छू के नाम) शुक किट है वृश्चिक बलवन्त ॥ आलिद्रुणवृश्चिक जनसन्त ३३ (कबूतर व बाज के नाम) पारावत कपोत कलरवये ॥ पत्रोशन शशादन जनये ३४ (खूसटघुघुवा उल्लूकेनाम—दोहा) बाय सारती पेचक घुक उलूक जगज्ञान ॥ द्विवांध कौशिक निशाटन दिवाभीत भयमान ३५ (भर्दूल व खड़रैचाके नाम) भाद्वांज पुनि व्याघ्राटक ये ॥ खंजरीट खंजन जगजन ये ३६ (उजरी चील्ह व नीलकंठ वा लीलागणास के नाम) लोहपृष्ठ पुनि कंक बखान ॥ किकीदिवी चाखहि जगमान ३७ (भुजकैल वा भुजैटा व कठफोरवाके नाम) कलिंग भृङ्ग पुनि धुम्पाटकये ॥ दार्वघाट पुनि शतपत्रक ये ३८ (पपीहा व मुरगा के नाम—दोहा) चातक पुनि शारंग ये तोकक पपिहा जान ॥ कृकवाकू चरणायुध ताम्रचूड़ ककुठान ३९ (गौरवा व गौरैयाके नाम—चौपाई)चटका पुनि कलविंका नाम॥ गौरैया चाटक पुनि दाम ४० (इनके बच्चा व बच्चीका नाम) इनका बच्चाहै चटकैर ॥ इनकी बच्ची चटका बैर ४१ (केंडिला व मुच्छाचिरई के नाम) करेटु कर्करेटु कंडीला॥ कृकणा क्रकर नाम चिरईला ४२ (कोकिला व कोयल के नाम) वनप्रिय कोकिल पिकहि सुजाना ॥ परभृत कोयलकर परमाना ४३ (कौवा के नाम—दोहा) काक अरिष्टा करटये बलिपुष्टा अरु ध्वां-

क्ष॥ आत्मघोष संकृत प्रजा वायस बलिभुक पांक्ष ४४ (चौ०) चिरंजीवि परभृत इक दृष्टी॥ सौकुलि कहे सकल जनसृष्टी ४५ (डोंबकाक अर्थात् धूमिले कौवा व काले कौवा के नाम) द्रोण काक काकोल बखान॥ कालहि कंठ कदात्युहजान ४६ (चील्ह व गीधके नाम) चील्ह नाम आतापी सन्त॥ गृध्र रूप दाक्षायकवन्त ४७ (सुवा व करांकुल के नाम) शुक पुनि कीर सुवा ये भाई॥ क्रौंच कुड़ जग जाहिर साईं ४८ (बगुला व सारस के नाम) कह्क नाम बक बगुला हिंदा॥ पुष्कराह्क सारस जगबंदा ४९ (चकई चकवा व बतख वा बत के नाम) कोक चक्र रथांग चक्रवाक॥ कलहंस पुनि कदम्ब सौशाक ५० (कुररी के नाम) उत्क्रोशा कुरर यह नाम प्रवीना॥ चतुरदास गावे रँगभीना ५१ (हंस के नाम) मानसौक चक्रांग हंसजन॥ श्वेतगरुत जग जान जहासन ५२ (जिन हंसोंकी चोंच पैर लाल होते हैं देह उज्ज्वल होतीहै उनके व जिनके चरणादि मैलेहों उनके नाम) ५३ राजहंस हंसा उज्ज्वलतन॥ मल्लिकाक्ष जानो मैलामन ५४ (जिनके काले चञ्चु चरणादिहों उनके नाम व आड़ी के नाम) धार्त्तराष्ट्र चंचू चरणाधर॥ आदि शरार आड़ि सुन बुधिवर ५५ (बगुलाकी दूसरीजाति व हंसीकेनाम) बिसकंठिका बलाका सन्त॥ हंसी पुनी बरट गुणवन्त ५६ (सारसकी स्त्री व चमगूदरी के नाम) लक्ष्मणा हंसत्रिया को जान॥ जतुका अजिनपत्र परमान ५७ (गीदर व मक्षिका के नाम) तैलपायिका परोष्णी जान॥ वर्वण मक्षिक नी-

लामान ५८ (शहदकी मक्खी व पांखी के नाम) सरघा मधुमक्षीका मान ॥ पुतिका पुनि पतंगिका जान ५९ (डांस व मशा के नाम) वनमक्षिका दंश दरशाया ॥ दंशी नाम मशा मनभाया ६० (बर्रै व झींगुर के नाम) गन्धोली वरटा दोउ नाम ॥ भृङ्गारी भीरू का दाम ६१ चीरी नाम झिल्लिका देखा ॥ झींगुर नाम किया हम लेखा ६२ (फनिगा व जुगनू के नाम) शलभ पंतग सुनो गुणवान ॥ ज्योतिरिंग खद्योत बखान ६३ (भँवराके नाम–दोहा) मधुकर मधुव्रत मधुप ये मधुलिट अलि अली भृङ्ग॥ षटपद भ्रमर द्विरेफ ये पुष्पलीढ रसदृङ्ग६४ (मुरैला वा मोरके नाम) नीलकंठ भुजंगभुक मयुर शिखावल मिन्त ॥ बर्हीं बर्हिण मेघनद केकी शिखी सुसन्त६५ (मोर की बोली व मोर के पंखों के बुदकों के नाम) मयुर शब्द केका यह नाम ॥ चन्द्रक मेचक बुदकी दाम ६६ (मोर की चोटी व मोर के पंखों के नाम) चूड़ा शिखा मोरकी चोटी ॥ शिखंड पिच्छ बर्ह पंखोटी ६७ (चिरई वा चिड़िया व पक्षी के नाम–कुंडलिया) खग वीहंग विहंगम बिहग विहायासन्त ॥ पक्षी शकुनी शकुनये द्विज शकुन्त सरवन्त ६८ द्विज शकुन्त सरवन्त शकुंति पत्री यह बाजी ॥ पत्री पतन पतंग नाम ये अण्डजसाजी ६९ पुष्कर बिकिर विपित्सन नीड़ोद्भव पतत्रीह ॥ गरुत्मान पुनि पत्ररथ नभसंगम ये जीह ७० नागौका भी इसी का नाम है ७१ (हरियल व जलमुर्गी के नाम–चौपाई) हरिलनाम हारत जगमाय ॥ मद्गू जलमुरगी दरशाय७२ (बतख व तीतर के नाम) प्लवानाम कारंड़व जान ॥ ति-

तिरी तीतरनाम प्रमान ७३ (वनमुर्गी व लवाके नाम) कुकुभनाम जलमुरगी जान ॥ लावजीव लावा परमान ७४ (चकोर व टिटहरी के नाम) जीव चकोर नाम जन जान ॥ कोयष्टिक टिट्टीभक मान ७५ (बटई के नाम) वर्त्तक वर्त्तिक बटई नाम ॥ चतुर कहे भजभज सियराम ७६ (पङ्ख व पखना के नाम—दोहा) पक्ष पत्र पुनि छदा ये तनरूहा निरवान। गरुत पतत्र प्रमान ये चतुर कही सतठान ७७ (पखनाकी जड़ व टोंटके नाम) पक्षति पखनाकी जड़जान ॥ चंचू त्रोटी टोटकमान ७८ (पक्षियों के तिरछे उड़ने व ऊपर उड़ने के नाम) तिरछा उड़न प्रडीना नाम ॥ ऊपर उड़न उड्डीना दाम ७९ (अच्छे प्रकार से उड़ने के व अंडाके नाम) सण्डिन उड़न अछेका जान ॥ कोश अण्ड पेशी परमान ८० (झोंझ के नाम) नीड़ कुलाय झोंझ का भाई ॥ चतुरदासने बरणि सुनाई ८१ (पक्षीमात्र के बच्चों के नाम—दोहा) पोत पाक अर्भक सुनो डिंभ पृथुक शिशुभाख। शावक जन चातुर कहे देखो गुणिधर आख ८२ (स्त्री पुरुषके जोड़े के व दोके नाम—चौपाई) मिथुन द्वन्द्वत्री पुंसौ नाम॥ युग्म युगल युग जानो दाम८३ (समूह अर्थात् झुण्डकेनाम—कुंडलिया) समुदायरु समुदयगण समवायाचय वृन्द ॥ संहति नाम कदम्बक निकुरूवा व्रज बन्द ८४ निकुरूवा व्रज बन्द निकर समूह सबमानी। निवह व्यूह संदोह निसर पुनि ओघ बखानी ८५ व्रात बार संघात ये संचय जन अस्तोम ॥ चतुरदास वर्णन किया झुण्ड शब्द जग जोम ८६ (प्राणी व अप्राणी का जहां

एकही जातिका झुण्डहो उसके व जो केवल जन्तुओं का समूह है उसके नाम–चौपाई) प्राणी झुण्ड वर्ग्ग यह जानो॥ संघ सार्त्थ दूजापहिंचानो ८७ (सजातीय जन्तुओं के झुंडके व पक्षियों के समूहके नाम) झुण्डसजाती कुल पहिंचान ॥ यूथ समूहा पक्षी जान ८८ (पशुओं के झुण्डके व पशुओंको छोड़ अन्य झुण्ड के नाम) समज झुण्ड पशुओं का जान ॥ पशुतजि अन्य समाज सुजान ८९ (एक धर्मवालों के समूहके व अन्नादि के ढेरके नाम) नाम निकाय समूहा ये मन ॥ उत्कर कूट पुंज राशीजन ९० (कबूतर के व सुवाओं के झुण्ड के नाम) कपोत कबूतर झुण्डाजान॥ शैक सुवा झुण्डा पहिंचान ९१ (मोरोंके व तीतरों के झुण्डके नाम) मयुरझुण्ड मोरोंका मिन्त ॥ तैतिर तीतर झुण्डासन्त ९२ (पालतू पक्षी और मृगों के नाम) गृह्यक पुनी छेक बतलाया ॥ सिंहादि वर्ग्ग चातुरने गाया ९३ (दोहा) सिंहादिक वर्ग्गहिभयो निम्बारक परताप ॥ रामदासके बालका रच्यो चतुर गुण आप ९४॥

इति श्रीजम्बूद्वीपेभारतखंडेमालवदेशेअवन्तीमहाक्षेत्रेरतलामनगरे वैष्णवहरिव्यासीमहन्तश्रीरामाजीनन्द चतुरदासविरचितेभाषा श्रीअमररघुनाथकल्पद्रुमद्वितीयकांडेसिंहादिवर्ग्ग पंचमोविश्रामःसम्पूर्णः ५॥

अथ श्रीअमरकोषे षष्ठो मनुष्यवर्ग्गप्रारम्भः॥

(सोरठा)नरनारायणगाय गुरु निम्बारक बंदिकै॥ मनुष्य वर्ग्ग हित आय हृदय विराजो ईश्वर १ (मनुष्य के नाम–दोहा) मानव मनुषा मनुज ये मानुष पुरुष

प्रमान ॥ कहे मर्त्य नर मानवी नरा पंचजनजान ॥ पुमान् भी नाम नर का है २ (स्त्रीके नाम) जोषित योषित जोषिता अबला वनिता नार ॥ स्त्री योषा योषिता प्रतिपदर्शिनी सार ३ बंधु वाम महिला तथा सीमंतिनित्रिय भाम ॥ नाम नारि वर्णन किया गाय गाय बल राम ४ (अच्छे अंगवाली व डरभुतही स्त्री के नाम) अंगना अच्छी रीति से त्रिया नाम धर ध्यान ॥ भीरु नाम चातुर कहे गुरुदेवन को मान ५ (कामयुत स्त्रीके व सुन्दर नेत्रवाली स्त्री के नाम—चौपाई) कामायुत कामिनी कहावे ॥ वामलोचना सुन्दर गावे ६ (बहुत कामवती स्त्री के व प्रणय कोपवाली स्त्री क नाम) प्रमदा बहुत कामवति नार ॥ मानिनि प्राण कोप विस्तार ७ (मन हरने वाली के व दुलारी स्त्री के नाम) कान्ता मन हरनेवाली नर ॥ ललना नाम दुलारी का हर ८ (सुन्दरअंगवाली व जिसमें अतिचित्त मिलाहो उस स्त्री के नाम) सुन्दर अंग सुन्दरी नाम ॥ रमणी रमिणा रमिला दाम ९ (बाहर के योग्य स्त्री के व रिसवाली स्त्रीके नाम) रामा बाहर योग्य बताई ॥ भामिनि नाम कोपना भाई १० (बहुत ही उत्तम स्त्री के नाम) मत्तकाशिनी नाम उतमा जन ॥ वरवर्णिनि पुनि वरारोह मन ११ (जिस रानीका अभिषेक हुआ हो उस के व महिषीको छोड़ अन्य राजा की स्त्री के नाम) महिषी रानी है अभिषेक ॥ भोगनि राजा द्वितिया पेख १२ (ब्याहीहुई स्त्रीके नाम—दोहा) पाणिगृहीती नाम यक द्वितिया पत्नी दार ॥ सहधर्मिणीसुभार्य्या जाया पतिकर प्यार १३ (जिसके पति पुत्र दोनों विद्य-

मानहों उसके व पतिव्रता स्त्री के नाम) पूरंध्री पुनि कुटुम्बिनि जिस का पती सुजान ॥ सती साध्वी पतिव्रता सुचरित्रा सतवान १४ (प्रथम ब्याहीहुई स्त्री के व जो अपने आप स्वयंवरादि में पति की इच्छा करे उसके नाम) अधिविन्ना अध्यूढ़ा कृतसापत्नी नार ॥ स्वयंवरा वर्य्या पुनि पतिंवरा विस्तार १५ (कुलवती स्त्री व पांच वर्ष की कन्या के नाम) कुलस्त्रीरु कुलपालिका सो कुलवन्ती भाम ॥ कन्या नाम कुमारिका पांचवर्षकी दाम १६ (दश वर्षकी कन्या व प्रथम रजोवती के नाम) गौरी नामा नग्निका अनागता रतवान ॥ दृष्टरजा अरु मध्यमा रजस्वला पहिंचान १७ (जवानी स्त्री के व पतोहू के नाम) तरुणी युवती यूवती ज्वान नाम जग जान ॥ स्नुषा जनी जनि पुनि वधू पातोहू परमान १८ (किञ्चित् युवावस्था को प्राप्त भई पिता के घर रहती हो उसके व जो धनादि की इच्छा करती हो उस के नाम) चिरंटी नाम सुवासिनी चिरटी पिता समीप ॥ इच्छावती सो कामुका धन चाहत है दीप १९ (मैथुनकी इच्छा किये हुई के नाम व जो पतिकी इच्छा कर कामार्त्त हो संकेत को जावे उसके नाम) वृषसंती पुनि कामुकी इच्छा मैथुन चेत ॥ अभिसारीका जानिये जावे जो संकेत २० (व्यभिचारिणी अर्थात् छिनारि स्त्री के नाम) असती कुलटा पुंश्चली धर्षिणीय परमान ॥ इत्वरि सो पुनिबंधकी पांशुल स्वैरिणि जान २१ (बिना पुत्रवाली के नाम व जिसके पति पुत्र न हो उसके नाम) अशिरवीय बिनपुत्र की चतुर कहै गुणग्राम ॥ पतीपुत्र जिस के नहीं

ताहि अवीरा नाम २२ (रांड़के नाम व सखीसंग खेलने वाली के नाम) विश्वस्ता विधवा यह रंडा नाम पुकार॥ वायस्या अलि पुनि सखी खेलनवाली वार २३ (अहवाती के व बूढ़ी स्त्री के नाम) सभर्तृका पतिवत्नी अहवाती जगजान॥ वृद्धा पलिकी चतुर नर बुढ़ली का परमान २४ (कुछ कुछ समझदार स्त्री के व अतिबुद्धिमती के नाम) प्राज्ञी प्रज्ञा कुछ समझ चतुरा कही विचार॥ प्राज्ञा धीमति नाम ये अतिबुद्धी विस्तार २५ (चाहै अन्य जातिहो पर शूद्रकी स्त्री के नाम व शूद्रिणी अन्य स्त्री के नाम) अन्य जाति शूद्री यह शूद्री ताकर नाम॥ पुनि शूद्रीका नाम ये शुद्रा सतकर दाम २६ (अहीरिनि व बनिनि के नाम) आभीरी महशूद्रिका अहीरिहूका नाम॥ आर्य्याणी आर्य्या पुनि जान बनैनी दाम २७ (जो अपने आप मंत्रों के अर्त्थ कहसके उसके व आचार्यों की स्त्री के नाम) मंत्र अर्त्थ करता रहै सो आचार्य्या मान॥ आचार्य्यानि आचार्य्य घर मंत्र करे बाक्षान २८ (आचार्य्य और क्षत्रिय की भार्य्या के नाम व पढ़ानेवाले की स्त्री के नाम) अर्य्यी पुनि आचार्य्यकी क्षत्रिया क्षत्रीमान॥ उपाध्यायी उपाध्याया गुरुदेवनकी जान २९ (स्त्री पुरुष दोनों के लक्षणहों उस के व वीर की स्त्री के नाम) कुच मुच्छैं दोनों सही पोढ़ा जाका नाम॥ वीरपत्नि वीरभार्या वीरपुरुषकी दाम ३० (वीरकी माता के नाम व प्रसूता अर्त्थात् सौरिहाई स्त्री के नाम) वीरमात पुनि वीरहैं वीरमातु के नाम॥ प्रजात प्रसूता प्रसूतिक जातपत्य जग दाम ३१ (नंगी स्त्री व दूतीके

नाम) कोटवि पुनि सो नग्निका नंगीनारी मिन्त ॥ दुति दूती संचारिका नाम दूतिका सन्त ३२ (अधबैसू विधवा स्त्री व लौंडी के नाम) अधबैसू विधवा त्रिया कात्यायनी स्वरूप ॥ सैरंध्री यह लौंड़िका नाम मान जग भूप ३३ (जो जवान स्त्री घरके भीतरका कार्य्य करती हो उस लौंडीके व पतुरिया के नाम) असिक्नी घर लौंड़ी का कही चतुर जन सन्त ॥ रूपाजीवा वारस्त्री गणिका वेश्यामिन्त ३४ (जिस वेश्याका बड़ा आदर जन करतेहों उसका व कुटनी के नाम) वारमुख्य वेश्या बड़ी आदर करैं जहान ॥ कुट्टनि शंभलि नाम दो कुटनीकर पहिंचान ३५ (जो देखतही नीक जबून जानले उसके नाम–चौपाई) ईक्षणिका पुनि दैवज्ञा जन ॥ विप्राश्निका देखो नर सत मन ३६ (रजस्वलाके नाम–दोहा)रजस्वला अवि आत्रय मलिनी ऋतुमतिजान ॥ उदक्या स्त्री धर्मिणी पुष्पवती परमान ३७ (स्त्रीके पुष्प अर्थात् जो उनके मास २ पर भगसे रुधिर बहताहै उसके नाम व जो गर्भरहनेपर उत्तमान्नादि की इच्छा करतीहैं उनके नाम) आर्त्तव रजः पुष्पकहि रुधिरबहन यह नाम ॥ श्रद्धालू दोहदवती गर्भरहन पर दाम ३८ (रजोहीन स्त्री व गर्भिणी स्त्री के नाम) विगतार्त्तवा निष्कला रजोहीन त्रियजान ॥ आपनसत्त्वागुर्विणी अंतरबत्निगर्भान ३९ (वेश्याओं के झुंड व गर्भिणियों के समूह के नाम) वेश्याओं का झुंड ये गाणिक्या गुणवान ॥ गार्भिणा चातुरकहे गर्भ समूहाजान ४० (युवतियोंके समूह व उदरीके नाम–चौपाई) यौवत युवती नाम सुजान ॥ दि-

धिषु पुनरभू उद्धरी मान ४१ (उद्धरी के पतिके नाम व कदाचित् उद्धरी का पति ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्यहो और उसके वही उद्धरी गृहकृत्य करनेवालीहो तो उसके पतिका नाम–चौपाई) दिधिषु उद्धरीपति पहिंचान। अग्रेदिधिषु द्वितीयाठान ४२ (विना ब्याही स्त्री के पुत्रका व सुभगा के पुत्रका नाम) कन्यकाजात कनीना जान ॥ सुभगासुत सौभगिनेमान ४३ (परारी स्त्रीके पुत्रके व फूफीके पुत्रके नाम) पारस्त्रैणेय पराका पुत्र ॥ पैतृष्वस्रीयफूफीकासुत्र ॥ पैतृष्वस्रेयभी इसीका नामहै ४४(मौसीके पुत्रके व सौतेले भाईका नाम) मातृष्वस्रेय मातृष्वस्रीया ॥ वैमात्रेय विमातृजधीया ४५ (कुलटा के पुत्रके नाम) असतीसुत पुनि बांधकिनेय ॥ बंधुल कौलटो कौलटेय ४६ (भिखियारिनिके पुत्रके नाम) कौलटेय पुनि कौलोटनेय ॥ चतुरदासकी मानभनेय ४७(पुत्र के नाम–दोहा) आत्मज सूनुः पुत्र सुत तनय तोक पुनि पूत ॥ बेटा लड़का है अपत्य चतुरा कहत सपूत ४८ (कन्या के नाम) सूनु सुता पुत्री यह तनया दुहिता जान ॥ अपत्यारु पुनि आत्मजा तोका लड़कीमान ४९ (जो सवर्णा स्त्रीमें अपना से उत्पन्नहो उस पुत्रके नाम–चौपाई) उरस्य नाम औरस दरशाया ॥ चतुर अमर भाषाकर गाया ५० (पिता व माताके नाम–दोहा) जनक पिता पुनि तात ये बाप नाम जगजान ॥ जननी माता अरु प्रसू जनयित्री परमान ५१ (बहिन व ननँद के नाम–चौपाई) स्वासा पुनि भगिनी अरु बहन ॥ ननांदारु ननँदी जग कहन ५२ (नातिनि व देवरानी

जेठानी के नाम) नप्त्री पौत्रि सुतात्मजा गाई ॥ याता देवर जेठानी भाई ५३ (भौजाई वा भैहो व मामी के नाम) भ्रातृजाया पुनि प्रजापतीये ॥ मातुलानि मातुलि मामीये ५४ (पति और स्त्रीकी माताका व पति और स्त्रीके बापका नाम) श्वश्रू पति तिरियाकी माता ॥ श्वशुर पती तिरियाका नाता ५५ (पित्ती वा चाचाके व मामा के नाम) पितृव्य पित्ती चाचा जान ॥ मातुल ये मामा पहिंचान ५६ (साले व देवरके नाम) श्याल एक शाला जगमिन्त ॥ देवा देवर देवरसन्त ५७ (भैने व दामाद के नाम) भागिनेय स्वस्त्रिय भैनेका ॥ जामाता दामाद सनेका ५८ (आजा व परपाजा के नाम) पितृपिता अरु पीतामह नर ॥ प्रपितामह दादा जग जाहर ५९ (नानी व नानीके बापका नाम) मातृपिता मातामह जान ॥ प्रमातामह नानी पितुमान ६० (पुस्ति के भाई बन्धुन के व सगे भाई के नाम) सपिंड सनाभी भाई बंधव ॥ समानोदर्य्य सोदर्य्य अनंधव ६१ सगर्भ्य सहज भ्राताकर नाम ॥ चतुर कहै भज श्यामाश्याम ६२ (समगोत्रियों के नाम—दोहा) सगोत्र स्वजन जन बांधव जाति बंधु जगमान ॥ स्वःभायों की मंडली एक गोत्र परमान ६३ (बिरादरीके भावका नाम व परिवारके झुंडका नाम—चौपाई) ज्ञातीय नाम बिरादर मिन्त ॥ बन्धु झुंड जगजाहिर सन्त ६४ (दुलहाके नाम व अन्य के संग मैथुन करे उस पुरुष का नाम) भर्ता धव पति पीय सुजान ॥ उपपति जार यार परमान ६५ (अपने पति के जीते ही अन्य पति से जो पुत्रहो उसका नाम

और जो पति के मरने पर अन्य पति से उत्पन्न हो उ-
सका नाम) कुंड नाम परपति से पैदा ॥ गोलक पति
बिन बनै सो मैदा ६६ (भतीजे व बहिन भाई का नाम
–दोहा) भ्रात्रीय भ्रातृव्य ये भ्रातृज नाम भतीज ॥
नाम भ्रातरौ जानजग भाय बहिन करधीज ६७ (ज-
हां माता पिताका साथही कहनाहो उसके नाम) माता-
पितरौ नाम ये मातरपितरौजान ॥ प्रसुजनपितरौजन
कहे पितरौ चातुरमान ६८ (ऐसेही सासुश्वशुरके नाम
व इसी प्रकार कन्या पुत्रको नाम) श्वश्रूश्वशुरौ नाम
ये श्वशुरौ जानसुजान ॥ बहिन भायका नाम मिल पुत्री
कहे प्रमान ६९ (स्त्री पुरुषके व ओझरी चामके नाम)
दम्पति जम्पति जायपति भार्यापति नर नार ॥ जरा-
युजा गर्भाशया उल्व ओझरीभार ७० (जब गर्भाधान
होता है तो रात्री में पुरुषका काम और स्त्रीका रक्त मिल
कर जो कुछ बनता है उसका नाम व गर्भरहने से नव वा
दशवेंमास के नाम–चौपाई) कामरक्त मिल कलल क-
हावे ॥ सुतीमास वैजनन बनावे ७१ (गर्भ के व हिजरा
के नाम–दोहा) भ्रूणनाम गर्भाय है गर्भवान पहिचान ॥
तृतिया प्रकृती षण्ढ ये क्लीब षंड परमान ॥ नपुंसक नाम
भी हिजड़ेकाहै ७२ (लड़कपन व जुवानी के नाम–चौ-
पाई) शैशव बाल्य शिशुल सतवन्ता ॥ तारुण्या यौवन
गुणवन्ता ७३ (बुढ़ापा व बुढ़ापाओं के झुंडके नाम–
दोहा) वार्द्धक स्थावर कही वृद्धत्व जानिये वृद्ध ॥
झुंड बुढ़ापा वार्द्धक चतुर कहे जनसृद्ध ७४ (अतिबुढ़ा-
ईके नाम व दुधपिये छोटे लड़के व लड़कियों के नाम)

जरा पलित पुनि विस्त्रसा अतिबुढ़ाइ जनजान ॥ स्तनंधयी उत्तानशय डिंभा अस्तनपान ७५(सोलह वर्षपर्यंत के लड़के के व जुवानेपुरुषके नाम) माणवका पुनि बाल जे षोड़श वर्ष प्रमान ॥ युवावयस्था पुनि तरुण युवा पुरुष जगजान ७६ (बूढ़े व अतिबूढ़े के नाम)जीनवृद्ध जीर्णः जरन अस्थविरा परमान ॥ वर्षियान दशमी पुनि ज्यायन चातुर जान ७७ (जेष्ठभाई व छोटे भाई के नाम) पूर्व्वज अग्रिय अग्रज भाई जेष्ठ बखान ॥ यविष्ठ अवरज अनुज ये कनीयान यवीयान ७८ (चौपाई) जघन्यज पुनी कनिष्ठक भाई ॥ सतनाम छोटा दरशाई ७९ (दुबरे व बलगरके नाम) अमांस दुर्ब्बल क्षातपिछान ॥ मांसल अंसल पुनि बलवान ८० (तौंदारे मनुष्य के व नकचपठे के नाम—दोहा) तुंदिल तुंदिम पिचंडिल तुंदि बृहत्कुक्षीन ॥ नतनासिक अवनाट ये अवभट अवटीटीन ८१ (अच्छेबालवारेके व जिसकी बुढ़ापाके मारे खाल सिकुरगई हो उसके नाम—चौपाई) केशव केशिक केशी मान ॥ बलिन बलिम बलहीन बखान ८२ (जिसका अपनेही में कोई अंग अधिक वा कमहो उसका नाम व बउनाके नाम) विकल अंग पुनि अपोगंड तन ॥ सर्व्वह्रस्व वामन है ये मन ८३ (जिसकी सुइलियारि नाकहो उसके और नकटेके नाम—दोहा) खरणा खरणस नाम दो नाकनियारी जान ॥ विग्रह गतनासिका पुनि नकटा नकटी मान ८४ (जिस की पशुखुरसदृश नासिका हो उस के व ल्यचरा के नाम—चौपाई) खुरणा खुरण सखुर उरियार ॥ प्रगत

जानुकः प्रज्ञुमार ८५ (जिसकी जांघ ऊंची हो उसके व जिसकी मिलीहुई पींड़ी हो उसके नाम) ऊर्ध्वजानु ऊर्ध्वज्ञुः जान ॥ संज्ञुःसंगत जानुक मान ८६ (बहिराके व कुबरा के नाम) बधिर ऐड बहिरा कर नाम ॥ गडुल कुब्ज कुबरेकर दाम ८७ (रोगादि से जिसके हाथ में कुछ विकार हो उसका व जिसका बहुत ही छोटा शरीर हो उसका नाम) कुणीः कुकरः करमें रोग ॥ अल्पतनुः पृश्निः जन लोग ८८ (पंगुला के व मुडुआ के नाम) पंगुः श्रोणः पँगुला जान ॥ मुंडित मुंड सो मुडुआ मान ८९ (कंजाके व लँगड़े के नाम) बलिर नाम केकर गुणवान ॥ खंज खोड़ लँगड़े कर नाम ९० (जिसके अंग में लशुनाकार चिह्न हो उसके व देहके तिलके नाम) जटुलनाम पिल्युःकालक ये ॥ तिलकालक तिलकः मालक ये ९१ (बिना रोग के व इलाज करनेवाले के नाम) अनामयः आरोग्यक दाम ॥ रुक्प्रतिक्रिया चिकित्सा नाम ९२ (इलाज के व रोग के नाम—दोहा) भेषज औषध भैषज्या आयुः अगदज आप ॥ रोग व्याधि गद आमयः रूजा रुक उपताप ९३ (क्षयीरोग के व पीनस के नाम) यक्ष्मा क्षय पुनि शोषक्षवी ये ॥ प्रतिशाय पीनस कहत कवीये ९४ (छींकके व खांसी के नाम) क्षुतक्षुत्त्तवः छींक जग जानो ॥ त्तवथुः नाम कास पहिंचानो ९५ (सूजनि व उसुआय के व दवाईके नाम) श्वयथुः शोफ शोथ दरशाई ॥ विपदिक पादस्फोट दवाई ९६ (स्यहुवांके व खाजुके नाम) सिध्मः पुनी किलास कहावै ॥ पामा पाम कच्छुक दर

शावै ९७ (विचर्च्चिका खाजु के व खजुवावै के व फुड़िया फोहा के नाम) कंडू या खर्ज्जुकंडूजान ॥ विटुक नाम विस्फोट प्रमान ९८ (घाव के व नसूर के नाम) ईरम अरु व्रण घाव सुजान ॥ नारीव्रण नासुर परमान ९९ (जो उज्ज्वल धब्बे पड़जाते हैं उस कोढ़के व छज्जन के नाम) मंडलकः पुनि कोढ़ कहावै ॥ कुष्ठ श्वित्र छज्जन करि गावै १०० (बवासीर के व कबुजई के नाम) दुरनासकरु अर्श बवसीर ॥ विबन्ध पुनि आनाह समीर १०१ (संग्रहणी के व उछार व डाकने का नाम) रुकप्रवाहिका ग्रहणी जान ॥ बमथु वमन प्रच्छर्दिक मान १०२ (ब्यारथिया का व जरका नाम) विद्रधि नाम ब्यारथिय जान ॥ ज्वर ये नाम जरहि का मान १०३ (प्रमेह का व भगन्दर अर्थात् गुद समीप के फोड़े के नाम) मेह प्रमेह नाम दरशाया ॥ भगन्दर नाम भगन्दर गाया १०४ (हाड़ारोग के व चाईचूई के नाम) पादवल्मिक श्लीपद मिन्त ॥ इन्द्रलुप्तक पुनि केशघ्न सन्त १०५ (करकरोग के नाम) मूत्रकृच्छ्र पुनि अश्मरि गाय ॥ चतुरदास ने वरणि सुनाय १०६ (वैद्यके नाम—दोहा) रोगप्रहारी भिषक पुनि अगदंकार पुकार ॥ वैद्य चिकित्सक मानिये वैद्य नाम विस्तार १०७ (रोगरहित के व रोगवशसे क्षीण होजाने के नाम) निरामयः वार्त्तः पुनि उल्प नाम उल्लाघ ॥ पुनि गलान अरु ग्लास्नू क्षीण पुरुष यह जाघ १०८ (रोगीके नाम) आतुर अपटुः व्याधितः विकृत अभ्यमितजान ॥ आमयाव अभ्यांतक रोगिनका पर-

मान १०९ (खजुहाके व दद्दुहा के नाम—चौपाई) कच्छुर पुनि पावन जगजान ॥ दद्दुररोगी दद्रुणमान११० (बवासिरहा के व बइहा के नाम) बावसिराहा अर्शस नाम ॥ वातरोगि पुनि वातकि दाम १११ (जिसको बहुत दस्तहों उसके व चिपरा व चिमधा के नाम) सातिसार अतिसार कि जान ॥ क्लिनाक्ष चुल्लपिल्ल चिलमान ॥ चिपरी व चोंधरी आंखों के भी यही नामहैं ११२ (जो वातरोगसे भ्रमित होकर सिरींसा होजावै उसके नाम) चुल्लुःचिल्ली पिल्लःमान ॥ उन्मादवान् उन्मद ये जान ११३ (जिसके कफ जकड़ाहो उसके नाम व जो रोगसे बेटाहो उसके नाम—दोहा) श्लेष्मण पुनि श्लेष्मल कफी कफरु जकड़ान ॥ रोगपाय बेटाहुआ न्युब्ज क्लिन्नः परमान ११४ (जो बाई से त्वँदाराहो उसके व स्यहुँबावाले के नाम—चौपाई) वृद्धनाभि तुंदिल तुंदि भये ॥ सिध्मलाह किलआसी जनये ११५ (अँधियारे के व मुरझाने के नाम) अहक अंध अँध्यारा मन्त ॥ मूर्स मूर्च्छाल मूर्च्छित सन्त ११६ (कामके व पित्त के नाम—दोहा) शुक्र तेजरेत बीज ये इन्द्रिय वीर्य्यबखान॥ मायुपित्त पितनाम दो चतुरदास जगजान ११७ (कफके व खालके नाम—चौपाई) कफश्लेष्मा कफकानाम॥ असृग्धराये त्वक्हैं दाम ११८ (मांस के व सूखे मांस के नाम—दोहा) पल आमिष अरु क्रव्यये तरस पिशित अरु मांस ॥ शुष्क मांस वल्लूर ये उत्पत वल्लू आंस ११९ (रक्त के व करेज के नाम) असृक् लोहित अस्र रुधिर क्षतज शोणितः रक्त ॥ अग्रमांस वक्कः यह जान

कलेजा जक्त १२० (हृदय के व चरबी के नाम--चौपाई) हृतहृद पुनि हृदयःबलवान ॥ वसा बपा मेदा जग जान १२१ (गलेके पीछे की नसका व नाड़ीके नाम) मन्याग्रीवा पीछेमीत ॥ नाड़ी धमनी शिरा पुनीत १२२ (तिलके व गुदाके नाम) पुनी क्लोम तिलकःजगजान॥ गोई गुदा पुनि मस्तिक मान १२३ (काठीके व आंतके नाम) किट्ट नाम मल जग दरशावै॥ अंत्र नाम पुरितत् कहलावै १२४ (पिलही के व नास के नाम) प्लीहा गुल्म नाम पीलहक्का ॥ स्नायू नासमान मनहक्का १२५ (पेटमें जो दाहिनी ओर बटियाहो उसके व रालके नाम) कालखण्ड यकृत जगजान॥ लालसंदनी सृणिका मान १२६ (कीचर का व नकचपठी के नाम) दूषिक कीचर कर परमान ॥ सिंघाण चपठी नास बखान १२७ (खूंटका व मूतके नाम) पिंजुष नाम खूंट दरशाया॥ प्रस्राव मूत्र मुत्र कहलाया १२८ (गूह के नाम—दोहा) ज्ञाम लोच्चारः शकृतये पुरिष अवस्कर मान॥ विष्टा विट वर्चस्क ये गूह नाम जगजान १२९ (कपार के व हाड़के नाम—चौपाई) कर्प्पर पुनि कपाल कहलावै॥ कीकश अस्थि कुल्य दरशावै १३० (मांजरिका व रीरका नाम) कंकाल मांजरी जग दरशावै॥ नाम कशेरु करीरक गावै १३१ (खोपड़ी के व पशुड़ी के नाम) करोटि करोटी खोपरी नाम ॥ पशुड़ी नाम पर्शुका दाम १३२ (अंग के नाम) अवयव अपघन अंग कहावै॥ प्रतीक नाम चतुर दरशावै १३३ (देह के नाम—दोहा) सहनन गात्र कलेवर वपु शरीर वि-

ग्रेह ॥ वर्ष्म मूर्त्ति अरु तनु तनू काया देह घरेह १३४
(पैरके आगेके व पांवके नाम–चौपाई) पादाग्रः प्रपदः
पद आगे ॥ पादः अंघ्रि चरण पग बाजे १३५ (घुटना
के व ऍंड़ी के नाम) गुल्फः पुनि घुटिका जग जान ॥
ऍंड़ी सुपुनि पार्ष्णि करमान १३६ (जांघके व फीली
के नाम) जंघा पुनी प्रसृता जांघ ॥ जनु उरु पूर्व्व
अष्ठिवतयाघ १३७ (निरोहेके व टेहुनी का नाम) उरु
सक्थि निररोहा मान ॥ वक्षण टिहुनी कर यह जान ॥
१३८ (गुदा के व जहां मूत्र रहताहै उसका नाम) गुदा
अपानवायु यह नाम ॥ मूत्रठौर वस्तिहि जन दाम १३९
(करिहावँ के व स्त्रीके चूतर का नाम–दोहा) श्रोणि
श्रोणिफल ये कहे ककुद्मती कटि कह ॥ नितम्ब चूतर
तियन का चतुरा जानै इह १४० (स्त्रीकेपेट का व नि-
तम्बमें जो दो गढ़ेहोते हैं उनका नाम–चौपाई) जघन
पेट तिरिया का जान ॥ ककुदर गड्ढाकर परमान १४१
(कूले के व लिंग गुदाका नाम) स्फिच नामकटि प्रोथ
दिखाया ॥ उपस्थ लिंग गुदा गुणगाया १४२ (यो-
निके व लिंग के नाम) भग योनिः योनीकर केफ ॥
शिश्न मेढ़ मेहनजन शेफ १४३ (अंडके व चाकटिका
नाम) मुष्क अंडकोश पुनि वृषण ॥ त्रिकः नाम चाक-
टिका वरण १४४ (पेटके व कुचके नाम–दोहा) पिचंड
पिचिंड कुक्षी यह जठर उदर पुनि तुन्द ॥ कुच अस्तन
कुच नाम ये चावे त्रिभुवन वृन्द १४५ (कुचकी ढचक-
निके व कोराकेनाम–चौपाई) चुचुक कुचाग्रह नाम बखा-
ना ॥ क्रोडीक्रोड़ भुजांतरमाना १४६ (छातीके व पीठके

नाम) उरःवत्स पुनिधक्ष छवोक्षब॥ पृष्ठ पीठको कहे सबी अब १४७ (कांधेके व हँसिया का नाम) स्कन्ध भुज शिर अंस बखाना ॥ जत्रुःहसियाकर परमाना १४८ (कांख वा कखरीके व बगल का नाम) बाहू मूल कक्ष यहमाना ॥ पार्श्वः बगल कहे परमाना १४९ (कमरके नाम) मध्यम मध्यः पुनि अवलग्न ॥ चतुरदास गुण गावत मग्न १५० (बाहाके नाम–दोहा) बाहा बाहू बाहुबल दो प्रवेष्ठ भुजमान॥ भुजानाम चातुर कहे सुमिरि शिरी भगवान १५१ (गांठीके नाम–चौपाई) नाम कफोणी कर्प्पर जान॥ कूर्प्पर पुनि कफणिः जगमान १५२ (गांठीके ऊपरका व गांठी के नीचे का नाम) प्रगंड गांठी ऊपर जान॥ प्रकोष्ट गांठी नीचे मान १५३ (मणिवंध से कनअंगुरिया पर्य्यन्त के नाम–छंद) करभ मान॥ चतुर जान १५४ (हाथके नाम–चौपाई) पञ्चशाख शयशम कर हस्त॥ पाणिनाम बतलावै मस्त १५५ (अंगुठाके लगेवाली अंगुली के व अंगुरी के नाम–दोहा) तर्ज्जनी पुनि प्रदेशिनी परदेशन जगजान॥ अंगुलि अंगुली उंगल करशाखा पहिचान १५६ (अंगुठाका व अंगुठा के लगेवाली का नाम–चौपाई) अंगुष्ठ नाम अंगुष्ठामान॥ प्रदेशिनिःअंगुष्ठ लगजान १५७ (बीचवालीका व बीचवाली और कनअंगुरियाके बीचवाली का नाम) मध्यमा बीच अंगुलियाराजै॥ पुनि अनामिका पासहि छाजै १५८ (कनअंगुलियाका नाम) नाम कनिष्ठा कनअंगुलीका॥ चतुर कहै गुण ज्यहि जग नीका १५९ (नहके नाम) नखर नाम पुनर्भव जान॥ कर-

रुह नख जगजान प्रमान १६० (अंगुष्ठा तर्ज्जनीतक की लम्बाईका व अंगुष्ठा मध्यमा तक के फैलाने की लम्बाईका नाम) प्रादेश नाम लम्बाई जान॥ ताल नाम फैलाईमान १६१ (अंगुष्ठा अनामिकाके फैलानेकी लम्बाई का व बीताके नाम) गोकर्णहि फैलाई नाम ॥ द्वादशांगुल वितस्तिदाम १६२ (चटकना वा चपरा के नाम) चपेट चर्प्पट परतल जान ॥ प्रहस्त चतुरगावै गुणवान १६३ (दुहस्ता चटकना के नाम) सिंहतलरु पुनि कहत संहतल॥ प्रतल नाम चतुरा देखोमल १६४ (पसरका व अंजुरीका नाम) प्रसृति नाम पसरकाजान॥ अंजलि अंजुरी कर परमान १६५ (हाथका व मूठीका नाम) हस्तनाम हाथहिका मिन्त॥ रत्निमुष्टिका जानहु सन्त १६६ (कनअंगुलिया छोंड़िके मूठीबांधे बाके व हाथके फैलानेके नाम) अरत्नि मुष्ठाबांधन जान॥ व्याम हाथ फैलावन मान १६७ (ऊपरके हाथ उठाने का व नद्दी के नाम) पौरस पौरसि हाथ उठान ॥ गलपुनि कंठनाल परमान १६८ (गटईके व जिस गटईमें रेखा हो उसके नाम) कन्दर ग्रीवा ओर शिरोधि॥ अम्बुग्रीवा जान नरोधि १६९ (घांटीकेनाम) घाटा अवट कृकाटिक मान ॥ चतुरदासने किया प्रमान १७० (मुंहकेनाम-दोहा) तुंड वदन आनन थह वक्रआस्य मुखराय॥ लपन नाम चातुरकहे ब्रजरज शीश चढ़ाय१७१ (नाकके नाम) गंधवहा पुनि नासिका घोणा नासा घ्राण ॥ नसा नस्या चातुरकहे सप्त नाम फरमाण१७२(ओठकेनाम-चौपाई) अधर रदच्छद ओष्ठ प्रमान ॥ दशनबास चातुर गुण

जान १७३ (दोहा) ऊपरवाले ओष्ठको ओष्ठ कहे जग माय॥ नीचेवाला अधरहै चतुरादियाबताय१७४(डाढ़ी का व गालके नाम-चौपाई) दाढ़ी सोय चिबुक बतलावै॥ गंड कपोल गाल दरशावै १७५ (कनपटी का व दांतके नाम) नाम कनपटी हनुगुण गावे॥ रदन दशन रददंत कहावे १७६ (तालूके नाम) काकुद नाम तालु गुणवन्त॥ चतुरदास दरशावे सन्त१७७(जीभकेनाम-दोहा) रसनारस तारस नये जिह्वा जग पहिंचान॥ रसज्ञाः चातुर कहे पांच नाम धरिध्यान १७८ (ओठकी बगलों के व लिलाट के नाम) सृक्किणि बगल ओष्ठपरमान॥ गोधि अलिक लीलाट बखान १७९ (भौंहके व भौंहकेबीचकानाम) भ्रू ये नाम भौंहके भिन्त॥ कूर्च नाम भौंहा बिचसन्त १८० (आंखी के तिलका नाम)नामतारका सन्त बताय॥ गुणवन्तोंने गुणि करि पाय १८१ (आंखीके नाम—दोहा) चक्षुअक्षि अरु दृष्टिदृग लोचन नयन विशाल॥ नेत्र आंख ईक्षण यह चतुर कहे भजि लाल १८२ (आंसू के व आंखीके किनारों का नाम) अश्रुः आंसू अश्रु ये रोदन नेत्राम्बूज॥ नैना निकट अपांग ये चतुरा लीना सूज १८३ (अपांगके देखनेका नाम—चौपाई) नामकटाक्ष दिया दरशाय॥ चतुरदास सीतापतिगाय १८४ (कानके नाम) कर्णशब्द ग्रहश्रवण कहावै॥ श्रुति श्रव श्रोत्र सरव दरशावै १८५ (शिरके नाम) मस्तक मुर्द्धा पुनि उतमांग॥ शिर पुनिशीर्ष शीश श्रीआंग १८६ (बारके नाम—दोहा) कुन्तलचिकुरचिकूर यह बालकेश कचबार॥ शिरोरुह चातुरकहे ज-

पि श्रीसत्य मुरार १८७ (बालोंके झुंडका व टेढ़ेबालों के नाम-चौपाई) कैशिक केश्य कहे जनसन्त ॥ चूर्ण कुन्तल अलक श्रीमिन्त १८८ (जो वे लिलारपर झुके हों तो उनकानाम) भ्रमरक जो लिलार दरशावै ॥ चतुर दास निश्चय करिगावै १८९ (जुलुफके नाम) काकपक्ष ये शिखंडक नाम ॥ शिखंडिकहि चातुर बलधाम १९० (पाटी के व जूराका नाम) केश वेश कवरी दोउ नाम ॥ धम्मिल्ल जूरा कहिजनदाम १९१ (चोटीके व जटाकेनाम) चूड़ा शिखा केशकी पाशी ॥ जटा सटाः जटा परकाशी १९२ (तैलादिक लगाने के हेतु लटुरे बारहों उनके व साफबालों के नाम) वेणी पुनि परवेणी जान ॥ शीर्षराय शिरस्य कर ठान १९३ (केशसमूह के नाम) केशपाश कचपाश कहावै ॥ कुन्तल हस्तकेश पढ़ गावै १९४ (रोवांके व मोछ दाढ़ी का नाम) लोम रोम तनुरुह परकास ॥ श्मश्रु मुच्छ दाढ़ी का दास १९५ (अलंकार की शोभा के नाम-दोहा) आकल्पः पुनि वेश है प्रतिकर्म्मः पुनि वेश ॥ नैपथ्य नाम परसादन चतुरा कहै दिनेश १९६ (अलंकार करने वाले के नाम-चौपाई) अलंकरिष्णु एक बतलाया ॥ पुनि अलंकर्त्ता द्वितिया छाया १९७ (अलंकारयुक्त के नाम) प्रसाधित मण्डित अतिभूषीत ॥ अलंकृत परिष्कृत जानो सीत १९८ (अलंकारादि से अतिशोभित सजे हुये के व सँवारने व शृङ्गारने के नाम) भ्राजिष्णू रोचिष्णु विभ्राद ॥ अलंक्रिया भूषण नर ग्राद १९९ (गहनाआदि के नाम-दोहा) अलंकार पुनि आभर-

ण परिष्कार परमान ॥ परिष्कार यह मण्डन चतुर विभूषण मान २०० (मुकुट के व चोटी की मणि के नाम–चौपाई) क्रीट मुकुट पुनि मुकुट कहावै ॥ शिरोरत्न चूड़ामणि गावै २०१ (जो हारके मध्यमें सबसे बड़ी मणिहोय उसका व खोपक वा सीमन्त में बांधीहुई सुवर्णादि की पाटीके नाम) जो मधिहार तरलगुणवन्ता ॥ परितथ्या बालपारुपहैं सन्ता २०२ (बेंदी व टीका के व तरकी के नाम) ललाटिका पत्रपाश्यासत्त ॥ तालपत्र कर्णिका ये मत्त २०३ (सुवर्णादि रचित तरकी के व कण्ठी व कण्ठा के नाम) कुण्डल पुनि कर्णवेष्टनये ॥ कण्ठहि भूषा ग्रैवेतनये २०४ (जोनाभीतक लम्बा कंठा हो उसके व और सोने की कण्ठी सदृश हो तो वाके नाम) लम्बन पुनि ललन्तीका सन्त ॥ प्रालम्बिकाहेम गुणवन्त २०५ (और मोतियों से गुथी का व मोतीके हारका नाम) उरस्सूत्रिका मुक्तकि गूथी ॥ मुक्तावलि हारः गुण सूथी २०६ (जो सौलर का हार हो उसके व बत्तीसलरके हारके नाम) देवच्छन्दक सौलड़हार ॥ बत्तीसा गुच्छा विस्तार २०७ (चौबीस लरके हारका व चार लरके हारका नाम) गुच्छार्द्धः चौबीसो हार ॥ गोस्तन चार लड़ी विस्तार २०८ (दश व बारहलरके हार का व बीसलर के हारका नाम) अर्द्धहार बारह दशमिन्त ॥ माणवक बीस लरी गुणवन्त २०९ (एक लरके हारका व वही एकलर सत्ताईस की होवे तिस का नाम) एकावली एक लर मान ॥ पुनि नक्षत्र माल पहिंचान २१० (पहुंचीकेनाम) वलय कटक अवापक

जान ॥ पारिहार्य पहुँची कर मान २११ (बजुल्ला बहूटा बिजायठ बाजूबन्द पट्टी जोशन आदि भुजापर बांधनेवाले गहनों के व मुंदरी अंगूठी के नाम) अंगद केयुर भुज कामात्र ॥ अंगुलीयक उर्मिका सोहात्र २१२ (यदि अँगूठी रामकृष्णादि अंकलिखित हो उसका व ककना के नाम) अंगुलिमुद्राअंकित मान ॥ करभूषण कंकण कर जान २१३ (स्त्रियोंके कमरके भूषण कोंधी और कमरपट्टा आदि के नाम-दोहा) कांची कांचिः मेखला रसना रशना जान ॥ सा रसना यह सप्तकी चतुरा किया बखान २१४ (एकलरकी का व आठ लरके नाम-चौपाई)एकलरी कांचीगुणवन्त ॥ अष्टलरी मेखला अनन्त २१५ (सोलह लरकी के व पचीस लरकी के नाम) सोलह लरकी रशना नाम ॥ कलाप यह पच्चीसौ दाम २१६ (पुरुष की कमर याने कमरपट्टा के व बिछिया व पलनिया के नाम) शृङ्खलि शृङ्खलकमर विचार ॥ तुलाकोटि पादांगद सार २१७ (पैजनियां के व कड़ाके नाम) नूपुर पुनि मँजीर पैंजनियां ॥ पादकटक हंसक पदठानियां २१८ (घुंघुरूके व अरसी आदिसे बने वस्त्रके नाम) क्षुद्रघंटिका किंकिणि घुंघुरू ॥ बालक नाम जान जग सुगुरू २१९(कपाससेबने कपड़े के व कुशुवारीसे बनेहुये के नाम) बादरफाल नाम कार्पास ॥ कुशुवारी कौशेय जनदास २२० (पशुओं के रोमसे बनेहुये वस्त्रोंके नाम) रांकव पशू रोम विस्तार ॥ चतुरा कहत सुमिरि करतार २२१ (कोरे माड़िहाये वस्त्रों के नाम) निष्प्रवाणितंत्रक सतमानो ॥ अनाहत और

नवाम्बरजानो २२२ (धोये कपड़ेके व कौशेय कुशुधारी के धोये वस्त्रों के नाम) उद्गमनी पुनि धोये मान ॥ पत्रोर्ण धोये जनजान २२३ (बड़े मोलके वस्त्रादि के व रेशमी कपड़े के नाम) बड़े मोलका महाधन मिन्त ॥ दुकूल चौम रेशम जनसन्त २२४ (कपड़ा के छोरके व छोराके नाम) प्रावृत पुनि निवीत यह छोर ॥ दशा कह्यो दूसरा निहोर २२५ (कपड़ेकी लम्बाईके नाम)आरोहरु आयामबखाना ॥ आनाहः दैर्घ्यः परमाना २२६ (पनहा वा चकलाई के व पुराने कपड़े के नाम) विशालता परिणाह बखान ॥ जीर्ण वस्त्र पटचर परमान २२७ (फटेचिथरा के नाम) नक्तक लक्तक कर्पटगाय ॥ जीरणनाम जगत दरशाय २२८ (कपड़ा मात्र के नाम-दोहा) आच्छादन अंशुक ये वसन वास जनचेल ॥ चैल कहत पुनि वस्त्र यह चतुरा जरको खेल २२९ (अच्छे वस्त्रके व मोटे कपड़े के नाम-चौपाई) नाम सुचैलक पट पहिंचान ॥ स्थुलशाट वराशी मान २३० (वहार के व कम्बल के नाम) प्रच्छदपटः निचुल नीचोल ॥ कम्बल रल्लक नाम अमोल २३१ (धोती के नाम) अधोंऽशुकः जगजन परिधान ॥ अन्तरीय उपसंव्यनजान २३२ (अंगौछा के नाम) उतरासंग बृहतिक नाम ॥ प्रावर पुनि प्रवारहीदाम २३३ (रजाई वा अंगरखाके व उटँगेलहँगा के नाम) नीशार रजाई अँगरख मान ॥ अर्द्धोरुक लहँगा पहिंचान २३४ (लम्बे लहँगे का व चँदवा के नाम) आप्रपदीन जानजगामित ॥ विमान पुनि उल्लोल अनंत २३५ (तँबुवा व डेरेके नाम)

पटवेश्मः पटकूटी जान ॥ पटकुड्यादि दुःखहर मान २३६ (कन्नातके नाम) तिरस्कारिणी तिरस्करण ये ॥ प्रतिसिरा जवनिका जान बरणये ॥ यमनिका भी याका नामहै २३७ (पटुका के नाम) पर्य्यङ्किका जान परिकरणा ॥ अवसिक्थिका पर्यङ्कहि धरणा २३८ (आंचरका व कोंछी वा फुफुंदी का नाम) अंचलनाम आंचरा हन्दा ॥ नीवीनाम फुफुंदी बन्दा २३९ (स्नानादि अंगसंस्कारके व पोछने का नाम—दोहा) अंगसंस्कारण यह परिकर्म्मांगद जान ॥ मृजामार्ष्टिपुनि मार्ज्जन पोछनका परमान २४० (उबटना वा बुकनाके व नहाने के नाम—चौपाई) उद्वर्त्तन उत्सादनसंत ॥ अप्लव स्नान आप्लाव भिंत २४१ (चन्दनादिसे देहके लेपका व गंध मिटाने का नाम)चर्च्चा अस्थासक पुनि चार्च्चिक ॥ अनुबोधारु प्रबोधन आर्च्चिक २४२ (गाल स्तनादि में स्त्रियों के किसी गन्धादिसे उरेहनेके व कस्तूरीआदि से मस्तक में टीका लगानेका नाम—दोहा) एकनामपत्रांगुली पत्रलेख दुइज्ञान ॥ तिलक चित्रक विशेषक तमालपत्र परमान २४३ (कुंकुमकेनाम) अग्नीशिखवर कुंकुम काश्मीर जन्मांक ॥ रक्तसंकिच पिशुन अरु पीतनधीरधरांक २४४ बाह्लीक बाह्लिकरक्तये लोहित चन्दन मान ॥ सङ्कोच पिशुन चातुर कहै मंगलीक जगजान २४५ (लोहके व लवंगके नाम) लाक्षा राक्षा यावयुत अलक्त द्रुमामय जान ॥ देवकुसुम श्रीसंज्ञक लवँग चतुरजन मान २४६ (पीले चन्दनके व गूगुरके नाम) जायक पुनि कालियक कालानुसार्य्य पहिंचान ॥

अगुरु लोह राजार्ह वंशिक जो गज मान॥ कृमिज नाम भी याकाहै २४७ (कालेगूगुर वा लाल गूगुर के नाम) कालागुरु पुनि अगुरु ये मंगल्या गुगुरान॥ यक्ष धूप पुनि सर्व्वरस राल सर्ज्जरस मान॥ बहुरूप भी गूगुलहै २४८ (अनेक पदार्त्थ मिलित धूपके व लोबान के नाम) कृत्रिमधूप वृकधूप ये अनेक पदारथ संग॥ पिंडक सिह्लयावन कही तुरुष्क लोभारंग २४९ (देव-दारु धूपके नाम) श्रीपिष्टः श्रीवासये श्रीवेष्टः वृकधूप॥ सरलद्रव पायस पुनि दारुदेव अनूप २५० (कस्तूरी के व कवाबचीनी के नाम) मृगनाभी मृगमदः पुनि कस्तूरी जगवास॥ कोलक कोरक कोशफल कंकोलक नरआस २५१ (कर्पूर के व मलयागिरि चंदनके नाम) कर्प्पुर चन्द्रहिम बालुकासिताभ्र पुनि घनसार। गंधसार मलयागिरिःचंदन भद्रश्रीकार २५२ (उजले चंदनका व जिसमें कमल के समान गन्धहो उसका नाम—चौपाई) तैलपर्णिकः उज्ज्वलजान॥ कमल गन्ध गोशीर्षप्र-मान २५३ (कपिलवर्ण चंदनके व लालचंदन देवीचं-दनके नाम—दोहा) कपिलनाम हरिचंदन चंदन चंदन नाम॥ पत्रांग तिलपर्णी रँजन रक्तचँदन कुचदाम२५४ (जायफर के नाम—चौपाई) जातिकोश जातीफल मि-न्त॥ चतुरदास गावै जनसन्त २५५ (कपूर गूगुर क-स्तूरी कवाबचीनी बराबर बराबर मिलाने से जो लेपन बनताहै उसका व पिसीहुई लेपन वस्तु के नाम) यक्ष-कर्दमहि मिलकर होवै॥ वर्ति गात्रानुलेपनी जोवै २५६ (पीसीहुई लेपनका व जो कपरछान करके जो गन्धवस्तु

घोरीजावे उसके नाम) वर्णक पुनी विलेपन जान ॥ चूरण वासयोग परमान २५७ (महकुई वस्तु से भिगोई हुई वस्तु के व गन्धमालादि लगाने पाहरने के नाम) भावित वासि नाम बिगोई ॥ अधिवासना पहिरना सोई २५८ (मूड़परकी माला के व बालोंके बीचमें धारणकी हुई मालाके नाम) स्रकमाला पुनिमाल्य बखान ॥ गर्भक बारा बीच बखान २५९ (चोटीमें गुथीहुई पुष्पपंक्तिके व जो शिखामें लिलारतक लपेटी मालाहो उसके नाम) प्रभ्रष्टक गूथी परमान ॥ नाम ललामक जानजहान २६० (जो गटई के नीचे सीधी लटकी मालाहो उसका व जो यज्ञोपवीतके सदृश पहिनीहो उसके नाम) प्रालम्ब गलहि के नीचे भाई ॥ वैकक्षक यज्ञोकी नाई २६१ (जो शिखा में पहिरी जाय उसका व शिल्पादि रचनाके नाम) शेखर पुनि आपीड़ कहावै ॥ परिस्पंद जग जाहिर गावै २६२ (सर्व्व सामग्री के पूरे होनेके व तकिया के नाम) परिपूरणता पुनि आभोग ॥ उपधान उपबर्हःयोग २६३ (तोसक गलीचा आदि बिछौना के व खटिया व पलँग के नाम—दोहा) शयनीयः पुनि शयन ये शय्या नाम अनूप ॥ मंचनाम पर्य्यंक पल्यंकः खट्वारूप २६४ (गेंद वा गोंदके व दिया के नाम—चौपाई) गेन्दुक कन्दुक गेंदवा गोद ॥ दीपप्रदीप दिया ये मोद २६५ (पीढ़ा के व डब्बा के नाम) आसनपीठ नाम पीढ़ाका ॥ समुद्गक सम्पुटक डब्बाका २६६ (दीपदानके व कंघी व ककही के नाम) प्रतिग्राह्य अरु प्रतिग्रह जानो ॥ प्रसाधनी कङ्कतिका मानो २६७ (बुकवा के व दर्पण व शीशा

के नाम–दोहा) पटवासक पिष्टातहैं बुकवा के यहनाम॥ मुकुर मकुर आदर्शये मंकुर दर्पण दाम २६८ (बेना व पंखा के नाम) व्यजन ताल वृन्तकपुनी कथेरामसुतदास॥ मनुषवर्ग्गपूरण किया चतुरदास धरिआस १६९

इति श्रीजम्बूद्वीपेभरतखंडेमालवदेशेअवन्तिकामहाक्षेत्रेरतलामग्रामेवैष्णव हरिव्यासीमहंतश्रीरामाजीनन्दचतुरदासविरचितेग्रन्थश्रीअमररघुनाथकल्पद्रुमाद्वितीयकांडेमनुष्यवर्गःषष्ठोविश्रामःसंपूर्णः ६ ॥

अथ श्री अमरकोष भाषा ब्रह्मवर्गप्रारम्भः॥

(दोहा वृत्तं) पारब्रह्म श्रीकृष्णको करूं सो कोटि प्रनाम॥ ब्रह्मवर्ग वर्णन करूं भजि निम्बारक नाम १ (वंशके नाम) सन्तति पुनि सन्तान ये अभिजन अन्वयवंश॥ जनन गोत्र कुल कहतहैं पुनि अन्वायसुअंश २ (ब्राह्मणादि व ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य शूद्रों का नाम–चौपाई) वर्ण नाम ब्राह्मण कहलावै॥ चातुरवर्ण्य चारि दरशावै ३ (राजाके वंशवालों व कुलोंके नाम) राजवंश्य पुनि राजहि बीजी॥ वोज्यः पुनि कुल सम्भव रीजी ४ (सज्जन के नाम–दोहा) सज्जन साधूआर्य्यसभ्य महकुल माहाकूल॥ कुलीन नाम चातुर कहे ये सज्जन जन मूल ५ (ब्रह्मचारी गृही वानप्रस्थ यती इनका नाम–छन्द) आश्रमदेका॥ नामहि एका ६ (ब्राह्मणका नाम–दोहा) द्विजाति अरु ब्राह्मण पुनी अग्रजन्म भूदेव॥ नाम विप्र वाडव कहे चतुरदास गुणमेव ७ (इज्या अध्ययन दान याजन अध्यापन प्रतिग्रह इन छः कर्म्मों

करके युक्त ब्राह्मण का नाम–छन्द) हैं षट कर्मा ॥ जानत धर्मा ८ (पण्डित के नाम–कुंडलिया) विद्वान कही विपश्चित दोषज्ञरु सन धीर ॥ सुधीज्ञ कवि अरु पण्डित बुधः मनीषी वीर ९ बुधः मनीषी वीर नाम दूरदर्शीमान॥ कृती सुरी धीमान विचक्षण कृष्टि बखाना १० संख्यावान प्राज्ञ प्रज्ञ लुब्ध वर्ण गुणवन्त ॥ दीर्घदर्शी कोविद कहे गावत चतुरासन्त ११ (वेदुवा पण्डित व मीमांसा शास्त्रपाठी के नाम) श्रोत्रिय छान्दस पंडित वेद ॥ मीमांसक जैमिनि न्यायसमेद १२ (वेदांतीके व वैशेषिक के नाम) ब्रह्मवादी वेदांती जान ॥ वैशेषिक औलूक्य प्रमान १३ (नास्तिक व नैयायिक के नाम) शून्यवादी सौगता प्रवीन ॥ नैयायिकी अक्षपद चीन १४ (मोक्ष मार्ग दिखानेवाले व बौद्धमतावलम्बी के नाम) आर्हकस्था द्वादिक चरिका ॥ चार्वाक पुनि लौकायतिका १५ (सांख्यशास्त्र जाननेवाले व जो पढ़ाताहो उस पण्डित के नाम) सांख्य कपिल द्वौ नाम सुजाना ॥ उपाध्याय अध्यापक माना १६ (गर्भाधानादि के करैया पिता व मंत्रकी व्याख्या करनेवालेका नाम) गर्भाधान करैया गुरु सत ॥ आचार्य पढ़ैया मन्तरका मत १७ (यज्ञमें सब ऋत्विजों के सिखानेवाले व यजमान के नाम) आदेष्टाहै यज्ञकर नाम ॥ यजमानव्रती यष्टा जन दाम १८ (सोमवान यज्ञके यजमान व वारंवार यज्ञ करने वाले के नाम) दीक्षित सोमवान यजमाना ॥ यायजूक ... जाना १९ (जो विधिसे यज्ञकरै उसके व ...व नाम यज्ञ करनेवाले के नाम) यज्वाविधी

प्रकारसे यज्ञ ॥ स्थपति बृहस्पतिहै सोमज्ञ २० (सोम छचोटा पीनेवाले यजमान व जो यज्ञमें अपना सब धन देडारे उसका नाम) सोमपा सोमपीती ये जान ॥ धन देवे सर्ववेदा मान २१ (सांगोपांग वेदपढ़नेवाले व गुरुकी आज्ञा गृहस्थाश्रम हेतपावे उसका नाम) अनूचान पुनि वेद पढ़ैया ॥ समावृत्त गुरु आज्ञा पैया २२ (विद्यार्थी व छोटे नये विद्यार्थी के नाम—दोहा) छात्र शिष्य पुनि नाम ये अँतवासी अँतवास ॥ शैक्ष प्रथम कल्पिक यह कहे चतुर जनदास २३ (सहपाठी अर्थात् एक साथ एकहीवस्तु पढ़नेवाले व जितने एक गुरुसे पढ़तेहों उनके नाम—चौपाई) सहपाठी सब्रह्मचारीका॥ सब सँग पढ़ सतीर्थबाटीका २४ (जो अग्निको बटोरे रहै उसका व परम्परा उपदेश के नाम) अग्निबटोरत अग्निचित्तमत ॥ इतिहपुनी ऐतिह्य परसोसत २५ (प्रथमके ज्ञानका व समझके ग्रन्थके प्रारम्भ करनेवाले के नाम) आदिहि ज्ञान उपज्ञा नाम ॥ ग्रन्थ पढ़े उपक्रम सो दाम २६ (यज्ञके नाम—दोहा) सप्त तन्तु पुनि मख कही याग यज्ञ सब साज ॥ क्रतु अध्वर चातुर कहे होम पाठ महराज २७ (चौपाई) अतिथी पूजा तर्प्पण बली ॥ पांच चीज चतुरा चितरली २८ (इन पांचका व तिन में पाठ वेदादिका पढ़ना उसका नाम) महायज्ञ इनकर यह नामा ॥ ब्रह्मयज्ञ सो वेदकदामा २९ (वैश्वदेवाङ्ग होमहो उसका व अतिथि पूजा जो कोई अपने गृहमें विना चीन्हे आजावे उसे भोजनादि देना उसका नाम) देवयज्ञ ये वैश्वहि देवा ॥ मनुष्ययज्ञ अतिथिकी सेवा ३०

(तर्पण प्रसिद्ध है उसका व बलिप्रदानादि के नाम) पितृ यज्ञ तर्पण से होवे ॥ भूतयज्ञ यहि पांचक सोवे ३१ (सभाके नाम—दोहा) परिषत गोष्ठी संतत अरु स्थानी आस्थान ॥ सदःसभा समज्या यह समितिःसत्यसुजान ३२ (सदस्यों का गृहका व यज्ञ में न्यूनाधिक न होने पावे इस विधि के देखनेवाले के नाम—चौपाई) प्राग्वंश सदस्योंका जान ॥ सदस्थविधि देखो परमान ३३ (सभामें बैठनेवालों के नाम) सभासतसभ्य समाजिक गावे ॥ सभास्तार चौथादरशावे ३४ (यजुर्वेद जाननेवालेका व ऋग्वेदीका नाम) अध्वर्यु यजुर्वेदका जान ॥ होता ऋग्वेदी पहिंचान ३५ (सामवेदी का व इनको छोड़ धनादि दैके यजमानकरके कियाजाय उसका नाम) सामवेद उद्गाताजान ॥ ऋत्विक् याजक याजकमान ३६ (वेदी के व यज्ञार्थ चबूतरा के नाम) वेदिःवेदी वेदिक नाम ॥ स्थंडिल चत्वर गुणग्राम ३७ (खंभाके ऊपर जो कंकणाकार काष्ठ का रहता है उसका व यज्ञको अन्त्यजादि न देखने पावे इस निमित्त जो टट्टी आदि लगाई जाती है उसके नाम) यूपकंटक पुनि चषालजान ॥ कुम्बानाम क्नातिक मान ३८ (यज्ञस्तम्भ के आगे के व जो मथि के अग्नि निकारने के निमित्त दो लकड़ी रहती हैं उनके नाम) तर्म यूपाग्र थम्भानाम ॥ अरणि अरणी दो लकड़ी दाम ३९ (यज्ञकी अग्नि के नाम) दक्षिणाग्नि अरु गारहपत्य ॥ पुनि आहवनी तीजी मत्य ४० (इन तीनों अग्नियों के व संस्कारित अग्नि का नाम) अग्नी त्रेता मान ॥ प्रणीतसंस्कारता

जान ४१ (यज्ञाग्नि के नाम) समूह्य परिचाय्यःजग जान॥ उपचाय्यः चातुर परमान ४२ (गार्हपत्याग्नि से लेकर जो दक्षिणाग्नि प्रवेश के व स्वाहा अर्थात् अग्निकी स्त्री के नाम) आनाय्यहि दक्षिण परवेश॥ अग्नायी स्वाहा हुतभुकप्रेश ४३ (अग्नि बारनेके अर्थ जो ऋचा पढ़ीजाय उसके व गायत्री उष्णिक् अनुष्टुप् इतने का नाम) सामीधेनी धाया मान॥ छन्द नाम चातुर पहिचान ४४ (अग्नि में छोड़नेवाली जाउरि का व गरम पके दूध में दही डारने से जो बनता है उसके नाम) चरू नाम जाउरि परमान॥ आमिक्षा पय दही मिलान ४५ (मृगचर्म्म से बनेहुये बेनाका व दही घी मिलेहुये के नाम) धवित्र नाम बेनाका मिन्त॥ पृषदा-ज्य दही घीके मिलमन्त ४६ (जाउरि व खीरके व दे-वताके निमित्त की जाउरि के नाम) परमान्नःपायस ये खीर॥ हव्य देवता जानत धीर ४७ (पित्तरोंकी का व कव्यस्रुवा आदिके व स्रुवाके भेद) पात्र नाम पीतर अ-रुजुहू॥ उपभृत ध्रुवा स्रुवासतजुहू ४८ (यज्ञके पशुका व पशु मारनेका नाम) पशुमें उपाहताकरजाम॥ पर-म्पराकप्रोक्षण सम नाम ४९ (यज्ञ में मारेहुये पशुका व साकल्य के नाम) प्रोक्षित उपसम्पन्न प्रमीत॥ हवि सानाज्य सनातनरीत ५० (अग्निमें जो जो हुना जाय उसका व यज्ञान्त स्नान का नाम) वषट्कृत कही अग्निमें हुना॥ अवभृत स्नान कहे जग जुना ५१ (यज्ञ योग्य वस्तुका व यज्ञमें कर्मका नाम) यज्ञिय यज्ञ योग जे वस्तु॥ इष्टकर्म्म यज्ञादि में मस्तु ५२ (बावली

ताल आदि खुदानेका व यज्ञसे बचीहुई जाउरिका नाम) पूर्त ताल बावलि करजान ॥ अमृत बची जाउरी मान ५३ (देवपित्रादि के भोजन से बचीहुई वस्तु के नाम-छंद) विघसहि नाम ॥ हैंयाचेदाम ५४ (दानके नाम-दोहा) त्याग विहापित दान ये उत्सरजन परमान ॥ विश्राणन अरु विसर्जन प्रतिपादन पहिंचान ५५ (चौपाई) स्पर्शन पुनि वितरण सन्त ॥ प्रादेशन चतुरा गुणवन्त ५६ अपवर्जन निर्वपण बताये ॥ अंहति दान नाम दरशाये ५७ (मृतक के अर्थ जो दश दिन के बीचमें पिण्डादि दिये जातेहैं उनका नाम) और्ध्वदेहि अरु और्ध्वदेहिका ॥ और्ध्वदेहिकी मानो गेहिका ५८ (पितरों के निमित्त जो दान दियाजावे उसका व पितरोंके देनेके निमित्त के कर्म्म का नाम) पितृदान पुनि निवापजान ॥ निमित श्राद्ध पितरोंके मान ५९ (अमावास्या के श्राद्ध के व दिनके आठवें हिस्साका नाम) अन्वाहार्य्य मासिकहि मान ॥ कुतुप आठवां हिस्सा जान ६० (श्राद्ध में ब्राह्मण की भक्ति और सेवाकरने के व धर्मयुक्त कार्य्य करने के नाम) पर्य्येषणा परीष्टी नाम ॥ गवेषणा अन्वेषण दाम ६१ (बिनती के नाम) अध्येषणासनी ये बिनती ॥ चतुरदास गुणगावे जिनती ६२ (मांगने के नाम-दोहा) याच्ञा अभिशस्ती कहै याचनाह अभिषस्त ॥ अर्त्थना पुनि चातुर कही हरिपासी जनमस्त ६३ (पूजार्त्थ पानी छोड़ने के व पायँ धोनेके अर्त्थ पानी दियाजावे उसके नाम-चौपाई) अर्घ्य कहे पूजाहित पानी ॥ पाद्य कहे पद धोवन सानी ६४ (अतिथि के

अर्थ कर्म्म उसका व अतिथि के निमित्त जो सिद्धहो वह नाम) आतिथ्य एक नाम दरशाया ॥ आतिथेय गुणवन्तन गाया ६५ (महिमान के नाम) आवेशिक आगन्तुक सन्त ॥ गृहागत्त अतिथी गुणवन्त ६६ (अभ्यागतके व किसी के आनेपर आदरपूर्व्वक उठके खड़ेहोने के नाम) प्राघूर्णक प्राघूर्णिक नाम ॥ अभ्युत्थान गौरव जन दाम ६७ (पूजाके नाम–दोहा) पूजा अर्च्चा अर्हण अपचित्तिह त्रयलोक ॥ नमस्या नाम सपर्य्याह चतुरा ले सन्तोक ६८ (उपासना के नाम) परिचर्य्या पुनि वरिवस्या शुश्रूषा सतमान ॥ उपासनाय उपासन चतुर लिया पहिंचान ६९ (विदेश में भ्रमण करनेका नाम) अटाअट्या पर्य्यटन व्रज्या नाम निरवान ॥ भ्रमणकरे परदेश में जिनके नाम निशान ७० (ध्यान मौनादि में टिकने का व आचमन के नाम–चौपाई) चर्य्या ध्यान मौनका नामा ॥ आचमन उपस्पर्श सदामा ७१ (चुप रहनेका नाम) मौन अभाषण चुपका जान ॥ चतुरदा त कीन्हा परमान ७२ (बाल्मीकि मुनि के नाम–दोहा) बाल्मीकि मैत्रावरुण आदिकवी महराज ॥ बाल्मीकी प्राचेतस बल्मीकि के बलगाज ७३ (विश्वामित्र व व्यासजी के नाम) कौषिक गाधेय कौशिक विश्वामित्र प्रकास ॥ पाराशर्य सत्यवतीसुत द्वैपायन गुरु व्यास ७४ (अनुक्रमके नाम) आनुपूर्व्वी अनुक्रम परिपाटी आवृत्त ॥ परिपाटिः पर्य्याय सत अनुक्रमिका ये मत्त ७५ (अतिक्रमके व व्रतके नाम–चौ०) उपात्यय पर्य्यय अतिपात ॥ नियम व्रतहि जानत जगतात ७६ (जिस

में उर्द शहद मसूढ़ी न खाई जाय उसके व चांद्रायणा-
दिके व प्रकृति पुरुषके भेदजानने व अन्य विचारका भी
नाम) उपवासः औपवस्त कहाया ॥ पृथगात्मता विवेक
बताया ७७ (सदाचार पालन और वेदाभ्यास करने से
जो तेजहोता है उसका व वेद पढ़नेके समय के अञ्ज-
लीका नाम) ब्रह्मचर्य्य से तेजप्रकास ॥ ब्रह्माञ्जली
अञ्जलीखास ७८ (वेद पढ़ने के समय जो अञ्जलि
से जल चूताहै उसका व ध्यान और योगके आसनका
नाम) ब्रह्मबिन्दु जलचूवे सन्त ॥ ब्रह्मासन जानो गु-
णवन्त ७९ (वियोगशास्त्रका व प्रथम विधिका नाम)
कल्पविधी क्रम सुनो सुजान ॥ मुख्य प्रथमविधि कहै
प्रमान ८० (द्वितीय विधिका व संस्कारपूर्वक वेदके
सुननेका नाम) अनुकल्पा द्वितियाविधि जान ॥ उपाक-
रणश्रवणन कर ध्यान ८१ (नाम गोत्रादि पूर्वक प्रमाण
करनेकेनाम) पादग्रहण अभिवादन मिन्त ॥ चतुरदास
गुणगावत सन्त ८२ (संन्यासी के व तपस्वी के नाम-
दोहा) भिक्षु परिब्राट कर्म्मंदी पाराशरी मस्करीन ॥
तपस्वी नाम तापस कहे पारिकांक्षी परवीन ८३ (मु-
निके व तपस्या के क्लेश सहनेवाले के नाम-चौपाई)
मुनि वाचंयम नाम पुनीता॥ दान्त नाम जानो भयभीता
८४ (ब्रह्मचारी के व ऋषिके नाम) ब्रह्मचारि वर्णीगु-
णवन्ता ॥ सतवाचा पुनि ऋषी अनन्ता ८५ (जो वेदव्रत
धारण किये हुये गुरुकी आज्ञासे स्नानकरे उसका व
जितेन्द्रिय के नाम) स्नातक स्नान हुक्म गुरुहन्दा ॥
यतिः यती जितइन्द्री बन्दा ८६ (जो व्रतवश हो ए-

थ्वीपर सोवे उसके व रजोगुण तमोगुणरहित व्यासादि मुनिके नाम) स्थंडिलशायी स्थांडिल मान॥ विरजस्तमा द्वयालिंग जान ८७ (पवित्र के व बौद्ध क्षपणकादि दुष्टशास्त्रवर्त्तियों का नाम) प्रयत पवित्र पूत परमान॥ बौद्धमती पाखण्ड सुजान ८८ (ब्रह्मचर्य्य के पलाशके दण्डका यदि वह बांसका हो तो उसका नाम) दण्ड आषाढ़ नाम यकभाई॥ रांभनाम वंशा दरशाई ८९ (व्रतियों के लोटाके व यह कुंडीका भी नामहै और उनके आसन का नाम) कमण्डलू कुण्डी गुणवान॥ वृषीनाम आसन परमान ९० (मृगादि के चर्म्मका व भीख के ढेरका नाम) चर्म्म अजिनकृत्ती गुणवन्त॥ भैक्ष नाम दूजा पद सन्त ९१ (वेदके अभ्यासके व यज्ञौषधी के कूटने का नाम) स्वाध्याय जप वेद अभ्यास॥ सुत्याससवन अभिषवा दास ९२ (सब पापके नाश करनेवाले मन्त्रका व अमावास्यादिनके यज्ञका नाम) अघमर्षण नामहि अघहरना॥ दर्श नाम अमावास्या वरना ९३ (पौर्णमासी के दिन के यज्ञका व गुरुनिम्बादित्य के नाम) पौर्णमास यज्ञहिकर नामा॥ निम्बादित निम्बारक धामा ९४ (अहिंसा सत्य चोरी न करना ब्रह्मचर्य्य परिग्रहलेना इन्होंका व शौच सन्तोष तप स्वाध्याय ईश्वरप्रणिधान इनका नाम) आदिपदहिका यमहै नाम॥ नियमनाम दूसरेका दाम ९५ (बार बनवाने के व बांयेंकांधे के जनेऊ के नाम-दोहा) भद्राकरण सो मुण्डन वपन नाम पुनि क्षौर॥ ब्रह्मसूत्र उपवीत पुनि चतुरा लीन निहौर ९६ (दहिने कांधेके जनेऊके व मालाकार

यज्ञोपवीत पहिरनेकेनाम—चौपाई) प्राचीनावीत दाहिने कन्ध ॥ निवीत मालाकारी बन्ध ९७ (दोहा) अंगुलि आगे जानियो देवतीर्थ त्रय लोक ॥ इसीसे तर्पण देवता करैं भक्ति तजि शोक ९८ अनमिका औ कनिष्ठिक मूलप्रजापति तीर्थ ॥ अंगुष्ठा तरजनि बीच में तीर्थ पितृका अर्थ ९९ (चौपाई) अंगुष्ठा जड़में ब्रह्महि तीर्थ॥ चतुर्दास इनहूं से अर्थ १०० (ब्रह्ममें मिलजाने के नाम) ब्रह्मभूय पुनि ब्रह्मत्वा मत ॥ ब्रह्मसायुज्य नामहै श्रीमत १०१ (देवमें मिलने के नाम) देवभूय देवत्व दीलवर ॥ देवसायुज्य पहुँच तालेवर १०२ (दोहा) गोमूत्र दूध गोबर दही घी कूशोदक पान ॥ एकरात्रि उपवास करे ताका यही प्रमान १०३ (उस पुरुष का नाम—छन्द) कृच्छ्रवान ॥ नामजान १०४ (संन्यास पूर्व्वक भोजन त्यागका व जिस तपस्वी की अग्नि बुझ गईहो उसके नाम—चौपाई) प्रायनाम भोजनका त्याग॥ बीरह अरु नष्टाग्नी आग १०५ (दम्भसे ध्यानादिकरने व जिस ब्राह्मण का गौणकालमें भी यज्ञोपवीत न हुआ हो उसका नाम) दम्भी ध्यानी कुहनाजान ॥ व्रात्ययज्ञ उपवित बिन मान १०६ (वेदाभ्यासरहित व बहुरुपिया ब्राह्मण का नाम) निराकृत निराभ्यासी वेद ॥ लिंगवृत्ति पुनि धर्म्मध्वजेद १०७ (जिसका ब्रह्मचर्य नष्ट होगया हो उसके व सायंसंध्या में सोनेवाले के नाम) अवकीर्णी क्षतव्रत भयानिष्ट ॥ अभिनिर्मुक्त सोवतामिष्ट १०८ (प्रातःकालकी सन्ध्या में सोनेवाले व जिसका बड़ाभाई न ब्याहा गयाहो प्रथम छोटा ब्याहा जाय उ-

सका नाम) अभ्युदित प्रातकाल जो सोवे ॥ परिवेत्ता जस छोटा होवे १०९ (और उस बड़ेभाई का नाम) परिवित्ती जेठकानामा ॥ चातुरदास कहै भज रामा ११० (विवाहके नाम—दोहा) विवाह पुनि उपयम कहे परिणय है उपयाम ॥ पाणिपीडन उद्वाह ये चतुर कहे सिय राम १११ (मैथुन के नाम) मैथुन निधुवत रत कहे ग्राम्यधर्म जगजान ॥ व्यवाय जन चातुर कहे अजब रच्यो भगवान ११२ (वेदविहित यज्ञादिपथविधि स्त्रीसेवन न्याय से धनोपार्जन व मोक्ष करके युक्तहो उसका नाम—चौपाई) त्रिवर्ग भेद ऊपरला जान ॥ चतुर्वर्ग दूजा पद मान ११३ (और वे धर्म्मादि सबलहों तो उसके व हमजोलीवालेका नाम) चतुरभद्र धर्म्मादी सबल ॥ जन्य नाम हमजोली अबल ११४ (दोहा) ब्रह्मवर्ग पूरण किया रामदास के नन्द ॥ चतुरदास मम नाम है हृदय बसैं गोविन्द ११५ जयजय गुरु निम्बारक जयजय सन्त महन्त ॥ चतुरदास जनदासहै जे महीप गुणवन्त ११६ ॥

इति श्रीजम्बूद्वीपेभारतखंडेमालवदेशेअवन्तीमहाक्षेत्रेरतलामनगरेहरिव्यासी श्रीवैष्णवमहन्तश्रीरामाजीनन्दचतुरदासविरचितेग्रन्थश्रीअमररघुनाथ कल्पद्रुमभाषाब्रह्मवर्गसप्तमोविश्रामःसम्पूर्णः ७॥

अथ श्रीअमरकोषभाषायामष्टमःक्षत्रिय वर्गःप्रारभ्यते ॥

(सोरठा) राजनपतिरघुनाथ रघुवंशी रघुवंशवर ॥ चतुरदासकेसाथ कृपाकरोकोशलधनी १ (क्षत्रियों के

नाम–दोहा) क्षत्रिय पुनि वेराटहै बाहुज राजन्यराज ॥ मूर्द्धाभिषिक्त महाराजकुल सुनतसुधारैकाज २ (राजाके नाम) राजारटपार्थिवपुनि अक्ष्माभृत नृपभूप ॥ क्ष्मा-भुकमहीक्षितबल बतुराबड़ेअनूप ३ (जो बहुतराजाओं का मालिकहो व समुद्र पर्यन्त जिसका राज्यहो उसका नाम–चौपाई) आधीश्वर सबके शिरताज ॥ चक्रवर्त्ती सागर तक राज ४ सार्वभौम याको कवि केवे ॥ जीव जन्तु सब इनको सेवे ५ (चालीस हज़ार कोसके राजा का नाम) जिनका नाम मण्डलेश्वर है ॥ जिनको सदा रामका वरहै ६ (वही मण्डलेश्वर राजसूय यज्ञ कियेहो व सब राजाओं का शिक्षक हो तो उसका और राजा-ओं के गणका नाम) सम्राट नाम सबही का शिक्षक ॥ राजक नाम कहै गण रक्षक ७ (क्षत्रियों के गण का व मन्त्री के नाम) राजन्यक पुनि क्षत्रिय सात्य ॥ मंत्री धीजन सचिव अमात्य ८ (सबसे छोटे अन्य साहबों के व मुख्यमन्त्री के नाम) कर्म्म सचिव छोटाजनजानो ॥ महामात्र परधान पिछानो ९ (द्वारपाल व रखवारों के नाम–दोहा) द्वारपाल प्रतिहार ये द्वास्थितदर्शकदास॥ रक्षीवर्ग अनिकस्थ है रखवारा नृपदास १० (अधिकारी व एक ग्रामके ठेकेदारके नाम–चौपाई) अध्यक्ष पुनि अधिकृत अधिकारी ॥ स्थायुक एक ग्राम पुकारी ११ (बहुत ग्रामके ठेकेदारों के व सोने के अधिकारी के नाम) गोपनाम अति ठेकेदार॥ भौरिक कनकाध्यक्ष पुकार १२ (रुपयों के खज़ानची व जो ज़नानेकी वस्तुका अधि-कारीहो उसके नाम) नैष्किक रूपाध्यक्ष बलवान॥ अ-

न्तर्व्वैशिक ड्योढ़ीवान १३(राजा व राजस्त्रियोंके निकट जो बेत लिये हुये रहते हैं उनके नाम–दोहा) सौविदल्ल अस्थापत कञ्चुकीह बलधाम॥ सौविदजन चातुर कहे गाय गाय सियराम १४ (खोजाके नाम–चौपाई) षण्डहि शण्ड वर्षवर नामा॥ शण्डहि षण्ड खोज गुणग्रामा १५ (सेवक व नौकरके व अपने डांड़ेवाले राजा के नाम) सेवक अर्त्थी पुनि अनुजीवी॥ शत्रू नाम कहे गुणभीवी १६ (उससे अन्य राजाके व इन शत्रु मित्रों से पर अन्य राजाओं के नाम) मित्र अन्य राजा पहिंचान॥ शत्रु मित्र उदासिन मान १७ (जो अपने राजा के पीछे राजा हो उसके नाम) पार्ष्णिः अपने राजा पीछे॥ चतुरदास बलवान बलीछे १८ (वैरीके नाम–दोहा) रिपु वैरी सापत्न अरि द्वेषरु द्वेषण मान॥ द्विट् विपक्ष दुर्हृदय ये अहित अमित्री जान १९ शात्रव शत्रू परटस्यू अभिघाती आराति॥ प्रत्यर्त्थी पुनि परिपंथिक नाम वैरिबरियाति २० (हमजोलीवाले के नाम–चौपाई) स्निग्ध सवया सतकरगाये॥ वयस्यनाम चातुर मन भाये २१ (मित्र व मिताई के नाम) सूहृत सखा मित्र परमान॥ साप्तपदीन सख्य सत जान २२ (भला मनाने के नाम) अनूरोध अनुवर्तन जान॥ भला मनावनये पहिंचान २३ (जासूस व हरकारे के नाम–दोहा) गूढ़पुरुष चर चार ये अरु यथार्हवर्णान॥ प्रणिधिअपसर्प्पसही स्पशः हरकारा जान २४ (मातबर विश्वासी के नाम–चौपाई) प्रत्ययित पुनि आप्त गुणवंत॥ विश्वासी चातुरजन संत २५ (ज्योतिषी पंडित के नाम–

दोहा) ज्योतिषिकः दैवज्ञ ये मुहूर्त्तज्ञानी जान ॥ सांवत्सर पुनि गणकहै कार्तान्तिक मुहूर्त्तान २६ (शास्त्री के व मोदी के नाम—चौपाई) तान्त्रिक पुनि ज्ञाता सिद्धान्त ॥ गृहपति सत्री मोदकवान्त २७ (लेखकके नाम—दोहा) लिपिकर लिविकर लिविंकर लिविकारःलिपिकार॥ अक्षरचण लेखक पुनी अक्षरचञ्चूसार २८ (लिखे हुये के व दूत व पठवानियां के नाम) लिवि लिपि लिखितः लिखी यह अक्षरविन्यासे मान ॥ दूतनाम सन्देशहर पठवानियां प्रमान २९ (दुताईके व राहीके नाम) दौत्य दुताई दूत्यहै कहै चतुरजन संत ॥ अध्वग अध्वनिन पथि है अध्वेन्यही पन्थ ३० (स्वामी राजा अमात्य मंत्री सुहृत् मित्र कोष खज़ाना राष्ट्रदेशकी भूमि दुर्ग दुर्ग्गम स्थान बल फ़ौज इन सबके और सुवर्णादि देके शत्रुके मिलनेका नाम) पौरि श्रेणी प्रकृति पुनि राज्यांग बलधाम ॥ सन्धि नाम परवित्तदे मिलकर ले आराम ३१ (परराज्यके लूट फूंकदेने और शत्रुपर चढ़जानेका नाम—चौपाई) विग्रह लूट फूंक परमान ॥ यान चढ़ाई है बलवान ३२ (शत्रु बलवान् देखके क़िला आदिमें बैठ रहना उसका व बलवान् शत्रुसे मिलकर निर्बलको मारना उसका नाम) क़िले छिपे आसन यह नाम ॥ लड़े मिले सो द्वैधहि दाम ३३ (शत्रुसे पीड़ित होके किसी बलवान् के पीछे लुकनेका और सन्ध्यादिकों के नाम) आश्रय नाम बलीकी शर्ण ॥ षड्गुण सन्ध्यादिक ये वर्ण ३४ (राजाकी शक्तियों के नाम) नाम प्रभाव जान उत्साह ॥ मंत्रज तीन नाम गुण काह ३५ (नीति शास्त्रो-

क्क क्षय स्थान व वृद्धि और प्रभावके नाम) त्रिवरगनाम वृद्धिका मिन्त॥ प्रताप प्रभाव प्रभावहि सन्त ३६ (राजा के चारों उपायोंके नाम) सामरु भेद दण्डअरु दान॥ चार उपाय नृपति के मान ३७ (दंड देने और सलूक करने के नाम) दमरु दण्ड साहस यह नामा॥ साम सलूक सांत्वपद दामा ३८ (फरक डारने और अमात्यादि के परखने के नाम) भेद उपाय नाम ये फरक॥ उपधा आमात्यादी हरक ३९ (दो जनोंकी सलाह का नाम) अखण्ड क्षीण नाम ये सल्ला॥ मिलि एकत्र करत हैं हल्ला ४० (एकान्त के नाम–दोहा) विजन विविक्त उपांशु ये रहे रह छन्नहि दाम॥ निश्शलाक चातुर कहे एकाहू के नाम ४१ (एकांतकी बात वा कर्म्म और विश्वास व ऐतबार के नाम–चौपाई) रहस्य नाम एकान्तहि बाता॥ विश्रंभरु विश्वासहि जाता ४२ (अन्याय का नाम) भ्रेष नाम अन्याय कहावे॥ चतुरदास निश्चयकर गावे ४३ (न्यायके नाम–दोहा) कल्प न्याय अभ्रेष ये देश रूप जनजान॥ समंजसः चातुर कहे, नीयायक पहिंचान ४४ (न्याय से जो वस्तु लीजावे उसके नाम) युक्त औपयिक न्याय्य मत भज मानरु अभिनीत॥ लभ्यनाम चातुरकहे नृपनाकरे अनीत ४५ (नीक जबूनके परखने के नाम–चौपाई) है समर्त्थन ये सम्प्रधारणा॥ नृपही जानेलेत बारणा ४६ (आज्ञा हुक्मके नाम दोहा) अववादः निर्देशहै शासन पुनी निदेश॥ शिष्टिः आज्ञा नामये हुक्महिदेत नरेश ४७ (मर्य्याद के नाम–चौपाई) धारणाह अस्थिति मर्य्यादा॥ संस्थान चातुर

गुणआदा ४८ (अपराध के नाम) मंतुःनाम जान अ-
पराध ॥ आग चतुरजन वरणत साध ४९ (बांधने और
दूने दण्ड के नाम) बन्धन पुनि उद्दान कहावे ॥ द्विपाद्य
नाम दुगुनेको गावे ५० (पोत और जगाति व कौड़ीका
नाम) भागधेय कर बली पोतके ॥ शुल्क नाम कौड़ीहि
वोतके ५१ (भेंट व नज़र के नाम—दोहा) प्राभृत पुनी
प्रदेशन उपग्राह्य उपहार ॥ उपदा नाम उपायन नज़र
नाम विस्तार ५२ (दहेज़ व भाई बन्धुको देनेकी वस्तु
और केवल कन्यादान समय में वा व्रत भिक्षामें देने के
नाम—चौपाई) हरणसुदाय वस्तुका नामा ॥ यौतक
युतक कहे जनदामा ५३ (उसी समय वर्तमान और
आनेवाले समयका नाम) तदात्व पुनि तत्काल बखा-
ना ॥ आयति आन समय परमाना ५४ (तुरन्त और
आगे होनेवाले फलके नाम) सान्दृष्टिक फलकाहै नाम ॥
उदर्क आग अवैया जाम ५५ (अतिवृष्टि होने के उत्पा-
त और अपने व पराये राज्य से चौरादि के भय का
नाम) अदृष्ट नाम अतिवृष्टी मिंत ॥ दृष्टनाम भय चौर-
अनित ५६ (अपने सहायक से भयका और क़ानूनच-
लानेके नाम) अहिभय नाम सहायक गाया ॥ प्रक्रिया
सो अधिकार चलाया ५७ (चँवर और मणिआदि से
बनीहुई राजगद्दी के नाम) चामर चमर प्रकीर्णक जा-
न ॥ नृपासनहि भद्रासन मान ५८ (कदाचित् वही रा-
जाके बैठने का स्थान सोने से बनाहो तो उसका और
छतुरी के नाम) नाम सिंहासन सुवरण मिन्त ॥ आतपत्र
पुनि छत्र सुसन्त ५९ (राजाकी छतुरीका और भरे घड़ा

के नाम) नृपलक्ष्मः छतुरी पहिंचान ॥ भद्रकुंभपूर्णकुंभ सुमान ६० (झारी के और आगन्तुक फ़ौजके परने का स्थान डेराके नाम) कनकालुका नाम भृङ्गार ॥ शिबिर निवेश फ़ौज विस्तार ६१ (पहरा व गश्तघूमने के और हाथी घोड़ा रथ सिपाही इन सबका नाम) सज्जन उपरक्षण यह नाम ॥ सेनांग नाम सबही का धाम ६२ (हाथीके नाम–दोहा) गज दन्ती कुंजर करी नाग हस्ति मातंग ॥ दन्तावल पुनि वारण द्विरद सुद्विप आजंग ६३ अनेकपद स्तम्बेरम इभ पुनि पद्मी जान ॥ नामकहे हाथीनके चतुरदास परमान ६४ (हाथियों के मालिक बड़े हाथीका और मदान्ध हाथीके नाम–चौपाई) यूथनाथ यूथप बलवन्त ॥ मदकल मदोत्कटः मद अन्त ६५ (हाथी के बच्चे के नाम) करिशावक कलभः बलवान ॥ करभ नाम चातुर जनजान ६६ (जिसके मद बहता हो उस हाथी के नाम) गर्जित पुनी प्रभिन्न बखान ॥ मत मद बहता जाहिर जान ६७ (बिन मदवाले के और हाथियों के झुंडके नाम) निर्म्मद सो उद्वान्त बखान ॥ गजना हास्तिक यूथहि जान ६८ (हाथिनी के और हाथी के गालका नाम) करिणी वशा धेनुका जान ॥ कट हाथी कणको पहिंचान ६९ (हाथीके मदके और हाथी के सूंडिसे पानी निकलने के नाम) मद अरु दानमदहि गजराज ॥ वमथू करशीकर जल गाज ७० (हाथी के मस्तक के मांसका और दोनों कुम्भोंके मध्यमें जो होता है उसका नाम) हाथी मस्तक कुम्भहि नाम ॥ बिन्दु दोउ कुम्भन बिच दाम ७१ (हाथीके लिलार और उ-

सके नेत्रोंकी गोलाईकेनाम) अवग्राह अवग्रह लीलार ॥ अक्षिकुटक ईषिका सुनार ७२ (उसके निहारनेका और उसके जहां से कान जमते हैं उसका नाम) है निर्याण निहारन मिन्त ॥ चूलिका कहे कान गुणवन्त ७३ (उसके लिलारके नीचेका और वाहित्थके नीचेके नाम) लिलार नीचे वाहिथ जान ॥ प्रतीमान तेहि मीचे मान ७४ (इसके कन्धाका और उसके बिन्दुओंका नाम) आसन नाम कन्ध का भाई ॥ पद्मक नाम बिन्दु दरशाई ७५ (हाथीकी बगलका और उसके आगे के भागका नाम) पक्षभाग ये बगल बखान ॥ दन्तभाग आगेकरमान ७६ (उसके आगेके जंघादि भागका और पीछे के भागका नाम) गात्र नाम जंघादिक जान ॥ अवर पिछाड़ीकर पर मान ७७ (चाबुक की डांड़ीके और हाथीके खूंटा का नाम) वैणुक वेणुक तोत्र प्रमान ॥ पुनि आलान सु· खूंटामान ७८ (हाथीकी जंजीरके और आंगुसिके नाम) शृङ्खल अन्दुक निगड़ कहाय ॥ अंकुश पुनि सृणि शृणि जन गाय ७९ (उसके कमर बांधने की रस्सी के और मालिक के चढ़ने के वास्ते तैयार करने के नाम) चूषा कक्ष्या वरत्रा मिंत ॥ कल्पना सज्जना जानो संत ८० (गद्दी व भूलके नाम-दोहा) परवेणी आस्तरण ये कुथवर्णः परिस्तोम ॥ कुथा नाम ये भूल का चतुर बताया जोम ८१ (हाथी घोड़े का और जिस भूमिमें हाथी बांधे जायँ उस भूमिका नाम-चौपाई) वीत नाम हस्ती घोड़नका ॥ वारीनाम बांधने जिनका ८२ (घोड़े के नाम-दोहा) वाजी वाह तुरंगम तुरँग अश्व हय

घोट ॥ अर्व्वा पीतिघोटक यह सैन्धव सप्ती मोट ८३ (चौपाई) चातुरदास गन्धरब अन्ता ॥ ताजी तुरंग वीर बलवन्ता ८४ (कुलीनघोड़े का और सीखेहुये घोड़ेका नाम) आजानेय कुलीन बखाना ॥ विनीत नाम सीखा परमाना ८५ (बनायुदेशोत्पन्न घोड़े का और पारसदेशवाले के नाम) वनायुज कही बनाऊ नाम ॥ पारसीक काम्बोजक दाम ८६ (काबुली घोड़े के और जिसका एक कान कालाहो अन्य सर्व्वाङ्ग उज्ज्वलहो उसका नाम) बाह्लिक अरु बाह्लीक बखाना ॥ ययु उजला जानो परमाना ८७ (वेग चलनेवाले का और लदुवा घोड़े के नाम) जवन चलै अति आतुर मिन्त ॥ रथौरी पृष्ठ्य कही जन सन्त ८८ (उजले घोड़ेका और रथमें चलने वालेका नाम) कर्क नाम उजला हय जान ॥ रथ्यवान रथका पहिंचान ८९ (बछेड़ेका और घोड़ी के नाम) नाम किशोर बछेड़ा मिन्त ॥ वामी अश्वा वड़वा सन्त ९० (घोड़ी के झुण्ड के और घोड़े की एक मैजलिका नाम) वाड़व नाम घोड़ी का जान ॥ आश्वीन नाम मैजली मान ९१ (घोड़े के बीचदेहीका और हिनहिनाने के नाम) कश्य बीच देहीका नाम ॥ हेषा ह्रेषा हींसन दाम ९२ (घोड़े के गलका नाम) निगाल नाम ये गल का मिन्ता ॥ चतुरदास गुण गावत सन्ता ९३ (उनके झुण्डके नाम—दोहा) आश्व आश्वीयरचित ये घौरी तक वालात ॥ प्लुत्तनाम आस्कन्दित कही चतुरने बात ९४ (इनपांचोंचालोंके नाम) आस्कन्दित पुनि सर्पट दुलकी धारा जान ॥ पोइया रेचित प्लुत्त वालात उछाल

प्रमान ९५ कावा से आदि नाम नहीं हैं (घोड़ेकी नाक और लगाम के नाम–चौपाई) प्रोथनाम घोड़ेकी नाक॥ कविका खलीन खलिनय साक ९६ (टापके और पूंछ के नाम) शफ खुर क्षुर टापहि का नाम ॥ पुच्छ लूम लांगुल यह दाम ९७ (बारयुक्त पूंछके और लोटने के नाम) बाल हस्त पुनि बालधि मान ॥ उपावृत्त अरु लुठित बखान ९८ (लड़ाई में चढ़नेवाले रथ के और सामान्य रथके नाम–दोहा) शतांग पुनि स्यन्दन कहे रथ लड़ाइ पहिंचान ॥ पुष्प रत्थ सामान्य है चतुर लेहु पहिंचान ९९ (चौड़ी लम्बी जनानीगाड़ीकेनाम–चौपाई) डहन हयन करणी रथ जान॥ प्रवहण नाम जनानी मान १०० (छकड़े के और गाड़ीके नाम)अन पुनि शकट नाम छकड़ेका ॥ गंत्री गांत्रीहै गाड़ेका १०१ (पालकीके और डोली व हिंडोले के नाम) याप्य यान शिविका दोउनामा ॥ प्रेङ्खादोला दोलीदामा १०२(जिस रथपर बाघके चमड़े का वहार हो उसके और पीलरङ्ग के कम्बल के वहारवालेका नाम) वैयाघ्रः पुनिद्वैप कहावे ॥ पुनीपाण्डु कम्बली बनावे १०३ (कम्बलके वहारवाले का और वस्त्रवालेका नाम) काम्बलनाम कहे गुणवन्ता ॥ वास्त्र नाम बस्तर बलवन्ता १०४ (दुकूलवाले के और रथके समूहके नाम) दौकूल नाम चतुर गुरगावे॥ रथ कस्वारथ्या जनचावे १०५ (धुरीके और तांगाके नाम) यानमुखा धूः धुरी कहावे ॥ रथांग पुनि अपस्कर गुण-गावे १०६ (पहिया का और पुट्ठी के नाम) चक्ररथांग नामपैएका ॥-नेमि नेमीप्रधि पुट्ठीनेका १०७ (ना-

हके और कुलाबाका नाम) पिंडिकानाभि पिंडी ये नाभी॥
अणी कुलाबा जानसो आभी १०८ (लोह निर्म्मित
रथके वहारके और बकौराके नाम) बरूथ अरुरथगु-
प्तिबखान॥ युगन्धर पुनि कूबर जनजान १०९ (सगुन
का और जुआंका नाम) अनुकर्ष नाम सगुनका मिन्ता।
प्रासंग नाम युग गावत सन्ता ११० (सवारी के नाम)
धोरणयान पत्रयुग्यजान॥ वाहन नाम सवारीमान १११
(कहार आदि वाहनों का और हाथीवान महावत के
नाम—दोहा) वैनीतक चातुर कहे आदि कहारा जान॥
आधोरण हस्तीप का निषादी हस्तीवान ११२ (रथा-
दि के हांकने वाले गाड़ीवान बहलवान के नाम) नि-
यन्ता यन्ता प्राजिता क्षत्ता सारथि सूत॥ दक्षिणस्थ
सव्येष्ठये चतुर कहे मजबूत ११३ (रथपे चढ़के लड़ने
वाले के और सवार के नाम—चौपाई) रथी स्यन्दना
रोह पुकारे॥ सादी अश्वारोह निहारे ११४ (लड़नेवा-
लों के और गश्त घूमनेवाले व पहरा देनेवाले के नाम)
भट योद्धा योधा बलवान॥ सैनिक सेना रक्ष बखान
११५ (फौजभर के और १००० सिपाही के मालिक
का नाम) सैन्य पुनी सैनिक बलवन्त॥ सहस्री पुनि
साहस्र पुनिन्त ११६ (जो फौजरखानेके लिये चारोंओर
घूमतेरहैं उनके और फौजके मालिक के नाम) परिधि-
स्थ परिचर पुनी परायत॥ सेनानी वाहिनी पतीसत
११७ (बख़्तर के और इन्हें पहिनके जो कमरपट्टीबांध-
तेहैं उनके नाम) कंचुक वारबाण बखतर ये॥ अधिकां-
गपुनी सारसन ये ११८ (टोपके नाम) शीर्षराय शीर्षक

शिरस्त्र नाम ॥ चतुरदास टोपी यहदाम ११९ (कवच केनाम—दोहा) उरश्छद दंशन वर्म पुनि जागर जगरकवच ॥ तनुत्र नाम कंकटक ये चतुराके तसवत्र १२० (झिलिमादि पहिरे हुये के नाम—चौपाई) पूतिमुक्ता आमुक्त बखानी ॥ अपिनद्ध पिनद्ध नाम गुण खानी १२१ (मंत्रादि कवच धारणकियेहुये के नाम) वर्म्मित दंशित सज्ज संनद्ध ॥ व्यूढ़ कंकटकमंत्राबद्ध १२२ (कवच धारणकरनेवालों के समूह का नाम) नाम सुनो कावचिक सुजाना ॥ चतुरदास ने कर परमाना १२३ (पियादाके नाम—दोहा) पादान्तिः पादातये पदात पदातिः पंग ॥ पदगपत्ति पादातिक पदिक पदगहै जंग १२४ (पैदरोंके झुंडका नाम—चौपाई) पादात नाम ये झुंड बखाना ॥ गुणवन्तोंने गुणकर जाना १२५ (जो हथियारही बांध के जीविका करतेहों उनके नाम—दोहा) कांडपृष्ठ पुनि आयुधिक कांडस्पृष्ठ आयुधीय ॥ शस्त्रजीव चातुर कहे येह आजुकानीय १२६ (अच्छे तीरंदाज के नाम—चौपाई) सुप्रयोग विशिखः कृतहस्त ॥ कृतपुंखहि चातुर जन मस्त १२७ (जिसका तीर निशाने से चूकिजाय उसका नाम—छंद) अपराद्ध पृषत्क सुमानिये॥ चतुरगुणी पहिंचानिये १२८ (धनुर्बाण बांधनेवाले के नाम—दोहा) धनुष्मान् पुनि धनुर्द्धर धानुष्क निषंगी जान ॥ धन्वी अस्त्री धनुष पुनि चतुरकहे जिय ठान १२९ (केवल बाण बांधनेवाले के और शक्ति आदि शस्त्रधारी के नाम—चौपाई) कांडवान् कांडिरधरबान ॥ शक्ति हेतिक शक्तीक बखान १३० (लठिहाका और फरसा बांधने

वाले के नाम) याष्टीक नाम लकड़िया भाई ॥ पारश्वधिक फरसवा गाई १३१ (तरवार बांधेहुये और सांग बाँधे हुयेके नाम) नैस्त्रिंशिक सुनाम तलवारी ॥ प्रासिकनाम सांगका भारी १३२ (भालाबरदारका और ढलैतके नाम) कौंतिक कह भालाबरदार ॥ फलकपाणि चर्म्मी बिस्तार १३३ (निशानलेके चलनेवाले के नाम) वैजयंतिकः नाम पताकी ॥ है निशानजा फौजहिसाकी १३४ (सहायक वा मददगार के नाम) अनुप्लवःअनुचरहि सहाय ॥ अभिसर नाम सहायक आय १३५ (अगुवाके नाम—दोहा) अग्रेसर अग्रतस्सर पुष्ठ अग्रसर योग ॥ पुरस्सरनाम पुरोगम पुरोगामी है पुरोग १३६ (धीरेधीरे चलनेवाले और बड़े चलैया के नाम—चौपाई) मंदगामी मंथर बलहीन ॥ जंघालपुनी अतिजव चलवीन १३७ (हरिकारे और जल्दबाज के नाम—दोहा) जंघाकारक जांघिक हरिकारा परवीन ॥ प्रजवीवेगी जवन जव त्वरित जानतरस्वीन १३८ (जिसे जीतिसकै उसका और जीतने लायक का नाम—चौपाई) जय्य है नाम जीतिबेहुंदा ॥ जेयनाम लायकहै बन्दा १३९ (जो जीति सकै उसके नाम—छंद) जेतामानो ॥ जैत्रहि जानो १४० (जो शत्रुके सामने बड़ीमर्दई के साथ लड़ै उसके नाम—चौपाई) अभ्यमित्र्य है अभ्यमित्रीन ॥ अभ्यमित्रीय युद्ध कहिदीन १४१ (पहलवान के नाम) ऊर्ज्जस्वल पुनि ऊर्ज्जस्वी है ॥ पहलवान बलवान बली है १४२ (सुन्दर छातीवाले और रथके मालिक के नाम) उरस्वान उरसिल जग जानो ॥ रथिक रथी

रथिनहि रथ मानो १४३ (जो अपने मनसे चलताहै उसका और वारंवार चलनेवालेका नाम) अनुकामी न चलै मनहीते ॥ अत्यन्तीन चल मारग जीते १४४ (बहादुर और जितैया के नाम) शूरवीर विक्रान्त कहावे ॥ जेताजिष्ण जित्वर गावे १४५ (रणकुशल का नाम) सायुगीन रण कुशल कहावे ॥ चतुरदास भाषा करगावे १४६ (फौज के नाम–दोहा) बल सेना पृतनाचमू ध्वजिनि वाहिनी जान ॥ सैन्य बरूथिनि अनीक ये चक्र अनीकिनि मान १४७ (किलाबांधने का और सैनाके एकाएकी संगही पर जाने का नाम–चौपाई) बांधनकिला नामये व्यूह ॥ दण्ड चढ़ाई हल्लायूह १४८ (व्यूहके पीछे का और फौजके पीछे का नाम–दोहा) व्यूह पार्ष्णि है नाम ये प्रत्यासार बखान ॥ प्रतिग्रह परिग्रह पतग्रह सैन्यपृष्ठ बलवान १४९ (जिसमें हाथी रथ एक २ घोड़े ३ पैदल ५ हों उसफौजकानाम–छन्द) पत्तिसत ॥ यहीमत १५० (पत्तिके त्रिगुण करनेसे क्रम से ये नाम होते हैं ३ पत्तिका और ३ सेना मुखकानाम–चौपाई) सेनामुख पत्तिका यह जान ॥ गुल्म नाम सेना मुखजान १५१ (एकगुल्मका और ३ गणकानाम) गण ये नाम गुल्मका भिन्त ॥ गणका नाम वाहिनीसन्त १५२ (३ वाहिनी का और ३ पृतनाका नाम) पृतनानाम वाहिनीजान ॥ चमूनाम पृतना का मान १५३ (३ चमू का और १० अनीकिनी का नाम) अनीकिनिनाम चमूपरवीन ॥ अक्षौहिणि अनीकिनी चीन १५४ (यथा–दोहा) इकीस सहस अरु आठसै सत्तर गजपरमान ॥

इकीस सहस अरु आठसै सत्तर रथ जगमान १५५ साठपंच साहस्र कवि छः सै दश अरु चीन॥ घुड़सवार पैदलयहै अक्षौहिणी प्रवीन १५६ (ताअक्षौहिणीका नाम—छन्द) अक्षौहिणि आइ॥ जानोभाइ १५७ (सम्पत्ति के नाम—दोहा) सम्पति श्रीसम्पत्ति यह सम्पदाह जनजान॥ नामलक्षमी पंचमा चतुरा करे बखान १५८ (विपत्तिके नाम) आपत् विपत् विपत्ति ये पुनि आपत्तिहि जान॥ आपदाह के नाम ये चतुरा करे बखान १५९ (हथियारके नाम—चौपाई) शस्त्रअस्त्र आयुध प्राहरण॥ चतुरप्रिया क्षत्रीजो वरण १६० (धनुहांके नाम—दोहा) धन्व धनू कोदण्ड ये चापशरासनमान॥ कार्म्मुक पुनि इष्वास हैं धनुष नाम जग जान १६१ (राजाकर्ण के धन्वाका और अर्ज्जुन के धनुषका नाम—चौपाई) कालपृष्ठ कर्णहिका धनुवा॥ गांडिव गांडीव अर्ज्जुनवा १६२ (धन्वा के दोनों खूंटों के और चर्म्म रचित रोदाकी चपेट बचाने के दस्तानाके नाम) अटनी कोटी खूंटादूनो॥ गोधातल दस्ताना सूनो १६३ (धन्वाके मध्य अर्थात् मूठिका और रोदाके नाम) लस्तक नाम जान मूठीज्या॥ गुण शिञ्जिनी और मौर्व्वी ज्या १६४ (धनुर्द्धरके आसनके नाम) प्रत्यालिढ़ आलिढ़ वैशाख॥ समपद मण्डल चतुरा भाख १६५ (इनके लक्षण—कुण्डलिया) वामजांघ फैलायकै दहिनीले करबेठ॥ ताको प्रत्यालीढ़ कह दहिनी जंघाजेठ १६६ दहिनी जंघाजेठ फैलबाई लेराजे॥ ताको आलिढ़ कहे कहूं अब समपद ताजे १६७ दोनोंपांव बराबर सुनो

बात वैशाख की ॥ रखैपैर बीताभरे जानो धरणी धनुषकी १६८ (चौपाई) जो कोइ रखैघुमाकर पेर ॥ मण्डल कहे कवीजन हेर १६९ (निशाना के और बानावरी सीखने के नाम) लक्ष लक्ष्य पुनि शरव्य स्वरूप ॥ शराभ्यास ऊपासन भूप १७० (बाण अर्त्थात् तीरकेनाम–दोहा) पृषत्क बाण कहिये शर खलमार्गणका लम्ब ॥ आशुग पत्रीरोप इषु विशिख अजिह्मगतम्ब १७१ (लोहिया तीर और बाण के फोंक के नाम–चौपाई) प्रक्ष्वेडना प्रच्वेद नराचा ॥ बाजपक्ष नामा यह सांचा १७२ (चलाये तीरके और जहरीबाणके नाम) निरस्तचला तीरकानाम ॥ लिप्तक दिग्ध विषाक्ता दाम १७३ (तरकसके नाम–दोहा) उपासंग तूणीर पुनि तूणी तूण निषंग ॥ इषुधिनामचातुरकहे तरकस तरकस संग १७४ (तरवारिकेनाम) चन्द्रहास निस्त्रिंश ये तरवारीकरबाल ॥ खंगरिष्टअसिरिष्ट पुनि कौक्षेयक करपाल १७५ (चौपाई) मंडलाग्र किरपाण कहावे ॥ चतुरदास ये नाम दिखावे १७६ (कब्जाका और परतलाका नाम) अत्सरकब्जाकर यहनाम ॥ मेखलाह परतल यहदाम १७७ (ढालके और हथकराका नाम) फलक चर्म्म फल ढाल कहावे ॥ संग्राहनाम करा दरशावे १७८ (मुद्गरके और खाँड़ा के नाम) द्रुघण द्रुघन घन मुद्गर मान ॥ करबालिका इली जगजान १७९ (धनवासी के और लोहथीकेनाम) भिंदिपालसृगधनवासी धन ॥ परिघ पुनी परिघातन घे मन १८० (फरसा वा कुल्हारीके नाम) स्वधिति परश्रु कूकार कुठारी ॥ परइवंध पुनि

जान कुल्हारी १८१ (छुरी के नाम) छुरिका शस्त्री असिपुत्रीये ॥ असि धेनुकासजैं क्षत्रीये १८२ (फरके और गुर्ज्जकेनाम)शल्यशंकु परनाम सुजाना ॥ तोमर पुनि सर्व्वोल कमाना १८३ (सांगिका और भाला व बरछीकानाम) नाम प्रासये सांगे बखान॥ भाला बरछी कुन्त सुजान १८४ (खड्गादि की नोकके नाम) अश्रिकोण पालिहि पालीये ॥ कोटी कोटि नोकआलीये १८५ (फौज की तय्यारी या जमावकेनाम) सर्व्वसन्नहन सर्व्वौघ जान ॥ सर्व्वाभिसार जानो स्यान १८६ (महानवमीके पहिले लड़ाई के निमित्त राजाओं के हथियार पूजनेका और शत्रुके ऊपर फौजचढ़नेका नाम) लोहाभिसार पूजनका नाम ॥ अभिषेणन भोजो है दाम १८७ (यात्रा के नाम) यात्रा व्रज्या गमन गमजाण ॥ प्रस्थान नामहै अभिनिर्य्याण १८८ (फौजके फैलाव के और चलीहुई फौज के नाम) प्रसरण पुनि आसार कहावे ॥ प्रचक्र चलित चलती दरशावे १८९ (निडरहोकर शत्रुओंके सम्मुख जानेका और स्तुति करके प्रातःकाल राजाके जगानेवालोंकेनाम) अभिक्रम सोसम्मुख को धावे ॥ वैतालिकः बोधकर गावे १९० (घरियारीके और वंश परम्परा बखाननेवालों के नाम) घाण्टिक पुनि चाक्रिक घरियाली॥ मागध मगध वंशयशआली १९१ (भाटके और भगेलुवाका नाम) बन्दी अस्तुति पाठक भाट ॥ संशप्तकहि भगेलुवामाट १९२ (धूरिकेनाम—दोहा) धूलिधूरि अरु रेणुका पांशु पांसु यहमान ॥ धूलीरज चातुरकही मन में निश्चयठान १९३ (चूनके

नाम और किसी २ के मत से ये भी नाम धूरिके हैं–
चौपाई) क्षोदनाम चूरण बतलावे ॥ गुणवन्तों के हृदय
लभावे १९४ (अकुलानेके नाम) समुत्पिंजअरु पिंजल
संता ॥ चतुरदासगावे गुणवंता १९५ (पताकाफहरान
वा निशान वा झंडाकेनाम – दोहा) ध्वजापताका केतन
वैजयंती फहरान ॥ झंडा नाम निशान ये चतुरदास
परमान १९६ (भयावन रणभूमि और जिसमें वीर
कहैं किहम पहिले लड़ैंगे उसभूमिका नाम–चौपाई)
वीराशंसन भययुत भोम ॥ अहम्पूर्व्विका लड़ने जोम
१९७ (जिसमें वीर कहैं कि हम पुरुषहैं हमहीं लड़ैंगे
उसलड़ाई और आपसके इसकहनेकी कि हम शक्तहैं
हमलड़सक्तेहैं उसकानाम) अहोपुरुषिका वीरबखाने ॥
अहमहमिका अतीबल जाने १९८ (पराक्रम वा पारा-
करमके नाम–दोहा) प्राण पराक्रम शक्तिये शुठमशौ-
र्य्य बलवान ॥ स्थाम सहःतर द्रविणये चतुराकरे ब-
खान १९९ (अति पराक्रम और लड़नेकेनिमित्त नशा
खानेपीनेकेनाम–चौपाई) अतिशक्तिता नाम विक्रम
ये ॥ वीरपाण पुनि वीरापन ये २०० (लड़ाई केनाम
कुंडलियाछंद) युद्ध अयोधन विग्रहआस्कंदन जन्यजान॥
समाधान संग्राममृधप्रविदारण कलिमान २०१ प्रविदा-
रण कलिमान समर शाखा दरशाया ॥ रण कलेह
अभ्यामर्द अभ्यागम आह बताया २०२ समुदायसंयत
संख्या अभिसम्पात समीक ॥ साम्परायिक प्रधन यह
सम्प्रहारसुअनीक २०३ (चौपाई) संयुगनाम संस्फोटह
जान॥ आजि समित युत समितिः मान २०४ (बाँहाँ

जोटी और बांधपरजानेकानाम) नियुद्ध नाम बाहुयुध मान ॥ तुमुल बाँधपरजाना सान २०५ (वीरोंके गर्जने के और हाथियोंकी कतार का नाम) सिंहनाद अरु कहिये च्वेडा ॥ घटानाम हाथिका हेडा २०६ (वीरों के निन्दापूर्वक पुकारने और हाथियों के गर्जने का नाम) क्रन्दन वीरहि निन्द पुकार ॥ बृंहितहाथिन की ललकार २०७ (धनुहाकेशब्दका और जुझाऊ नगारेके शब्दके नाम) पुनि विस्फार धनुष टंकार ॥ आडम्बरः पटह ललकार २०८ (हठके और धोखा देनेके नाम) बलात्कार हठ प्रसभ बखाना ॥ धोखा छल अस्खालितप्रमाना २०९ (उत्पात और मूर्च्छा के नाम) उपसर्गः उत्पात अजन्या ॥ कश्मल मोह मूर्च्छा मन्या २१० (फौजकी लतग्वँदिया और धोखेसे दबायलेनेके नाम) पीड़न पुनि अवमर्द कहावन ॥ अभ्यव स्कन्दन अभ्या सादन २११ (जीत और वैर मिटाने केनाम—दोहा) विजयनाम पुनि जयकही जीतहिशब्द उचार ॥ वैर नीर्य्यातनकहे वैरशुद्धि प्रतिकार २१२ (भागनेके नाम) प्रद्रावरु उद्राव द्रव विद्रवये अपयान ॥ सन्द्रव सन्द्रावहि कहे अपक्रम भागनभान २१३ (हारिका और हरैलाके नाम—चौपाई) पराजय नामहारि काभिन्त ॥ पराभूत पराजित सो सन्त २१४ (लुकेहुये कानाम) नष्टनाम लूका पहिंचान ॥ चतुरदास जनकरै बखान २१५ (मारिबेके नाम—कुण्डलि०)निर्व्वासन औ प्रवासन परासनः प्रमथान ॥ निषुदन निशुदन संतपन निर्हिंसनः वध जान २१६ निर्हिंसनः वधजान नामनि-

ग्रन्थन गाया ॥ अपासनः निस्तरण पिंज परिवर्ज्जन भाया २१७ निहनन विशर विशासन प्रतिघातन परमान ॥ क्षणन नाम निर्व्वापण मारण कथन बखान २१८ उज्जासन आलम्भये उद्वासन विस्तार ॥ प्रमापण और प्रमापन निबर्हनः ललकार २१९ निबर्हनः ललकार निकारण नाम दिखाये ॥ निशारणः निर्बहण विसारण जगमें छाये २२० उन्माथ घात उन्मथ पुनी मारन नाम निहार ॥ चतुरदास गुरुज्ञान ते सब से दिये पुकार २२१ (मृत्यु वा मौतके नाम—दोहा) कालधर्म्म पञ्चत्वये प्रलय पञ्चता अन्त ॥ मरण नाश निधनःपुनी मृत्यु अत्यय दिष्टन्त २२२ (मृतक वा मुर्दा के नाम) प्रेत परेत संस्थित कही प्रमीत मृत्यु बखान ॥ परासुप्राप्त पञ्चत्व है चतुरा कहे सुजान २२३ (चिता और विना मूँड़वाले का नाम——चौपाई) चित्या चिति पुनि चिता सुजान ॥ कबन्ध नाम बिन मूँड़ामान २२४ (श्मशान और निर्जीव के नाम) श्मशान नाम पितृवन सन्त ॥ कुणपशवः निर्जीवक भिन्त २२५ (बँधुवाके और बन्दीखाना का नाम) प्रग्रह उपग्रह बन्दी वन्दि ॥ कारानाम बन्दियेगन्दि २२६ (प्राण और प्राणी वा परानीकेनाम) असुःप्राण प्राणहि का नाम ॥ जीव और असुधारण दाम २२७ (आयुर्बल वा उमर और जिआनेका नाम) आयुःनाम उमरका एक ॥ जीवातुः हरि राखटेक २२८ (दोहा) चत्रादिवर्ग्ग सम्पूरण कथे राममुतभिन्त ॥ बन्धु एक घनश्याम हैं चतुर नाम मन सन्त २२९ ॥

इति श्रीमहंतश्रीरामाजीनन्द चतुरदासविरचितेभाषाअमररघुनाथकल्पद्रुम द्वितीयकाण्डे क्षत्रियवर्गोऽष्टमोविश्रामःसम्पूर्णः ८ ॥

अथ श्रीअमरकोष भाषा वैश्यवर्ग्गप्रारम्भः॥

(दोहा) श्रीविष्णू पद्बन्दिकै चन्द चतुरगुणगाय॥ निम्बारक निर्मलमता हिरदय रह्यो समाय १ (वैश्य के नाम) ऊरव्य ऊरज वैश्य है भूमिस्पृक अर्य्यान॥ विटनामा चातुर कहे भज पूरणभगवान २ (जीविका के नाम) आजीवः अरु जीविका वार्त्ता वृत्ति बखान॥ जीवन वर्त्तन चतुरये जीविका दीन दिखान ३ (खेती और पशुओं के पालने का नाम—चौपाई) कृषी नाम खेतीकर मिन्ता॥ पाशुपाल्य जाहिर गुणवन्ता ४ (बनियई का नाम) वाणिजनाम जान जगसतिया॥ पाशुपाल्य वाणिज कृषि तृतिया ५ (पराई टहल और खेती का नाम) श्ववृत्तिनाम टहलका भाई॥ अनृतनाम खेती दरशाई ६ (बाजार उठने पर अन्न बीनने और सीला कानाम) उञ्छनाम अन्नहिकण जोवै॥ शिलःनाम सीला को सोवै ७ (इन दोनोंका और मांगनेसे जो मिलै उस कानाम) ऋतहिनाम दोउनकाभाई॥ मृतःनाममिलने का गाई ८ (विना मांगीवस्तु और बनियई का नाम) अमृतनाम बिन मांगीवस्तु॥सत्यानृत बनियाई मस्तु९ (उधार लेनेकेनाम) पर्य्युदञ्चनः नाम उधार॥ तीजा ऋणकीन्हा विस्तार १० (ब्याजकेनाम—दोहा) कुशिदरु अर्थ प्रयोग है कुसिद कुषिद यह जान॥ वृद्धि जीविका नामये ब्याजहि कीन बखान ११ (मांगने से मिलने और वादेपर मिली वस्तुकानाम—चौपाई) नाम याचितकहै गुणवान॥ नाम आमपित्यक जगजान १२ (महाजन और कर्ज्जीका नाम) उत्तमर्ण महाजन का

नाम ॥ अधमर्ण नाम कर्ज़ी का दाम १३ (ब्याज़सेही जीनेवालेके नाम) वृध्याजीव कुसीदकमान ॥ वार्द्धुषिकः वार्द्धुषि जगजान १४ (किसानके नाम—दोहा) कार्षक पुनि कर्षक यह क्षेत्राजीव सुजान ॥ कृषिकनाम कृषि बल पुनी चतुरा नाम किसान १५ (ब्रीहि होनेके योग्य खेतका वा धनाऊ का नाम—चौपाई) ब्रैहेयनाम ब्रीहि खेताये ॥ शालेयनाम धनाउखेताये १६ (यवहोनेवालेके व छोटेयव होनेवालेकेनाम) यव्यहैनाम खेतयवही का ॥ यवक्यनाम छोटेयव जीका १७ (साठी होनेवाले और तिल होनेवाले के नाम) षष्टिक्य नाम साठीहो जामें ॥ तैलीन तिल्य तीलइ हो तामें १८ (उरद होनेवाले और अरसी होनेवाले के नाम) माषीण माष्य उरदका खेत ॥ उस्य औसीनः अरसी चेत १९ (अणु होनेवाले और भांग होनेवाले के नाम) अणव्य अणवीन अणुवा जान ॥ भांगीन भंग्य भांग का मान २० (मूँग होनेवाले और कोदव होनेवाले का नाम) मौङ्गीन नाम मूंग का मिन्त ॥ कौद्रवीण कोदई का सन्त २१ (चना होनेवाले और गेहूं होनेवाले के नाम) चाणकीन है चनेक देखो ॥ गौधमीन गेहूंका पेखो २२ (कयराव होनेवाले और कुरथी होनेवाले के नाम) कालापीन कयरावा जान ॥ कौलत्थीन कुरथिया मान २३ (काकुनि होनेवाले का नाम) प्रैयंगवीन काकुनी वाला ॥ चतरदास केता भजवाला २४ ऐसेही और भी जानो (शाक तरकारी होनेवाले और उमिसने का नाम) शाकशाकिन पुनि शाकहि शाकट ॥ बीजाकृतहि उमीसन ये घट २५ जो-

तेहुये खेतके नाम) सीत्य कृष्टहल्यः जोताये ॥ चतुर-
दास केता मीताये २६ (तीन बाह कियेहुये के नाम)
तृतीय कृत त्रिहल्य त्रीसीत ॥ त्रिगुणकृतहि जानत ज-
गनीत २७ (दोबाह कियेहुयेके नाम-दोहा) द्विगुणा-
कृत द्वितियाकृत और द्विहल्य द्विसीत्य ॥ शम्बाकृत
चातुर गुणी तीनबाह परतीत्य २८ (खेतका वा जिसमें
द्रोणभर बोयाजाय उस खेतका नाम-चौपाई) बाप नाम
है खेतक मिन्ता ॥ द्रौणिक नाम चतुर गुणवन्ता २९
(आढ़क भरवाले और खारीभरवाले का नाम) आढकि-
कः आढक गुणवन्त ॥ खारिक नाम खारकी सन्त ३०
(खेत के नाम) वप्रः पुनि केदार बखान ॥ क्षेत्र नाम
चतुरा गुणमान ३१ (खेतोंके समूह के नाम) कैदारक
कैदार्य्य बखान ॥ कैदारीक क्षेत्र पुनि जान ३२ (ढेला
और मुगरी वा सरावनिके नाम) लोष्ट रुलेष्टुनाम ढेला
कर ॥ कोटिश लोष्टभेदन कोटिशकर ३३ (पैना वा चा-
बुकऔर खन्ता वा कुदारीके नाम)तोदनतोत्रप्रजानकहा-
वे ॥ अवदारण खनित्र दरशावे ३४ हँसिया और ज्वड़ा-
यल वा जोतकेनाम) दात्रहिनाम लवित्र बखाना ॥ योक्त्र
योत्रआबन्ध सुजाना ३५ (फारकेनाम-दोहा) फलनि-
रीश पुनि निरषये कुटकफाल जगजान ॥ कृषकः कृषिकः
नाम ये चतुराकरे बखान ३६ किसी २ के मतसे प्रथमके
४ कुद वा खोदहरी के नामहैं अन्तके ३ फारके (हरके
नाम) लंगल हल सीर नाम हैं गोदारण शीर जान ॥
हालकहे चातुर गुणी हरके नाम बखान ३७ (सम्बल
वा सैला और हरस का नाम—चौपाई) युग कीलक

सम्या सम्बलये ॥ ईषा कहे हार सम्बलये ३८ (कूंड़ के नाम) लांगल पद्धति सीता जान ॥ शीता चतुर करे जगमान ३९ (जो मड़नीमाड़ने में किसी २ देशमें पैर के बीचमें खूंटा गाड़ते हैं उसके और साठीके नाम) खले दारु मेधिः यह नामा ॥ पाटल आशुब्रीहि सूदामा ४० (यवके और हरे यवके नाम) शितशूकरु यव यव का नाम ॥ तोक्य हरेरे हैं हर दाम ४१ (कपरात्र वा मटरा और कोदउ के नाम—दोहा) सतीनकः पुनि रेणुक हरेणु पुनिहै कलाय ॥ कोद्रव पुनि कोरदूष यह कही कोदई गाय ४२ (मसुढ़ी के नाम—चौपाई) मसूर मसुरः मसुराजान ॥ मंगल्य कहि मसूरा मान ४३ (मोथी वा छरमूंग के नाम—दोहा) मकुष्टक नाम मकुष्ठक मयुष्ठक है वनमूंग ॥ मयुष्ठ यपुष्ट मपुष्टये मपष्ट मयुष्टक रूंग ४४ (सरसोंके नाम—चौपाई) सर्षप तन्तुभनाम कदम्बक ॥ तुन्तुभ सरसो कहे नामतक ४५ (उजली सरसों और गेहूं के नाम) सिद्धार्थ उजली दरशाई ॥ गोधूमसुमन ये गेहूं कहाई ४६ (कुरथी के नाम) कुल्मानः यावक कुल्माष ॥ चतुरदास कुरथी ये भाष ४७ (चना व रहिलाके नाम) हरिमन्थक हरिमन्थन जानो ॥ चणकनाम चातुर जग मानो ४८ (बांझ तिलके नाम) तिल पिंजरु तिल येज कहावे ॥ बाँझहि तिलका नाम दिखावे ४९ (राई के नाम) क्षवरु कृष्णिका असुरारी मन ॥ क्षुताभि जननः राजिक यतन ५० (काकुनि और अरसी के नाम) कंगुः और प्रियंगुः जान ॥ अतसी उमा क्षुमा सतमान ५१ (पेटुआके भेद जिसके सनसे भँगरा

नाम टाट बनता हो उसके और च्यनवा ज्यठरू साँवाँ का नाम) मातुलानी भंगा सनमिन्त ॥ अणुःनाम च्यनवाका सन्त ५२ (सीकुर और बालीके नाम) किंशारु अरु सस्यशुकनामा ॥ कणिकरु पुनि सस्यमँजरीदामा ५३ (सामान्य धान्य और गुच्छा के नाम) स्तम्बकरी ब्रीही पुनि धान्य ॥ स्तम्ब गुच्छ गुच्छा को मान्य ५४ (नरई और पैराके नाम) नाडि नाल नरई पहिंचान ॥ पलाल पुनि पैराकोमान ५५ (बूसा और बूसीके नाम) बुसरु कडंगर बुस्यामिन्त ॥ तुषःकहैं बूसीकोसन्त ५६ (सींकुर और छीमीकेनाम) शूकसोई जगमानोसींकुर ॥ नाम शमीशिंबाछीमीयुर ५७ (कुनाव व और वसाईसाफराशिकेनाम) आवसित पुनीऋद्ध है नामा ॥ बहुलीकृत पुनि पूलसोदामा ५८ (मूंग उर्द राजमाष कुरथी चना तिल क्यराव अर्हीं इनका और यवादिक जिसमें सींकुर होताहै उसका नाम) शमीधान्य इन सबकानाम ॥ शूकधान्य है सींकुर दाम ५९ (जड़हन और साठीकेनाम) कमलनाम जड़हनकाभाई ॥ षष्टिकसो साठी दरशाई ६० (सबधानों और तिनीपसाढ़ी आदि का नाम) शाली सब धानों का नाम ॥ नीवारसाठी आदिक दाम ६१ और इन्हीं को तृणधान्य भी कहते हैं (स्यहुँआं वा गहवा और मसूरकेनाम) गवेधुका अरु नामगवेधु ॥ अयोऽग्रःमुसलः नरवेधु ६२ (बखरी वा गाली और सूपकेनाम) उदूखल उलूखल बखरीमिन्त ॥ शूर्प्प शुर्प्प स्फोटनसन्त ६३ (चलनीके और थैलीके नाम) तिल उचालनी चलनी मान ॥ स्यतप्रसेव थैलियाजान ६४ (डयलवा वा छांटा

और किरहिरवा चटाईके नाम) पिटकंडोलनाम छाटेका॥
किलिञ्जकः पुनिकट ताकेका ६५ (रसोई के घर और
उसके अधिकारी के नाम) पाकस्थान महानसरसवति॥
पौरोगव अधिकारि पाकमति ६६ (रसोई बरदार के
नाम–दोहा) सूपकार वल्लवगुण आरालिक पुनि सूद॥
औदनिक आन्धसिककहै नामरसोयादूद ६७ (पुआआदि
बनावनेवाले के नाम–चौपाई) आपूपिक पुनि भक्ष्याका-
र॥ कान्दविकः पूत्राबरदार ६८ (चूलहकेनाम) असमंतरु
उद्दानअन्तिका॥ अधिश्रयणी पुनि चुल्हिमन्तिका ६९
(अँगेठी के नाम) हसन्तीह अङ्गारधानिका॥ अँगार
शकटिहसनीह वारिका ७० (अँगार और लुकाठ के
नाम) अंगारनाम अंगारहि जान॥ उल्मुक पुनीअला-
त बखान ७१ (खपरी और भट्ठी वा सारके नाम) अ-
म्बरीष भ्राष्ट्र खपरीगुन॥ कन्दु पुनीस्वेदनी ये सुन७२
(मेटुका और करवा के नाम) अलंजर और मणिक ब-
लवन्त॥ गन्तिका आलुकर्करीसन्त ७३(बटुवाके नाम)
उषा पिठर अरु जान स्थाली॥ उषाकुण्ड देखो येआली
७४ (घड़ा वा गगरी के नाम) कलशघटी घट और
निपाव॥ कलशी कुटहि घड़ा दरशाव ७५ (कसवा व
सेरवा परई दिया और तवाके नाम) बर्द्धमान साराव
शराव॥ पिष्ट पचन ऋचीष ऋजीषाव ७६ (खोरा व
कटोरी और कुप्पाकेनाम) कंसपान भाजन जगजान।
कुतूसु कुप्पा नाम प्रमान ७७ (कुप्पीका नाम) कुप्पी
कुतुप कहे गुणवन्त॥ चतुरदास जन समझेसंत ७८
(सब जितने बर्त्तन कहिआयेहैं उनके नाम) भांडपात्र

भाजन जनजान॥ अमत्र पुनि आवपन बखान ७९ (कछुली के नाम) दर्विः दर्वी कम्बीजान ॥ कम्बिखजा का कर्छुलिमान ८० (डौवा और सागके नाम) दारु हस्त कतर्द्दूमिन्त ॥ हरितक शिग्रुशाक सुभुसन्त ८१ (सागके डँड़का और धुंगार व छौंकनेवाली वस्तुके नाम) कलम्ब कडम्बकहे गुणवान ॥ वेषवार उपस्करहा जान ८२ (चूकके नाम) तिन्तिडीक वृक्षाम्ल सुजान॥ चक्र नाम चातुर पहिंचान ८३ (मिर्चके नाम–दोहा) कोलक मरची मरचये ऊषण मरिच मरीच ॥ कृष्ण धर्म्म पत्तन पुनी वेल्लज कही सुबीच ८४ (जीरा और कारी जीरीके नाम) कणा अजाजी जीरक जीरा जरण प्रमान । पृथुकाला उपकुंचिका सुषवी करवीजान ॥ पृथ्वीभी कालीजीरी का नामहै ८५ (अदरख के नाम–चौपाई) आर्द्रक शृङ्गवेर पुनिआर्द्धो ॥ चतुरदास जनगावत साद्धो ८६ (धनियां के नाम–दोहा) छत्रवितुन्नक जानजग कुस्तुम्बरिधान्याक॥ धन्याकनाम कुस्तुम्बरु धना सुधारन शाक ८७ (सोंठिकेनाम) शुण्ठी शुण्ठिमहौषध विश्वा विश्व अमोल॥ नाम विश्व भेषजपुनी नागर सोंठि अतोल ८८ (कांजी के नाम) अरिनालक सौवीर ये कुल माषाभिःषूत ॥ धान्याम्ल कुंजल कांजिक अवन्ति सोम सपूत ८९ (हींगकेनाम) सहस्रवेधि हिंगु रामठ वाह्लीक वाह्लिक जान ॥ जतुक नाम हिंगू पुनी हींगनाम पहिंचान ९० (हींग के वृक्षकी पाती और हरदी के नाम-दोहा) कारवी पृथ्वी वाष्पिका कवरी पृथुः सुजान ॥ निशा कांचनी पीता वरवर्णिनि हरिद्रान ९१ (समुद्र

फेन और सेंधालोन के नाम) अक्षीव अक्षिव वशिर ये वसिर नाम यह सूज ॥ शीत शिव सितशिव सैन्धव माणिमन्थ सिन्धूज ९२ (सांभरि और सोंचर लोन के नाम) वसुक पुनीरौमक गुणी होत सांभरी ग्राम ॥ अक्ष रुचक सौवर्चल सोंचर लोनहिं नाम ९३ (खारीलोन और करिया सोंचरका नाम—चौपाई) विडः पाक्य खारीयह जान ॥ तिलक करीया कर पहिंचान ९४ (राब और मिश्री के नाम) मत्स्यण्डी फाणित परविता ॥ खण्ड विकार शर्करा सिता ९५ (मूरनि और सिखरनि के नाम) क्षीर विकृती पुनि कूर्चिका ॥ मार्ज्जिता रसालाहै नरविका ९६ (कढ़ी और लोह की सराई में छेद के पकाये हुये मांस के नाम) निष्ठान नाम ते मनयह जान ॥ शूलाकृत भटित्र शूल्यान ९७ (बटुआ में पकाये हुये अन्नादि और रसिआउरि के नाम) पैठर उख्य नाम दोउ मान ॥ उपसम्पन्न प्रणीत सुजान ९८ (घृतसेबतीहुई वस्तु और पनिहे व्यंजन के नाम)प्रयस्त नाम सुसंस्कृत जान ॥ विजिल और पिच्छिल जगमान ९९ (बिचारे वा बीनेअन्न और चिकने के नाम) सम्मृष्टः शोधित अनजान ॥ चिक्कण मसृणस्निग्धहिमान १०० (धुंगार दीहुई वा छौंकीहुई वस्तु और ऊंबी वा मरमरीके नाम) भावित वासित वासितजान ॥ श्रापक्क पौलि अभ्यूष बखान १०१ (लावा और चाउरका नाम) लावा सो लाजा परमान ॥ अक्षत नाम चाउराजान १०२ (चिउराके और गुरधनियांका नाम) चिपटक नाम पृथुक गुणवान ॥ धाना नाम धानियां

मान १०३ (पुवाके और दहीसे साने सतुवाका नाम) पिष्टक पूप अपूप अपार ॥ करम्भ दहीहै सानासार १०४ (भातके नाम—दोहा) भिस्सा भक्तरु ओदन अन्धअन्न जगभात ॥ दीदिवि जनचातुर कहे सबठौरा विख्यात १०५ (जरेभातके और पसावन वा माड़का नाम—चौपाई) भिस्सटा सोहि दग्धिका मिन्त ॥ मण्डमाड़ गावे गुणवन्त १०६ (केवल भातके माड़के नाम) निस्राव और मासर आचाम ॥ चतुरदास गावे भजराम १०७ (पनिहे भात गोलाथी और तेलके नाम—दोहा) तरला श्राणा विलेपी उष्णिका यवागू मिन्त ॥ म्रक्षण पुनि अभ्यंजन चतुरा गावेसन्त १०८ (खिचरी और गोबर छोड़ गाईसे उत्पन्न सर्व्व वस्तुका नाम—चौपाई) कृसर नाम खीचरिया जान ॥ गव्य नाम गउसे पहिंचान १०९ (गायके गोबरके और करसी का नाम) गोविट गोमय गोबर जान ॥ करीष नाम करसी का मान ११० (दूध के और दही घी आदिका नाम) पयपुनि दुग्ध क्षीरदर शाई ॥ पयस्य नाम घृत दही उपाई १११ (पतरे दही का नाम) द्रप्सनाम कहिये दहिपतरा ॥ बरणत अमर कोष गुण चतरा ११२ (घी और नैनूकेनाम) सर्पिः हवि घृत है पुनिआज्य ॥ अरुनवनीत नवोद्धत साज्य ११३ (एक रात्रिके जमाये हुये दहीसे उत्पन्न घृत का और मट्ठा मात्रके नाम) हैयं गवीन यक रैन जमाया ॥ कालशेष दण्डाहत गाया ११४ अरिष्ट गोरस मिलकर सार ॥ दिये छांछिके नाम पुकार ११५ (इनके भेद कुण्डलिया) जामें चौथाई जलहि तक्र ताहि का नाम ॥

जामें आधा नीरहो तेहि उदश्वित जगदाम ११६ तेहि उदश्वित जगदाम मथित निर्ज्जल गुणवाना॥ मैहरतो रक नाम वस्तु सब जगपरमाना ११७ रामदास के नन्दने रच्योनाम इतिहास॥ रतनपुरी रतलाम में चतुर किया विख्यात ११८ (पेउस और भूंखकेनाम—दोहा) पेयूषहि पीयूषहै पयके नाम सुधीर॥ बुभुक्षा अशनाया यह क्षुधा और क्षुत्वीर ११९ (कौर और एकसंग के पीनेके नाम—चौपाई) ग्रासकवल कौरेके नाम॥ तुल्य पानसपीति है दाम १२० (एकसंग भोजन के नाम) सग्धि और सहभोजन जानो॥ एकसंग भोजन पहिंचानो १२१ (पियासके नाम) तर्षतृषा उदन्या दरशाई॥ तृटपुनि नाम पिपासा भाई १२२ (भोजन अर्थात् खाने के नाम) जग्धि भोजनसजे मनजान। लेहलेप जमनहि परमान॥ निघस विघस पुनिहै आहार। न्याद चतुरजन करतपुकार १२३ (अघाने के और खाव बच जानेका नाम) तर्प्पण तृप्ति सौहित्य सन्त॥ फेलाखाव बचा जगभिन्त १२४ (चाहके नाम) काम प्रकामहि इष्ट निकाम॥ पर्य्याप्त यथेप्सित जानोनाम १२५ (अहीरके नाम—दोहा) गोपाल गोप गोसंख्य ये गोदुह गोधुक सन्त॥ आभीर नाम बल्लव कहे सुनो अभीरहु अन्त १२६ (गाय भैंस आदिका और गायके मालिक के नाम—चौपाई) नाम पादबन्धन दरशाया॥ गोमान अरु गोमीकहि गाया १२७ (गायोंके झुण्ड और पुराने खरिका वा गोंठ के नाम) गोकुल गोधन झुण्ड बताया॥ आशित नाम गवीन दिखाया १२८ (बैल के

नाम—दोहा) बलीवर्द वृष वृषभये ऋषभभद्र गौमान॥ सौरभेय उक्षागुणी चतुर जान अनड्वान १२९ उक्षा-भी बैलका नाम है॥ (बैलोंके झुण्डका और गायों के झुण्डके नाम—चौपाई) औक्षक नाम बैलका झुण्ड॥ गव्यापुनि गोत्रा गो गुण्ड १३० (बछराओंके झुण्ड और धेनुओं के झुण्डका नाम) वात्सकझुण्ड बालका मिन्त॥ धेनुक झुण्ड धेनुका सन्त १३१ (बड़े बैलका और बूढ़े बैलके नाम) महोक्ष बैल बड़ा बलवान॥ जरद्गवपुनि वृद्धोक्ष बखान १३२ (कलोर और छोटे बछवा वा बछरूका नाम) कलोर नाम जातोक्ष कहावे॥ तर्कण बछरा बछरू गावे १३३ (बछवामात्र और नाटाके नाम) शकृत्करी अरु वत्स सुजान॥ दम्य वत्सतर जगदरशान १३४ (बधियाकरने लायकके नाम—छंद) आर्षभ्य देख॥ जन चतुर पेख १३५ (सांड़केनाम—दोहा) षण्ड शण्ड पुनि गोपति इट्चर इंकर धार॥ सांड़ रूप अपरंभ है चतुरा कर उक्कार १३६ (कांधका और गलकंबरी के नाम—चौपाई) वहहै नाम कंधकामिन्ता॥ सास्ना गलकम्बल गुणवन्ता १३७ (नथुआ बैल और छ्यगुरी वा घसीटामें नहेहुयेके नाम) नास्तत नस्तोत पुनि नस्पोत॥ पृष्ठवाक युगपार्श्वग सोत १३८ (ज्वतनिया और लदनिया बैलकानाम) युग्य ज्वतनिया बैल कहावे॥ अरु प्रासंग्य लदनिया गावे १३९ (बैलका और हरसे जोतने वा हरमें चलै उसके नाम) शाकट नाम बैलका मिन्ता॥ हालिक पुनि सैरिक बलवन्ता १४० (धुरिहा बैल और एक धुरके बहनेवाले के नाम—दोहा) धूर्वह धुर्य

धुरन्धर धौरेय धुरीण धनंत॥ एकधुर एक धुरीणाये एक धुरावह संत १४१ (जो सबभार लेचले उसका नाम-चौपाई) सर्वधुरीण भरैला बैल॥ बैपारी चढ़ करते सैल १४२ (गायके नाम-दोहा) शृङ्गिणी गो सौरभेयी माता उस्रागाय॥ अर्ज्जुनी अघ्न्या रोहिणी माहेयीगा धाय १४३ (अच्छी गायका और चितकबुलीके नाम) उत्तम गऊ नैचिकी नाम॥ शबला शबली बेरँग दाम १४४ (उजरी गायके और दो वर्षकी गाय का नाम) धवली धवला उजरी गाय॥ द्विवर्षाहि दो वर्षीगाय १४५ (एक वर्षकी और चार वर्षवाली गायके नाम) एकहायनी एक बरसकी॥ चतुर्हायणी चार बरस की १४६ (तीन वर्षवालीका और बांझके नाम) त्रिहायणी है त्रय वरषा में॥ बन्ध्यावशा बांझहै तामें १४७ (जो अड़ारि जायाकरे उसके और थिरानी वा बहेली हुईका नाम) स्रवगर्भा अवतोक बतोका॥ सन्धिनि नाम रटो तजि शोका १४८ (बैलके चढ़नेसे अड़ारिगईहो और वरई गभिनीका नाम) बेहतगई अड़ारी जान॥ उपसर्य्या गरभानी मान १४९ (पहिला अर्थात् प्रथम की गाभिनिका और सुद्धीगायके नाम) प्रथम गर्भि प्रष्ठौही नाम॥ अचपडी सुकरा सुद्धीदाम १५० (बहुतबेर बियानी और बकेनि गायके नाम) पुनि परेष्टुका बहुसूतीये॥ चिरप्रसूता वष्कयणीये १५१ वष्कयिणी भी इसका नामहै॥ शाकटायन के मतसे जिसका बछरा १ वर्षकाहो उसके नामहैं॥ (नई ब्यानीहुई और जो दुहने में दिक न करे उसका नाम) धेनुः नव सूतिका प्रमान॥ सुखसन्दोह्या

सुव्रताजान १५२ (बड़े अयनवालीके नाम) पीवरस्तनी अरु पीनोध्नी॥ चतुरदास ये कह निर्विघ्नी १५३ (द्रोणभर दूध देनेवाली के और गिरउँधरी हुई गायका नाम) द्रोण द्रोण दुग्धाशी क्षीरा॥ धेनुष्या चातुर मति धीरा १५४ (बरसायणका और अयन वा थनके नाम) समांसमीना सतवंतीये॥ ऊधः अरु आपीनगतीये १५५ (खूंटा और ग्यशंव के नाम) कीलक नाम शितक सत जान॥ सन्दान दाम पाछेका मान १५६ (ज्वड़ायलके नाम–चौपाई) पशूरज्जु दामिनी बखानी॥ चतुरदास ने निश्चय ठानी १५७ किसी के मतसे खुराके नामहैं किसीके मतसे सन्दना न्योढ़ाके नामहैं (खैलरि के नाम) मन्था मन्थपुनी बैशाख॥ मन्थादण्डक मन्थासाख१५८ जिसखम्भामें खैलरि बांधीजातीहो उसके और महेड़ा वा महेड़िया के नाम) कुठर दण्ड विष्कम्भा जान॥ गर्गरी मन्थनी कलशी मान १५९ (ऊंटके नाम) नाम महांग उष्ट्रको देख्यो॥ क्रमेलकः पुनि मय जन पेख्यो १६० (ऊंट के बच्चा और काठेकी बेरीमें बँधेहुये बच्चा का नाम) करभ ऊंटका बालक जान॥ शृंखलक जग बन्धा सो मान १६१ (छगड़ी और खसी वा बकरा के नाम–दोहा) अजा और छागी कहे छगड़ीका परमान॥ छगलक शुभ छागल कहे बस्त अजः जग जान १६२ (भेड़ाकेनाम–चौपाई) मेढ्र उरभ्र उरण ऊर्णायु॥ मेषवृष्णि एडक अविगायु १६३ (ऊंटोंके समूहों व भेड़ों के समूहकानाम) औष्ट्रक नाम ऊंटकाटोर॥ औरभ्रक भेड़ समूह निहोर १६४ (बकड़ों के समूहका नाम)

आजक टोर बोकड़ा हंदा ॥ चतुरदास गुण गावत बंदा १६५ (गदहाके नाम) खर रासभ गर्द्दभ वालेय ॥ चक्रीवान गधा गुणयेय १६६ (बनियां के नाम—दोहा) वैदेहक पुनि वणिजये सार्थवाह सुवणीक ॥ वणिजो वणिक नैगम निगम क्रय विक्रय अपणीक १६७ (बेंचने वाले और गहँकी वा मोललेनेवाले के नाम—चौ०) विक्रावक विक्रेता जान ॥ क्रयिक और क्रायिक जगमान १६८ (बनियाई और मोलके नाम) वाणिज्य वणिज्य वाणिज्या मिन्त ॥ मूल्य वस्त अवक्रयः अनन्त ॥ १६९ (मूलकेनाम) परिपण निवी मूलधन मान ॥ नीविनाम चातुर पहिंचान १७० (नफाका नाम—छंद) लाभदेख॥ नामपेख १७१ (अदला बदलीके नाम—चौपाई) निमय नाम परिदान बखाना ॥ परिवर्तः नैमेय सुनाना १७२ (धरोहरिके और धरोहरि जिसकी हो उसे देने का नाम) उपनिधि न्यास धरोहरिनाम ॥ प्रतिदानहि देना यह दाम १७३ (बयाना और चाहे कहीं धरीहो पर मोल से हो उस वस्तुका नाम) बयाना नाम क्रय्य परवीन ॥ क्रयः मोल बिकना यहचीन १७४ (बिकाऊ वस्तु के और साई देनेकेनाम) पण्य विक्रय पणितव्य विस्तार ॥ सत्यांकृति सत्यापन सत्यंकार १७५ (बेचनेके नाम) विपण पुनी विक्रय दरशाय ॥ चतुरदास ने दीन्ही गाय १७६ (संख्या अर्थात् गिनती के नाम) वचनका संख्या अर्थात् गिनती के शब्द एकसे लेके १८ पर्यन्त संख्येय में टिकेहैं जैसा एक पट दशस्त्रियां आदि इसमें एक विप्र यही हो सक्ता नकि विप्रका एक

विंशति आदि परार्द्ध पर्य्यंत संख्या सदा एक वचन होतीहै गिनती से एकवचन बहुवचन सब होते हैं सो बीस से लेकर ९९ पर्य्यन्त स्त्री लिंग होते हैं पंक्ति अर्त्थात् १० से सौहजार आदि दशगुणा अधिक संख्याबढ़ती है जैसाएक १ दश १० शत १०० सहस्र १००० अयुत १०००० लक्ष १००००० प्रयुत १०००००० कोटि १००००००० (दोहा) एकदशहिशत सहसथे अयुत लक्ष परयूत॥ कोटि आदि इत्यादिक नौल नाम परसूत १७७ इसकी टीका ऊपर कहिआये हैं॥ (तौलके नाम—चौपाई) यौतब जान पाय्य परवीन॥ द्रुवय तौल जग जाहिर चीन १७८ (तौल ३ प्रकारकी हैं) तुला मान पुनि अंगुलि मान॥ प्रस्थ मान त्रय तौल सुजान १७९ (घुंघुची भरका और माषकके नाम) माषक ये घुंघुची दरशाई॥ कर्षअक्ष माषकहैं भाई १८० (कर्ष और घुंघुचीभरका नाम) पलये नाम कर्षका मिना॥ विस्तनाम सुवरण भरसन्ता १८१ (पलाका और परका नाम) कुरुविस्त नाम पलाका चीन॥ पलका नाम तुला परवीन १८२ (२० तुला और १० भारका नाम) तुलानाम भारहि दरशाया॥ आचितनाम भार कागाया १८३ (लढ़िया भरभार और रुपैयाका नाम) लढ़ियाभर आचितहै नाम॥ कार्षिक पुनि कार्षापण दाम १८४ (पैसाका नाम) पणसो पैसानाम दिखाई॥ ये तुलामान कहा हमगाई १८५ अंगुलिमान मनुष्यवर्ग में हस्तादिक कहचुकेहैं॥ (चारसेर और आठ आढ़क का नाम) आढ़क चारसेरको गावे॥ आढ़क नाम द्रोण

दरशावे १८६ (३ द्रोण और सोलह द्रोणका नाम) खारी द्रोण तीन दरशाई ॥ वाह द्रोण सोलह मनभाई १८७ (मुट्ठीभर और पावभरका नाम) निकुञ्चकहि मुट्ठा भर जान ॥ कुडव पावभरहै परमान १८८ (सेरभर और चौथाईका नाम) प्रस्थनाम सेरहिभर गाव ॥ पादनाम चौथाई चाव १८९ (बांटके नाम) अंशभाग बंटक गुणवन्त ॥ चतुरदास गावत गुण सन्त १९० (धनके नाम—दोहा) द्रविण द्रव्य वित वसू यह रिक्थ ऋक्थ धन जान ॥ हिरण्य अर्थ रै विभव ये द्युम्न स्वापतेय मान १९१ (सोने चांदी दोनों के और ताम्रादि द्रव्य का नाम—चौपाई) हिरण्य कोश चांदी सोनाये ॥ कुप्य ताम्र द्रव्यै मोनाये १९२ (ताम्ररूपके मेलका नाम) रूप्य कहैं तेहि नाम पुकारी ॥ चतुरदास कीन्हा विस्तारी १९३ (हिरण्यमणि के नाम) हरिन्मणी गारुत्मत जान ॥ अश्मगर्भ मरकत गुणमान १९४ (माणिक्य और मोती के नाम) पद्मराग लोहितक जु रत्न ॥ मौक्तिक मुक्ता राखो यत्न १९५ (मूंगा और पद्मरागादि और मोती आदि रत्नमात्र के नाम) विद्रुम पुनी प्रवाल बखाना ॥ रत्नमणी मणिरत्नहिमाना १९६ (सोनेके नाम कुण्डलिया) हिरण्य हेम हाटक पुनी स्वर्णहि कनक बखान ॥ तपनिय सुवर्णगांगेय शातकुंभ जग जान १९७ शातकुंभ जगजान भर्म कर्बूर कहावे ॥ काञ्चन पुनि मह रजत रुक्म त्रयरूप दिखावे १९८ जातरूप चामीकर कार्त्तस्वर परमान ॥ अष्टापद जाम्बूनद चतुरा ल पहिंचान १९९ (गहना रूपा सोनेका नाम—चौपाई)

शृङ्गी कनक नाम गहनेका ॥ चतुरदास गावे गुरनेका २०० (चांदीके नाम–दोहा) रजत रूप दुर्व्वर्ण येश्वेत नाम खर्ज्जूर ॥ कलधौत रूप्य पुनि तारहै चांदी नाम हजूर २०१ (पीतरके नाम–चौपाई) आरकूट रीतीपीतरये ॥ चतुर काम आवे सब नरये २०२ (तांबाके नाम-दोहा) औदुम्बर ये वरिष्ठहै द्विष्ट उदुम्बरजान ॥ ताम्रक रूपहि म्लेच्छमुख शुल्वहृघष्ट जगमान २०३ (लोहेके नाम) शास्त्रक तीक्ष्ण पिण्ड ये कालायस असलोह ॥ अश्मसार चातुर कहे तौल तराजू तोह २०४ (सिंघानि के नाम–चौपाई) मण्डूर सिंहाण और सिंहान ॥ सिंहाणनाम चातुर परमान २०५ (चांदी सोना लोहादि और फालका नाम) सबका नाम लोह बलवान ॥ कुशीनाम फलका परमान २०६ (कांच और पारा के नाम) काचक्षार द्वै नामहि जान ॥ पारद चपल सूत रसखान २०७ (भैंस के सींगका नाम–छंद) गवल बखाना ॥ चतुरा जाना २०८ (अब्ररख के नाम–चौपाई) अभ्रक गिरिजामल गुणवन्ता ॥ गिरिज नाम अमलः जनसन्ता २०९ (सुरमाकेनाम) स्रोतोऽञ्जनसौवीरहिजान ॥ कापोताञ्जन यामुन मान २१० (तूतिया के नाम) तुत्थाञ्जन शिखिग्रीव मयूरक ॥ कर्प्परी नाम वितुन्नक तूरक २११ (रसौंत के नाम) नाम रसाञ्जन रसगर्भाये ॥ तार्क्ष्य शैल चातुरजन गाये २१२ (गन्धक के नाम) गन्धाश्मा गन्धिक गन्धकये ॥ सौगन्धिक चातुर नरमतये २१३ (काले सुरमाके नाम) चक्षुष्या पुनि नाम कलानी ॥ कुलत्थिक नाम चतुरजन ज्ञानी २१४

(पीतरिको तपा के घिसने से जो आंजन बने उस के नाम) रीतिपुष्प कहिये कुसुमांजन ॥ पुष्पक पुष्पकेतु ये अंजन २१५ (हरिताल के नाम) पिञ्जर पीतन तालरु आल ॥ हरितालक चातुर ये बाल २१६ (गेरू वा शिलाजीतके नाम) गैरेयअर्त्थ्यः गिरिज कहावे ॥ शिलाजतू अश्मज दरशावे २१७ (गन्धरसके नाम) प्राण गन्धरस पिंडहि बोल ॥ नाम गोपरस हिरदय तोल २१८ (समुद्रफेन और सेंदुरके नाम) डिंडीर अब्धिक फलपुनि फेन ॥ सिंदूरनाम संभवहै येन २१९ (सीसेके नाम) सीसक नाग वप्रयोगेष्ट ॥ सीसानाम चतुरगुण श्रेष्ट २२० (रांगके नाम) पिच्चटरंग बङ्ग यह जान ॥ त्रपुरांगा चातुर पहिंचान २२१ (रुई के नाम) तूल पिचुल रूईकर नाम ॥ चतुरदास बस कहे सुग्राम २२२ (कुसुमके नाम) कमलोत्तर कुसुंभ महारजन ॥ वह्नि-शिखाहि मानजग सजन २२३ (भेड़ाके ऊन और चौगड़ाके ऊनसे बनेहुये कम्बल के नाम) ऊर्णायुः पुनि मेषहि कम्बल ॥ शशोर्णनाम शशलोमज अम्बल२२४ (ममाखी व शहद और मोमके नाम) माक्षिक मधुक्षौद्रः यह नाम ॥ मधूच्छिष्ट सिक्थक आराम २२५ (मैनशिलकेनाम–दोहा) मनश्शिला परमान ये मानोगुप्ता सन्त ॥ मैनाश्शिल अरु मनोह्वा नागजीविका सन्त२२६ (नैपाली मैनशिल के नाम–चौपाई) गोला नैपाली कटनीये ॥ कोउ कोउ एकनाम चीनीये २२७ (यवाखार के नाम) पाक्यनाम यवक्षार कहावे ॥ यवाग्रजत्ततिया यशपावे २२८ (सज्जी के नाम) नाम सर्ज्जिकाक्षार

कहावे ॥ सुखवर्च्चक कापोतक धावे २२९ (सोंचरके नाम) सौवर्चल पुनि रुचक बखान ॥ चतुरदास निश्चयकर जान २३० (वंशलोचन का नाम) त्वक्क्षीरी पुनि वंशलोचना ॥ वंशरोचना कहीशोचना २३१ (उजली मिर्च्च सौभाञ्जन के और ऊंखकी जरका नाम) श्वेतमरिच पुनि शिग्रुज गाया ॥ मोरटऊंखजरहि दरशाया २३२ (पिपरामूलके नाम) ग्रन्थिक चटिका शिर जग जान ॥ पिपरामूल कह्यो परमान २३३ (जटामांसी और पतंग के नाम) भूतकेश गोलोमी संत ॥ पत्रांग रक्तचन्दन गुणवंत २३४ (सोंठि पीपरि मिर्च्च इन तीनोंके बटोरने के और आंवरा हर्र बहेर के बटोरने का नाम) त्र्यूषण त्रयकटु व्योष बखाना ॥ त्रिफलाफल त्रिकटू पहिंचाना २३५ (दोहा) वैश्यवर्गपूरण किया रामदास के पूत ॥ चतुरदास मम नाम है निम्बारक मतदूत २३६ ॥

इति श्रीजम्बूद्वीपेभारतखंडेमालवदेशेअवन्तीमहाक्षेत्रेरत्नपुरीनगरेहरिकनाती महन्तश्रीरामाजीनन्दचतुरदासविरचितेभाषाअमरश्रीरघुनाथ कल्पद्रुमद्वितीयकाण्डेवैश्यवर्गोनवमोविश्रामस्सम्पूर्णः ॥

अथ श्रीअमरकोषभाषादशमःशूद्रवर्गप्रारम्भः॥

(दोहा) श्रीब्रजराज मनायके निम्बारक शिरनाय ॥ शूद्रवर्ग वर्णनकरूं मनमें धर हरकाय १ (शूद्रके नाम) अवर वर्ण अरु अंघ्रिज वृषल शूद्र नरजान ॥ जघन्यज नाम चातुर कहि पांच शूद्र करमान २ (ब्राह्मणी में शूद्र से उत्पन्नहो उसका और चाण्डालसे लेकर

अम्बष्ठ पर्य्यन्तका नाम--चौपाई) ब्राह्मणि शूद्र अंश चण्डाल ॥ संकीर्ण नाम द्वितिय नर आल ३ (शूद्रिनी में वैश्यसे पैदाहुयेका और बनिनिमें ब्राह्मण से पैदा हो उसका नाम) करण वैश्य शूद्रीसे पैदा ॥ अम्बष्ठ विप्र बनियानी भैदा ४ (शूद्रिनी में क्षत्रियसे पैदा हुयेका और क्षत्राणी में वैश्य से पैदाहुयेका नाम) उग्र नाम क्षत्री शूद्री से ॥ मागध वैश्य क्षत्रिरमनी से ५ (बनिनि में क्षत्रियसे पैदाहुयेका और क्षत्रिणी में शूद्रसे पैदाहुये का नाम) क्षत्रीबनिनिजमाहिष्यगाया ॥ क्षत्ता क्षत्रिणि शूद्र बताया ६ (ब्राह्मणी में चत्रिय से पैदाहुये का और ब्राह्मणी में वैश्य से पैदाहुये का नाम) सूत ब्राह्मणी क्षत्रियअंश ॥ वैदेहकवैश्यैकरवंश ७ (शूद्रिनि में वैश्य से पैदाहुई जोकरणीहै उसमें बनिनिमें क्षत्रियसे पैदाहुआ माहिष्य है उससे पैदाहुयेका और ब्राह्मणी में शूद्रसे हुयेका नाम) पुनि रथकार नाम दरशाया॥ चांडाल चंडालकहाया ८ (थवई वा चितेरेके वा बढ़ई कोरी नाऊ धोबी चमार इनके भी यही नामहैं) कारुशिल्पी नाम चितेरा ॥ शिल्पीकारुनाम इनकेरा ९ (शिल्पियोंकीपंक्तिका वा शिल्पियों के कुलके प्रधान के नाम) श्रेणि शिलिप पंगति यहजान ॥ कुलकरु कुल श्रेष्ठी परमान १० (माली और कुम्हारके नाम) मालिक मालाकार पुकारे ॥ कुंभकाररु कुलाल उचारे ११ (कसगर वा कोरी के नाम) पलगंडलेपक यह दरशावै ॥ तंतूवाय कुविन्द कहावै १२ (दरजी वा रंगसाजके नाम) तुंतवाय सौचिक दरजीये ॥ रंगाजीव चित्रकरवीये १३ (शि-

किली वा चमारकेनाम) शस्त्रमार्ज्ज असिधावक जान॥ चर्म्मकार पादूकृत मान १४ (लोहार वा सोनार के नाम) व्यूद्दकार लोहकारक भिन्त॥ स्वर्णकार नाडिन्धम बिन्त १५ पुनिकलादसोई रुक्मकारक॥ चारि नाम सोनार पुकारक १६ (चुरिहारे वा ठठेरेके नाम) काम्ब-विक पुनि शांखिकजान। ताम्रकुट्टकशौल्विकमान १७ (बढ़ई के नाम) काष्ठतटरु वार्द्धकि क्षत्ताये॥ त्वष्टा रथकारकबतलाये १८ (गाउँ के बढ़ईका वा मनमाने स्वतन्त्र खुदमुख्तार बढ़ई का नाम) ग्रामतक्षयेनाम दिखाया॥ कौटतक्ष स्वातंत्र खुदाया १९ (नाऊकेनाम) दिवाकीर्त्ति नापित मुंडी ये॥ अन्तवसायि क्षुरीतुंडीये २० (धोबी वा कलवारके नाम) रजक नाम निर्णेजक धोबी॥ मंडहार सौंडिक यहलोबी २१ (गड़रिया वा पण्डाकेनाम) आजाजीवी पुनि जाबाल॥ देवल देवा जीव बहाल २२ (इन्द्रजाल वा इन्द्रजाली के नाम) साम्बरि पुनि माया बलवान॥ मायाकर प्रतिहारकजान २३ (नटके नाम—दोहा) शैलाली शैलूषये जाया जीव बखान॥ भरत भारतरु नटकह्यो नामकृशाश्वीजान २४ (कथिक वा मृदंग के बजाने[illegible]के नाम—चौपाई) चा-रण नाम कुशीलव सन्त॥ मार्द्दंगिक पुनि रजिक सोमिन्त २५ (तारीदेने वाले वा बांसुरी बजाने वाले के नाम) पाणिघ पाणिवादकहलावै॥ वेणुध्मा वैणविक बतावै २६ (बीणबजानेवाले वा चिड़ीमारके नाम) वैणिक वीणा वाद बखाना॥ शाकुनिकरु जीवान्तकजाना २७ (व्याध और चिकवा वा कसाई के नाम) वागुरिकहु जालिक

मालिक ये ॥ वैतंसिक मांसिक कौटिकये २८ (मँजूरके नाम) भृतिभुक भृतक वैतनिक जानो ॥ नामकर्म कर-चार बखानो २९ (सँदेशिहा वा बोझिया मुटहाकेनाम) वार्तावह वैवधिक सुजान ॥ भारिक भारवाह बलवान् ३० (नीचके नाम—दोहा) विवर्ण पामर नीचये पृथ-ग्जनेतर जान ॥ अपशद अपसद प्राकृत जालमक्षुल्लक निहान ३१ (टहलुवा के नाम) दास दाश दासेरसुत गोप्यक चेटक चेत ॥ प्रैष्य प्रेष्य किंकरयह परिचारक दासेत ३२ (चौ०) भुजिष्य नियोज नामहै तेरा ॥ च-तुरदासने निश्चय हेरा ३३ (जो दूसरे से पालाजाय उसके अर्थात् रहुवाकेनाम) परिस्कन्द परजात परैधित॥ परिष्कन्द पराचित संतमित ३४ (मन्द वा सुस्त के नाम) तुन्द परिमृज शीतिक मन्द ॥ आलस नाम सु-स्तये अन्द ३५ अलस्य अनुष्ण नामये छट्ठा ॥ मन्द सुस्तकेनामसुबट्ठा ३६ (चतुरकेनाम) दक्ष चतुर पेशल पटुउष्ण ॥ सूत्थान उष्णये प्रष्ण ३७ (चाण्डालके नाम-दोहा) मातंगमात्त चण्डालये प्लव जलंगमजान ॥ दिवा कीर्तियेजनंगम अन्तेवासीमान ३८ स्वपचनाम श्वपा कहै पुक्कस पुनीनिषाद ॥ चाण्डालकेनाम ये चतुरा वरणै साद ३९ (म्लेच्छ जाति भेद जंगली गोमांस खानेवाले लोकबाह्य बोलनेवालोंके नाम) शबर पुलिन्द नाम दर-शाया ॥ यवन मलिच्छ नाम यह भाया ४० (व्याधके नाम) लुब्धक मृगयु व्याध कहलावै ॥ पुनि मृगवधा जीव दरशावै ४१ (कुकुरकेनाम) कौलेयक सृग दंशक जान ॥ कुकुर कुक्कुर कुर्कुरहु मान ४२ भषक श्वाशु निश्वानरु

कपिल ॥ भण्डल शुनकरु सारमेयबिल ४३ शुन भी याको नामहै (सिखाये कूकुर का और शिकारी कुत्तोंका नाम–चौपाई) अलर्क सीखा कूकुर जान ॥ विश्व कद्रु कुत्ता पहिंचान ४४ (कुतियाके और गांव के सोर का नाम) सरमाशुनी नाम कुतिया का ॥ विट्चर नाम सो- हरियाताका ४५ (बकरा वा ज्वाने पशुमात्रका नाम) वर्कर पशूमात्र का नाम ॥ चतुरदास गावै भजिराम४६ (शिकार के नाम) मृगया मृगव्य पुनि आखेट ॥ आ- च्छोदन जानो जग हेट ४७ (जिस मृगके व्याध ने द- हिने अङ्गमें माराहो उसका नाम) दक्षिणेर्मा नाम दि- खायो ॥ चतुरदासने भाषा गायो ४८ (चौरके नाम– दोहा) चोर चौर तस्कर पुनि प्रतिरोधि रोस्तेन ॥ पाट- च्चर एकागरिक मोषक दस्युसुवेन ४९ परास्कन्द पट- चरकहै मलिम्लुचहु जगजान ॥ चतुरदास पहिंचानि ले द्वादशनाम सुजान ५० (चोरीके नाम) चोरिक चोरी चौरिका चौर्य्यह पुनि अस्तैन्य ॥ स्तेयनाम चातुर कहै चोरी कहै सुवैन्य ५१ (चोरीके मालका और पक्षी वा मृगों के बझानेकी सामग्री जालादिका नाम–चौपाई) लोत्र लोत लोपत्र कहावै ॥ नाम वितंस जालका गावै५२ (खाभर और जाल के नाम) कूटयन्त्र उन्माथ प्रवीना॥ वागुर मृगबन्धनी सो चीना ५३ (रसरी के नाम) वण्टक रज्जु शुल्वये जाना ॥ गुण पुनिवटी जान परमाना ५४ (रहटके नाम) घटीयंत्र उद्धाटन मिन्त ॥ चतुरदास गुण गावत सन्त ५५ (राछिके नाम) बायदंड बापदंडा जान ॥ वेमा वेम चतुर जग जान ५६ (सूत और वानी

ब्यथारी वा बीननेका नाम) सूत्रतन्तु पुनि कहि नरगाई ॥ वाणिव्यति व्यूती दरशाई ५७ (मट्टीकाष्ठ वस्त्र चर्म्मआदिसे पोतने वा लिखने का और गुड़िया गुड़वा के नाम) पुस्तनाम लिखने का मिन्त ॥ पञ्चालिका पुत्रिका सन्त ५८ (लाहकी वस्तु और रांगकी वस्तु का नाम) जातुष नाम लाह का मान ॥ त्रायुष नाम धातु का जान ५९ (पिटारी या प्यटार और बहिंगी वा कांवरिके नाम) पिटक पेटकरु पेटा मञ्जुष ॥ बहिंगी का पुनि भारा यष्टिषु ६० (सिकहर और पनहीं जूता के नाम) शिक्य और काचहि परमान ॥ पादक पादु उपानत जान ६१ (मोजा और बरेति के नाम) अनुपूदीना नाम सुजान ॥ नध्री वध्री वरत्रा मान ६२ (जेरबन्द और किंगिरीके नाम) कशा नाम जेरबन्दहि जान ॥ चंडाल विणा जगजाहिर मान ॥ चांडालिका कडोल वल्लकी ॥ चतुरदास गुणगावत रल्लकी ६३ (सोनारकी कंटिया वा कांटा और कसौटी के नाम) राक्षणिका नाराची मिन्त ॥ शाण निकष कषजाहिर सन्त ६४ (रेती और सराई के नाम) व्रश्चन कहि पुनि पत्र परशुये ॥ इषीक तूलिका नाम सरये ये ६५ (घरिया के नाम) मूषा मुषी सुर्षा मुषा ॥ तैज साह वर्तनी मनुषा ६६ (खलायट और बरमीका नाम) चर्म्म प्रसेविक भस्त्रा जान ॥ आस्फोटनी वेधनिका मान ६७ (कतरनी और बांका के नाम) कर्तरि नाम कृपाणी जान ॥ वृक्षभेदि वृक्षादन मान ६८ (टांकी और आरा के नाम) पषाण दारण टंकसुजान ॥ करपत्र क्रकच बलवान ६९ (रांपीकानाम)

चर्म्म प्रभ दिक आरा नाम ॥ रापी नाम कहे जगदाम ७०
(लोहकी प्रतिमा के वा गीत नृत्य थवई आदिके नाम)
अयःप्रतिमा सूर्म्मीस्थूण ॥ शिलगीत कर्म्मादिक सूण
७१ (प्रतिमा अर्थात् तसवीर के नाम—दोहा) प्रति-
मान प्रतिबिम्बये प्रतिमा अर्चा सकल ॥ प्रतिजाया प्रति
यातना प्रतिकृति अतिनिभविकल ७२ (मिसाल और
जिसकी मिसाल दीजाय उसके नाम—चौपाई) उपमान
उपमा दोउनाम ॥ चतुरकहे भजि सीताराम ७३ (बरा-
बरके नाम—दोहा) निभसंकास निकासये रूपातुल्य नि-
कास ॥ समसदृक्ष पुनि सदृश कहे साधारण प्रतिकास
७४ (चौपाई) सदृकनाम समान कहावे ॥ चतुरदास
निश्चयकरि गावे ७५ (मँजूरी के नाम—दोहा) विध्या
भृत्या भर्म्मभृति कर्म्मणाह वेतन ॥ भरणमूल्य निर्वेश
पण भरण्य मजुरी येन ७६ (मदिरा अर्थात् दारू के
नाम) हलिप्रिया हाला सुराकहे वरुणात्मज बखान ॥
मदिरा पुनि गन्धोत्तमा इराप्रसन्नामान ७७ मद्यनाम का-
दम्बरी परिस्रुत नाम पुकार ॥ कश्यपुनि परिश्रुतादसत
चतुर करे विस्तार ७८ (खट्टी चरपरी कटु आदि वस्तु
के वा भोजन अधिक जेवांहो उसके नाम—चौपाई) एक
नाम अवदंश कहाया ॥ जैसा ग्रन्थबीच हम पाया ७९
(मदिरा पीनेके स्थान के नाम) शुण्डापान नाम मद
थान ॥ सुण्डी आदि चतुरजन पान ८० (मदिरा पीने
के समय के नाम) मधुवार पुनि मधुक्रम जगजान ॥ म-
दिरा पान समय पहिंचान ८१ (महुआ से उत्पन्न म-
दिराके नाम) माध्वीक मध्वासव पुनि रस मधु ॥ माधवकः

चतुरा गावतबधु ८२ (गुरसीरा की मदिरा के नाम) आसव सीधुः शीधूमान ॥ मैरेय नाम चातुर परमान८३ (मदिरा कैल्क और मदिरा करने केनाम) मेदक पुनि जगलः जसवन्त ॥ अभिषव पुनि सन्धान सुसन्त ८४ (सुराबीज वा मत्त वा मतवाल नंगेहोके पुकारने और मदिरा फूलके नाम) नग्नहु नाम किराव कहावे ॥ सुरा मंड कारोत्तर गावे ८५ (दारू पीनेकी सभा और दारू के बर्तनके नाम) पान गोष्ठिका पुनि आपान ॥ पानपात्र पुनि चसक बखान ८६ (मदिरा पीनेके नाम) अनुतर्षण सरकः गुणवान ॥ चतुरदास जाहिर परमान ८७(जुआरीके नाम) अक्षधूर्त्त द्यूतकृतधूर्तक ये ॥ नाम अक्षदेवी सतमतये ८८ (जामिन और फड़बाज के नाम) लग्नक प्रतिभू जामिन जान ॥ द्यूतकारक पुनि सभिक प्रमान ८९ (जुआके नाम) अक्षवती कैतव पणामिंत॥ द्यूतजुआ चातुर जनसंत ९० (बाजी लगाने और पांसा के नाम) पणग्लहः बाजीकर नाम ॥ पाशक देवन अक्षहि दाम ९१ (गोटोंके इधर उधर धरने और बिसाती वा जिस कपड़ेपर गोटें खेलतेहैं उसके नाम) परिणाय नामसारीकामिन्त ॥ अष्टापदशारिफः लसन्त ९२ (जीवों के लड़ानेकी बाजीका नाम) समाह्वये बाजीपक्षीनके ॥ चतुरदास गुणकहे सोबीनके ९३ (दोहा) शूद्रवर्ग पूरणहुआ द्वितियाकांड अनूप ॥ निम्बारक परताप से चतुरा रच्यो स्वरूप ९४ दश वर्गा याके बिषे परम मनोहर सुबच्छ ॥ रामदासके बालने खूबबनाये अच्छ ९५ पक्ष वेद ग्रह चंदये संवत श्रावण मास ॥

शुक्लपक्ष एकादशी शुक्रवार प्रकास ९६ चतुरदासने ये रच्यो भाषाकोष प्रबंद ॥ प्रकटकरो निम्बारक सायकरो गोबिंद ९७ श्रीहरिदेव दयाकर ये वरदीजै ईश ॥ अमरकरो इस ग्रन्थको पूरण बिस्वाबीश ९८ ॥

इति श्रीजम्बूद्वीपेभारतखंडेमालवदेशेअवन्तीमहाक्षेत्रेरतलामग्रामेहरिव्यासीवैष्णवमहंतश्रीरामाजीनन्द चतुरदासविरचितेग्रंथश्रीअमर रघुनाथकल्पद्रुमभाषाद्वितीयकांडेशूद्रवर्ग दशमोविश्रामःसंपूर्णः१० ॥

इति अमरकोषभाषायां द्वितीयकांडः समाप्तः ॥

अमरकोष भाषा

अर्थात्

अमररघुनाथकल्पद्रुम ॥

तीसराकाण्ड ॥

प्राणीवर्ग्गप्रारम्भः ॥

(दोहा) श्रीहरिहर विधिनायशिर कांडतृतीय दिखाय ॥ चतुरदासपर कृपाकर दीजो ग्रंथ बनाय १ (भाग्यवान् के नाम—चौपाई) पुण्यवान सुकृती सतवादी ॥ धन्यनाम धनधार अनादी २ (उदारचित्त दयालु और सूधे मनुष्य के नाम) नाम महेच्छ महाशय जान ॥ सुहृदय पुनि हृदयालूमान ३ (बड़ेयुक्ती मनुष्यके नाम) महोत्साह अरु महोद्यम जान ॥ चतुरदास कीन्हापरमान ४ (प्रवीण जनैयाके नाम—दोहा) विज्ञनिपुणसुप्रवीणये निष्णात कृत मुखहिमान ॥ वैज्ञानिक कृती कुशलये अभिज्ञ शिक्षितमान ५ (पूजाकरनेके योग्य मान्यादि और जिस पदार्थके देखनेसे संशय होवे उसके नाम—चौपाई) पूज्य प्रतीक्ष पूज्यपरमानस ॥ सांशयिक संशयपन मानस ६ (दक्षिणा पाने के योग्यके नाम) दाक्षिण्य दक्षिण्य दक्षिणीये ॥ दक्षिणार्ह दक्षा पानीये ७ (अतिदानीकेनाम—दोहा) दान शौण्ड बहुप्रद यह स्थूल लक्ष्य सुप्रवीन ॥ स्थूल लक्ष वदन्यक वदान्य नाम नर चीन ८ (बड़ी आयुर्बलवाले और शास्त्रके नाम—चौ-

पाई) आयुष्मान जैवातृक मित्त॥ अंत पर्वाणि शास्त्र वितसन्त ९ (पारखी और वरदान करनेवाले के नाम) कारणिक और परीक्षिक मान॥ वरद समर्द्धक ये पहिं-चान १०(हर्षित के नाम) हर्षमाण पुनि विकुर्वाण जन॥ हृष्ट मानसरु प्रमना सतमन ११ (उदास वा दुखिया के नाम) विमनाः पुनि दुर्म्मनाःजान॥ अन्तर्मनाः नाम पहिंचान १२ (प्रीतियुक्त और सीधे वा सौहृद के नाम) उत्क उन्मनाः युक्तीवान॥ सरलउदारदक्षिणह मान १३ (देनेखानेवालेका और लीनहुये के नाम) सु-कुल नाम खाने देनेका॥ आसक्त तत्पर प्रसितः शेका १४ (अभीष्ट वस्तुके पाने में लगेहुये के नाम) इष्टा-र्थो द्युक्तः जग जान॥ उत्सुक चतुरकिया बखान १५ (प्रसिद्धके नाम) ख्यात वित्त विज्ञात कहावे॥ प्रतीत प्रथित विश्रुतः बतावे १६ (गुणसे प्रसिद्धके नाम) कृ-त लक्षण आहित लक्षणाये॥ अहित लक्ष जाने वक्षणये १७ (धनी और स्वामी वा मालिककेनाम) इभ्य अ-साढ्य पुनि धनी धीसता॥ स्वामी ईश्वर पति ईशिता १८ अधि भूनायक नेताप्रभू॥ परिवृढ अधिप मालिक-हि सूभू १९ (भरेपूरे और परिवार पालने में युक्त के नाम) अधिकर्द्धि और समृद्ध कहावे॥ कुटुम्ब व्यापृत उपाधि गावे॥ अभ्यागारिक नाम सुजाना॥ तीनिनाम चातुर परमाना २० (अंग और रूपसे अतिश्रेष्ठ और जोदुःखमेंभी खुशीके साथ कार्य्य कियाकरे उसकानाम) सिंहसंहनन नाम बताया॥ निर्वार्य्य नाम नर निश्चय गाया २१ (गूंगे के नाम) मूक अवाक नामदरशाया॥

चतुरदास गूंगा यह भाया २२ (जो पिता के समान समझाजावे उसके नाम) पितृ सन्निभ मनोजव जान॥ मनोजवस आनंद बखान २३ (जो वरको आदरपूर्व्वक वस्त्र भूषणसहित कन्या देवे उसके नाम) कुकुद कुकूद नाम गुणवन्ता॥ कन्यादान मान जनसन्ता २४ (लक्ष्मीवान् के नाम–दोहा) श्रीलइलील श्रीमानयेमान लक्षमण मिन्त॥ लक्ष्मीवान बखानजग गावत चतुरा सन्त २५ (स्नेही के नाम–चौपाई) स्निग्धमान अरु वत्सल संत॥ चतुरदास गावे गुणवंत २६ (दयावान् के नाम) कारुणिक सूरत और सुरतये॥ कृपालु दयालू जान सुरतये २७ (स्वतन्त्र वा मनमाने के नाम–दोहा) स्वतंत्र सत्यरु अपावृत स्वरस्वच्छन्द प्रवीन॥ निरवग्रह स्वैरी कहैं चतुरा चतुराचीन २८ (पराधीन वा परवशके नाम–चौपाई) पराधीन परतन्त्र बखाना॥ नाथवान परवान सुजाना २९ (आधीनमात्र के नाम–दोहा) अस्वच्छन्द आधीन ये आयन निघ्ननरिन्द॥ गृह्यक पुनि चातुर कहे जयजय यश गोविन्द ३० किसी २ के मतसेये ९ भी पराधीनही के नामहैं॥ (बहारने झारने वाले मनुष्य और अतिसुस्त के नाम–चौपाई) खलपू बहुकर जान जहाम॥ दीर्घसूत्र चिरक्रियहि सुजान ३१ (अविचारी के और आलसी का नाम) असमीक्ष्य कारी पुत्रीजाल्म जस॥ कुंठआलसी जानलेहु तस ३२ (कार्यकरने लायक जीवकेनाम) अलंकर्मीण कर्म्मक्षम संत॥ चतुरदास जानत बुधिवंत ३३ (जो कर्म्म करनेमें लगाहो उसका और जो नित्यही काममें लगारहे उसके

नाम) क्रियावान करता पहिंचान ॥ कर्म्म कर्म्म शीलः जगजान ३४ (प्रयत्नपूर्व्वक जो कर्मको समाप्तकरे उसके नाम) कर्म्मशूर कर्म्मठयशवंत ॥ जानलेहुजाहिगुणवंत ३५ (मँजूरकेनाम) भरण्यभुक कर्मण्यभुक जान ॥ कर्म्म करः निश्चय पहिंचान ३६ (विना मजूरीपाये परभी जो काम करदे उसका और किसी के मरनेपे स्नान कियेहुये के नाम) कर्म्मकार करदेवे काम ॥ अपस्नातम्ह-तस्नातहिनाम ३७ (मछरी मांस खानेवाले के नाम) शौष्कुल नाम और आमिषाशी ॥ मछरीखान नाम परकाशी ३८ (भूखेके नाम) बुभुक्षितः अशनायित जान ॥ जिघत्सु क्षुधितजान जगमान ३९ (जो परसे अन्नसेही जीताहो उसके और खवैयाके नाम) परपिं-डाद पराश्न परान ॥ घस्मर अद्मर भक्षकजान ४० (मरभुखा और प्यटभरुवा वा पेटूके नाम) औदरिकः आद्यून बखान ॥ कुक्षिंभरी आत्मंभरि जान ४१ (जो सब वर्णोंका अन्न खालेताहो उसके अर्थात् परम हंसके नाम) सर्व्वान्नीन सर्व्वान्न भोजी ॥ चतुरदास गावत गुणमोजी ४२ (लोभीकेनाम) गर्द्धन लुब्धरु तृष्ण-क मित ॥ अभिलाषुक गृध्नुः बलवंत ४३ (अतिलोभी और सिरीके नाम—दोहा) लोलुप लोभी लोलुभ लोभ नाम नरचीन ॥ सोन्माद उन्माद यह उन्मदिष्णु पर-वीन ४४ उन्मदभी याका नामहै ॥ (अन्याई और मत-वालेके नाम—चौपाई) अविनीत समुद्धत जग दरशावे ॥ उत्कट चीव मतशौंड कहावे ४५ (कामीकेनाम—दोहा) कामुक कमिता अनुक ये कामयिता सो अभीक ॥ कम-

नरु कामन कम्रये अभिक नाम जगनीक ४६ (आज्ञाकार वा हुक्मीके नाम—चौपाई) विनयग्राही वचने स्थित मान ॥ नाम विधेय सो आश्रव जान ४७ (वश वा काबू में परेहुये और नम्र वा मुलायम मनुष्यके नाम) प्रणेय पुनि वश्यजान सभीत ॥ प्रश्रित निभृत जान विनीत४८ (ढीठ मनुष्यके नाम) धृष्टहि धृष्णक जान बियात॥धृष्णु ढीठ नाम विख्यात ४९ (अति ढीठे निर्भयके नाम) प्रतिभान्वितः नाम नरस्वामी ॥ प्रगल्भ कहे चातुर जन स्वामी५० (सलज्जकेनाम) अधृष्टनाम शालीन सुजान॥ चतुरदास के भज भगवान ५१ (चकड़ाये हुये और व्याकुल वा घबड़ाये हुये के नाम) विस्मयान्वितः नामविलक्ष ॥ कातरनाम अधीरअनक्ष ५२ (डरानेहुये वा डरपोक के नाम—दोहा) त्रस्नुःत्रस्त डरानये भीरु भीत भीलूक ॥ भीरुक जन चातुर कहे जानलेहु सु अनूप ५३ (कहवैया अर्थात् जो कुछ कहनेपैहो उसके और लेवैया वा लेनेवाले के नाम—चौपाई) आशंसित आशंसू संत॥गृहयालुः गृहिता बलवंत५४(श्रद्धावान्‌का और गिरवैया के नाम) श्रद्धालुः जानो गुणवान ॥ पतयालुः पातुक जगजान ५५ (लोकलज्जाशील और वन्दना करनेवाले के नाम) लज्जाशील अपत्रापिष्णु ॥ अभिवादक वन्दारु जिष्णु ५६ (हथियार व मरवैया और बढ़नेवाले वा बढ़वैया के नाम) हिंस्रशरारु घातुकजान॥वर्द्धिष्णू वर्द्धन जगमान ५७ (उछलनेवाले और गहनाआदिपहिरनेकीइच्छाकियेहुयेकेनाम) उत्पतिष्णु उत्पतिता संत ॥ अलंकरिष्णु पुनिमण्डनमित ५८

(होनेकी इच्छा कियेहुये और बपरैया के नाम) भूष्णुभ-
विष्णुरु भविता जान॥ वर्तिष्णुः वर्त्तन जग मान ५९
(निकरवैया और मेघवा छिक्कण के नाम) निराकरिष्णु
क्षिप्नु पुनिज्ञान॥ मेदुर नाम मात परमान ६० (जनै-
या के नाम) विदुर विन्दुज्ञाता परवीन॥ नामजनैया
का जगचीन ६१ (विकसनेवाले के नाम) नामविकासि
विकाशी जान॥ विकस्वर विकश्वर चातुर मान ६२
(परसनेवाले के नाम) नाम विसृमर जान प्रसारी॥
और विसृत्वर चतुर विसारी ६३ (गमखोर के वा सहने
वाले के नाम-दोहा) सहनसहिष्णू मानमन क्षन्ता क्ष-
मिता जान॥ क्षमी तितिक्षुः चतुरनर गमखोरा पहिं-
चान ६४ (क्रोधी और अत्यन्त क्रोधीके नाम-चौपा-
ई) अमर्षणः कोपी क्रोधन ये॥ अत्यन्त कोपन पुनि
चंडन ये ६५ (जगैया और निद्रा में नेत्र घूमनेवाले के
नाम) जागरूक जागरिता है जग॥ प्रचलायित पुनि
घूर्णितहै सग ६६ (बनाय औंघाने हुयेके नाम) स्वप्नक
नाम शयालुः सन्त॥ निद्रालुः चातुर गुणवन्त ६७
(स्वपैयाके नाम) निद्रित नाम शयित गुणवान॥ निद्रा-
णः चातुर परमान ६८ (विपरे हुये और नीचे मुख
कियेहुये मुंह बरबौनाके नाम) परांमुखः पुनि पराचीन
ये॥ अवाङ् अधोमुख सत्यकीनये ६९ (देवोंकी पूजा
करनेवाले और चारोंओरके ऐंचनेवालोंका नाम) देव
धृङ्देवोंकी पूजा॥ विष्वग्धृङ् ऐंचकये सूजा ७० (जो
साथचले वा पूजाकरे उसका और जो तिरछाचले उ-
सका नाम) सध्रृङ् नाम साथपूजनका॥ तिर्य्यङ्नाम

ये तिरछापन का ७१ (वक्ता या वँचैया और बृहस्पति सदृश पण्डितके नाम) वदा वदोवद वक्ता नाम॥ वाक्पति पुनि बागीसो दाम ७२ (नैयायिक और बहुत भाषनेवालेके नाम) वाग्मी वाचो युक्ति पटुःये॥ वावदूक अति वक्ता जटु ये ७३ (बहुत अवाच्य बोलनेवाले के नाम) वाचाट नाम वाचाल कहावे॥ जल्पाकःचातुर दरशावे ७४ बहुगर्ह्यवाक्भी इसीका नामहै॥ (अप्रिय बोलने और प्रियबोलने वालेके नाम) मुखर अबद्ध मुख दुर्म्मुख जान॥ प्रियंवदः पुनि शक्ल सुजान ७५ (जो साफ़ न बोलताहो उसके और खराब बोलनेवाले के नाम) लोहल अस्फुट वाक बखान॥ गर्ह्यवादी पुनि कद्वद जान ७६ (दोषकहने और रूख बोलनेवाले के नाम) कुचरःनाम कुवादअनंत॥ असौम्य स्वरअस्वर है संत ७७ (शब्दकरनेवाले और आशीर्व्वाद के साथ स्तुति करनेवालेके नाम) शब्दन रवणकरे विस्तार॥ नान्दीवादी नान्दीकार ७८ (महामूढ़के और जो गूंगा बहिरा दोनोंहो उसका नाम) जड़अज्ञहै मूढ़कर नाम॥ एडमूकगूंगा बहिरादाम ७९ (अनेडमूकभी नाम इसी काहै॥ (चुपरहनेवाले और नंगेके नाम) तुष्णिक तूष्णीं शील कहावे॥ अवासा नग्न दिगम्बर गावे ८० (निकारेहुयेके नाम) निष्कासित अवकृष्ट कहावे॥ निष्कासित चातुर दरशावे ८१ (धिक्कारे हुयेके नाम) अपध्वस्तहि धिक्कृत गुणवान॥ चतुरदास लिखता परवान ८२ (अहंकार टूटेहुये वा हरइलके नाम—दोहा) आत्तगर्व अहंकार ये अभियत्त नाम विचार॥ आत्तगन्धअभिभू-

तये चतुराकहे पुकार ८३ (द्रव्यादिपाके सधेहुये के नाम–चौपाई) दापित दायित साधित मान ॥ द्रव्यपाय साधा जगजान ८४ (अविचारित कहने से निरादर कियेहुये के नाम) प्रत्यादिष्टरु प्रत्याख्यात ॥ निराकृत पुनि निरस्तहि बात ८५ (निकरुआ और छलेगये के नाम) निकृतनाम विप्रकृत जान ॥ विप्रलब्ध वंचित पहिंचान ८६ (दिलटूटे वा मनटूटे के नाम) मनोहतः पुनि प्रतिहत मान ॥ प्रतिबद्धः अरु हत जगजान ८७ (निन्दा कियेगये और धुवाके नाम) अधिक्षिप्तरु प्रतिक्षिप्त बखान ॥ कीलित संयत बद्ध सुजान ८८ (विपत्ति में परेहुये के और जो भयभीतहोके कहनेलगै कहांजाऊँ क्या करूं उस के नाम) आपन्न आपत्प्राप्त प्रवीन ॥ भयद्रुत कांदिशीक जग चीन ८९ (छिनारा चोरीआदि लगेहुये और चलस्वभाववालेके नाम) आक्षारित क्षारित अभिशस्त ॥ अस्थिर और संकसुक मस्त ९० (कष्टित और शोकादिसे कुछ न करसकनेवाले केनाम) व्यसनार्तरु उपरक्त कहावै ॥ विहस्तनाम व्याकुल जग गावै ९१ (शोकादि से गात्रभङ्गप्राप्त हुये और जो मरही चाहता है उसके नाम) विक्लव पुनि विह्वल बलवन्त ॥ विवश अरिष्ट दुष्टधीसन्त ९२ (वेत्रादिसे मारे जानेके योग्यके और हतनेयोग्यका नाम) कश्य कसार्ह नाम ये जान ॥ आततायी ज़ाहिर जनमान ९३ (वैर करने लायक और मूड़ काटनेयोग्य के नाम) अद्विगतः पुनि द्वेष्य कहावे ॥ शीर्षच्छेद्य वध्यदरशावे ९४ (मातुरदेने और मूसर से मारने के योग्यका नाम) विष्य-

नाम जाहिरकर गाया ॥ मुसल्यमार नाम दरशाया ६५ (पुण्यात्मा और विना दोष विचारेही मारणादिमें तत्पर होनेवाले के नाम) शिक्षिदान अरु अकृष्ण कर्म्मा ॥ चपल चिकुर जानत यशवर्म्मा ९६ (केवल परदोषही देखने वाले और कुटिलहृदय के नाम) पुरोभागी पुनि दोषैकहक ॥ अनृजु शठ निकृत कहिये ह्निक ६७ (चुगुल और दुष्टके नाम) पिशुन सूचक कर्णेज कहावे ॥ दुर्ज्जन खल दुष्टहि दरशावे ९८ स्वामी के मतसे ५ चुगुलही के नाम हैं ॥ (पराया अनभल ताकने वाले और छली के नाम) क्रूरपाप घातुकहि नृशंस ॥ वञ्चक धूर्त्त धूर्त्तावंस ६६ (मूर्ख के नाम--दोहा) यथाजात मूरख पुनी अज्ञ मूढ़ बालिश ॥ वैधेयरु मुग्धा कहे मूढ़ नाम नवलीश १०० (कृपणके नाम) कृपण क्षुद्र कृपणा कहे कदर्य्य गुणिया गान ॥ किम्पचान जग जानरे मितम्पचा निरवान १०१ (दरिद्रीके नाम) दुर्विध दीन दरिद्रये दुर्गत दुस्स्थरजीव ॥ निस्स्वनाम चातुर कहे जप जग जाहिर पीव १०२ (याचक अर्थात् मँगैया के नाम) वनीयकहि याचन पुनि अर्थी याचन मान ॥ मार्गण और मनीयक चतुरा निश्चय ठान १०३ (अहंकारी और शुभयुक्त के नाम—चौपाई) अहंकारवान् अहंयु प्रवीन ॥ शुभंयु शुभान्वित जाहिर चीन १०४ (देवता और मनुष्य पशुआदि का नाम) दिव्योपपादु जान जहान ॥ जरायुजहि नरपशू कहान १०५ (कीट डांस आदि और पक्षी सर्पादिके नाम) स्वेदज कीट डांसकेनाम ॥ अण्डजपक्षी सर्पहिराम १०६ (दोहा)

प्राणिवर्ग पूरणभया काण्ड तृतीय मँझार ॥ रामदास सुत चतुरने नीकरच्यो विस्तार १०७ निम्बारक निर्मित मता दैवअंश लैजोय ॥ जो जावै वैकुण्ठको चतुरा चेतन सोय १०८ ॥

इति श्रीजम्बूद्वीपेभारतखण्डेमालवदेशेअवन्तीमहाक्षेत्रेरतलामग्रामे वैष्णवहरिव्यासीमहन्तश्रीरामाजीनन्द चतुरदासविरचिते ग्रन्थश्री अमररघुनाथकल्पद्रुमभाषातृतीयकाण्डेप्राणि वर्गःप्रथमोविश्रामस्सम्पूर्णः १ ॥

अथ श्रीअमरकोषतृतीयकाण्डेविशेष्यनिघ्न वर्गप्रारम्भः ॥

(दोहा) श्रीराधा मनहरणपद भजरे वारंवार ॥ विशेष्यनिघ्न वर्गहि कहूं अपनी मतिअनुसार १ (वृक्षवल्ली घासादि के नाम--चौपाई) उद्भिद् उद्भिद उद्भिज्जाये ॥ चतुरदास गुरुगोविन्दगाये २ (सुन्दरकेनाम--कुंडलिया) साधुचारु शोभनकहे सुषम रुचिर जगजान ॥ सुन्दर कान्त मनोरम रूच्य मनोहरमान ३ रूच्य मनोहरमान रम्य मंजुल मतवाला ॥ मंजुमनोज्ञहि सौम्य नामभद्रक जगलाला ४ रामणीयकहि मानमन रचेआदि भगवाना ॥ चतुरदास गुण गावता भाषा किया बखान ५ (जिसके देखने में अति सुन्दरता के कारण नेत्र तृप्तहों उस सुन्दरका नाम--चौपाई) सेचनक है सुन्दर कर नामा ॥ चतुरदास गावे भजरामा ६ (प्यारे के नाम--दोहा) वल्लभ पुनि दयितप्रिये अभीप्सित नाम बखान ॥ हृद्य अभीष्ट सुजान जन चतुरदास परमान ७ (खराबकेनाम)

प्रतिकृष्ट और निकृष्ट हैं अर्व्वारे पसोरेफ ॥ अधम अवम पुनि याप्यहै कुत्सित कपूय फेफ ८ अवद्य खेटगार्ह्यः पुनि आणक अणक नरेश ॥ कुपूय अन्त चातुर कहे नाम खराब खरेश ९ (मैलवस्तु के नाम–चौपाई) मल दूषित पुनि मलिन बखान ॥ मलीमसकच्चर नाम सुजान १० (पवित्र वा साफ और स्वभावही से विमल के नाम) पूत पवित्र मेध्यनर गाव ॥ विमलार्थक वीध्रये सुभाव ११ (मलरहित पदार्थके नाम) निर्णिक्तरु शोधित निश्शोध्य ॥ अनवस्कर पुनि मृष्टक बोध्य १२ ॥ (निर्बल और खाली के नाम–दोहा) फल्गुहि और असारये निर्बलका परमान ॥ सून्य शून्य पुनि रिक्त बशिक तुच्छ जगजान १३ (उत्तम प्रधान वा... के नाम–कुण्डलिया) प्रधान प्रवेक सो अग्रिम... अनुत्तम जान। उत्तम मुख्य सुवर्य्य पुनि अन... मान १४ अनवरार्ध्य यहमान जान बरें... प्रवर्हपुनि अग्रीय अग्रयपरार्ध्य प्रमा... ग्र्य पुनि प्राग्रह चतुरदास गुणगाय... अ- नाथजी सबकी करें सहाय १६ (के... गुण चौपाई) पुष्कल उत्तम श्रेष्ठसु... नाम- शोभन मान १७ (श्रेष्ठता... और आगे ये शब्द आते हैं–हे... स्थाणु सिंहव्याघ्र शार्दूल ॥ अर्गेह १९... मान ४३ सूल १८ (नागादि ... मित्त ॥ चतु- पुरुषहिं पुंगव ॥ ... चलनेवाले के नाम) कुञ्जर अरु नृप ... इंग चराचर चतुर

(Torn flap, partial text: नये ... अवन ... पुनि ... मनुष्य ... १९)

(अप्रधानके नाम) अप्रधान उपसर्जन भिन्त ॥ अप्रा-ग्यहि जानत गुण सन्त २० (फैलेहुये के नाम–दोहा) वृहत विशंकट पृथुः उरु पृथुला जान विशाल ॥ महत नामबड़ विपुल ये चतुरा भजो दयाल २१ (मोटेके नाम–चौपाई) पीन पीवपीवा अस्थूल ॥ पीवरमोटा नाम-हिंमूल २२ (थोड़ेके नाम) क्षुल्लक अल्पनाम अस्तोक ॥ चतुरदास हरि भजतजशोक २३ (सूक्ष्म वा मिहीं के नाम) श्लक्ष्ण कृशःतनु सूक्ष्महि जान ॥ लवत्रुटि लेश अणुःकरमान २४ (मात्रानामभी याकोहै) ॥ बहुतही थोड़के नाम) अलिपष्ठ अल्पीयः अणीय मन ॥ कनीय नामचातुर जपलेतन २५ (बहुत के नाम—दोहा) प्रभुत प्राज्य भूयिष्टबहु पुरुह पुरुह प्रवीन ॥ बहुलसु ...म अदभ्रपुरु भूय प्रचुर भूरीन २६ स्फार स्फिर भी ...हीका नामहै ॥ (जिनकी संख्या सौ वा सहस्रसे परे ... उनके व गिनने योग्यके नाम—चौपाई) पर सहस्र ...नि परशतमान ॥ गणनीय गणेय कहे गुणवान २७ (...गेके नाम) गणितनाम संख्यातकहावै ॥ चतुर दास निश्चय करिगावै २८ (सबके नाम) सर्व्वविश्व समस्तजगजान । समऽरुशेष अखिलपरमान ॥ सकल समग्र निशेष अखण्ड । कृत्स्नपूर्व्वकः पूर्णप्रचण्ड ॥ अनूनक निखिल नाम पहिंचान ॥ सबके नाम चतुर जगजान २९ (गम्भिन के व विरले के नाम) सान्द्रनिर-न्तर घनजसवन्त ॥ पेलव विरल जानुतनुसन्त ३० (समीप ...लगे वा नज़दीक के नाम—दोहा) निकट समीप ...ड है समर्य्यादि संदेश ॥ अभ्यास अभ्यासान्तिक

अभ्यर्णऽभित सवेश ३१ (चौपाई) पुनि उपकंठ चतुर आसन्न ॥ सन्निकृष्ट पुनि अभ्यग्रवन्न ३२ सविध भी याकानाम है (लपटे वा मिलेहुये के नाम) अपटान्तर अव्यवहित विचार ॥ संसक्तापद अन्तरसार ३३ (अति निकट के व दूरिके नाम) नेदिष्ठरु अन्तिक तमजानो॥ विप्रकृष्ट दूरहि मनमानो ३४ (अत्यन्त दूरिके व लम्बेके नाम) दविय दविष्ठ सुदूरिकहावै ॥ आयत दीर्घ कवी दरशावै ३५ (गोलके जो प्रथम ऊंचाहो फिर किसी उपाधि से नतहोजाय उसके नाम) वर्त्तुल निस्तुल वृत्त कहावै ॥ बन्धुर अरु बन्धूर दिखावै ३६ (ऊंचेके नाम) उच्च प्रांशु उन्नत है तुङ्ग ॥ उदग्रपुनि उच्छ्रित ऊचङ्ग ३७ (छोटेकेनाम) बामन अरु न्यक्नीचप्रमान ॥ खर्वह्रस्व जगजाहिरजान३८(औंधे मुंहके नाम) अवनत आनतहै औंधामुंह॥ अवाग्रनाम जगजानतहैजुह ३९(टेढ़ेकेनाम दोहा)वृजिन जिह्म अरालये नतरु ऊर्मिमतजान ॥ कुंचित कुटिल बक्र ये वेल्लित अविद्धमान ४० भुग्नभी याका नामहै (सीधोंके व अकुलानेके नाम) ऋजुअ-जिह्म प्रगुणगुणी सीधोंके यह नाम ॥ व्यस्त अप्रगुण मानिये पुनिआकुल जगदाम ४१ (नित्यके नाम-चौपाई) नित्यसदा तनध्रुव दरशान ॥ शाश्वत और सनातनमान४२ (अति स्थिरके व कपटीके नाम)स्थाण्णु स्थिरतर अस्थेयान ॥ कूटस्थहि कपटी जन मान ४३ (वृक्षादि के नाम) अस्थावर जंगम तरु मिन्त ॥ चतुरदास गुण गावत सन्त ४४ (चरचलनेवाले के नाम) चरिष्णु जंगम चर त्रस मान ॥ इंग चराचर चतुर

बखान ४५ (कम्पैया या कांपनेवालों के नाम) चलन कम्प अरु कम्पन मिन्त ॥ चतुरदास गुणगावत सन्त ४६ (चंचलके नाम--दोहा) लोल चलाचल चल कह्यो चंचल तरल तुरंग ॥ पारिप्लव पुनि चतुर नर परिप्लव सुमन सुरंग ४७ अधिकके और पोढ़ेमिलापीके नाम--चौपाई (अतिरिक्तरु समधिक जन जान ॥ दृढ़ संधिः संहत जग मान ४८ (कठिन के नाम---दोहा) कर्कश कक्खट खक्खट निष्ठुर क्रूर कठोर ॥ कठिन जठर पुनि दृढ़ कह्यो मूर्त्त मूर्त्तिमत शोर ४९ (बढ़ेहुये और पुराने के नाम) प्रवृद्ध प्रौढ़ विचारिये एधित बड़े सो हून ॥ प्रतनपुराण पुरातन और चिरन्तन प्रत्न ५० (नये के नाम) अभिनव नव्य नवीन ये नव नूतन मन मानि ॥ नूत्न नाम प्रत्यग्र नर चतुर कही सत ठानि५१(सुकुमार और पीछे के नाम) मृदु कोमल अरु मृदुल कहि पुनि सुकुमार पुनीत ॥ अन्वक्षः अनुपद अनुग अन्वक पीछ सुरीत ५२ (जाहिर जो आंखोंके सामने देखिपरै उस के और जो न देखिपरै उसके नाम--चौ०) ऐन्द्रियक पुनि जान प्रत्यक्ष ॥ अप्रत्यक्ष अतीन्द्रिय रक्ष ५३ (एकाग्रके नाम--दोहा) एकतान एकायनः एकायतगत जाग्य ॥ अनन्यवृत्ति एकाग्र ये एक सर्ग एकाग्य ५४ (पहिले और अन्त वा पिछले के नाम) आदि पूर्व पौरस्त्य है प्रथम आद्य जगसन्त॥पश्चिम पाश्चात्यच रम अन्त्य जन्य पुनि अन्त५५(व्यर्थके और स्पष्टसाफ़के नाम--चौपाई)मोघ निरर्थक व्यर्थ जानु मन॥स्फुट स्पष्ट प्रव्यक्त उल्वण५६(सामान्यके और जिसका कोई सहायक

न हो उस अकेलेकेनाम-चौपाई) साधारण सामान्यकहावै॥ एकक एक इकाकी गावै ५७ (अन्य—दूसरेके नाम--दोहा) भिन्न भीन्न सो अन्यतर एक अन्य जगजान॥ इतर पुनित्व चतुर नर भज रे जग भगवान ५८ बहुत प्रकार और शीघ्रके नाम (नेक भेद उच्चावच बहुत प्रकारी नाम) उच्चएडरु अवलम्बित अवलम्बना सुदाम ५९ (सुकुमारस्थान में मारने का और जिसके कोईबाधा न हो उसके नाम--चौपाई) मर्म्मस्पृक्कहि अरुन्तुद जान॥ और अबाध निरर्गलमान ६० (विपरीतउलटेकेनाम) प्रसव्य प्रतिकुल अपष्टु मान॥ पुनि अपसव्य नाम पहिंचान ६१ (बायें अङ्ग और दहिनेअङ्गका नाम) वायां अङ्ग सव्य यह नाम॥ कहि अपसव्य दाहिना दाम ६२ (सकसेके और जो बड़ेही दुःखसे प्राप्तहोने योग्यहो उसके नाम) सङ्कट पुनि संवाद कहावै॥ कलिल गहन जग जाहिर गावै ६३ (नाना जातिके लोगोंके एकत्र बैठनेकी गचापचीके नाम) संकीरण संकुल आकीर्ण॥ चतुरदासगायो ये वर्ण ६४ (मुड़वा के और गुहेहुये वा गठिलायेहुये के नाम) मुण्डित पुनि परिवारिक जान॥ सन्दित ग्रथित दृब्धहीमान ६५ (पसरे वा फैलेहुये और भूलेहुयेके नाम) तत विस्तृत विसृत गुणगाया॥ अन्तरगातहि विस्मृत छाया ६६ (पायेहुयेकेनाम) प्रणिहित प्राप्त प्रेमसेदेख॥ है गुणवानहि या बिचलेख ६७ (थोड़ाकांपतेहुयेके नाम) वेल्लित चलितरु धुत आधुत्त॥ आकम्पित प्रेषित जन दुत्त ६८ (प्रेरितपठायेहुयेकेनाम) अस्त

नुन्न आविध नुत मिस्त ॥ छित ईरित निष्ठ्यत सुमन्त ६९ (घेरेहुये के और चोरायेहुये के नाम) परिक्षिप्त निवृत्त कहलावै ॥ मूषित मुषित जगत दरशावै ७० (पसरने के और फेरेहुयेके नाम) प्रवृद्ध पुनि प्रसृत गुणवान ॥ न्यस्त निसृष्ट रचे भगवान ७१ (गुणेहुये के और बढ़ेहुयेके नाम) आहत पुनि गुणीत गुणवन्त ॥ उपचित नाम निदिग्धहि सन्त ७२ (लुके हुये और धुर लगेहुयेकेनाम) गूढ़ गुप्त दुहुनाम सुजाना ॥ गुण्ठित गुण्डित रुषित धुराना ७३ (रसीलेके और आये हुये शस्त्रादिकेनाम) अवदीरण पुनि द्रुत कहलावे ॥ उद्यत उद्गुर्णहु गुणगावे ७४ (सिकहरपर धरीहुई वस्तुका और सूंघेहुयेकेनाम (शिक्यित पुनिकाचित है नाम ॥ घ्रातघ्राण जानत जन दाम ७५ (लीपेहुये और कूपादिसे निकारेहुये जलका नाम) दिग्ध लिप्त नामहिगुणवान ॥ समुद्रक्त पुनि उद्धृत यह मान ७६ (नदी आदि से रुंधे वा घेरे हुये के नाम) आवृत वेष्टित वलियत मान ॥ रुद्ध संवीत जाहर जान ७७ (टूटेहुयेके और बटियाये वा पहटेहुयेके नाम) रुग्णभुग्न टूटे ये नाम ॥ निशित निशात शातजनदाम ॥ तेजितपुनि क्ष्णुतहैगुणवंत ॥ चतुरदासगावतजनसंत ७८ (पकेहुयमरनेवा काटने योग्य और लजानेहुये केनाम) विनाशोन्मुख पक्कण चीन ॥ ह्रिणाह्रित ह्रिन लज्जितपरवीन ७९ (वर्णनकिये हुयेवामिलायेहुयेकेनाम) वार्त्त व्यावृत वृत्तवृतजान ॥ संयोजित संयोगित उपाहित मान ८० (पानेके योग्य और बहतेहुयेके नाम (प्राप्यगम्य समसाद्य सुजान ॥

स्नुत स्नुत स्यन्नरीण जनमान ८१ (जोड़ेहुये अङ्कादिके और निन्दितके नाम) सङ्कुल संगुठ अङ्कानजान ॥ अव-गीतिख्यात सुगर्हण मान ८२ (विविधप्रकारकेनाम) बहुविधि नानारूपबखाना ॥ विविध पृथग्विध है पर-माना ८३ (धिक्कारेहुयेऔरबनायचूरणकरडारेहुयेके नाम-दोहा) अवरिणधिक्कृतनामदो चतुराकैबखान ॥ अवचूर्णितअपध्वस्तहैअवध्वस्ताहिगुणवान८४ (फलका और बाजतेहुयेकेनाम) फलकानामकाण्ठ गुणवन्त ॥ स्वनित ध्वनित धरा धजवन्त ८५ (बँधेहुये के नाम— दोहा) सन्दानित बद्ध मूतये उद्दित उदीत सितमान ॥ सन्दीमर्ण मानमन बँधेहुयेकोजान८६ (चुरेपकेहुयेका-दादि और घृतादि के नाम--चौपाई) निसन्न क्वथि-तथीरपरमान ॥ श्रृतये पकेहुये पहिचान ८७ (मुनि अ-ग्निआदिके मुक्तहोनेके और जबपवन न चलताहो उस समयका नाम) निर्व्वाण नाम मुक्तिका सन्त ॥ निर्व्वा-तरुका पवन गुणवन्त ८८ (पाकेहुयेके और हगे हुये के नाम) पक्करु परिणत पाकेजान ॥ पुनिगून हन्नहगा ये मान ८९ (मूतेहुये के और पोढ़ेके नाम) मीढ और मूत्रित जग जान ॥ पुष्ट पुष्ट जन किया बखान ९० (सहेहुये और डाकेहुयेअन्नादिकेनाम) उद्वानरु उद्वांत बखान ॥ उद्वान्त उद्गत जगजान ९१ (इन्द्रियादि जी-तेहुये और मिटजानेकेनाम) दमितदान्तजानहु इन्द्रिय मन ॥ शमित शान्त मिटजानाये जन ९२ (मांगे हुये और जानेहुयेके नाम) अर्हित नाम प्रार्थित विचार ॥ ज्ञपित ज्ञप्त जानहु गुणधार ९३ (छाये के और पूजा

किये गये के नाम) छादित छन्न छायके नाम ॥
अञ्चित आर्चित पूजितदाम ९४ (पूरेके और क्लेशितके
नाम) पूरण पूरित पूरे जान । क्लेशित क्लिष्टरुक्के
शित मान ९५ समाप्तके और जरेहुये केनाम (अवसि-
त सित जानहु जगजाये ॥ पुष्टप्लुष्ट उषित दग्धाये ९६
(सूक्ष्मकियेगये और छेदेहुये के नाम) तष्ट त्वष्ट तनूकृ-
तमान ॥ विद्ध वेधित छिद्रित नरजान ९७ (विचारेहुये
और तेजरहितके नाम) बिन्नहि बित्त बिचारितसंत ॥
निष्प्रभ विगत अरोकत मिंत ९८ (टघिलेहुयेघृतादि
औरसिद्धकेनाम)द्रुत विद्रुत विलीन जगजान ॥ निसन्न
निष्ठित सिद्धप्रमान ९९ (चीरेहुये और बिनेहुयेवस्त्रादि
के नाम) दारित भिन्न भेदिता मानो ॥ ऊतस्यूत पुनि
उतकर जानो १०० (पूजित के नाम--दोहा) अर्चित
अर्हित मानिये नमस्यित नमासित मान ॥ अपचायित
अपचित कहे चतुरदास जगजान १०१ (सेवा किये
गयेके नाम--चौपाई) बरिवस्यितबरिवसित सुमिन्त ॥
उपासितरु उपचरितसुअन्त १०२ (तपायेहुयेकेनाम)
धूपित सन्तापित सन्तप्त॥दूनपुनीधूपायित मस्त १०३
(हर्षितके नाम) प्रहृष्ट तृप्त नाम मनजान ॥ प्रमुदित
हृष्ट प्रीति पहिंचान १०४ (काटेहुयेकेनाम--दोहा) लून
छात कृत दातये दिन छित छिन्न बखान ॥ वृकण
नाम चातुर कहे जानिलेहु गुणवान १०५ (चुयेहुयेके
नाम(भ्रष्टपन्नच्युत जानये स्रस्तध्वस्त धरधीर ॥ गलित
स्कन्न बिचारिके चतुरा वरणतवीर १०६ (पायेहुये
के नाम--चौपाई) आसादितभूतभावित विन्न ॥ प्राप्त

लब्ध जानत जगमन्न १०७ (ढूंढ़ेहुयेकेनाम) अन्वेषित अन्विष्ट मृगित ॥ मार्गित पुनिः गवेषित वित्त १०८ (भींजेहुयेकेनाम) स्तिमितपुनितिमित उत्तमान॥ समुन्न क्लिन्न जान आर्द्रान १०६ सार्द्र नाम भी इसीकाहैं ॥ (रखाये गये के नाम) अवित त्राणरक्षित गोपायित ॥ त्रात गुप्त जग जानहु नरमित ११० (अपमान किये गये के नाम) अवगणीत अवमत अवज्ञात ॥ अवमानित परिभूत विख्यात १११ (त्यागे हुये के नाम) त्यक्त-हीन उत्सृष्ट विधूत ॥ धूत समंझित जान सपूत ११२ (कहे हुये के नाम) उदित उक्त भाषित आक्षात॥ अभिहित जल्पित लपित सुतात ११३ (जाने गये के नाम) मनित बुद्ध बुधित प्रतिपन्न॥ अवसित अवगत विदित यमन्न ११४ (अंगीकार किये गये के नाम) उररीकृत ऊरीकृत बात ॥ अंगीकृत अस्तुत प्रतिज्ञात ॥ विदित संशुत उपशुत मान॥ संगीर्ण समाहित प्रतिश्रुत जान ११५ उपगत भी याका नामहै॥ (स्तुति किये गये के नाम—दोहा) ईलित वर्णित शस्तगिर्ण प्रणुत प्रणित परबीन॥ स्तुत ईडित अभिष्टुत पनित पनायितः सीन ११६ पणायित भी याका नामहै॥ (खायेगये के नाम—चौपाई) भक्षित चर्विवत खादित लिप्त ॥ गिलित लीढ प्रत्य वसितहि जिप्त॥ प्सात अन्न अशित पुनि ग्रस्त॥ भुक्त जग्धग्लस्तही मस्त ११७ अभ्यवहृत भी याका नाम है॥ (अतिशयकरके बढ़ानेके योग्यके और अतिशय क्षुद्र का नाम) क्षेपिष्ट नाम अतिशय करमीत॥ अरु क्षोदिष्ट क्षुद्रकरसंत ११८ (अतिशय अभीप्सित

के और अतिशय पृथुका नाम) प्रेष्ट अभीप्सित कर पुनि नामा ॥ वरिष्ट चतुर गुणगावत दामा ११९ (अतिशय स्थूल और अतिशय दीर्घ का नाम) साधिष्ट नाम अ-स्थूल कहावै ॥ द्राधिष्टनाम सो दीर्घहि गावै १२० (अ-तिशय स्फिरे और अतिशय गुरुका नाम) स्फेष्टनाम स्फिरेको जान ॥ गरिष्टनाम गुरुका पहिंचान १२१ (अ-तिशय ह्रस्वका और अतिशय वृन्दारकके नाम) ह्रसिष्ट नाम ह्रस्वका जान ॥ वृन्दीष्ट वृन्दारक मान १२२ (दोहा) विशेष्यानिघ्नवर्ग्गपुनि रच्यो रामके नन्द ॥ चतुरदासमम नामहै बसेहृदय गोविन्द १२३ ॥

इति श्रीजम्बूद्वीपेभारतखण्डेमालवदेशेअवन्तीमहाक्षेत्रेरतलामग्रामेहारि ॐ ाक्षीवैष्णवश्रीरामाजीनन्दचतुरदासविरचितेग्रन्थश्रीअमर रघुनाथकल्पद्रुमभाषातृतीयकाण्डेविशेष्यनिघ्नवर्ग द्वितीयविश्रामसंपूर्णम् ॥ २ ॥

अथ श्रीतृतीयकांडसंकीर्णवर्ग्गप्रारम्भः ॥

(दोहा) श्रीयुत विष्णु पदाम्बुज पायो पूरण प्रेम ॥ निम्बारक परताप से ले जन चतुरा नेम १ इससंकीरण वर्ग्ग में करीलिंग तकरीर ॥ चतुरदास बरणन करै भजि सीतारघुवीर २ (निरन्तर चलने और साकल्य के वचन का नाम-चौपाई) अपरस्परहै नाम निरन्तर ॥ पारायण साकल्य वचन वर३ (आसंग वचन का और स्वतंत्रताके नाम)वचना संग परायण मिन्त ॥ पुनि स्वैरिता यदृच्छा सन्त ४ (विनाकारकी स्थिति का और शांती के नाम) नाम विलक्षण स्थित जान ॥ शांति शमथ शमजानु प्र-

मान ५ (इन्द्रियों के रोंकने और अच्छे कर्म्म के नाम) दान्ति दमथ दमकहि दरशाई ॥ कर्म्म वृत्त अथदान कहाई ६ (कामना करके दान देने और वशीकरण के नाम) काम्यदान परवारण ये मन ॥ वशक्रिया संवनन संबदन ७ (औषधीकी जड़आदि से उच्चाटन के और कांपने का नाम) मूल कर्म्म पुनि कार्म्मण जान ॥ बिधुवन बिधुनन बिधून नान ८ (अघाने और कोई किसीको मारताहो रोंकने के अर्थ उसके हाथ पकड़ लेने के नाम–दोहा) प्रीणन तर्प्पण अवन ये नाम अघाना जान ॥ पर्य्याप्ति हस्त धारण हस्त वारण परित्रान ९ (सीने और फुटनेके नाम–चौपाई) सेवन सीवन स्यूति सुसीवन ॥ भिदा स्फोटन बिदर स्फूटन १० (गारियाने और अनुभव ज्ञानके नाम) आक्रोशन अभिषंगऽभिसंग ॥ संवेद वेदना वेदन रंग ११ (सब ओरसे व्याप्ति और भीखके नाम–दोहा) संमूर्छन अभिव्याप्तिक कहे व्याप्तिके नाम ॥ यांचा भिक्षा अर्थना अर्दनादि पुनिदाम १२ (काटने और कुशल प्रश्न पूंछने से उत्पन्न आनन्दके नाम—चौपाई) वर्द्धन छेदन काटन जान ॥ सभाजनरु आनन्दनमान १३ (गुरुके उत्तम परंपरा उपदेश करने और क्षय होनेके नाम) सम्प्रदाय आम्नाय कहावै ॥ क्षय पुनि क्षियानाम दरशावै १४ (लेने और इच्छाके नाम) ग्राहग्रह पुनि लेने जान ॥ कान्ति वशः इच्छा को मान १५ (रक्षा और शब्द करनेके नाम) रक्षण रचा त्राण सुजान ॥ रण क्वण शब्दादिक को मान १६ (छेदने और अन्नादि पकाने के नाम)

वेधःव्यधःछेदन गुणवन्त ॥ पाचा पाक बखानत सन्त १७ (बुलाने और वरदान के नाम) हवहुति नाम बुलावन जान ॥ जातु वृत्ति वर पुनि वरदान १८ (जारने और न्याय वा नीतिके नाम) ओष प्लोष प्रोष परवीन ॥ नय पुनि नाय न्याय नरचीन १९ (जीर्णता और भ्रम के नाम) जीर्णी ज्यानी जीरण मान ॥ भ्रम पुनि भ्रमी भर्म पहिंचान २० (बढ़ती और प्रसिद्धताके नाम) स्फाति वृद्धिको नाम कहावै ॥ ख्यातिप्रथा प्रेमकर चावै २१ (छूने और जहांसे झर्ना आदिबहै उस स्थान के नाम) पृक्की स्पृष्टी जान जहाना ॥ स्रव पुनि स्नव मान प्रमाना २२ (विधान और फरकनेके नाम–दोहा) एधा वेधा समृद्धि पुनि ये विधानके नाम ॥ स्फुरण स्फुलन स्फुरण नाम स्फोरण दाम २३ (यथार्थ ज्ञान और जन्म होनेके नाम–चौपाई) प्रमिति प्रमा यथार्थ ज्ञान ॥ प्रसवःप्रसूती जनमन जान २४ (घृतादिके चूने वा टपिलने और ग्लानिके नाम) प्राघार नामश्च्योत कहावै ॥ नाम क्लमथ क्लम यह दरशावै २५ (प्रकर्ष और मिलाप वा जोड़ने के नाम) उत्कर्ष अतिशय बलवन्त ॥ श्लेष नाम सन्धि गुणवन्त २६ (प्रयोजन और अड़उबके नाम) आशय आश्रय विषय बखान ॥ क्षिपारु क्षेपण चतुरा मान २७ (लीलने और उद्यमके नाम) गिरिः गीर्णी पुनि लीलन गाई ॥ उद्यम गुरण सकल मन भाई २८ (ऊंचे लेजाने और वितर्कणा करने वा सेवाके नाम) उन्नय पुनि उन्नाय बखान ॥ श्रयण श्राय यह सत्यहि मान २९ (जीत और कहने के नाम) जयनऽरु जय

जग जीत कहावै ॥ निगद निगाद नाम कहलावै ३० (हर्ष और ऊबने के नाम) मदरुमाद पुनिहर्ष सुजान॥ उद्वेगरु उद्भ्रम भयमान ३१ (मींजने वा लगाने और अंगीकार के नाम) विमर्द्दनः परिमल पद जान ॥ अभ्युपपत्ति अनुग्रह मान ३२ (न मानने और खईमें गो हराने के नाम) निग्रहनाम न माननजान ॥ अभियोग अभिग्रहहै गोहरान ३३ (मुट्ठीबांधने और मनुष्यों के लूटने के नाम) मुष्टिबन्ध नाम संग्राह ॥ विप्लव डिम्ब डमर यह साह ३४ (बांधने और जरनि वा जरेहुये के नाम) बन्धनचार प्रसृति बलवान ॥ उपतप्ता स्पर्श सुजान ३५ स्पष्ट स्प्रष्टाः भी याका नामहै ॥ (अपकार और अभिप्रायके अनुरूप चेष्टाके नाम—चौपाई) विप्रकार पुनि नाम निकार॥ आकार इंग ईंगित विस्तार३६ (प्रकृतिके बदलजाने और जैसे ऊंख विकार शर्करा मिट्टीके विकार घड़ा विरुद्ध करनेके नाम) विकार नाम परिणाम कहावै ॥ विकृत विक्रियजन दरशावै ३७ यहभी किसी किसी के मतसे विकारही के नामहैं ॥ (अपहरण और बटोरनेका नाम) अपचय पुनि अपहार कहावै ॥ समुच्चय समाहार दरशावै ३८ (इन्द्रियोंके खींचन और खेलमें पैदर चलने के नाम) उपादान पुनि प्रत्याहार॥ परिक्रम नाम विहार विचार ३९ (चोरी करने के नाम) अभिहाररु अभिग्रहण पुकार॥ अभ्याहार चतुर विस्तार ४० (युक्ती पूर्वक शस्त्रादि निकारने और विडम्बना वा नकल करनेके नाम) अभ्यूवकर्षण नाम निहार ॥ अनुकर नकल करन अनुहार ४१ (खरचका और जलादि

के निरंतर बहनेके नाम) व्यय सहनाम खरच करिजान॥ नाम प्रवाह प्रवृत्ति परमान ४२ (बाहर जाने और सं-यम के नाम) प्रग्रहनाम बाहर जानेका ॥ विग्राम याम यमहै मानेका ॥ नियम सँयम संयाम कहावै ॥ चतुरदास हरिव्यासी गावै ४३ (जार वा भाडडारनेके नाम) सिंह कर्म्म अभिचार कहावै॥ चतुरदास भाषा करि गावै४४ (जागनेके नाम—दोहा) जागर्य्या जागर्तिका जाग्रियाम जगमान ॥ जागर जागराह पुनि जागनेह पहिंचान ४५ (विघ्न और समीपके आश्रमके नाम—चौपाई) अन्तराय प्रत्यूह विघ्नजन ॥ उपघ्न पुनि अंतिकाश्रय मन ४६ (उ-पभोग और परिवारके घेरनेके नाम) निर्वेश उपभोग कहावै ॥ परिसर्प्परु परिक्रिया बतावै ४७ (अत्यन्त वि-योगके नाम) प्रविश्लेष पुनि विधुर सुजाना ॥ चतुरदास वरणत गुणवाना ४८ (अभिप्राय मनकी बात औरसं-क्षेपके नाम) आशय छन्दनाम अभिप्राय ॥ संक्षेपण सम सन जगराय ४९ (बिगार और सत्व और पसरने के नाम—चौपाई) पर्यवस्थ वीरोधन मान ॥ परीसार प-रिसर्य्या जान ५० परिसार भी याका नाम है (आसन और विस्तारके नाम) आस्या पुनि आसना स्थिति ॥ विग्रह व्यास विस्तार सदामति ५१ (शब्द के विस्तार और पैरआदि मींजने बोटनेके नाम) विस्तरःनाम जान विस्तार ॥ मर्द्दन संबाहनहै सार ५२ (न देखपरे हुये और बटोर के नाम) अदर्शन नाम विनाश बखान ॥ संस्तव अरु परिचय जगजान ५३ (घावआदि फैल-जाने और धन धान्यादि के बटोरने के नाम) प्रसर वि-

सर्पण नाम प्रवीन ॥ निवाक प्रया जान जगचीन ५४ (परोस के और अन्नादि काटने का नाम-दोहा) सन्निकर्षण सन्निध सन्निध नाम विचार ॥ अभिलाव लवन लव जानिये अन्नादिक विस्तार ५५ (अन्नादि के पछोरने वसाने आदि और प्रसंग के नाम-चौपाई) पवन पवरु जानोनिष्पाव ॥ अवसर पुनि प्रसंग प्रस्ताव ५६ (कोरी के पाई पसारने और पहिले पहिल गाभिन होने के नाम) तसरःसूत्र वेष्टन पुनिअसर॥ उपसर प्रजन जान जगयसर ५७ (प्रेम और बुद्धिशक्ति के नाम) प्रणय प्रसर प्रश्रय परवीन ॥ निष्क्रमधी शक्ती जगचीन ५८ (कोटआदि कठिन स्थानमें जानेकी गली वा उसमें जाने और युद्धके अर्थ तैयारी करनेके नाम) दुर्गम सञ्चर संगमयोग ॥ प्रत्यूत्क्रान्त प्रत्युक्रम प्रयोग ५९ (प्रथम के आरंभ और आरंभमात्रके नाम) उपक्रम और प्रक्रम जगचीन ॥ अभ्यादान आरंभहि मान ६० उद्घातभी याका नामहै ॥ किसी २ के मत से ये पांचौ एकही के नाम हैं॥ (बेग और कार्य्यरुकजाने के नाम) त्वरनाम संभ्रमजगचीन ॥ प्रतिबन्ध प्रतिष्टंभ अरु परबीन ६१ (गिरने और साक्षात्करने के नाम) अवनाय नियातन जान निपातन ॥ उपलंभ अनुभव नरयामन ६२ (चन्दनादि लेपकरने और स्नेहादि तोड़ने के नाम) सम आलंभ विलेपन मान ॥ विप्रयोग बिप्रलंभ बखान ६३ (अतिदान और अतिप्रसिद्ध के नाम) अति सर्जन सो विलँब बखान ॥ प्रतिख्याति प्रविख्यात सुजान ६४ विश्रावभी याका नामहै ॥ (वस्तुओं के अच्छेप्रकार देखने और

पढ़ने के नाम) प्रति जागर बस्तू बतलावै॥ पाठनि पाठनि पठ कहलावै ६५ (टघिलने और क्लेशके नाम-दोहा) तेमस्तेम समुन्दन चतुरा किया प्रबीन ॥ आश्रव आस्रव आदि नव क्लेश नाम नरचीन ६६ (मेलके नाम चौपाई) मेलक संग सँगम दरशावै ॥ चातुरदास दास गुण गावै ६७ (अच्छेप्रकार ढूँढ़ने वा देखने के नाम— दोहा) संवीक्षण अन्वीक्षण वेक्षण अरु मृगमान॥ विचयन मृगणा मार्गण चतुरा करै बखान ६८ (प्रेम पूर्वक लपट जानेका नाम) परीरंभ परिरंभ ये परीष्वंग परवीन॥ संश्लेष उपगूहन चतुरकही सतचीन ६९ (देखने के नाम) निर्वर्णन दर्शन सुईक्षण आलोकन कीन॥ निध्याननाम चातुरकहे भावभक्ति को चीन ७० (निराकरणके नाम) प्रत्यादेश निराकृती निरसन प्रत्याखान॥ चतुरदास जनजानिकै गावै श्रीभगवान ७१ (सोने वाले के नाम--चौपाई) अरु उपशाय विशायहि दाम॥ चतुरदास गावो सियराम ७२ (करुणा वा घिनाने के नाम) अर्तन ऋतिया घृणा बखान॥ हृणिया ह्रणिया ह्णिया जान ७३ किसी किसी के मत से जुगुप्सा के नामहैं (व्यतिक्रम उलटा पलट के नाम) व्यत्याय व्यत्यय विपर्य्यास मन॥ विपर्य्यय पुनि विपर्याय जन ७४ (किंचित् उलट पुलट के नाम) अतिक्रम अतीपात पर्य्याय॥ उपात्यय चातुर चित गाय ७५ (टहलूआदि के पढ़ाने के और यज्ञमें ब्राह्मणोंकी स्तुति के स्थान का नाम) प्रतिशासन टहलू कर नाम॥ सस्तावः द्विज विनय सुदाम ७६ (वहटन वा ठीहाका और खन्ता वा गढ़ेलाके

नाम)उदघन बठन ठीहाजान॥ अस्तम्बघ्न अस्तम्बघ
मान ७७ (बरसाका और बराबर जमेहुये वृक्षोंके नाम)
आविध बरमा नाम दिखाया॥ निघये जमे बराबरपाया
७८ (अन्नादिके निकारने और खाने के नाम) उत्कार
अरु नाम निकार॥ नाम निगार खान विस्तार ७९
(डाकने और छींकने का नाम) उद्गार नाम डाकने
केर॥ क्षिक्षाव छींकने को हेर ८० (डकारने का नाम)
उद्ग्रह नाम डकारसुजान॥ चतुरदास कीना परमान
८१ (निवृत्तिके नाम-दोहा) विरतीआरति अवरति
उपरम यह उपराम॥ चतुरदास वरणन करै ये निवृती
के नाम ८२ (थूकने के नाम) निष्ठ्यूतिहि निष्ठेवन
निष्ठीवन निष्ठेव॥ चतुरदास अमरा लिखी थुंकन थूकन
थेव ८३ (वेग और अंत के नाम-चौपाई) जूति जव-
नहै बेगका नाम॥ अवसान सातिजानुजगदाम ८४
(ज्वर वा बुखार के और पशुओं के खेदने ललकारने का
नाम) ज्वर जूर्ति जरआवो जान॥ उदजनाम पशुओं
का मान ८५ (शापकेनाम) अकरणि अवग्राह नियाह॥
अजननि और अजीवनिकाह ८६ (समीप जिसके गाये
हों तिसके झुंडके और पुओं के समूह का नाम) औप-
गवक झुंडकर जान॥ आपूपिक पुओं कर मान ८७
(स्वहारी वा पूरियोंके और सतुआ के समूह का नाम)
शाष्कुलिक पूरी परवीन॥ साकुक नाम दूसरा चीन ८८
(लड़कों के वृन्द और मित्रों के वृन्दकानाम) लड़का
वृन्द माणव्य जान॥ सहायता मित्रों को मान ८९
(हरों के समूह और ब्राह्मणों के समूह का नाम)

हल्यानाम हलहि दरशाई ॥ ब्राह्मण वाडव्य देखोभाई
९० (पशुरियों के समूह और पीठके समूहका नाम)
पार्श्व नाम पशुड़ीको मिन्त ॥ प्रष्ठ्यनाम कहे गुणसन्त
९१ (खलोंके समूह और मनुष्यों के समूहका नाम) ख-
लिनी खल्या खलोंके नाम ॥ मानुष्यक मानव जगदाम
९२ (ग्राम वा गावोंके समूह और जनोंके समूहकानाम)
गावों केर ग्रामता नाम ॥ जनता नाम जान जग दाम
९३ (धुआं के समूहके और पाश फांसी के समूह का
नाम) धूम्यानाम धुआंका भाई ॥ पाश्यानाम पाश द-
रशाई ९४ (गलवड़ीकाश तिसके समूहका और सहस्र
के समूहका नाम) गल्या समूह काशको मान ॥ साहस्र
नाम सहस्रकर जान ९५ (करसी के समूह और वर्म्म
कवचके समूहका नाम) कारीष करशी नाम विचार ॥
वार्म्मण नाम किया विस्तार ९६ इसीप्रकार और भी
जानो ॥ चतुरदास की निश्चय मानो ९७ (दोहा)
संकीरण वर्गहि गुणी कह्यो रामके नन्द ॥ चतुरदासगुर
ज्ञानले गावे श्रीगोविन्द ९८ ॥

इति श्रीजम्बूद्वीपेभारतखण्डेमालवदेशेअवन्तीमहाक्षेत्रेरतलामग्रामेवैष्ण
वहरिव्यासीमहन्त श्रीरामाजीनन्दचतुरदासविरचितेभाषा
श्रीअमररघुनाथकल्पद्रुमतृतीयकाण्डेसंकीर्णवर्ग
स्तृतीयोविश्रामस्सम्पूर्णः ३ ॥

अथ श्रीतृतीयकाण्डेकांतवर्गप्रारम्भः ॥

(दोहा) श्रीश्रीश्री सर्वेश्वर पारब्रह्म परवीन ॥ अ-
ष्टपहर चौसठघड़ी चतुरामाने चीन १ कहूं अनेका अर्थ

ये वाचक शब्द विचार ॥ प्रथमकहे याना किये अब या लिखे प्रकार २ (चौपाई) नाकहिस्वर्ग्ग नाक आकाश ॥ स्वर्ग्गादि ये लोक परकाश ३ अनुष्टुप श्लोक कीर्तिक श्लोक (सायक) तलवार तीर सायक है चोक ४ (जम्बुक) सृगाल नाम जम्बुक परमोद ॥ वरुणनाम जम्बुक जगसोद ५ (पृथुक) पृथुकनाम च्यूरागुणवन्त॥ पृथुकनाम लड़का बलवंत ६ (आलोक) दर्शन पुनि आलोक कहावे ॥ आलोक प्रकाश नाम दरशावे ७ (आनक) आनक तुरही आनक पटह ॥ अंककोरा अंक अंकहै चिनह ८ (कलंक) कलंक पाप दुख नाम कलंक ॥ चिह्नहि नाम कलंक न शंक ९ (तक्षक) तक्षक नाम सर्प्पका चीन ॥ तक्षकहै बढ़ई परवीन १० (अर्क) स्फटिक मणिः अर्कहि गुणवान ॥ अर्कहिनाम सूर्य भगवान ११ (क-दोहा) कःवायुःकःब्रह्म है कः शिर कःरविजान ॥ कःपानी कः सुखसही चतुरा करे बखान १२ (पुलाक-चौपाई) पुलाक नाम फरहा परवीन ॥ पुलाक भात पूरायह चीन १३ (मेचक-दोहा) खसटनाम मेचककहे मेचकहै गजपूछ ॥ लगे मांसजड़ गुदासुन मेचक नाम इनूछ१४ (करक-चौपाई) करवा करक करकहै अनार ॥ बर्से पत्थर करक विचार १५ (विनायक) बुद्ध गणेश गरुड़ ये तीन ॥ इनका नाम विनायक चीन १६ (किष्कु) किष्कु हाथ किष्कुहि है बीता ॥ प्रकोष्ट किष्कु पुनि जानो मीता १७ (वृश्चिक) वृश्चिकराशि आठवें जान ॥ बीछनाम वृश्चिक पहिंचान १८ (प्रतीक) प्रतिकूल बिगड़ेहुये प्रतीक ॥

प्रतीक अंकनाम जग नीक १९ (भूतिक) पाताल नीव कैफरा सुजान ॥ कूकुरमुत्ता भूतिक मान २० (कोशातकी-दोहा) ज्योत्स्निका अरु परवर घोष तरोई जान ॥ लहचिचड़ा कोशातकी इनकोनाम प्रमान २१ (सोमवल्क-चौपाई) नामकैफरा कटुफलमिन्त ॥ दुधिया खैर सोमवलसन्त २२ (पिण्याक) तिलकल्कसिह्लक लोबान ॥ तिलीखरीनाम पिण्याक मान २३ (वाह्लीक) रामठहींग काबुलका देश ॥ हय काबुलि वाह्लीक नरेश २४ (कौशिक-दोहा) उल्लू गूगर इन्द्र थे सर्पपकरना न्योर ॥ विश्वामित्र से आदिले कौशिक नाम निहोर २५ (आतंक) रोगनाम आतंकहै तापनाम आतंक ॥ आतंकनामशंका सही निरभै जान निशंक २६ (क्षुल्लक-चौपाई) लहुरा नीच स्वल्प जन जान ॥ इनहिं नाम क्षुल्लक पहिंचान २७ (जैवातृक) कुशदीर्घायुः चन्द बखान ॥ इनहिंनाम जैवातृक मान २८ (वर्त्तक) हयखुर सुनियो वर्त्तक मानव ॥ बतखनाम वर्त्तकसो जानव २९ (पुण्डरीक के नाम-दोहा) पुण्डरीक दिग्गज यह पुण्डरीकहै बाघ ॥ पुण्डरीक अग्निहि कही उज्ज्वल कमलहि जाघ ३० (दीपक) प्रकाश नाम दीपक पुनी दीपक यवाइनीह ॥ मोरहि चोटी दीपक चतुराकेत गुनीह ३१ (शालावृक) शालावृक वानरकहे शालावृकहि शृगाल ॥ कूकुरशालावृक पुनी भजो लाड़िलीलाल ३२ (गैरिक-चौपाई) सोनासो गैरिक पुनि नाम ॥ गेरू गैरिक जान सुदाम ३३ (व्यलीक) व्यलीक अप्रियकार्य्य प्रवीन ॥ व्यलीक नाम

पीड़ा नरचीन ३४ (अलीक) अलीकनामा अप्रिय ब-
खान ॥ अलीक नाम झूठहिका मान ३५ (अनूक) अ-
नूक स्वभाव कहे गुणवान ॥ अनूक वंश जानो जगमान
३६ (शल्क) शल्क नाम बकला घतलाया ॥ शल्कनाम
खण्डहि करगाया ३७ (निष्क-दोहा) सर्पअशरफी नि-
ष्कहै निष्कहि सुवरण जान ॥ सोनेभात्रके भूषण निष्क
बलुरजन मान ३८ (कल्क) पापएन विष्ठाशमल गज
दन्ता घृत तैल ॥ दंभ शेषहरी पुनी इनका कल्कहि वेल
३९ (पिनाक-चौपाई) नाम पिनाक शूलकर मिन्त ॥
धन्वाहर पिनाकही सन्त ४० (धेनुका) ब्याई गाय धे-
नुका नाम ॥ हथिनी सोई धेनुका दाम ४१ (कालिका)
मेघवृन्द कालिका प्रमान ॥ देवीनाम कालिका जान ४२
(करिकातर्की-दोहा) नरकयातना वृत्ति विवरण श्लोक
सुजान ॥ करनेवाली नाम ये करिकातर्कीमान ४३ (क-
र्णिका-चौपाई) कमलहि बीच कर्णिकाबाजे ॥ गजशुंडा
कर्णिका बिराजे ४४ (वृन्दारक) मनोज्ञ श्रेष्ठनाम वृन्दा-
रक ॥ वृन्दारक देवता हवैसक ४५ (एक) अन्नहि एकनाम
गुणवन्ता ॥ मुख्यएक जानत जनसन्ता ४६ (दांभिक) मा-
यावीदांभिक सतनाम ॥ चतुरदास गावत गुणग्राम ४७
(कौकुटिक) दूरहि देखै उसका नाम ॥ कौकुटिक जान और
गुन ग्राम ४८ (लालाटिक) मुंह देखा कार्य्य न करधनी-
का ॥ लालाटिक नामहै उनीका ४९ (कटक) चूत रकंकण
चक्रहि राजा ॥ कटक नाम इनहींका ताजा ५० (कण्टक)
कण्टक नोक सुईका नाम ॥ छोटा शत्रु कण्टकहि दाम ॥
रोवां कटिया कण्टकजान ॥ आनासो कण्टक परमान ५१

(नायक–दोहा) बालकनाम नायक पुनी पकाना नायक मान॥ स्वामी फौजहि मालिक इनको नायक जान ५२ रत्नमध्य भी याका नामहै॥ (पर्य्यंक–चौपाई) पलँग नाम पर्य्यंक कहावे॥ चतुरदास हरिव्यासी गावे ५३ (लुब्धक) लुब्धक लोभी लुब्धक बाघ॥ चतुरदास गावे जनजाघ ५४ (पेटक॥ देशिक) पेटक गुरू पेटकहै वृन्द॥ देशहि उत्पन देशिकनन्द ५५ (खेटक॥ किंजल्क) ग्राम और फल खेटक जान॥ फूलकि धूरि किंजलक मान ५६ (शुल्क) स्त्री अर्थ देन धननाम॥ शुल्ककहे कविजन गुणग्राम ५७ (उत्कलिका॥ वार्द्धक) कलोल कहे उत्कलिकादाम॥ वार्द्धकभाव समूहानाम ५८ (गणिका॥ दारक) गणिकासो हथिनी जनजान॥ दारक लड़का नाम सुजान ५९ (अनेडमूक) बहिरा गूंगा अँधरा मिन्त॥ नाम अनेडमूकहै संत ६० (टंक) करने वाले टांकी टंक॥ टंकहि अहंकार परयंक॥ दारणनाम टंककाजान॥ चतुरदास गुणकरे बखान ६१ (दोहा) श्रीहरिव्यासी रामकी कृपा रच्यो इतिहास॥ कृपाकरें निम्बारक किंकर चतुरादास ६२ (छन्द) श्रीहरि गावो। सुरपुरधावो ६३॥

इति श्रीजम्बूद्वीपेभारतखंडेमालवदेशेअवन्तीमहाक्षेत्रेरत्नपुरीरतलामग्रामे हरिव्यासीवैष्णवमहन्तश्रीरामाजीनन्दचतुरदासविरचितेग्रंथभाषा श्रीअमररघुनाथकल्पद्रुमतृतीयकांडेकांतवर्गश्चतुर्थोविश्राम

समपूर्णः ४॥

अथ श्रीअमरकोषतृतीयकांडेनानार्थवर्गप्रारंभः॥
(दोहा) मोर मुकुट मस्तकधरे व्रजरक्षण व्रजराज॥
सोमेरे हिरदय बसो सर्व्व सुधारन काज १ (मयूख)मयू-
खनाम शोभागुणी त्विदहि मयूखा मान॥ किरण मयूख
विचारिये ज्वालामयूख जान २ (शिलीमुख–चौपाई)
भ्रमरहि नाम शिलीमुख जान॥ शिलीमुख बाणनाम प-
रमान ३ (शंख) शंखनाम निधि भेद कहावे॥ शंखनाम
शंखहि जगगावे ४ (ख) शून्यनाम खःखःहै इंद्रिय॥ च-
तुरदास गुण गावत मिंद्रिय ५ (शिखा) शिखा किरण
पुनि शिखा ज्वालका॥ चोटी शिखाय नाम मालका ६
इतिखान्ताः (नगअग॥ आशुग) पर्व्वत वृक्षनाम नग
अगये॥ आशुगनाम वायु वारणये ७ (खग) सूर्य्यादि
ग्रह पक्षी ये खग॥ बाणहिनाम खगकहे सो अग ८ (प-
तंग) पतंग पांखी सूर्य्य पतंग॥ चतुरदास गावे श्रीरंग
९ (पूग) पुंगहिनाम सुपारी जानो॥ पूग समूहा नाम ब-
खानो १० (मृग) मृग हरिणा मृग मृगशिर मिन्त॥ मृग
ढूंढ़ना नाम गुणवन्त ११ (वेग) वेग प्रवाहनाम दरशा-
या॥ वेगहि जोरचलन गुणगाया १२ (पराग–दोहा)
फूलधूरि सो पराग है गन्ध चूर्ण ये पराग॥ धूरिनाम परा-
गये पराग ग्रहण गुण जाग १३ (नाग–चौपाई) हाथी
नाम नाग मातंग॥ हटेन जुड़िया जीते जंग १४ (अपांग)
अंगहीन नेत्रान्त तिलक ये॥ इनका नाम अपांग कहत
ये १५ (सर्ग्ग–दोहा) त्याग स्वभाव निर्मोक्ष ये निश्चय
अध्यासृष्टि॥ सर्ग्ग नाम इनका कहे चतुरा गावे दृष्टि१६
(योग) शस्त्र बांधना योगहै संगति योग विचार॥ योग

हिनाम उपायका। थान योग विस्तार १७ (सुख) वेश्या हाथी घोड़ला पोषण इतकर नाम ॥ याका नाम विचार सुख चतुरा प्रस्ण दाम १८ (भोग-चौपाई) भोगदेहका नाम सुजाना ॥ फण सर्प भोगहि परमाना १९ (सारङ्ग) चातक हरिण नाम सारंग ॥ सारंग नाम ये कबुले रंग २० (प्लवग) प्लवगहि वानर प्लवगहि मेंढक ॥ प्लवगनाम सारथी कोढक २१ (अभिषंग) शाप नाम अभिषंगहि जान ॥ अभिषंग आदर जान सुजान २२ (युग) युवा नाम द्वय युग परवीन ॥ सतयुग नाम युगहि का चीन २३ (गौ-कुण्डलिया) गौ स्वर्ग। गौ बाणहै गौ नाम पुनि गाय ॥ बेलनाम गौ जानिये गौ वाणी दरशाय २४ गौ वाणी दरशाय नाम गौ किरण विचारो ॥ गौ वज्र। गौ दिशा नेत्र गौ नाम उचारो २५ भूमी गौ चतुर कहै जल गौ नाम निहार ॥ रामदासके नन्दने गौ शब्द विस्तार २६ (लिंग-चौपाई) शिश्न इन्द्रियहू लिंग कहावे ॥ लिंग नाम चिह्नहि कर गावे २७ (शृंग) शृंग नाम प्रभुताका मित्त ॥ कंगुरा नाम शृंगका सत्त २८ (वरांग) मस्तक सोवरांग कहलावे। वरांग नाम योनि परगावे २९ (भग-दोहा) श्रीइच्छा। ऐश्वर्य है योनि कीरती यत्न ॥ माहात्म्यनाम पुनि अर्कये भग नामहि सब रत्न ३० (इतिगान्ताः परिघ-चौ०) परिघनाम अस्त्रहिकरचीन ॥ हनन परिघ गावे परवीन ३१ (ओघ) ओघ समूह ओघ जलवेग ॥ ओघनाम चातुरजन नेग ३२ (अर्घ) मोल नाम अर्घाकरजानो ॥ पूजाजलदे अर्घामानो ३३ (अघ) अघदुख जानो अघहै पाप ॥ जुआ अघहि शिकार अघ

आप ३४ (लघु) इष्टहि लघू जानगुणवान ॥ लघु नामा अल्पहि परमान ३५इतिघान्ताः॥(काच) सिकहर कांच जानजगमिन्त ॥ नेत्ररोग कांचः गुणवन्त ३६ (प्रपंच) प्रपंचनाम उतरनाबिस्तर ॥ विपरीतनाम प्रपंचहि यशवर ३७ (शुचि-दोहा) अग्निशुची शुचि उज्ज्वलरु नामशुची आषाढ़ ॥ शुचिमंत्री शुधचित्तशुचि स्ना पवित्र शुचि ताढ़ ३८ (रुचि--चौपाई) वाञ्छारुची किरण रुचि मान ॥ इतिचान्ता चातुर पहिंचान३९इतिचान्ताः॥ (अच्छ) प्रसन्न अच्छ अच्छये ऋक्ष ॥ स्फटिक अच्छ नामत्रयवक्ष ४० (गुच्छा) पल्लवसो गुच्छा गुणवन्त॥ गुच्छानाम हार जनसन्त ४१ (कच्छ) आंचरतुनी पहिरना नाव॥ काच्छा आदि कच्छ सबचाव ४२ इति छान्ताः॥ (अहिभुक) अहिभुक नाम गरुड़ बलवान॥ अहिभुक मोर मौजकर मान ४३ (द्विज) क्षत्रिय वैश्य पक्षि अरुदांत ॥ ब्रह्मणादि ये द्विज विख्यात४४ (अज दोहा) अजविष्णुः अज सूनु रघु अज ब्रह्मा बलवान॥ महादेव अजकाम अज खासिअज नामबखान ४५(व्रज चौपाई) गोठगिली व्रजनामहि जान ॥ नामसमूहा व्रज बलवान ४६ (धर्म्मराज)बुध यमराज युधिष्ठिरमान॥ धर्म्मराज इनको पहिंचान ४७ (कुंज) कुंज सघन वन जान सुजान॥ हाथी दाँत कुंज करि मान ४८ (वनज) वनज खेत पुर वनज कहावै ॥ वनज द्वार चातुर गुण गावै ४९ (बलजा) अहै श्रेष्ठ इस्त्री कर नामा॥ बलजाकहै सकल गुण धामा ५० (आजि) आजिअहै सम भूमिक भाग ॥ संग्रामः आजिः यहिजाग ५१ (प्र-

जा) कन्यापुत्र सन्ततिः रैयत ॥ इनका प्रजोनाम गुण-
मैयत ५२ (अब्ज) अब्ज चन्द्रमा अब्जहि सक्ख ॥
अब्ज कमल धन्वन्तरि लक्ख ५३ (निज) निज अपनेका
नाम बखान॥नित्यनाम निजकहेजहान ५४ इति जान्ताः॥
(क्षेत्रज्ञ) क्षेत्रज्ञ नामपुरुष करचीन ॥ क्षेत्रज्ञ नाम जानो
परबीन ५५ (संज्ञा--दोहा) बुद्धिनाम गायत्रिका करसे अ-
र्थ बखान॥सूर्यत्रियासे आदिले संज्ञाये सबजान ५६ इति
जान्ताः (करट) गालऽरुगज करटऽरु पुनीकुसुमश्राद्ध नर-
मान॥वेदजीव एकादशी काक करटकरजान ५७ (कट) ग
ज गंडाकट समयकट अस्थलकट परवान॥ कशिहाँबमर्द्द
येकटकहे चातुरलीन्हाचीन ५८ (शिपिविष्ट--चौपाई)
खौरा नष्ट चर्म्म महदेव ॥ नाम सकल शिपिविष्टहि
केव ५९ (त्वष्टा) सूर्य्य विश्वकर्म्मा अरु बढ़ई ॥ त्वष्टा
नाम इनहिकाधरई ६० (दिष्ट) दिष्ट काल जगजाहिर
मान ॥ भाग्य नाम दिष्टहि नरजान ६१ (कटु) रसतीक्ष-
ण अहँकार अकार्य ॥ इनकर नाम कटुः विस्तार्य ६२
(रिष्ट) क्षेम अशुभ शुभरिष्ट कहावे ॥ चतुरदास
नानार्थहि गावे ६३ (अरिष्ट--दोहा) मदिरा सौरीग्रह
मठा शुभ अशुभा जग जान ॥ मरण चिह्न से आदि ले
नाम अरिष्ट बखान ६४ (कूट) मायानिश्चल यन्त्र
छल झूठ राशि धन कूढ़ ॥ पर्व्वत कँगुरा आदि ले
सबका कूटहि रूढ़ ६५ (त्रुटि--चौपाई) कालहि अक्षर
कारहिजाना ॥ अल्पः संशय सतकरमाना ॥ इलाची
छोटीहै यह मिन्त ॥ त्रुटिः नाम इनकर गुणवन्त ६६
(कोटि--दोहा) अर्त्ति धन्वा नोक ये प्राकर्षता क-

सेर॥ अग्निकोण से आदि ले सवा कोटि नर सोर ६७ (जटा–चौपाई) लपटानी जटा जटाहै जर॥ जटा नाम दोउ जीये घर ६८ (व्युष्टी) व्युष्टी नाम सम्पदा जान॥ व्युष्टी फल नामहिं पहिचान ६९ (दृष्टि) दृष्टि देखना दृष्टीज्ञान॥ चतुरदास दृष्टी पहिचान ७० (इष्टि) यज्ञहि इच्छा संग्रह श्लोक॥ इनको इष्टि कहे सब लोक ७१ (सृष्ट) मुक्त बहुत निश्चित जन जान॥ इनकानामसृष्टपहिचान ७२ (कष्ट) दुरधिगमहिअस्थान गहन दुख॥ इनका नाम कष्ट जानो सुख ७३ (पटु) रोगहीन पटु पटु दक्षःमन॥ तीक्ष्ण पटुः जान जाहिर तन ७४ इति टान्ताः॥ (नीलकंठ) नीलकण्ठ शिवनाम बखान॥ नीलकण्ठ मयूर बलवान ७५ (काष्ठा–दोहा) अंत जठर सो पेटमें कुसुल अन्नकी ठोर॥ अन्तर गृह अस्थित दिशा काष्ठा नाम निहोर ७६ (ज्येष्ठ) अत्युत्तम अति वृत्तहै उत्तर पुनि बैशाख॥ बड़े भाइसे आदिले नामज्येष्ठ जगभाख ७७ (कनिष्ठ–चौपाई) बालकनिष्ठ नाम बलवान॥ छोटा भाइ कनिष्ठहि जान ७८ इति ठान्ताः॥(दंड–दोहा) डांडदेन दंडादमहियमसेना अभिमान॥ अश्व खैलरीग्रह पुनी दण्ड नाम जनजान ७९ औरसूर्यकेपारिपार्श्विकका भी नामहै (गुड–चौपाई) गुंडागुड गुरका ये गुण्ड॥ चतुरदासजाने ब्रह्मण्ड ८० (ब्याड) मांसदपशूव्याघ्रजनजान॥ सर्पआदि ब्याडहि पहिचान ८१ (इडा) गाय पृथ्वी वाणी बुधस्त्रिया॥ इडा नामकहुअरुभजुसिया ८२ (क्ष्वेडाक्ष्वेड) बांसशलाका कम विष मेड॥ इनका नामहै क्ष्वेडाक्ष्वेड ८३ (नाड़ी)

घरी और नारीका नाम ॥ नाड़ी कहे सकल गुणधा-
म८४(कांड-दोहा)बाणदंड अर्वागुणी खराबपुनिपरि
छेद ॥ अवसर इनका नाम सुन कांड नाम नरभेद ८५
(भाण्ड)गोड़ा गहना भेंड़िया भांडामूर बखान ॥ इन
को जानो भाण्डसब चतुराभजभगवान ८६ इति डांताः
(बाढ़-चौपाई) अत्यर्थ बाढ़ प्रतिज्ञा बाढ़ ॥ पोढ़
नाम बाढ़ः सुनगाढ़८७ (प्रगाढ़) प्रगाढ़नाम भृशजान
जहान ॥ दुख प्रगाढ़ही बड़पहिंचान८८ (दृढ़)समरथ
औ मोटेका नाम ॥ दृढः कहे कबिजन गुणधाम ८९
(ब्यूढ़) बिन्यस्तपृथुल संहत्त कहावे ॥ इनकानामब्यूढ़
जनगावे ९० इति ढान्ताः ॥ (भ्रूण) त्रियागर्भबालकका
नाम ॥ भ्रूणनाम गावत गुणदाम ९१ (बाण) बाणनाम
बाणासुरजान ॥ बाणनाम तीरहि बलवान ९२ (कण)
सूक्ष्म बस्तू केश अंस ॥ कनमिल कणः कहे जन हंस
९३ (गण) अनुचर रुद्र समूहासन्त ॥ गणहैनामइन्हीं
का मिन्त ९४ (पण-दोहा) पण बाजी पणदामये पण
जूआ पणभर ॥ चारकाकिणी पणःसत पणये नाम म-
जूर ९५ (गुण-कुण्डलिया) धन्वारस्सी मौर्व्वीरसग-
न्धादिकमाद ॥ सत रज तम अरु शूरता वरणत चातुर
साद ९६ वरणत चातुरसाद सन्धि विग्रहादी जानो ॥
चातुर्य्यसतइंद्रियारिकेअरइकेएसतमानो ९७ उकेओः
रस्सीकहे गुणकेनाम बिचार ॥ भूल चूक कछुहोय तो
लीजैसंत सुधार ९८ (क्षण-चौपाई) निर्व्यापारस्थिति
चुपरहना ॥ कालविशेषदशापलकहना ९९ अरुउत्सव
याहीकानाम ॥ क्षणहैनामकहत गुणधाम १०० (बर्ण)

शुक्लपीतरँगअक्षर भिन्त ॥ वर्ण चार द्विजमानो सन्त १०१ सूर्य्य सारथी सूर्य्यस्वरूप ॥ सुर्खरंग मिल अरुण अनूप १०२ (स्थाणु) पर्व्वत बक्ष खंभ महदेव ॥ इनका नामस्थाणूसेव १०३ (द्रोण) द्रोणाचार्य्य परिमाण विशेष ॥ काक नाम द्रोणा जन मेष १०४ (रण) रणसंग्राम शब्द रणमान ॥ चतुरदास जन भजभगवान १०५ (ग्रामणी) नाऊ पुनि मुखग्रामाधिपथे ॥ ग्रामणी नाम इनहिं पेखिये १०६ (ऊर्णा-दोहा) उष्ट्रादिक का रोंगटा भौंह बीचकी जाग ॥ भेड़ाशशका नाम ये ऊर्ण नाम अनुराग १०७ (हरिणी) मृगी हेम प्रतिमा गुणी हरी वस्तु वृत भेद ॥ इनका हरिणी नाम है चतुरा भाषतवेद १०८ (हरिण-चौपाई) मृग पाण्डुर वर्णहि जगजान ॥ हरिण नाम जाका परमान १०९ (स्थूणा) लोहप्रतिमा थून्ही दरशाई ॥ स्थूणानाम ताहिका भाई ११० (तृष्णा) वाञ्छा तृष्णा नाम सुजान ॥ और पिपासा तृष्णा मान १११ (घृणा) जुगुप्सा निंदा करुणा सन्त ॥ घृणानाम जानोगुणवन्त ११२ (विपणि) बाजार विपणि गलीसो विपणी ॥ विपणि दुकान चतुर यह वरणी ११३ (वारुणी) पश्चिमवारुणि वारुणिमदिरा ॥ पश्चिम दिशा वारुणी इंदिरा ११४ (करेणु वा द्रविण) हाथी हथिनी नाम करेणू ॥ घनबल जानये नामद्रवेणू ११५ (शरण) गृहरचा रचककानाम ॥ शरण नाम चातुरजनदाम ११५ (श्रीपर्ण) अग्निमन्थ श्रीपर्ण कहावे ॥ श्रीपर्ण कवल कलन बिचगावे ११७ (तीक्ष्ण-दोहा) युद्ध तीक्ष्ण विष तीक्ष्ण पैन तीक्ष्ण

मान ॥ लोहनाम तीक्षण गुणी चतुराकरे बखान ११८ (प्रमाण) प्रमाण नाम मर्यादहै हेतु शास्त्र परिछेद ॥ ज्ञातासर्व प्रमाणहै चतुरबतायाभेद ११९ (करण—कुंडलिया) खेत देहये करणहै करण इंद्रियामान ॥ करण कायस्थाव्रतपुनी करणनाम पहिंचान १२० करण नाम पहिंचान व्रतहिबन्धन ये करणा॥नाच गान है करण क्रियायकनामहिं वरणा १२१ शूद्रमायजो वैश्यतेउत्पन्न करण बखान ॥ करणनाम वानर कहे चतुरा जन परमान १२२ (संसरण—दोहा) सब जीवोंका जन्मये विनारोंक के सैन ॥ घंटापथ सत सड़कये संसरणःसरबैन ॥ १२३ (उद्गिरण) डाकाअन्नरु उन्नयः उपरः जलपात्रादि ॥ उखार डारने आदिले उद्गिरणः गुण सादि १२४ (विषाण विषाणी—चौपाई) पशु शृङ्गः पुनि हाथी दांत ॥ नाम विषाण विषाणी सात १२५ (प्रवण—दोहा) उतारुपृथवी क्रमहि से प्रह्लनम्र चौराह ॥ चतुष्पथहि अरुचौकये प्रवणनाम नरवाह १२६ (संकीर्ण) निचितव्याप्त सङ्कट पुनी वर्णसंकरह मिन्त ॥ अशुद्ध नाम सकुसे पुनीनाम सँकीरणसन्त १२७ (विरिण—चौपाई) शून्य विरिण पुनि ऊसर विरिणा ॥ चतुरदास हरिव्या सीचरणा १२८ (वरण) सेतुवरण नामहि दरशाया ॥ वरणनाम पुलहीका गाया १२९ (वेणी) पाटी शीश त्रियाकी वेणी ॥ नदीएक वेणीसो केणी १३० इति णान्ताः॥ (विवस्वान्) देवसूर्य्य जनजान जहान ॥ विवस्वान यहनाम प्रमान १३१ (गरुत्मान्) गरुत्मान पक्षीसुत जान ॥ गरुत्मान गरुड़हि पहिंचान १३२

(शकुन्त) शकुन्त पुनि पक्षीहैं मात्र॥ शकुन्त ग्रद्ध कहे गुणजात्र १३३ (धूमकेतु) अग्नीधूम मयी ताराये॥ इनकर धूमकेतु ठहराये १३४ (जीमूत) पर्व्वत है जीमूत पियारा॥ जीमूत नाम मेघ विस्तारा १३५ (हस्त) त्रयोदश नक्षत्तरये हस्त॥ हाथनाम हस्तहिसुन मस्त १३६ (मरुत) मरुत नाम वायुहि बलवान॥ मरुत नाम देवता सुजान १३७ (यन्ता) यन्ता हस्तीवान कहावे॥ यन्तावहलवान कहलावे १३८ (भर्त्ता) धारण करनेवाला स्वामी॥ पोषण करता भर्त्ता नामी १३९ (पोत) वहित्र नाम लड़का अरु नाव॥ इनकर पोत नाम दरशाव१४०(प्रेत) प्रेतहिनाम परेत कहावे॥ प्रेत नाम मृतकहि दरशावे १४१ (केतु) नाम पताका केतुहि सन्त॥ केतु नवें ग्रहका बलवन्त १४२ (सुत) राजा सुत अरु सुतही पूत॥ चतुरदास गावे अवधूत १४३ (स्थपति) स्थपति नाम थवई गुणवान॥ कंचुकिनाम अस्थपति जान १४४ (भूभृत्-दोहा) भूमीधर भूभृत कहे पर्व्वत भूभृत जान॥ राजा सो भूभृत कहे चतुरदास पहिंचान १४५ (मूर्द्धा-चौपाई) क्षत्रिमात्र मूर्द्धा कहलावे॥ मूर्द्धा राजा नाम कहावे १४६ (ऋतु-दोहा) ऋतु वसन्त भीषिक्त ऋतु त्रियामांस ऋतुठान॥ भगसे रुधिर बहै ऋतुहि चतुरदास पहिंचान१४७ (अजित-चौपाई) अजित नाम विष्णुहि भगवान॥ महादेव सो अजित बखान १४८ (सूत-दोहा) अव्यक्त सूत पुनि सारथि बढ़ई सूत सखेद॥ ब्राह्मणिमें क्षत्रियहिसे उतपतसूतहि भेद १४९ (चौपाई) पण्डित सो जग सूत

कहावे ॥ सूतपुराणिकनाम धरावे १५० (व्यक्त) व्यक्त
नाम पण्डित गुणवन्त ॥ अस्फुट सोइवक्ता जनसन्त
१५१ (दृष्टान्त) तर्क आदि दृष्टान्त सुजान ॥ तर्कादि
शास्त्र दृष्टान्त बखान १५२ (क्षत्ता-दोहा) क्षत्ता नामहि
सारथिहि क्षत्ता द्वारकपाल ॥ क्षत्रियाणी में शूद्रसे उत्पन्न
क्षत्ताबाल १५३ (वृत्तान्त-चौपाई) वार्त्ता साकल नाम
प्रकार ॥ प्रकरण इन वृत्तान्त विचार १५४ (आनर्त्त-
दोहा) समर नाच अस्थानमी वृद्धिशेष सोजान ॥ पुरी
द्वारका नामये आनर्त्तनाम पहिंचान १५५ (कृतान्त-
चौपाई) कृतान्त नाम यमराज कहावे ॥ कृतान्त सोइ
सिद्धान्त दिखावे १५६ कृतान्त नाम भाग्यका मिन्त ॥
कृतान्त पाप गावे गुणवन्त १५७ (धातु-कुण्डलिया)
श्लेष्म पित्तरस रक्त ये वसामहा भूतेन ॥ पृथ्वी वायू
आदिसर तिनके गुण नरचेन १५८ तिनकेगुण नरचेन
गन्धअरुपर्शा मानो ॥ नेत्रइन्द्रिया अश्व विकृति मैन
शिर गेरूजानो १५९ शब्दजन्म अस्थानये चतुरभूसता
याम ॥ गम्लगतौ इत्यादिले धातुसबैका नाम १६०
(शुद्धान्त-चौपाई) राजधानी शुद्धान्त कहावे॥ शुद्धान्त
जनाना नृपका गावे १६१ (शक्ति) शक्तिहि बरछी
शक्तिहि सांग॥कासू बलहि शक्ति अनुराग १६२ (मूर्त्ति)
मूर्त्ति कठिनता कामहि मूर्त्ति॥ चतुरदास गावेगुण सूर्त्ति
१६३ (व्रतति (व्रततिनाम जानहु विस्तार॥ वल्लीसोइ
व्रतति ललकार १६४ (वसति) वसति नाम है गृह
गुणवान॥ वसति रात्रीरूप प्रमान १६५ (अपचिति)
पूजासो अपचिति कहलावे ॥ अपचित नाम क्षयहि

दरशावे १६६ (साति) सातिनाम दानहिका जान ॥ सातिहि अन्त कहे परमान १६७ (अर्त्ति) धन्वाचोटी अर्त्तिः जान ॥ पीड़ासोइ अर्त्तिपहिंचान १६८ (जाति) जाति जन्मजातिहि सामान्य ॥ जातिहि शब्दकरो परमान्य १६९ (रीति) रीतिनाम ये लोकाचार ॥ स्यन्द प्रस्त्रवण रीतिहि सार १७० (ईति-कुण्डलिया) डिम्ब सात परकारका यथा सुवा इतिरूप ॥ अनावृष्टि सो ईति है अतिवृष्टिहि इति भूप १७१ अतिवृष्टिहि इतिभूप ईति सुन अपनी फौजा। टींड़ी मूषक ईति नाम चातुर गुणसौजा १७२ पराई फौज प्रवासना नाम ईति विस्तारि ॥ चतुरदास गुणगावता भज श्रीसत्य मुरारि १७३ (प्राप्ति-चौपाई) प्राप्तिनाम उत्पत्ती लाभ ॥ पहुंच नेह प्राप्तिहि गुणसाभ १७४ (त्रेता-दोहा) अग्नित्रय त्रेतासुनो दक्षिण गार्हस्पत्य ॥ आहवनीय दुसर युग त्रेता नामहि सत्य १७५ (महती-चौपाई) महत्त्व करके युक्त भार्य्या ॥ नारदवीणा महती सार्य्या १७६ (दोहा) अणिमा महिमा अष्ट ये ऐश्वर्य्यों का नाम ॥ भस्म नाम से आदि ले है भूतिहि जन दाम १७७ (भोगवती-चौपाई) भोगवती सर्प्पोंकी नदी ॥ भोगवती नगरी ये सदी १७८ (समिति) सरसरसंग सभाका नाम ॥ जनको समिति कहे जनदास १७९ (क्षिति) क्षिति निवास क्षिति पृथिवी जान ॥ क्षयपुनि क्षितिहि कहे गुणवान १८० (हेति) सूर्य्यप्रभा शस्त्रहि अरुअग्नि ॥ हेति नाम गावे गुणसग्नि १८१ (जगती-दोहा) जगति लोक जगती पृथी जगती छन्द

विशेष ॥ द्वादश अक्षर पदवृती जगती जान नरेष १८२
(पंक्ति—चौपाई) दश अक्षर का चरण छन्द ॥ पांती
जाको पंक्तिःबन्द १८३ (आयति) उत्तरकालहि आय-
ति जान ॥ प्रभाव नाम आयतिहि मान १८४ (पत्ति)
पत्तिनाम सैन्यहि सुनमिन्त ॥ पत्ति नाम बालहि गुण-
वन्त १८५ (पक्षति) पद्धति परिवा पखना जान ॥
पक्षति पाख कहे गुणवान १८६ (प्रकृति) भव लिंग
प्रधान तत्त्वमंत्री ये ॥ पुनि स्वभाव प्रकृतिहि क्षत्री ये
१८७ (वृत्ति) वृत्ति कौशिकी जीविका जान ॥ वृत्ति
सूत्र अर्थहि बिवरान १८८ (सिकता) सिकता नाम
सिटकिहा देश ॥ सिकता बारू जान नरेश १८९
(श्रुति) वेद कान सुनने का नाम ॥ ताको श्रुतिहि कहे
नर दाम १९० (वनिता) अतिअनुराग युक्त पुनि
भाम ॥ मात्रत्रिया वनिता है नाम १९१ (गुप्ति) क्षि-
तिव्युदास भूविवरहि रक्षा । बन्दीखाना गुप्तिहि दक्षा
१९२ (धृति) धैर्य्य धृतिहि पुनि धृतिये धारण ॥ च-
तुरदास कीन्हा विस्तारण १९३ (बृहिती—दोहा) भट
कैया अरु बनभटा नवअक्षरका बोल ॥ छंदनाम भांटा
कहे बृहतीनाम अमोल १९४ (वासिता—चौपाई) स्त्री
अरु हथिनीका नाम ॥ ताका नाम वासिता दाम १९५
(वासित) नाम पक्षियो शब्द सुजान ॥ वासित कहे ता-
को परमान १९६ (वार्ता) वार्त्ता जीविक वार्त्ता बतक ॥
चतुरदास गावे गुण सतक १९७ (वार्त्त) लघु वार्त्तहि
वार्त्तहि आसार ॥ रोगरहित वार्त्तहि विस्तार १९८ (अ-
मृत) अमृत पानी अमृत शेष ॥ अमृत सुधा यज्ञघी

जेष १९९ (घृत) शेषयज्ञ छोड़े इनहींको॥ घृतकहि-ये जानो जिनहींको २०० (कलधौत) कलधौत कहैं चांदी को मिंत॥ कलधौत हेम जानो गुणवंत २०१ (निमित्त) निमित चिह्नका नाम सुजान॥ निमित्त नाम हेतु बलवान २०२ (श्रुत) श्रुत है सुनेहुयेकानाम॥ पुनि श्रुत शास्त्र जान कुलदाम २०३ (कृत) पर्य्याप्ती अलमर्त्थहिनाम॥ आदि सत्ययुग कृतहैदाम २०४ (अत्याहित) अत्याहितहि महाभयजान॥ चतुरदासके भज भगवान २०५ (भूत) पृथ्वी न्याय जलादी सत्य॥ बीतेसमय भूत ये मत्य २०६ (वृत्त-दोहा) पद्यश्लोक चरित्र ये भूतकालसो अतीत॥ दृढ पुनि गोल विचारिये वृत्त इनहिं परतीत २०७ (महत्) राज्यहि महत महतहै बृहत॥ चतुरदास गावत गुण जहत २०८ (अवगीत) अपवाद नाम अवगीत कहावै॥ अपगीतनाम निन्दिता बतावै २०९ (श्वेत) श्वेत रुपैया उज्ज्वल श्वेत॥ द्वीपविशेष श्वेतहीकेत २१० (रजत) सोना चांदी रजतहिमान॥ उज्ज्वल रजतनाम परमान २११ (जगत्) जंगम जगत कहै जन सन्त॥ जगत भुवन जानो यशवन्त २१२ (रक्त) रंग नीलादि रुधिर जन जान॥ ताका नाम रक्त प-रमान २१३ (अवदात) सित पीतहि अवदात कहावै॥ अवदात नाम निर्मल सुहावै २१४ (अभिनीत) अ-र्ज्जुन शुक्क अतिपरशस्त॥ सहनशील अभिनीतहि मस्त २१५ (संस्कृत) बनायेहुये पदारथ शास्त्र॥ ल-क्षण करके युक्त संस्कृत २१६ (अनन्त) अनवधि

जाकी ना मर्य्याद ॥ विष्णू शेष अनन्तहि आद २१७
(प्रतीत) प्रसिद्ध प्रतीतनाम दरशाया ॥ हर्षित नाम
प्रतीतहि पाया २१८ (अभिजात) कुलीन नाम अ-
भिजात सुजान ॥ पण्डितही अभिजात प्रमान २१९
(विविक्त) पवित्र विजन एकान्तहि मान ॥ ताका नाम
विविक्तहि जान २२० (मूर्च्छित) मोहित बढ़ती प्राप्ती
जान ॥ मूर्च्छित जाका नाम सुजान २२१ (शुक्त) आमि-
ल शुक्तहि निष्ठुर शुक्त ॥ भजगोपाल मिलैगी मुक्त २२२
(शिति)धवल शुक्लको जगशिति जान ॥ मेचक कृष्णवर्ण
शितिमान २२३ (सत्-दोहा) सत्यसाधु विद्यमान ये
अभ्यर्हित जन जान ॥ प्रशस्त सत् ये नामहैं चतुराकरैं
बखान २२४ (पुरस्कृत) पूजितशत्रुसे पीड़ित आगे
किया पुकार॥पुरस्कृत तेहिनामहैं चतुराकरैं विचार२२५
(निवात) निवात वायू रहितजो कवचशस्त्र परवीन ॥
सैनकटै तेहिनामये निवातनाम नरचीन २२६ (उच्छ्रि-
त-चौपाई) वृद्ध हत्त उत्पन्न कहावे ॥ उच्छ्रितनाम च-
तुर दरशावे २२७ (उत्थित) प्रोद्यतहै उत्पन्न सुजान॥
वृद्धिमान उत्थित बलवान २२८ (आदृत) आदृत
आदरनाम सुजान ॥ आदृत सो पूजित बलवान २२९
(इतितान्ताः ॥ अर्थ-दोहा) वाच्य धनहि वस्तू विषय
नाम प्रयोजन भिन्न ॥ निवर्तनहि चातुर कहे अर्थनाम
जन सन्त २३० (तीर्थ) कूपादिक अरु जलाशय बौद्ध
रहित जो शास्त्र ॥ गुरू अयोध्या आदि ले तीर्थ मान
जनमात्र २३१ (समर्थ-चौपाई) सम्बन्धारथ शक्ती
मान ॥ समर्थ ताहि कहैं गुणवान २३२ (दशमीस्थ)

रसरहितरु अतिवृद्ध बखान ॥ दशमीस्थहि जानो प-
रमान २३३ (वीथी)मार्ग्ग और पंक्तिहिका नाम ॥ वीथी
नाम चतुर जन दाम २३४ (आस्था) आस्थानीसभा
रत्न परवीन ॥ आस्थानामकहे सतचीन २३५ (प्रस्थ)
कंगूरा पसर नाम है प्रस्थ ॥ चतुरदास गावे गुण मस्थ
२३६ (ग्रन्थ) ग्रन्थनाम द्रव्यहिकाजान ॥ ग्रन्थसोई
शास्त्रहि पहिंचान २३७ (संस्था) मरणस्थित आधार
बताई ॥ संस्था नाम यही का भाई २३८ (इतिथांताः
छंद) अभिप्राय छन्दहि जग जान ॥ नाम अधीर छन्द
करमान २३९ (अब्द) मेघहि अब्द वर्षका अब्द ॥
चतुरदास गावे गुण शब्द २४० (अपवाद) निन्दाऔ
आज्ञाका नाम ॥ कह अपवाद गुणी गुण ग्राम २४१
(दायाद) सुतहै नाम सुनो दायाद ॥ भाइ बन्धु दायाद
अनाद(पाद) किरण चरण जानो चौथाई ॥ पाद नाम
चातुर जन गाई २४२ (तमोनुत) चन्द्ररु अग्नि तमो-
नुत जान ॥ सूर्य्य तमोनुतहै परमान २४३ (निर्वाद)
लोकापवाद है निर्वाद ॥ निश्चित वाद कही निर्वाद २४४
(शाद) बोदा बाल तृणहि जम्बाल ॥ नाम शाद तेहि
का नर बाल २४५ (आक्रंद-दोहा) कष्ट शब्द अरु
आरा दारुण युद्धविचार ॥ रक्षक ये चातुरकहे आक्रँद
नाम विस्तार २४६ (प्रसाद-चौ०) प्रसन्नता गुणकाव्य
बखान ॥ नाम प्रसाद अनुग्रह जान २४७ (सूद) व्यं-
जन और रसोईदार ॥ सूदनाम चातुर विस्तार २४८
(गोविन्द-दोहा) गोविन्द गोष्ठाध्यक्ष ये बृहस्पती गो-
विन्द ॥ गोपालहि गोविन्दहै गोविंद कृष्णगुणन्द २४९

(आमोद) हर्षनाम आमोदहै अतिनिर्हारिहि गन्ध ॥ आमोद नामहै याहिका चतुर भजो गोविन्द २५० (मद) हर्षगर्व्व मद मानिये गजमद मद बलजान ॥ कन्दर्प्प नाम मदमस्तये चतुरा निश्चयठान २५१ (ककुद-चौ०) राजचिह्न परधान ककुदसे ॥ ककुद बैल कन्धा सो चतुर थे २५२ (संवित) युद्धनाम सम्भाषण ज्ञान ॥ कर्म्म नियम संवितजन मान २५३ (उपनिषद्‌) धर्म्म इकान्त और वेदान्त ॥ उपनिषदहि भाषत गुण गान्त २५४ (शरद) क्वार कार्तिक वर्ष प्रवीन ॥ शरद नाम ताहीका चीन २५५ (पद) व्यवसायहि रक्षाअस्थान ॥ विभक्ति चिह्नवस्तु पदमान २५६ (गोष्पद) खुर लँबाइ चौडाई मान ॥ गोष्पदहै गोका अस्थान २५७ (आस्पद) प्रतिष्ठा पुनि अस्थान बखाना ॥ आस्पदनाम कार्य्य जग जाना २५८ (स्वादु) स्वादु इष्टहै मधुरहै स्वादु ॥ चतुर दास गावे पद आदु २५९ (मृदु) मृदु अतीक्ष्ण पुनिमृदु है कोमल ॥ चतुरदास गावे गुण सोभल २६० (मन्द) मूर्ख अल्प अप्रवीण जान ॥ भाग्यहीन सब मन्दप्रमान २६१ (शारद) प्रत्यग्र अभिनव शारद जान ॥ अप्रतिभ डरभुतही को मान २६२ (विशारद) नाम विशारद पंडितभिन्त ॥ विशारद ढीठ बखानत सन्त २६३ (इति दान्ताः॥ न्यग्रोध-दोहा) दोनोंहाथ फलावना कुंडलनाम विचार ॥ बरगद सेवन जान रे न्यग्रोध नाम सब सार २६४ (उत्सेध-चौपाई) देह उत्सेध नाम नरजान ॥ अरु उत्सेध उँचाई मान २६५ (विवध) पर्य्याहार ध्यानादि मार्गे ॥ विवध नाम जानो यश वार्गे २६६ (परिधि-

दोहा) शाखा पलाश पत्र तरु सूर्य पासका घेर॥ घेरा गोलहि खेतको परिधि नाम सबकेर २६७ (आधि) बन्धन गिरई वस्तु पुनि व्यसन आपती साधि॥ चित पीड़ा ये मानसी अधिष्ठानहै आधि २६८ (समाधि—चौपाई) मौननियम समर्थन नीवाक॥ समाधि नाम जान सत भाक २६९ (अनुबन्ध) प्रकृत अरु अनुवर्त्तन जान॥ अनुबन्धहि कवि करत बखान २७०(विधु) विष्णु चन्द्रमा राक्षकपूर॥ नाम विधुहि जन जान हजूर २७१ (अवधि) बिलमर्य्याद समय परिछेद॥ अवधि नाम चतुरनकर वेद २७२ (विधि) विधि विधान विधि भाग्य बखान॥ विधि ब्रह्मा विधिजान सुजान २७३ (प्रणिधि) प्रणिधि प्रार्थनाहै परवीना॥ प्रणिधिहि चलनेवाल नवीना २७४ (बुध) बुध बूढ़ा बुध पंडित जानो॥ बुध चौथा ग्रह नाम बखानो २७५ (वृद्ध) पण्डित वृद्ध वृद्ध है बुड्ढा॥ चतुरदास हरिभज तज मुड्ढा २७६ (स्कन्ध—दोहा) कन्ध स्कन्ध स्कन्ध नृप समुदयनाम स्कन्ध॥ स्कन्ध कांड समूहये चतुरा चेतन बन्द २७७ (सिन्धु—चौपाई) सिन्धू सिन्धू देश समुद्र॥ सरिता अटक सिन्धु यह उद्र २७८ (विधा) विधा बड़ाई विधा विधान॥ पुनि परकार विधा करजान २७९ (साधु) सज्जन साधु रम्य पुनि साध॥ चतुरदास माने मर्य्याद २८० (वधू) वधू नाम त्रियका जग माई॥ नाम पतोहू वधू लखाई २८१ (सुधा—दोहा) सुधा सर्प बिजली सुधा भोजन सुधा बखान॥ अँवरी स्नुही सेहुंड़ा सुधा लीपनो जान २८२ (सन्धा—चौपाई) अंगिकार सन्धा मर्याद॥ सन्धा पुनी

प्रतिज्ञा साद २८३ (श्रद्धा) आकांक्षा श्रद्धा पुनि आदर ॥ सम्प्रत्यय स्पृहा श्रद्धावर २८४ (मधु–दोहा) मधुहि चैत्र मधु पुष्प रस मधु मद्यहि मधुसेत ॥ मधु महुआ चातुरकहे मधुसूदन पदहेत २८५ (अन्ध–चौपाई) अन्ध अन्ध अन्ध अंधेर ॥ वारंवार नामको टेर २८६ (समुन्नद्ध) पण्डित मन्य मूर्ख अहँकारी ॥ समुन्नद्ध नामै त्रय भारी २८७ (ब्रह्मबन्धु) अधिक्षेप निन्दा अरु ब्राह्मण ॥ प्रयोग चतुर पुनि ब्रह्मबन्धु मण २८८ (अवष्टब्ध) अवलम्बित आश्रित अविदूर॥ नाम सन्निहित अवष्टब्ध नूर २८९ (प्रसिद्ध) ख्यात प्रसिद्ध चतुर जन गावे॥ भूषित नाम प्रसिद्ध बतावे २९० (इति धान्ताः–चित्रभानुछंद) सूर्य अग्नि नाम दोय ॥ चित्रभानु जान सोय २९१ (भानु–चौपाई) किरण भानु सूर्य्यहि पुनि भानु ॥ चतुरदास करमान प्रमानु २९२ (भूतात्मा) भूतात्मा धातापदएक ॥ भूतात्मा पुनि देह विशेक २९३ (पृथग्जन) पृथग्जन नाम मूर्खहि जानो ॥ पृथग्जन नाम नीचकर ठानो २९४ (ग्रावा) ग्रावा पर्वत ग्रावा पत्थर ॥ चतुरदास भज हरि गिरिवरधर २९५ (पत्री) पत्रीबाण बाज पत्री रथ ॥ काण्डनाम पत्री जानो सत २९६ (शिखरी) पर्वत शिखरी शिखरी वृक्ष ॥ चतुर श्याम श्यामा परतक्ष २९७ (शिखी) शिखी मयूर शिखी है अग्नि ॥ चतुरदास ब्रजनिधि तेराधनि २९८ (प्रतियत्न और सादी) अनुकूलहि प्रतियत्न बांछा ॥ सारथि सादी सवारदांछा २९९ (बाजी) बाजी अश्व बाण पुनिबाजी ॥ पक्षिनाम बाजी सब राजी ३००

(अभिजन) जन्मभूमिका अभिजन जानो ॥ कुल अ-
भिजन जन चातुर मानो ३०१ (हायन) वर्ष किरण
साठी पुनि धान ॥ ब्रीहि भेद हायन जन जान ३०२
(विरोचन) अग्नि सूर्य्य शशि तन प्रह्लाद ॥ नाम
विरोचन चारों आद ३०३ (वृजिन) वृजिन क्लेश
चातुर दरशावे ॥ वृजिन पाप दोउ नाम बतावे ३०४
(विश्वकर्म्मा) देवोंशिल्पिहि सूर्य्य सुजान ॥ विश्वकर्म्मा
त्रयनाम बखान ३०५ (आत्मा-दोहा) बुद्धि स्वभावरु
ब्रह्मदेह यत्नधृति चितशात ॥ आत्मा नामहि जानियो
चतुरदास विख्यात ३०६ (घनाघन-चौपाई) इंद्र घात
कर गज मतवालो ॥ घनाघन वर्षा बादर कालो ३०७
(घन) मेघ मूर्ति गुण कठिन कठिनता ॥ हथौरा सम
निरन्तर घनता ३०८ (इन) इन सूर्य्यहि इन स्वामी
जानो ॥ इनराजा महराज बखानो ३०९ (राजा)
शशि क्षत्री सुरपति नृप यक्ष ॥ राजानाम पांच प्रत्यक्ष
३१० (वाणिनी) वाणिनीहि नर्त्तकी बखान ॥ वा-
णिनीहि दूतीमत जान ३११ (वाहिनी) वाहिनिनदी
स्त्रवन्ती सन्त ॥ वाहिनि सेनाहै गुणवन्त ३१२ (ह्रादि-
नी) बिजुलीनाम ह्रादिनी भाई ॥ वज्रह्रादिनी कहि दर-
शाई ३१३ (कामिनी) नारिमात्र कामिनी कहावे ॥
कामिनि अरु बांदा बतलावे ३१४ (तनु) खालहि तनु
तनु देह सुजान ॥ कवि चातुर जन भजे भगवान ३१५
(सूना) अधोजिह्विका पुत्रीवध थल ॥ हिंसानामतीन
सूनादल ३१६ (वितान) तुच्छ शून्य यज्ञहि विस्तार ॥
मन्द वितान पांच परकार ३१७ (केतु) कार्य पताका

डपनी मंत्रन ॥ केतुनाम चातुर चारोंमन ३१८ (ब्रह्म)
ब्रह्म वेद ब्रह्महि चैतन्य ॥ ब्रह्म नाम तपस्या है जन्य
३१९ (ब्रह्मा) ब्रह्मा बिप्र प्रजापति नाम ॥ चतुरदास
भज श्यामा श्याम ३२० (गंधक) उत्साहन हिंसा अरु
सूचन ॥ तीननाम गन्धन कविके मन ३२१ (आतञ्च-
न) जावन जवन वेग प्रतिवाप ॥ आप्यायन आतञ्चन
आप३२२(व्यञ्जन) दाढ़ी मुच्छ चिह्न निष्ठान ॥ जेमन
अंगव्यञ्जनहिजान ३२३ (कौलीन-दोहा) लोकापवा-
द है पशू सर्प्प पक्षिका युद्ध ॥ पांच कुलिनता सहित ये
कौलीन नाम सरशुद्ध ३२४ (उद्यान--चौपाई) निकरने
उपवन नाम निदान ॥ प्रयोजनहि उद्यान बखान ३२५
(स्थान) अवकाश नामअस्थान बखान ॥ अस्थित ना-
म स्थान सुजान ३२६ (देवन) क्रीड़ादेवन देवन ब्यो-
हार ॥ देवन जुआ चतुर विस्तार ३२७ (उत्थान) पौ-
रुष तंत्र कुटुम्बहि उठना ॥ नित्य पंच उत्थान सुबसना
३२८ (व्युत्थान--दोहा) प्रतिरोधविरोधाचरण पारामा-
रण जान ॥ मृतक अग्नि औ अनादर द्रव्यदेन परमान
३२९ द्रव्यादिदेना आदिलेव्युत्थानकेनामदोहामेंहैं(सा-
धन-चौपाई) प्रयोजन सिद्ध करन उपकरण ॥ निवर्त्त-
न अनुगम परिकर वरण ३३० अरु अनुव्रजा उपाय
बखान ॥ अष्ट नाम साधन परमान ३३१ (निर्य्यातन)
शोधनदान धरोहरिदेन ॥ बैरचार निर्य्यातनसेन ३३२
(व्यसन) विपत्ति भ्रंसनाश वा पतन ॥ कोपज कामज
दोषये व्यसन ३३३ (पक्ष्म-दोहा) पलक बरौनी केसर
छोटे सत्र सअंस ॥ चारनाम पक्ष्महि कहे चतुर भजो

हरिहिंस ३३४ (पर्व्व) पर्व्व अमावस पूर्णिमा पर्व्वनाम संक्रान्त ॥ विधिआठम सुधिचतुर्थी पर्व्व उत्सवा सन्त ३३५ (वर्त्म—चौपाई) वर्त्महि पलक बरौनी मार्ग्ग ॥ नेत्रच्छदहि वर्त्म जनतार्ग्ग ३३६ (मैथुन) सांगित सुस्तनाम व्यवहार ॥ नारिपुरुष मैथुनजनचार ३३७ (कौपीन) अकार्य्यनाम कौपीनक भाई । गुह्यपुनीकौपीनबताई ३३८ (प्रधान) परमात्मा बुद्धी महामात्र ॥ प्रज्ञाप्रकृत प्रधान सुआत्र ३३९ (प्रज्ञान) बुद्धिनाम प्रज्ञान बखानो ॥ चिह्ननाम प्रज्ञान सुजानो ३४० (प्रसून) नामप्रसून पुष्प जनसन्त ॥ फलकानाम प्रसून अनन्त ३४१ (निधन) निधन नाश निधनहि कुलदोय ॥ चतुरदास कवि वर्णत सोय ३४२ (क्रन्दन) रोदन क्रन्दन एकबताया ॥ क्रन्दनपुनि गोहरानहिं गाया ३४३ (वर्ष्म) वर्ष्मदेहपुनिवर्ष्म प्रमान ॥ चतुरदास कहि निश्चय ठान ३४४ (धाम) धाम प्रभाव धाम पुनिदेह ॥ धाम तृषा गृहधाम सनेह ३४५ (संस्थान) चौकमरण पुनि सन्नीवेश ॥ तीननाम संस्थान विशेश ३४६ (लक्ष्म) लक्ष्मचिह्न पुनि लक्ष्म प्रधान ॥ चतुरदास हरि सुमिरुसुजान ३४७ (आच्छादन) वस्त्रादिक ढकना आच्छादन ॥ आच्छादन रुंधनामानुमन ३४८ (आराधन) तोषणसाधनप्राप्तीजान ॥ चतुरचारआराधनमान ३४९ (अधिष्ठान) ग्रामप्रभावचक्र आक्रमण ॥ अधिष्ठान चौथा यह चरण ३५० (रत्न) रत्न आपनी जाती श्रेष्ठ ॥ रत्न मणिहि मानो जन द्रेष्ठ ३५१ (वन) वन जंगल वन पानी मिन्त ॥ चतुरदास गावे गुणवन्त ३५२ (तलिन) तलिन अलप जानो जन-

भाई॥ तलिन बिरल प्रद पूरण गाई ३५३ (समान) पण्डित समसमानको जानो॥ एकहिनाम समान बखानो ३५४ (पिशुन) पिशुन चुगुल पुनि पिशुन खलाखल॥ चतुर दास जानो जन ये भल ३५५ (हीन, न्यून) ऊन अल्प अरु निम्न गनाये॥ हीनन्यूनके नाम बताये ३५६ (तरस्वीन) जल्दबाज अरु शूरवीर दोउ॥ तरस्वीन के नामलखोउ ३५७ (अभिपन्न) महादुखी अपराधीजानो। अभिग्रस्तहि शत्रुनभयठानो॥ ये अभिपन्नके चारों नाम हैं ३५८ इतिनान्ताः॥ (कलाप-दोहा) मयूरपक्षरुभूषण तरकस पुनि तूणीर॥ समुदायक अरु कांचीनाम कलापहिं तीर ३५९ (परीवाप-चौपाई) परिछेद छानाबीनाजानो॥ जल अधार परिवाप बखानो ३६० (गोप) गोदोहन गोपहि करनाम॥ स्वामी गांठ गोप कर ठाम ३६१ (वृषाकपि) वृषाकपिहि विष्णू महराजा॥ वृषाकपिहि शंकर गुण साजा ३६२ (वाष्प) बाष्प वाफ वाष्पहि पुनि आंसू॥ चतुरदास गुण वरणत जासू ३६३ (कशिपु-छंद) कशिपुअन्न॥ कशिपुबस्त्र ३६४ (तल्प) शय्या तल्प अँटारी तल्प॥ नारी तल्प जानये अल्प ३६५ (विटप-दोहा) तृण विटप अस्तम्ब पुनि विटप गुच्छ विस्तार॥ शाखा विटपरु पल्लवहि वृक्षविटप संसार ३६६ (प्राप्तरूप-चौपाई) बुध अरु सुन्दर नाम अनूप॥ प्राप्त रूप अभिरूप स्वरूप ३६७ (कच्छपी) कछुही सारस्वति बीण जन॥ दोउ नाम कच्छपी मान मन ३६८ (कुतप) मृग के रोम बने जो बस्तर॥ दिन के अष्टहिभाग कुतप नर ३६९ इति पा-

न्ताः (रेफ) कुत्सितरेफ रकार रकारा॥ चतुरदास फा-न्ता विस्तारा ३७० इति फान्ताः ॥ (दोहा) बकार वकार बखान ये दोनों एक प्रमान ॥ बरणत जन चातुरगुणी बान्त वान्त जगजान ३७१ (गंधर्व्व) गानेवाले दिव्य यहविश्वावसु तुम्बूर॥ वाजि गवैया अश्वपुनि गन्धवमात्र हुजूर ३७२ (कम्बु—चौपाई) कंकण ग्रीवा हाथी शंख॥ कम्बु सियार पंच यह श्रंख ३७३ (द्विजिह्व) चुगुलनाम है जिह्वा जानो॥ सर्पनाम दोउ जिह्वा मानो ३७४ (पूर्व्व) पूरब और पुरनिया जानो ॥ पूर्वनाम दोउ चातुर मानो ३७५ (कुंभ—दोहा) कुंभघड़ा गजकुंभहै गजमस्तक पुनि कुंभ ॥ कुम्भकर्ण सुतवेश्या बाजराशि है कुंभ ३७६ डिंभ-चौपाई) डिंभनाम बालक गुणवन्त ॥ डिंभकेहे मूरख को सन्त ३७७ (स्तम्भ) नामदोयजड़ता अरुखंभ॥ चतुर दास बरणतअरुस्तंभ ३७८ (शम्भु) ब्रह्माशम्भुशम्भुपुनि शंकर॥ शिवशम्भूभजरेचतुरानर ३७९ (गर्भ) कोषी गर्भस्थल अरुबालक॥ जन्तु गर्भभजचातुरमालक ३८० (विस्रम्भ वा विश्रंभ) प्रार्थना शृंगार सुजान ॥ बालक विस्रम्भहि बलवान ३८१ (दुन्दुभि) दुन्दुभि नाम तुरुही जान॥ दुन्दुभि जुआं द्विलीया मान ३८२ (कुसुंभ) बरै फूल कुसुंभ कहावे॥ करवा नाम कुसुंभा गावे ३८३ नाभि—दोहा) नाभिमुख्य पुनि नाभिनृप क्षत्रियनाभि विशेष॥ ढोंढ़ी नाभी जाहयहे नाभिनाम वरवेष ३८४ (सुरभि—चौपाई) सुरभि वसन्त सुरभिहै धेन॥ सुरभि गाय चातुर के बेन ३८५ (सभा) सभा कचहरी सभा घिराज॥ सभानाम चातुरजनसाज३८६ (वल्लभ) कुलीन

घोड़ा प्रिय अध्यक्ष ॥ चतुरदास मन मोहन रक्ष ३८७ इति भान्ताः (रश्मि—चौपाई) परहा प्रग्रह किरण बखानी ॥ रश्मिनाम तीनहुजगजानी ३८८ (प्लवंगम) वानरपुनि मेढक पल्वंगम ॥ चतुरदास गावे गुण रंगम ३८९ (काम) इच्छा काम काम कन्दर्प्प ॥ चतुरदास गावेसुन नर्प ३९० (पराक्रम) शौर्य्ययत्नसामर्थ्य बखान ॥ चातुरदास पराक्रम जान ३९१ (धर्म्म) धर्म्म पुण्य धर्म्महि यमराज ॥ धर्म्मन्याय धर्म्महि देवसाज ३९२ धर्म्म स्वभाव धर्म्म आचार ॥ धर्म्मनाम चातुर विस्तार ३९३ (उपक्रम) यत्नपूर्व्वकारंभ बखान ॥ मंत्रि स्वभाव परखनो जान ॥ येनाम उपक्रम के हैं ३९४ (निगम) वाणिकपथ वणिज्य पुनि नग्गर ॥ वेद निगम चतुराये विस्तर ३९५ (नैगम) नागर अरु बनियां दो नाम॥ नैगमभेद चतुरजन दाम ३९६ (राम—दोहा) राम नाम बलदेव है राम नाम श्रीराम ॥ नीलचारु श्वेतहि कहे जमदग्नी सुतनाम ३९७ (ग्राम—चौपाई) वृन्द ग्राम पुनि गाऊंग्राम ॥ ग्रामनाम चातुर गुणधाम ३९८ (विक्रम) विक्रमणहि विक्रम कर नाउं ॥ पराक्रमहि विक्रम गुणठाउं ३९९ (स्तोम) स्तोत्र यज्ञ पुनि वृन्द बखान॥ स्तोमनाम चातुर जग जान ४०० (जिह्म) जिह्म नाम टेढ़े अरसहा ॥ अमरकोष से चातुर कहा ४०१ (धर्म्म) धर्म गर्म अरु धर्म पसीना॥ चतुरदास यह अमरनवीना ४०२ (विभ्रम) चेष्टा लंकारहि शोभा यह ॥ हाव भ्रांति विभ्रम मानो यह ४०३ (गुल्म) सोन सैन्य रक्षण कुश गुच्छा ॥ पिलही रोग स्तम्ब गुल्मछा ४०४

(जामि) भगिनी जामि कुलबधू जामि ॥ चतुर दास भजता श्री स्वामि ४०५ (क्षमा) क्षमा नाम पृथ्वी परवीन ॥ सहनशीलता क्षमा सो चीन४०६ (क्षम) युक्तयोग्य शक्त हितजानो ॥ क्षमके नाम चार पहिंचानो ४०७ (श्याम)हरेरनाम श्याम बलवन्त ॥ श्यामकृष्ण जाहिर यशवन्त ४०८ (श्यामा–दोहा)श्यामा नाम शतावरी श्यामा शारी मान ॥ श्यामा शक्ती राधिका श्यामा रजनी जान ४०९ (ललाम) पूंछ पुण्ड अश्वादिक घोड़नका लिल्लार ॥ घोड़ेका भूषण ध्वजा प्रधान ललामासार ४१० (सूक्ष्म—चौपाई) सूक्ष्माध्यात्म सूक्ष्मबलवन्त ॥ छलसूक्षम दोउ नाम भनन्त४११ (प्रथम)प्रथम आद्य प्रथमहि परधान ॥ चतुरदास दोउ नाम बखान ४१२ (बाम) शोभा उलटा टेढ़ा शङ्कर ॥ चारनाम बाम हिकर गुणकर ४१३ (अधम) अधम न्यून अरु अधम खराब ॥ चतुरदास दोउनाम मुताब ४१४ (यातयाम) परिमुक्ता जीरण यतयाम ॥ चतुरदास मान्ता विश्राम ४१५ इति मान्ता ॥ (तार्क्ष्य) गरुड़नाम तार्क्ष्यहिका बाँचे ॥ तार्क्ष्यनामघोड़ा गुणानाचे ४१६ (क्षय) अपचय गृहकमती कल्पान्त ॥ क्षयकेनामचार गुणवन्त ४१७ (श्वशुर्य्य)देवरनाम श्वशुर्य्य प्रमान ॥ श्वशुर्य्य सारेका जग जान ४१८ (भ्रातृव्य) भ्रातृव्यहि शत्रू सतमान ॥ नाम भतीजा दूसर जान ४१९ (पर्जन्य) शब्दित मेघ इन्द्र महराज ॥ पर्जन्य नाम दोऊघन गाज ४२० (अर्य्य) स्वामी अर्य्य अर्य्य पुनि वैश्य ॥ चतुरदास भज बासरमैश्य ४२१ (तिष्य) कलियुग पुष्य नाम नक्षत्र॥

तिष्यतीन चातुर गुणमन्न ४२२ (पर्याय) अवसर क्रम पर्य्यायित मानो॥ चतुरदास इउ शब्द पिछानो ४२३ (प्रत्यय-दोहा) शपथ ज्ञान बिश्वासपुनि छिद्र शब्द आधीन॥ हेतुनाम प्रत्यय प्रती चतुर बरणत जीन ४२४ (अनुशय-चौपाई) पछितानो अनुशय जगजानो॥ अनुशयबहुत बिगार बखानो ४२५ (स्थूलोच्चय) असाकल्यकमहाथी झुंड॥ अस्थूलोच्चय है ब्रह्मंड ४२६ (समय) शपथनाम सौगन्धहि खान॥ कालसिधान्तनाम परमान ४२७ अच्छीभाषा पुनिआचारा॥ समयनाम चातुर बिस्तार ४२८ (अनय-दोहा) अनय व्यसन विपती अनय अनय जुआं जगजान॥ अनय अशुभ अरु भाग्यता चतुरदास परमान ४२९ (अत्यय-चौपाई) अतिक्रम कष्ट दोष पुनिदण्ड॥ अत्ययनाश पंच ब्रह्मण्ड ४३० (सम्पण्य) युद्ध आयतिहि उत्तरकाल॥ पुनी आपदा सम्पण्याल ४३१ (पूज्य) पूजा योग्य पूज्य परबीन॥ श्वशुर पूज्य जग जाहिरचीन ४३२ (सन्नय) सन्नय सेना पीछे सैन॥ सन्नयनाम समूहा कैन ४३३ (संस्त्याय) बिस्तरतिसन्निवेश संघीत॥ असंस्त्याय तीनों विख्यात ४३४ (प्रणय) विश्वास और पुनि यांचा जान॥ प्रेमहि नाम प्रणय परमान ४३५ (समुच्छ्रय) समुच्छ्रय नाम विरोध बखान॥ उन्नत नाम समुच्छ्रय जान ४३६ (विषय) शब्दरूप रसगंध स्पर्श॥ बिषयनाम चातुर जन दर्श ४३७ (कषाय) बिलेपनादिहि काढ़ा दोय॥ नाम कषाय जानियो सोय ४३८ (प्रतिश्रय) आश्रय सभा अभ्युपम जानो॥ प्रतिश्रय नाम चतुर पहिंचानो॥ ४३९ (प्राय) बहुताई मृत्यू अरु

अरुपाप ॥ मरण निमित अन्नादिक आप ४४० येप्रायक्त नामहैं (मन्यु-दोहा) यज्ञ शोक पुनि दीनता नाम कोप महदेव ॥ पांचनामये मन्युके चतुरा हरिहरसेव ४४१ (गुह्य-चौपाई) उपस्थ गोप्य गुह्य का नाम॥ चतुरदास भजले श्रीराम ४४२ (सत्य) सौगंध खाना सांच बखान ॥ दोऊ नामये सत्य सुजान ४४३ (वीर्य्य) बल कोनामवीर्य्य बलवन्त ॥ वीर्य्य प्रभाव नाम जन सन्त ४४४ (द्रव्य) भव्यसत्व पृथिवी गन्धादिक ॥ धनहि गुणाश्रय द्रव्य मान सक ४४५ (धिष्ण्य) गृह अस्थानहि धिष्ण्य बखानो॥ चतुरदास चातुर जग मानो४४६ (भाग्य) पूर्व्व जन्म के कर्म शुभाशुभ ॥ अग्नि भाग्य नक्षत्र जानु सभ ४४७ (गांगेय) सुवर्ण गांगेय नाम कशेरू ॥ कशेरुहा गांगेयहि टेरू ४४८ (विशल्या) गुरुचहिअग्नि शिखा दंतीया॥ विशल्या नाम चार गुरुदीया ४४९ (वृषा कपायी) वृषा कपायी रमा भवानी॥ चतुरदास रत्नापुर ज्ञानी ४५० (अभिख्या) नामहि नाम अभिख्या जान ॥ शोभा सोई अभिख्या मान ४५१ (क्रिया-दोहा) निष्कृति चेष्टाचिकित्सा शिक्षाकर्म उपाय॥ संप्रधरण प्रायश्चितहि आरंभ नाम नवगाय४५२ पूजन भी याका नामहै॥ ये दश नाम क्रियाके हैं॥ (छाया-चौपाई) रविनारी कान्ती परछाहीं ॥ छाया छाया चार बताहीं ४५३ (कक्ष्या) है हर्म्यादि प्रकोष्ठ अँतर्गेह ॥ मध्ये भवन्धनहि मेखल इह ४५४॥ ये कक्ष्या के नामहैं (कृत्या) कृत्या क्रिया तामसी देव॥ चतुरदास गोवर्द्धन सेव ४५५ (जन्य) निन्दितवाद हट्ट संग्राम ॥ जन्यनाम

चातुर गुण धाम ४५६ (जघन्य) अंत जघन इन्द्रिय पुनि लिंग॥ चातुर नाम जघन्य प्रसंग ४५७ (वक्तव्य) गर्ह्यनिघ्न आहीन बखान॥ कहन योग्य वक्तव्य सुजान ४५८ (कल्य) सज्ज समग्री युक्त कल्यान॥ रागरहित कल्यहि सतजान ४५९ (अत्थ्र्य) अपगत आत्मवान धीमान॥ अर्थ नामको अत्थ्र्य बखान ४६० (पुण्य) सुन्दर पुण्य पुण्य सुकृतये॥ पावन धर्म पुण्य चातुर ये ४६१ (रूप्य) प्रशस्त सुवरण चांदीमात्र॥ रूप्यनाम चातुर गुणयात्र ४६२(वदान्य)उत्तम बोलनवाले दात॥ वदान्य नाम चातुर गुण माता ४६३ (मध्य) उचित और अवलग्नहि नाम॥ मध्यनाम गावो घनश्याम ४६४ (सौम्य) सुंदर बुध दैवत पुनि गाये॥ सोमह सौम्यनाम दरशाये ४६५ इति यान्ताः॥ (बार) निवह वृन्द अवसर पुनि बार॥ सूर्य्यादी दिनबार बिचार ४६६ (संस्तर) यज्ञ अध्वर प्रस्तर कुशमुष्ठी॥ कुशशय्या संस्तरहै दुष्ठी ४६७ (गुरु) बृहस्पति पिता वेदजो बांचे॥ पढ़े पुराण सोई गुरु सांचे ४६८ (द्वापर) तीसरयुग द्वापर जानो नर॥ संशयनाम द्वापरहि कावर ४६९ (प्रकार) सदृश्य नाम प्रकार पुकारा॥ भेदप्रकार चतुर विस्तारा ४७० (आकार) चेष्टितनाम नाम आकार॥ आकृतिहू आकार विचार ४७१ (किंशारु) सींकुर बाण अन्नकी बाली॥ सस्यशूक किंशारू आली ४७२ (मरु) धन्वा निर्ज्जल देश सुमेरू॥ पर्वत मेरू नाम सुहेरू ४७३ (अद्रि) सूर्य्य बृक्ष पर्वत पुनि जानो॥ अद्रि नाम तिनहुंन का मानो ४७४ (पयोधर) बादर कुचन पयोधर नाम॥ च-

तुरदास रचता रतलाम ४७५ (कर–दोहा) कर शत्रू-
कर दानव कर किरणा करभेट ॥ करध्वान्ता अंधेरहै कर
वृत्रासुरकेट ४७६ (प्रदर–चौपाई) करपदजरे भामिके
भिन्ता ॥ भांगबाण प्रदरहि गुणवन्ता ४७७ (अस्र)
अस्रनाम कोनेका भाई ॥ अस्रनाम बारहि जनगाई ४७८
(तूबर) तूबर वृषभ श्टङ्गका हीन ॥ तूबर नर बिन डांड़ी
चीन ४७९ (रै) सुवरण द्रव्यमात्र रै जानो ॥ चतुरदास
कह सांची मानो ४८० (परिकर) पर्य्यंकः परिकर परि–
वार ॥ चतुरदास भज श्रीगोपार ४८१ (तार) मुक्ता
छेदन तरणा यंत्र ॥ ऊंचेस्वर मुक्ता शुधसंत्र ४८२ चांदी
आदिका तार नामहै (शार) कवलेरंग वायु पुनिशार ॥
चतुरदास कीन्हा विस्तार ४८३ (संगर) युद्ध प्रतिज्ञा
आपद संगर ॥ संवित क्रिया कार मानोनर ४८४ (मंत्र)
वेदभेद एकांत सलाह ॥ देव साधना मंत्र कलाह ४८५
(मित्र) मित्रनाम दिनकर पहिंचानो ॥ मित्रहितू हित-
कर करमानो ४८६ (स्वरु) यज्ञ बाण अरु यज्ञस्तंभा ॥
तेहिका प्रथम खंड स्वरु खंभा ४८७ (अवस्कर) गुह्य
ग्रहनाम अवस्था जान ॥ अवस्कर नाम तीन पहिंचान
४८८ (आडम्बर) गज गर्ज्जना अडम्बर नाम ॥ बाजा
नाम अडम्बर दाम ४८९ (अभिहार) अभिग्रह चोरी
कवचहि धार ॥ तीननाम चोरी अभिहार ४९० (प-
रिवार–दोहा) जंगम परिजन खंडये कोश परिच्छद
जान ॥ म्यान नाम उपकरण ये पद परिवारजमान ४९१
(विष्टर–चौपाई) विटपी दर्भ मुष्टि पुनि वृक्ष ॥ पीढ़ा
कुश मूठी विष्टर्क्ष ४९२ काष्ठ आसनका भी विष्टर नाम

है (प्रतीहार) द्वार द्वारपालक प्रतिहार ॥ चतुरदास
कवि कहत पुकार ४९३ (प्रतीहारी) गृहके भीतर रहने
वाली ॥ लौंड़िआदि प्रतिहारी आली ४९४ (बभ्रु)
विष्णू पिंगल है बड़न्योरा ॥ बभ्रुनाम चातुरजन ब्योरा
४९५ (सार) बल सायरहि श्रेष्ठ पुनि न्याय ॥ सार
नाम चातुर दरशाय ४९६ (दुरोदर) जुआ जुआरी
बाजीनाम ॥ नाम दुरोदर जानो दाम ४९७ (कांतार)
महारण्य बिल दुर्गमसारम ॥ ऊंख क्यतारा कांतार
सग ४९८ (मतार) ब्यखुराना कृपणहि कवि गावे ॥
ब्यखुरानाम मतार बतावे ४९९ (वर-दोहा) वर
देवत वाञ्छा करन कुंकुम श्रेष्ठद साद ॥ थोड़े प्रियवर
नाम ये चतुरा वरणे साद ५०० (करीर) करिल वृक्ष
करवाय करील ॥ नाम करील चतुरजन मील ५०१
(प्रतिसर) रक्षासूत्र घावशुध होना ॥ प्रतिसर नाम
सेन अँगजोना ५०२ (हरि-कुण्डलिया) हरिविष्णू
हरि पवन है हरि दिनकर यमराज ॥ हरीचन्द्र हरि
इन्द्रहै हरी सिंह मृगराज ५०३ हरीसिंह मृगराज किरण
हरि घोड़ा जानो ॥ हरिसूआ हरिसर्प्प हरी वानर पहिं-
चानो ५०४ कहै चतुरदास कबिराय श्रीहरि मेंढक यह
नाम ॥ हरारंग हरिनामहै हरिका शब्द ललाम ५०५
(शर्करा-दोहा) कर्परांश सिटकी यह सिटकिदेश पुनि
खांड ॥ पत्थर पांचों शर्करा चतुरदास ब्रह्मांड ५०६
(यात्रा-चौपाई) उत्सव देव चलन पुनि यात्रा ॥ या-
पनयात्रा नामहि मात्रा ५०७ (इरा) जल मदिरा पुनि
वाणी जान ॥ पृथ्वी इरा नाम पहिंचान ५०८ (तन्द्री)

निद्राश्रम मुरझाना मानो ॥ तन्द्री तीन नाम जगजानो ५०९ (धात्री) पृथ्वी अवँरा माता मान ॥ दूध पिलावे धात्री जान ५१० (क्षुद्रा) व्यङ्गा नटी नाचने वाली ॥ मधुमाख्वी वेश्या गुणआली ५११ माछी भांटा बाघिनि जानो ॥ क्षुद्रानाम चतुर पहिंचानो ५१२ (क्षुद्र) कृपण दरिद्र अल्प निर्लज्ज॥ अधमहि क्रूर निकृष्ट क्षुद्रज्ज ५१३ (मात्रा) अल्प परिच्छद पुनि परिमान ॥ मात्रानामतीन जगजान ५१४ (मात्र) अवधारण संपूर्ण बताय ॥ मात्र नाम है दीन दिखाय ५१५ (चित्र) चित्र चित्रसारी यक मानो ॥ आश्चर्य चित्र दूजा पहिंचानो ५१६ (कलत्र) कलत्र यक करिहाँव कहावे ॥ कलत्र पुनि नारी दरशावे ५१७ (पात्र) बर्त्तमान दानादी देना ॥ योग्य पात्र द्वउ नाम कहेना ५१८ (पत्र) पत्रपंख पुनिपत्र सवारी ॥ पत्ता चिट्ठी पत्र पुकारी ५१९ (शास्त्र) शास्त्र आज्ञा शास्त्रहि ग्रन्थ ॥ चतुरदास निम्बारक पन्थ ५२० (शस्त्र) शस्त्र नाम आयुध जग जानो ॥ शस्त्रनाम लोहा पहिंचानो ५२१ (नेत्र–दोहा) नेत्र नयन अरु नेत्र सुख नयनू नेत्र बखान ॥ जरवृक्षाकी नेत्रहै वस्त्र आंखि नेत्रान ५२२ (क्षेत्र–चौपाई) नारि शरीर नैमिषारन्य ॥ सिद्धस्थान खेत क्षेत्रन्य ५२३ (पोत्र) शूकर पोत्र पोत्र हरजान ॥ पोत्र मुखाग्र नाम वरमान ५२४ (गोत्र) नाम पर्व्वतहि कुलका जान ॥ गोत्रनाम चातुर परमान ५२५ (सत्र) नित्यदान वनछल यज्ञान ॥ वस्त्रहि नाम सत्र परमान ५२६ (अजिर–दोहा (विषयरूप रस गन्ध ये स्पर्श शब्द देहमान ॥ मेढुक अँगना वायुके चौतर अ-

जिर बखान ५२७ (अम्बर-चौपाई) अम्बर नाम वस्त्र का जान॥ अम्बर पुनि आकाश बखान ५२८ (चक्र) अस्तर चाक उपद्रव सेन॥ पहिया चक्र विशेषहि केन ५२९ (अक्षर) अक्षर मोक्ष वर्ण पुनि अक्षर॥ चतुरदास भज मूरख हलधर ५३० (क्षीर-छंद) क्षीरपानी॥ दूध जानी ५३१ (भूरि-चौपाई) भूरि विष्णु पुनि भूरीस्वर्णा। भूरीहरि भूरी अजशर्ण ५३२ (चन्द्र) स्वर्ण चन्द्रमा जल पुनि चन्द्र॥ नाम कपूर चन्द्र जगबन्द ५३३ (गोपुर) गोपुर पूर्व्वक गोपुर द्वार॥ द्वारमात्र गोपुर विस्तार ५३४ (गह्वर) दंभ निकुंज गुहा वन जान॥ गह्वरतीन नाम परमान ५३५ (उपह्वर) निर्ज्जन पुनि जु स्थान समीप॥ उपह्वर नाम तीन यह दीप ५३६ (अग्र) पुर अधिकी ऊपरका नाम॥ अग्र भेद दोसुनियो दाम ५३७ (पुर) गृहपुर नगर नाम विस्तार॥ चतुरदास भज सिरजन हार ५३८ मन्दिर भी इसीका नामहै (राष्ट्र) राष्ट्र उपद्रव राष्ट्रहि देश॥ चतुरदास कह सुनो नरेश ५३९ (दर) भयदरश्वभ्र गढ़ादर जानो॥ चतुरदास ब्रजवल्लभ मानो ५४० (वज्र) हीरावज्र वज्र इन्द्रहि कर॥ भिदुर वज्रका नाम सुनो नर ५४१ (तंत्र-दोहा) प्रधान पुनि सिद्धांतहै कोरी परिछद जान॥ शास्त्रकुटुम्ब कुटुम्ब जन कृत्यतंत्र पहिंचान ५४२ (औशीर) चमर डांड़ खसखस की टट्टी॥ आसन शयन औशिरा बट्टी ५४३ (पुष्कर-कुंडलिया) पुष्कर हाथी शुंडहै आगे सुख जलजान॥ बाजाके बरतन यही पुनि आकाश बखान ५४४ पुनि आकाश बखान खड्गतीरथ मधिमानो॥ कमलनाम कुट

ओषधी नाम विशेषा जानो ५४५ कह चतुरदास कवि-
राय नाम पुष्करके मित्ता ॥ बांचो सुनो सुजान हमारे
साहब सन्ता ५४६ (अन्तर) अन्तर्द्धौ अवकाश येवस्त्र
नाम अवधीह ॥ भेदनाम अब बारणा अवसर मध्य गु-
नीह ५४७ अवसर मध्य गुनीह बिना बाहर के जानो ॥
अर्थछेद आत्मीय नाम अन्तर पहिंचानो ५४८ कह च-
तुरदास कविराज अमरकी सुनलोबाता ॥ अन्तरात्म सा-
दृश्यनाम अन्तर विख्याता ५४९ (पिठर—चौपाई) पिठर
नाममोथा परवीन ॥ पिठर माथनी नाम नवीन ५५०
(नागर—दोहा) राजकसेरू पण्डित नागरमोथा जान ॥
शटी नम्र जन उत्पन नागर नाम प्रमान ५५१ (शा-
र्व्वर—चौपाई) अन्धकार पुनि गाढ़ विचारो ॥ आन
जीवहन शार्वरवारो ५५२ (गौर) अरुण सितहि पित
उज्ज्वल सरसो ॥ चन्द्रकवल धुलि गौर उचरसो ५५३
(अरुष्कर) अरुष्कर भावकरनवाला जन ॥ भिलवा
नाम अरुष्करहेमन ५५४ (जठर) कठिनपेट पुनिवृद्ध
बताया ॥ जठर नाम चातुर जनगाया ५५५ (अधर)
हीन ओष्ठ ऊंचा नीचा पुनि ॥ अधरनाम चातुर गावे
गुनि ५५६ (एकाग्र) स्वस्थरु एकतानकरनाम ॥ ए-
काग्रहि चातुर आराम ५५७ (व्यग्र) आकुल द्विविधा
वाले जान ॥ व्यासक्तरू व्यग्र त्रयमान ५५८ (उत्तर)
दिशा श्रेष्ठ उपरी पुनि उत्तर ॥ चतुरदास समझो यह
सुत्तर ५५९ (अनुत्तर) इन सबका उलटा अर्थ मान ॥
श्रेष्ठ अनुत्तर चातुरजान ५६० (पर) दूर अनात्मा
उत्तम अन्य ॥ शत्रु नाम पर चातुर भन्य ५६१ (मधुर—

छन्द) प्रियस्वादू ॥ मधुरादू ५६२ (क्रूर) निर्दय कठिन ॥ क्रूर सुअठिन ५६३ (उदार–चौपाई) दक्षिण दाता महान भिन्त ॥ नाम उदार चतुर गुणवन्त ५६४ (इतर–छन्द) अन्य नीच जान ॥ इतरा प्रमान५६५ (स्वैर) स्वाधीम मन्द ॥ स्वैरछन्द ५६६ (शुभ्र) प्रदीप्त मान ॥ शुक्लसुजान ५६७ (इति रान्ताः) मौली–दोहा) मौली शिखा किरीट है मौली बांध बार ॥ मौलीमुण्ड बखानिये चतुरदास विस्तार ५६८) पीलू–चौपाई) पीलु वृक्ष गजकाण्ड बखान ॥ बाण फूल पीलू परमान ५६९ (काल) कृष्णवर्ण पुनि मृत्यु अनेहा ॥ कृतान्त समय यमकाल बतेहा ५७० (कलि) कलहरु कलि चौथायुग शूर ॥ कलिकेनाम चतुर भरपूर ५७१ (कमल) मृगजल पद्म ताम्र कूरंग ॥ कमल नाम है जलके संग ५७२ (कम्बल) कम्बर गलकमरी खरमकरा ॥ शर्पनाम कम्बल गुणअतरा ५७३ (बलि) भेंटब नजर नाम उपहार ॥ पूजासामग्री विस्तार ५७४ सिकुलखाल पुनि सुत प्रह्लाद ॥ चतुरदास बरणत गुणसाद ५७५ (बल) समर्थ कौआ अरु बलभद्र ॥ सैन्य म्वटाई है बलअद्र ५७६ (बातूल) बायुसमूह नाम बातुलये ॥ बाईसहने बातुल मनये ५७७ (व्याल) शठ पशु सिंह सर्प्प पुनि व्याल ॥ चतुरदास भज श्रीगोपाल ५७८ (मल) विष्ठा पापकीट मैलामल ॥ चतुरदासजानो ज्ञानीकल ५७९ (शूल) आयुधशूल शूल रोगातन ॥ शूल शूरजानो ज्ञानीमन ५८० (कील–कीला) लोहा आदि दंड परमान ॥ कीलनाम ज्वाला

जगजान ५८१ (पालिपाली) पांति चिह्न अरु धराव कौन ॥ पालि पाली है चातुर जौन ५८२ (कला) बाजागीत निपुणता भाई ॥ काष्ठा तीसकला दरशाई ५८३ (आली) पंक्ति आली सखीसो आली ॥ चतुरदासभज श्रीवनमाली ५८४ (बेला) लहरी पानी काल किनारा॥ मर्यादा सागर बेलारा ५८५ (बहुल) कृतिका काल अग्नि पुनि गाय ॥ बहुल चतुरपद दीनदिखाय ५८६ (लीला) लीला क्रिया खेल पुनि लीला ॥ लीलाबाल खिलास रँगीला ५८७ (उपल) उपलरु सिटकी उपलाक्रम्म ॥ उपलहै पत्थर उपला धम्म५८८(कीलाल-छन्द) रुधिर पानी ॥ किलाल सानी ५८९ (मूल) प्रथमशिफा जर ॥ मूल कह्योनर ५९० (जाल-दोहा) सूत्रादि निर्म्मित रसी कली फुलानी दंभ ॥ मृगफन्दा मछलीसमू जाल झरोखा यंभ ५९१ शणभी जाल को कहैं ॥ (शील-चौपाई) शील अच्छे वृत शील स्वभाव॥ चतुरदास ब्रजरज शिरनाव ५९२ (फल -छन्द) लाभ जान ॥ फलकाप्रमान ५९३ (पटल-चौपाई) छप्पर छान समूह सुजान ॥ नेत्ररोग पुनि पटल बखान ५९४ (तल-छन्द) नीचे स्वरूप ॥ तल नाम भूप ५९५ (चौपाई) दण्डभाग साठो परवीन ॥ मांसनाम फलदौ जग चीन ५९६ (पाताल) और्व्वानल बड़वानल माल ॥ नागलोकादि तिनों पाताल ५९७ (चैल) चैल नाम वस्त्रै दिखलाउ ॥ चैल अधम दुतिया पद गाउ ५९८ (कुकूल) कीलसे प्राप्त गड़ह बूसी जन ॥ अग्नी आदि कुकूल सदा मन ५९९ (केवल) निश्चित के-

चल केवलएक ॥ सम्पूरणता केवल देख६००(कुशल) पर्य्याप्तीसमर्त्थ शिक्षीत ॥ क्षेमहिपुण्यकुशल परतीत ६०१ (प्रबाल) अंकुरसूंगा दण्डरु बीना ॥ नवपल्लव प्रबाल जगचीना ६०२ (स्थूल) जड़ मोटे निर्बुद्धी जान ॥ स्थूल नाम तीन परमान ६०३ (कराल) द-न्तुर उन्नत दांतहि वाला ॥ नाम भयानक ऊंच कराला ६०४ (पेशल) पेशल चारू पेशल दक्ष ॥ पेशलनाम दोय जनरक्ष ६०५ (बाल–दोहा) बालक लड़का मूर्ख अरु गज घोड़ा पुनि बार ॥ पुच्छ सुगन्ध सुगन्ध है बालाबाल विचार ६०६ (लोल–चौपाई) चलायमान आकांक्षा युक्त ॥ लोल नाम चातुर जनभक्त ६०७ इति लान्ताः (दव) वनकी अग्नीका नाम ॥ दव दावा चातुर जनआम ६०८ (भव) भव जन्महि भव शंकर देम ॥ भव संसार नाम गणयेम ६०९ (मंत्री) सहा-यकहि सौमित्र बखान ॥ मंत्रीनाम सलाही जान ६१० (धव) धवपति धवनर धवहै खेर ॥ चतुरदास हरिपद रजहेर ६११ (अवि) अविपर्व्वत अवि भेड़ा जान ॥ अवि दिनकर जन चतुर बखान ६१२ (हव) हव यज्ञहि हव आज्ञा मान ॥ हवपुकार हवहै आह्वान ६१३ (भाव–दोहा) अभिप्राय चेष्टाकही पण्डित जन्तु स्वभाव ॥ लीला जन्म पदार्थये सत्ताहो जन भाव ६१४ ऐश्वर्य्य और आत्माका नाम भी भावजानो (प्रसव) उत्पादहि उत्पतिसमय गर्भमोचन गुणवन्त ॥ फल पुष्परु उत्पत्ति यह प्रसव नाम जन सन्त ६१५ (नि-ह्नव–चौपाई) अविश्वास अपलाप निकृति शठ ॥ नि-

ह्नत नाम चातुरा यहरठ ६१६ (उत्सव) उदूगति कोप महा आनन्द ॥ प्रसरवेग उत्सेक सनन्द ६१७ ये उत्सवके नामहैं (अनुभाव) निश्चय पण्डित ज्ञान प्रभाव ॥ अनुभावहि चातुर गुणगाव ६१८ (प्रसव) जन्ममूल अस्थान सो ज्ञान ॥ पित्र प्रथम प्रसवहि परमान ६१९ (पारशव) शूद्रा बिच द्विजसे उत्पन्न ॥ फरशा पार्शव नाम भनन्न ६२० (ध्रुव–दोहा) ध्रुव विष्णू ध्रुव शङ्कर ध्रुव नक्षत्रज भेद ॥ निश्चित शंकुहि नित्य ध्रुव उत्तानपाद सुत हेद ६२१ ध्रुवका नाम वरगद है (स्व–चौपाई) जाती आत्मा आत्मी धन्न ॥ स्वत्रियवरणे चतुराजन्न ६२२ (नीबी–दोहा) वस्त्रगन्धइस्त्रीकटी परिपण सुरधन जान ॥ राजपुत्र बंधन यह नीबीनाम बखान ६२३ (शिवा–चौपाई) शिवा पार्व्वती शिवा शृगाल ॥ फेरव शिवा गौरि जग बाल ६२४ (द्वंद्व) द्वन्द्व कलह द्वय द्वन्द्वा जान ॥ चतुरदास भजले भगवान ६२५ (सत्व) प्राण द्रव्य वस्तू पुनि जन्तु ॥ वीर्य्य अधिकता सत्व सुसन्तु ६२६ (क्लीव) निर्ब्बल षण्ड नपुंसक जान ॥ क्लीवनाम चातुर जगमान ६२७ बकार वकार सवर्णता मानो ॥ क्लीव वकारान्तहि पहिंचानो ६२८ इति वान्ताः ॥ (वीट्) वैश्याबीटाहि मानुष मात्र ॥ चतुरदास रचता विख्यात्र ६२९ (स्पश) अभिसर समर मनुष चरमूढ़ ॥ स्पशनाम चतुरजन गूढ़ ६३० (राशी) मेषादी राशीपुनि पुञ्ज ॥ राशी नाम चतुरभज कुञ्ज ६३१ (वंश) कुल मस्कर पुनि बांस बखान ॥ वंशनाम चातुर जनजान ६३२ (विकाश) विकाश

प्रकाश विजन हउ जान ॥ चतुरदास भज श्रीभगवान ६३३ (निर्वेश) भ्रुक्ति मँजूरी भोगरु मुच्छन ॥ निर्वेश नाम चतुर वरणे जन ६३४ (कीनाश) कीनाश नाम यमराज बखानो ॥ कीनाश किसान नाम के मानो ६३५ (उपदेश) लक्ष्य निमित पद ओठर जान ॥ चतुरदास जन करत बखान ६३६ (कुश-छन्द) रामांगजकुश ॥ दर्भपानि कुश ६३७ (दशा-चौपाई) दशा अवस्था नाम विचार ॥ छीरा दशा नाम विस्तार ६३८ (आशा) बड़ी आसरा दिशा सो आशा ॥ चतुरदास हरि पद विश्वाशा ६३९ (वशा) वशा हस्तिनी वशा सो नार ॥ चतुरदास भज सिरजनहार ६४० (दृक्) दृक्है ज्ञान दर्शनामिन्त ॥ दृक्है नेत्र मान गुणवन्त ६४१ (कर्कश) साहसीक विवेक रहित कठोर ॥ दुस्सपर्श अमसृणये ओर ६४२ ये कर्कश के नाम हैं ॥ (प्रकाश) अति प्रसिद्ध पुनि धाम बखान ॥ नाम प्रकाश चतुरजन जान ६४३ (बालिश) बालिश लड़का बालक जान ॥ अ-ज्ञानी बालिश पहिंचान ६४४ (कोश-कोष- दोहा) कमल खड्ग पुनि परतला शपथ भेद मूकूल ॥ धन समूह जनकोशये पिधान मृगा नहिं मूल ६४५ इति शांताः ॥ (आनिमिष-छन्द) मछली देवा ॥ आनिमिष केवा ६४६ (पुरुष-चौपाई) पुरुष नाम क्षेत्रज्ञ बखानो ॥ मनुष्य पुरुषजन चतुरामानो ६४७ (ध्वाङ्क्ष) मत्स्याद बगुला पुनि खग काग ॥ ध्वांक्ष नाम चातुरजन राग ६४८ (कक्ष) शुष्क तृणहि काछा कखरी जन ॥ कक्ष नाम बनलता जान मन ६४९ (अभीषु) रश्मि किरण

प्रग्रहजन जानो ॥ पगहा नाम अभीषूमानो ६५० (प्रैष) नाम पठाना प्रेषण मर्द्दन ॥ प्रैष नाम वरणत चातुर जन ६५१ (पक्ष) नाम सहाय पक्ष परवीन ॥ मासार्द्ध पक्ष इउनाम प्रवीन ६५२ (उष्णीष) शिरोवेष्ट पगड़ी अरु मुकुट ॥ उष्णीषहि जन चातुर मुकुट ६५३ (वृष) शुक्रल पेल्हर मूस सुजाना ॥ श्रेष्ठ सुकृत अरु बैल बखाना ६५४ (आकर्ष) जूआं पांशा शारी चौपरि ॥ आकर्षनाम जानो बुद्धीधरि ६५५ (अक्ष) इन्द्रिय अक्षअक्ष तृतियाये ॥ चतुरदास व्रजरज शिरनाये ६५६ (कर्षू-कुण्डलिया) द्यूतांग पाशा कर्षये मानभेद व्यवहार ॥ पहिया कलिद्रुम जीविका कार्षाग्निहि विस्तार ६५७ कार्षाग्निहि विस्तार करसिकी अग्नी जानो ॥ छोटी नदिया नाम नाम बह्मरा पहिंचानो ६५८ कहै चतुरदास गुरु ज्ञान कर्षुके नाम पुकारी ॥ भज व्रजवल्लभ जीव प्राणरक्षण गिरिधारी ६५९ (पौरुष—चौपाई) पुरुष भाव तिसके पुनि कर्म्म ॥ पौरुषनाम यहीका धर्म्म ६६० (विष) माहुर पानी विषके नाम ॥ भजो चतुरजन श्री घनश्याम ६६१ (आमिष) उत्पति दान मांस ऊपाजन॥ उत्कोचहि आमिष जानोमन ६६२ (किल्विष) किल्विष पाप महतही जानो ॥ किल्विष रोग घना पहिंचानो ६६३ (वर्ष) वृष्टि लोकभारत पुनिखंड ॥ धात्वंश वत्सर वर्षण्ड ६६४ (पेत्ता) प्रेक्षानृत्य देखना मिन्त ॥ प्रेक्षानाम प्रतिज्ञा सन्त ६६५ (भित्ता) नाम अर्थना सेवा याचना॥ भक्तिमंजूरी भिक्षाये जन ६६६ (त्विट) शोभाकान्ती वाणिरुचीर ॥ त्विट चातुर जन जान अमीर ६६७ (न्य-

त्त) नाम निकृष्ट परशुधर स्वामी ॥ न्यक्षनाम इउ चतु-
रानामी ६६८ (अध्यक्ष) अधिकृत नाम नियुक्तहि जान॥
प्रत्यक्ष अध्यक्ष नाम परमान ६६९ (रूक्ष) स्नेहाभाव
रूषरूक्षान ॥ चतुरदास भजरे भगवान ६७० इति
षान्ताः ॥ (हंस-दोहा) उजले पर अजबाहन श्वेतच्छद
परमान ॥ सूर्य्यनाम पुनि हंसहै चतुराकरे बखान ६७१
(बिभावसु-चौपाई) बिभावसू भास्कर भगवाना ॥ बि-
भावसू पुनि अग्नि बखाना ६७२ (वत्स) बछवा वत्स
वत्स पुनि वर्ष ॥ तर्णक वत्सनाम यह हर्ष ६७३ (दिवौ
कस) देवता नाम दिवौकस जानो ॥ चातक पुनि दिवौ
कस पहिंचानो ६७४ (रस-दोहा) करुणादिहिरस नव
विधि विषे वीर श्रृङ्गार ॥ तेज गुणहि स्वादुहि अमिल द्र-
व्यराग रसभार ६७५ (उत्तंस-चौपाई) कर्णफूल शेखर
शिरभूषन ॥ कर्णपूर उत्तंस अवतंसन ६७६ (वसु) देव
भेद धन अग्नी जान ॥ चार नाम पुनि बसु पहिंचान
६७७ (वेधा) वेधा विष्णु वेधा ब्रह्म ॥ चतुरदास धर
इनका धर्म्म ६७८ (आशी) हीता हंसा हितकर नामा ॥
सर्पडाढ़ पुनि आशीदामा ६७९ (लालसा) प्रार्थनाउ-
त्सुकता भाई ॥ नाम लालसा भेद बताई ६८० (हिंसा)
बध करना पुनि चोरी मारण ॥ हिंसानाम चतुरजन का-
रण ६८१ (प्रसू) घोड़ी प्रसू प्रसू पुनि माता ॥ चतुर
दास जाहिर विख्याता ६८२ (रोदसी-दोहा) स्वर्ग पृथी
साझेबसै अलग अलगहै नाम॥ रोदरोदसी रोदस्यो रोद
सीह आराम ६८३ (अर्चि) ज्वाला पुनि दीप्तीकाजान ॥
अर्चि नाम चातुर परमान ६८४ (ज्योति) नक्षत्र प्रकाश

हष्टिका भाई ॥ ज्योतिहि नाम चतुर गुणगाई ६८५ (आग) आगःपापनाम अपराध ॥ चतुरदास गुणगावत साध ६८६ (वय) अवस्था बाल यौवना मिन्त ॥ पक्षी नाम कहे गुणवन्त ६८७ (वर्च्च) तेज बुधहि विष्ठाको जान ॥ वर्च्चह नाम चतुर जन मान ६८८ (मह) मह उत्सव मह तेज प्रकास ॥ अमर बनायो चातुर दास ६८९ (रज) रजस्त्री पुनि पुरुष बखान ॥ रजगुण नाम नाम गुणजान ६९० (तम) राहू तम ध्वान्ते तमले-ख ॥ तमगुण चतुरदास जनपेख ६९१ (छन्द) पद्य नाम पुनि छन्द बखान ॥ इच्छा छन्द चतुर जन जान ६९२ (तप-दोहा) कृच्छ्र सान्तपनादि व्रत अरु चांद्रा-यण जान ॥ पृथ्वीते षटलोक पर धर्म्म आदि तप मान ६९३ (सहसहा नभनभा-चौपाई) सहबल नाम महा बलवन्त। सहा नाम अगहन का सन्त ॥ नभ अकाश गुणवन्त बतावे ॥ नभानाम श्रावण सबगावे ६९४ (ओक ओकाः पय ओज) ओकनाम गृहका गुणवन्त ॥ ओका आश्रय जानो सन्त ६९५ पयपानी पय दुग्धबखान ॥ ओका बल दीप्तिहि जग जान ६९६ (स्रोत-तेज) स्रोत इ-न्द्रियासलिल चलाव ॥ तेजकाम बल दीप्तिप्रभाव ६९७ (विद्वान्) विद्वन् ज्ञाता आत्मा ज्ञानी ॥ विद्वानहि चा-तुर जग जानी ६९८ (बीभत्स) क्रूर विभत्पुनीरसभे द ॥ चतुरश्याम का समझो वेद ६९९ (ज्यायान) अ तिशयार्थ शब्दोंको जान ॥ ज्यायान नाम स्तुती ठान ७०० (कनियान) अतिशय करके ज्वान बखान ॥ अ ल्पनाम कनियान सुजान ७०१ (बरीयान) अतिशय

कर महा श्रेष्ठ बखान ॥ वरीयान चातुर पहिंचान ७०२ (साधी यान) अतिशय कर साधू बड़ जान ॥ साधिय साधीयान पिछान ७०३ इति सान्ताः ॥ (वर्ह) पत्र और गुच्छा गुणधारी ॥ वर्हनाम दोकवि जनभारी ७०४ (ग्रह–दोहा) निर्ब्बन्धहि ग्रह आग्रह मरियादी मरियाद ॥ ग्रहण ग्रह पुनि जानियो चतुरा वरणत नाद ७०५ (निर्व्यूह) द्वारद्वार पुनि मस्तक काढ़ारस नग दत ॥ ग्रहाभांति दोउ कीलये निर्व्यूहा जनसन्त ७०६ (प्रग्रह–चौपाई) घोड़ा बैलबांधने पगहा ॥ तुला सुत्रप्रग्राह गुनीहा ७०७ (परिग्रह) तिय परिवार मूलको माने ॥ राहु ग्रस्तरवि परिग्रह जाने ७०८ (गृह) इस्त्री मंदिर गृहघर धाम ॥ चतुर दास भजले सियराम ७०९ (आरोह) श्रेष्ठ स्त्रीकी कमर अरोहन ॥ गजारोहणहि आरोहहि जन ७१० (व्यूह) सैन्य निवास समूह सुजान ॥ व्यूहनाम चातुर पहिंचान ७११ (अंहि) अहि सर्पहि पुनि अहिवृत्रासुर ॥ चतुरदास गावे गुण सुन्दर ७१२ (तमोपह पर्षाई–दोहा) रवि शशि अग्नि तमोपहै तीन नाम जग जान ॥ परिछद राजा योग्यहै पर्षिहै द्वितीया मान ७१३ (इति हान्ताः) एक वचन द्विवचनये बहुवचना विभक्तान ॥ चतुरदास वर्णन करे जय जय जय भगवान ७१४ (आ आ कु धिक्–चौपाई) स्मरण वाक्य पूर्ण में आ जन ॥ कोप और पीड़ामें आ मन ॥ धिक् निन्दा धिक् है धिक्कार ॥ निन्दा पापनामको सार ७१५ (स्वस्ति) मंगल पुण्यनाम कल्याण ॥ आशिर्व्वाद स्वस्ति परमाण ७१६ (च) अन्वाचयसमुच्चय

समहार॥ इतरेतरचय नाम विचार ७१७ (अतिस्वित्) प्रकर्ष अतिलंघन जनजान॥ वितर्क प्रश्न स्वितहि बलवान ७१८ (तु सकृतआरात् पश्चात्) भेद पुनी अवधारण तूजन॥ साथ एक बार सकृत मन॥ दूर समीप नाम आरात॥ पश्चिमान्त पश्चात् विख्यात ७१९ (उत शश्वत साक्षात्) उतहि विकल्प समुच्चय गाई॥ वारंवार साथ शशताई॥ प्रतक्ष तुल्य नाम साक्षात॥ चतुरदास कवि कहत विख्यात ७२० (बत) खेददया सन्तोष सो चिन्ता॥ विस्मय सम्मुख बतजन मिन्ता ७२१ (हन्त) हर्ष दया हन्त नाम विषाद॥ हन्तरु वाक्यारम्भ अनाद ७२२ (प्रति-दोहा) जौन मुख्य के सदृश है इसे प्रतिनिधिका नाम॥ विप्सा वारंवार ये प्रति चातुर विस्तार ७२३ (इति-चौपाई) हेतु प्रकार प्रकाश समाप्ति॥ एवमर्थ इति नामसोभांति ७२४ (पुरस्तात्) प्राची पूरब प्रथम पुराने॥ प्रार्थे अग्रत ब्रत अर्थहि जाने॥ ये पुरस्तात् के नामहैं ७२५ (यावत् तावत्) अवधारण सम्पूर्ण मयाद॥ साकल अवधी यावत आद ७२६ (अथो अथा) मंगल नाम अनन्तर आरभ॥ प्रश्न पुनी सम्पूरणता छम॥ ये अथाके नाम जानो ७२७ (नाना वृथा) अनेक अर्थे नाम उभयार्त्थ॥ अवधि वृथा जानरे निरर्थ ७२८ (नु अनु) प्रच्छा पूछन नु विकल्पार्त्थ॥ पीछे बरावरी अनुवर्त्थ ७२९ (ननु) प्रश्न पुनी अवधारण अनुनय॥ आमंत्रण अनुज्ञा ये ननुमय ७३० (अपि) गर्हा निन्दि समुच्चय प्रश्न॥ सम्भावन शंका अपि द्रश्न ७३१

(वा सासि) विकल्प वा उपमा जनजान ॥ निन्दित आधे सामी मान ७३२ (अमाकम्) साथ समीप अमा पहिंचान ॥ पानी शिर कम चतुरा मान ७३३ (राव नूनम्) इवरोसा प्रकार रावनाम ॥ तर्कण अर्थ निश्चय नुनदाम ७३४ (जोखमाकिम) तूष्णीं चुपहि सर्त्थ सुख जोखम ॥ पृच्छा पुच्छन निन्दा किम कम ७३५ (नाम-दोहा) अर्त्थ क्रोधउपगम अछे कुत्सन निन्दासार ॥ प्रकाश प्रसिद्धि सभा यह अंगीकार प्रकार ७३६ ये नाम के नामहैं ॥ पुनि वेषभी याही को कहैं ॥ (अलम-चौपाई) परिपूर्णता शक्तीभूषण ॥ अलंकार पर्य्याप्ती अलमण ७३७ (हुम् समया) वितर्कनाम परिप्रश्न सो हुम्॥ अन्तिक मध्य समिम समयाम् ७३८ (पुनर निर) अप्रथम प्रथम अभाव भेदजन॥ निश्चय नाम निषेध नीर मन ७३९ (पूरा) प्रबन्ध काल समय आगामिक्॥ अतितगात निकट पूरा सिक्॥ अर्थभी याको जानो ७४० (ऊरी) अंगीकृत विस्तार विचार ॥ ऊरी उरी उर्ण विस्तार ७४१ (स्वर) स्वर्ग्ग और परलोक मँझारा॥ स्वरजन चतुरा करत पुकारा ७४२ (किल) संभावन करने के योग ॥ वार्त्ता किला चतुरजन योग ७४३ (सुल) निषेध वाक्य भूषण जिज्ञासा॥ इच्छा अनुनय खलु जन दासा ७४४ (अभित) समीप उभयतः दोनों ओर॥ शीघ्र अभिसुखहि अभितहि जोर ७४५ (प्रादू मिथ) नाम प्रकाश प्रादु परवीन॥ मिथ निर्ज्जन अस्थान सुचीन ७४६ (तिरहा) अन्तर्द्धान तिरेछा आर्त्थ ॥ हा विषाद भोजन पीड़ार्थ ७४७ (अहहहि) अद्भुत खेद अ-

इह जनदेखो ॥ हेतु अवधारण निश्चयपेखो ॥ हीकानाम जानो ७४८ नाना अर्थ विचारो मिन्त ॥ चतुरदास गुणगावत सन्त ॥ श्रीरघुनाथ नामका सागर ॥ प्रकट पदारथ नाम उजागर ७४९ ॥

इति श्रीजम्बूद्वीपेभारतखण्डेमालवदेशेअवन्तीमहाक्षेत्रेरतलामग्रामेहरिव्यासी वैष्णवमहन्तश्रीरामाजीनन्दचतुरदासविरचितेग्रन्थश्रीअमर रघुनाथकल्पद्रुमतृतीयकाण्डेपंचमोनानार्थ वर्गस्सम्पूर्णः ५ ॥

अथ व्ययवर्गप्रारम्भः ॥

(दोहा) जयजय श्रीनिम्बारक हरि भक्तनके प्रान ॥ चतुरदास वन्दन करै सन्तन के भगवान १ व्यय वर्ग वरणन करूं धरि हरिजनको ध्यान ॥ समझो सन्तमहन्त जन चतुरा करै बखान २ (दीर्घकालवाचकअव्ययोंके नाम—चौपाई) चिराय चिरस्य चिरेण चिरम् ॥ चिररात्राय चिरात् दीर्घम् ३ (वारंवार वाचक अव्ययों के नाम) शश्वत् असकृत् अभीक्ष्णम् ॥ पुनः पुनः मुहु वारंवारम् ४ (शीघ्रतावाचक के नाम—दोहा) स्राक् अंजसा द्राक्ये सपदि निर्भर जान ॥ झटिति मंक्षु अह्नाय जन चतुरदास परमान ५ (अतिशय के नाम—चौपाई) बलवत् सुष्टु किमुत अतीव ॥ अतिहि सुजान जगत में जीव ६ (बर्ज्जनेवालों के नाम) पृथक् विना अन्तरेण नाना ॥ ऋतेहिरूक जान परमाना ७ (कारणवाचकों के नाम) यत् तत् पुनि यत तत जगमाई ॥ कारण वाचक भेद बताई ८ (अपूर्णतावाचकों के नाम—छन्द) चित् चिन जान ॥ चातुर प्रमान ९ (किसी काल में)

कदाचित् मान ॥ जातु प्रमान १० (साथ वाचकों के नाम–चौपाई) साकम् सार्द्धम् सत्रा समम् ॥ सहसाथ वाचकों के सम् ११ (अनुकूलतामें–छन्द) प्राध्वम् मान ॥ अनुकूला जान १२ (व्यर्थके नाम) वृथामान ॥ मुधाजान १३ (विकल्पार्थकों के नाम–चौपाई) किमुत उताहो किम्किमु चार ॥ उत आहो विकल्प विस्तार १४ (श्लोकके पादपूर्ण बताने वालों के नाम) तुहिचस्म हवै जान ॥ श्लोकपाद पूरण पहिंचान १५ (पूजाकरने में–छन्द) सुअति मिन्ता ॥ चतुर भनिन्ता १६ (दिनके अर्थ में रात्रिके अर्थ में) दिवा दिनपोषा ॥ नक्तम् दोषा १७ (तिर्य्यक्टेढ़े के अर्थ में) साचितिर मानो ॥ तिर्थ्यक् जानो १८ (संबोधनार्थ ये हैं–चौपाई) प्याट् पाट् हे है भोः अङ्ग ॥ भज मोहन खेले वृन्दा सङ्ग १९ (समीपवाचक अव्ययों के नाम) समया निकषाहिरुक् बखान ॥ समीप वाचकनाम सुजान २० (अकस्मात् के अर्थ में) सहसा २१ (आगेके अर्थ में–छन्द) अग्रतः पुरतः ॥ पुरः उचरतः २२ (देवताओं के हव्य देने के उपयोगी–चौपाई) स्वाहा श्रौषट् वौषट् वषट् ॥ चतुर दास गावैजनझट् २३ (पितरों के हव्य देनेका उपयोगी–छन्द) स्वधा स्वधाहा ॥ उपयोगी हा २४ (अल्प के वाचक–चौपाई) किंचित् मानकुईषत् बखान ॥ अल्पवाचीका चातुर जान २५ (जन्मान्तरवाचक) जन्मान्तर वाचक यहमान ॥ प्रेत्यअमुत्रनाम पहिंचान २६ (समतावाचक) वत् वा यथा तथा इव एवम् ॥ समता वाचक चतुरा केवम् २७ (विस्मयवाचक–छन्द) अहोही

जन ॥ चतुस्के मन २८ (मनोर्त्थक) तुष्णी काम ॥ तूष्णी नाम २९ (तत्कालवाचक) सद्य सपदि मन ॥ के चतुरा जन ३० (आनन्दवाचक) समुपजोषम् ॥ दिष्यारे रम् ३१ (मध्यवाचक) अन्तरे अन्तरा ॥ अन्तरेण करा ३२ (हठार्त्थक) प्रसह्य ३३ (युक्तमें) साम्प्रतम् ॥ अस्थाने अम् ३४ (अजस्र निरन्तर वाचक) अभीक्ष्णम् ॥ शश्वत् जणम् ३५ (अभाव वा प्रतिषेध वाचक) नहि अनोन ॥ अभाव जोन ३६ (बारणशंकने में) मास्ममानो ॥ अलम् जानो ३७ (पक्षान्तरमें) चेत् यदि का ॥ पक्षान्तका ३८ (तत्त्वार्थाव्यय) अद्धाअञ्जसा॥ तत्त्वाव्ययसा ३९ (स्पष्टतामें) प्रादुआवि ॥ जगयश गावि ४० (अङ्गीकार करने में–चौपाई) रावम् परमम् ओम्सदा जन ॥ चतुरदास गावो रे हरिगुन ४१ (पर्व्वत सब ओर अर्त्थ में) परतहि सर्व्वत विष्वक् जान ॥ पर्वत अर्त्थ चतुरजन मान ४२ (विना इच्छाकी सलाह में कामम् निन्दापूर्वक अङ्गीकार करने में अस्तु विरोध के साथ कहने में ननु इष्ट पूंछने में वा इच्छा करके कहने में किंचित् निन्द्य के विषयमें–छन्द) निष्पमम् ॥ दुष्पमम् ४३ (यथायोग्यतामें) यथास्वम् ॥ यथायथम् ४४ (झूठ कहने में) मृषा मिथ्या ४५ (सत्यके अर्त्थ में) यथार्त्थ यथा तथम् ४६ निश्चयार्त्थक अव्यय एवम् तु पुन वै व ४७ अनितार्त्थ के भूत कालार्त्थके प्राक् ४८ (निश्चयमें) नूनम् अवश्यम् (वर्षवाचक) संवत् और पीछे के अर्त्थ में ४९ अर्व्वाक् अङ्गीकार में आम एवं अपने अर्त्थ में स्वयम् ५० अल्प के अर्त्थ में नीचे

महति उंचाई में उच्चैः बहुताई में प्रायः बहुते धीरे जाने में शनैः ५१ नित्य के अर्त्थ में मना बाहर के में वहिः गत कालमें स्म ५२ न देख परने में अस्तम् होनेके अर्त्थ में अस्ति ५३ कोपसे कहने में उः प्रश्न में ऊम् अनुनये सम ज्ञाने में अयि ५४ तर्क करने में हुम् रात्रि के अन्त में उषा प्रणाममें नमः ५५ फिर के अर्त्थ में अङ्ग निन्दा में दुष्टु प्रशंसामें सुष्टु ५६ सन्ध्याकालमें सायम् प्रभातकाल में प्रगे प्रातः ५७ समीपार्त्थ में निकषा पूर्व्वगत वर्षपरुका नाम परुत् ५८ त्यौरुस का नाम परारि वर्त्तमान वर्ष आंसौं का नाम ऐषम् आज इस अर्त्थ में अद्यः ५९ पूर्व्वगत दिनमें पूर्व्वेद्युः अवैया दिनमें उत्तरेद्युः ६० उससे आगे वाले में अपरेद्युः पीछे वाले में अधरेद्युः ६१ और दिनमें अन्येद्युः अन्यन्तर दिनमें अन्यन्तरेद्युः ६२ इतरदिन में इतरेद्युः उभय दोनों दिनके अर्त्थ में उभयद्युः उभयेद्युः ६३ परदिनमें परेद्य विगत्त दिनमें ह्यः आनेवाले में श्वः ६४ परसों का नाम परश्वः तिसकाल ऐसे अर्त्थ में तदा तदानीं एक समय ऐसे अर्त्थ में युगपत् एकदा ६५ सब दिन ऐसे अर्त्थ में सर्व्वदा सदा अभी वा अबहीं ऐसे कहने में एतर्हि सम्प्रति इदानीं अधुना साम्प्रतम् ६६ पूर्व्वादि दिशा देशकालमें क्रमसे यह होते हैं पूर्व्व में प्राक् उत्तर में उदक् पश्चिम में प्रत्यक् ६७ (दोहा) युग युग जीवो जगत में जौलौं जग शशि भान ॥ जगत सिंह क्षितिपालनृप धर्म्म धुरन्धर मान ६८ (सोरठा) अमरकवैंर अमरेश अमरसिंह आनन्द में ॥ नगरनामली

देश परम मनोहर मन हरण ६९ कलबल पालकृपाल श्री मोहवत गुण सागरा ॥ रटत लाड़िली लाल अष्ट पहर चौंसठ घरी ७० अव्ययवर्ग्ग विचार चतुरदास रचना रची॥भजमन श्रीगोपार जो सहाय संसारको ७१

इति श्रीजम्बूद्वीपेभारतखण्डेमालवदेशेअवन्तीमहाक्षेत्रेरतलामग्रामेवैष्णवहरिव्यासीमहन्तश्रीरामाजीचतुरदासविरचितेअथग्रन्थ श्रीरघुनाथनामकल्पद्रुमतृतीयकांडेषष्ठोऽध्यायः६ ॥ अव्ययवर्गस्सम्पूर्णः ॥

(दोहा) जय जय राधामाधव नगरसलेमाबाद ॥ श्रीजीश्री घनश्याम भज अगमाअगम अगाद १ लिंगा अनुशासन कहूं सार सार कछु छांट ॥ वस्तु लहूं जो कामकी दिन दिन मंगल ठाट२ (स्त्रीलिंगयथा—चौपाई) विद्युत् बिजुली पवँरी बीना ॥ रात्री बल्लि दिशाभूचीना॥ पृथ्वीनदीह्नी याहीको जानो ३ (अब मैं चौपाई में नाम और नामका अर्थ सम्पूर्ण बुद्धि अनुसार कहूंगा—चौपाई) अल्पमृणालनाम परमाने ॥ नाममृणाली सब युग जाने ४ आवन्त शब्द का नाम सुजान ॥ लंकानाम चतुर परमान ५ शेफालिका नाम निर्गुण्डी ॥ टीका विषमपाद यहमण्डी ६ धायटीनाम धातकी जानो ॥ पंजीका निश्शेषबखानो ७ आढ़की माशा नाम अरंड ॥ चतुरदास वरणत एरंड ८ सिध्रका नाम सिध्रका बतावे मैनानाम शारिका गावे ९ हिकानाम हुचकिका मिन्त ॥ वनकी मक्षि प्राचिका सन्त १० उलका नाम धद्धविस्तार ॥ चींटीनाम पिपीलिकसार ११ तेंदूनाम तिंदुकी मान॥ परिमाणिक कणिका जगजान १२ भंगिनाम सूनो टेढ़ा-

ई ॥ नाम सुरंग सुरंग बताई १३ सूचीनाम सुई का
मिन्त ॥ पत्तान सहि माढ़िजन सन्त १४ पिच्छागादि
सेमरहि जानो ॥ नाम वितण्डा बाजा मानो १५ नाम
काकिणी कौड़ी जान ॥ चूर्णिहि चूर्णिका पहिंचान १६
शाणीशनबस्तर परबीन ॥ दुणीकच्छुही ज्ञानी चीन १७
दरत मलेच्छ नाम जनजानो ॥ सातिदान नामहि पहिं-
चानो १८ कन्थाहै कथरी जग माई ॥ आसंदी आसनी
बताई १९ नाभिनाम ढोढ़ी दरशावे ॥ राजसभा राजा-
घर गावे २० झल्लरी हुडुकनाम दरशाई ॥ चर्चरिताल
बजावन गाई २१ पारीगजपद बांधन रस्सी ॥ होराल-
ग्न आधजग जस्सी २२ लट्वागौरैयापदजानो ॥ सि-
ध्मलाझूरेमांसहि मानो २३ लाक्षानाम लाख जग जोवे ॥
लिक्षा इण्ड जुआका होवे २४ गण्डूषा अँगुली करजा-
न ॥ गृध्रसि गठियाहै गुणवान २५ चमसी नाम प्रणी-
ता पात्र ॥ मसीनामहै काजरमात्र २६ (दोहा) स्त्री लिंग
संग्रह किया चतुरदास गुणगाय ॥ अब कान्तादी शब्द
को कविजन देहु बनाय २७ (चौपाई) बटक वटक
वटचरा जान ॥ अनूवाक वेदांग बखान २८ रल्लक पुनि
कम्बलको नाम ॥ कुडंग कहि वृक्षावलिदाम २९ पुंख
नाम वाणी का फोक ॥ चतुरदास वरण्यो मतिओक ३०
पुंख वेद नाम ओंकार ॥ समुंग सम्पुट नाम पुकार ३१
विट धूरत का नाम पुकार ॥ पट्ट पदराका नाम है ३२
घट पुनिनाम तराजूजान ॥ खट अंधहू कुआं विस्तार ३३
अबसब लिखों पुलिंगो भाई ॥ चतुरदास भज श्रीरघु-
राई ३४ कोढ़नाम पुनिकोठ प्रवीन ॥ अरघट कुआंरहट

जगचीन्ह ३५ घट्टग्राम घटघाट बखान ॥ हट्टहै हाट बजार जहान ३६ पिण्ड पौंड़ आदिकका नाम ॥ गोण्ड ढोढ़ीका नाम सुदाम ३७ पिचण्ड पेटहि नाम बखान ॥ गडूनाम गलगण्डा जान ३८ करण्ड प्यटारी नाम बखान ॥ लगुड़नाम लाठी परमान ३९ वरण्ड नाम मुँह पीराभाई ॥ किण घावहि पुनि चिह्न बताई ४० घुनका नाम घुणक पहिँचान ॥ दूतिहिमसकजन जान सुजान ४१ सीमन्त केश पुनि वेश कहावे ॥ हरित दिशा हरिया रँग गावे ४२ रोमन्थ नाम पगुराने जान ॥ उद्गीथ सामवेद परमान ४३ बुद्बुद नाम बुल्लहा बखानी ॥ कासमर्द्द पुनि रूस सुज्ञानी ४४ अर्ब्बुद दश किरोड़ के नाम ॥ कुन्द विष्णु प्यारा घनश्याम ४५ फेन नाम फेना का मिन्त ॥ स्तूपवरा आदिक है सन्त ४६ पूपनाम पूवाका देखो ॥ यूपहि नाम चतुर जन लेखो ४७ आतप नाम घामका भारी ॥ कुणपनाम मुरदाहि पुकारी ४८ नाभी क्षत्री वाचक जान ॥ क्षुर छूरा का नाम बखान ४९ केरटहै व्यवहार पदार्त्थ ॥ पूरापानी धार यथार्त्थ ५० क्षुरप्र बाणनाम जगभाई ॥ चुक्रअमलवेतहि दरशाई ५१ गोलनाम गोला गुणवान ॥ हिंगुल ईंगुर नाम बखान ५२ पुंगल देहनाम परमान ॥ वेताल भूतका नाम सुजान ५३ भल्ल ऋक्ष नामहि गुरुज्ञानी ॥ मल्लकरे कुश्ती वोसानी ५४ पुरोडाश जाउरी बखान ॥ पट्टिश पट्टिस जान सुजान ५५ कुल्माषहि कांजी जग जान ॥ रभस हर्ष चातुर गुणवान ५६ कटाह कराह नाम जगमिन्त ॥ पतद्ग्रह पीकदान जगसन्त ५७ (दोहा)

ये सबही पुंलिङ्ग हैं इति पुंलिङ्गाशेश ॥ नाम नपुंसक लिंग ये शब्द विशषट देश ५८ (चौपाई) अन्यत अन्यनाम पहिंचान ॥ ख इन्द्री आकाश बखान ५९ अरण्य नाम वनका विस्तार ॥ पर्णनाम पत्ताका यार ६० श्वभ्र नाम गड़हा पाताल ॥ हिम नामा पाला का माल ६१ उदक नाम पानीका बरने ॥ शीतनाम जूड़ेका करने ६२ उष्णनाम पुनि गर्म बखान ॥ मांसहि नाम मासु जगजान ६३ रुधिर नाम है रक्तप्रबीन ॥ मुख ये नाम मुखहिका चीन ६४ अक्षि नामहै नेत्र नवीन ॥ द्रविण जान धन धरणी चीन ६५ बलहै शक्ति सैन्यका नाम ॥ फल पुनि नाम फरह जन दाम ६६ हेमनाम सोनेका मिन्त ॥ चतुरदास गुण गावत सन्त ६७ शुल्ब नाम ताम्रहि जनगाई ॥ लोह नाम पोलाद लखाई ६८ सुख का नाम सुःख जगगावे ॥ दुख का नाम दुःख दरशावे ६९ शुभ नामहि कल्याण बखानो ॥ अशुभनाम अकल्याणप्रमानो ७० जलपुष्पहि कुइ कमलादी जन ॥ व्यञ्जन जीमन जानो रे मन ७१ अनुलेपन कुंकुम दरशाई ॥ नपुंसक लिंग चतुर गुण गाई ७२ तोटक अक्षर चरणकहावे । चोचतालकेलाजनगावे ७३ पिच्छ नाम गुच्छा गुणवन्त ॥ गृहस्थूण घर थून्ही सन्त ७४ तिरीट शिरोभूषणहि वेष्टन ॥ मर्म नाम जोड़हि जानोजन ७५ योजन चारकोस का थाना ॥ राजा सोमयज्ञौषधिपाना ॥ ये राजसूय के नामहैं ७६ वाजपेय मदिरा जहँ पीवे ॥ गद्यनाम कवि अश्लोकेवे ७७ पद्य कृतिश्लोक सबहि पहिंचान ॥ माणिक्य मणी पुर भये सुजान ७८ भाष्य

अर्थ सूत्रोंका जान ॥ सिन्दुर सेंदुर नाम बखान ७९ चीर
छीतरा कपड़ा जान ॥ चीवर मुनिवर चीर बखान ८०
पिंजर पंजर पिंजरा मान ॥ लोकायन चार्वाक्य बखान
८१ हरितालहि हरताल बखान ॥ विदल बांस डेलवा
पहिंचान ८२ स्थाल नाम थारा गुणवन्त ॥ चतुरदास
गुण गावत सन्त ८३ (दोहा) बाह्लीक बाह्लव बाह्लिक
कुंकुम आदिकनाम ॥ इती नपुंसक संग्रह चतुरा कह्यो
ललाम ८४ (चौपाई) नपुंसकहि पुंलिङ्ग प्रयन्त ॥ शब्द
रचे चातुरजन सन्त ८५ शेष कहेसे अन्न बखान ॥ अ-
र्द्धर्च आधी ऋचा सुजान ८६ पिण्याक नाम तल पिण्डी
मान। कण्टक कांट शत्रु पहिंचान ८७ मोदक नाम ल-
ड्डुवा देख ॥ तण्डत उपतापादिक पेख ८८ टंक नाम टांकी
का जान ॥ शाटक पुनि शारीका मान ८९ कर्प्पट कपड़ा
नामहि जान ॥ अर्ब्बुद दश किरोड़ परमान ९० पातक
नाम ब्रह्मकी हत्या ॥ उद्योगहि उत्सा सो सत्या ९१ च-
रक वैद्यविद्याकर ग्रन्थ ॥ तमाल तमाखू सबही पन्थ ९२
देववृक्ष भी याकोकहैं ॥ आमलक अमराफल परवीन ॥
नड नरई गड़हा जग चीन ९३ कुष्ठ कोढ़का नाम बता-
या ॥ मुंड मूड़का नामहि गाया ९४ शीधू ये मदिरा का
नाम ॥ बुस्त नाम कटहर झोंथाम ९५ क्ष्वेडित नाम वीर
की जर्ज्जन ॥ क्षेम कुशल का नाम कवीजन ९६ कुट्टिम
है पक्की गच भीत ॥ संगम नाम संयोगा नीत ९७ शत
मन तौल भेद का नाम ॥ अर्म्म आंखिका रोगहि दाम
९८ शम्बल नाम सांवलारंग ॥ अव्यय स्वरादि पातन
जंग ९९ ताण्डव निरत नाचना मिन्त ॥ कवियनाम तो

बड़ा सो सन्त १०० कन्द नाम ज़मींकन्द कहावे ॥ क-
र्पास कपास वस्त्रकोविगावे १०१ पारावार नदी अरु पार ॥
युगन्धर नाम बकौरा सार १०२ यूप यज्ञका खंभा मान ॥
प्रग्रीव झरोखा जगमें जान १०३ पात्रीव यज्ञ के पात्र
बखान ॥ यूष जूसका नाम सुजान १०४ चमस एकयोगी
जनपात्र ॥ चिक्कस यज्ञपात्र का यात्र १०५ (अर्द्धर्चादि
इति नपुंसक संग्रह वर्ग्ग–दोहा) अपत्य प्रत्यय अन्त
यह शब्द द्विचतुःषट्ट ॥ सर्व्वहि वाची जातिपुनि स्त्री पुं-
लिंग रट्ट १०६ (चौपाई) मल्लक मल्लिकाह जन बेला ॥
ऊर्म्मि नाम लहरी का चेला १०७ वराट पुनि वराटिका
कोड़ी ॥ स्वाति पंचदश लक्षत जोड़ी १०८ वर्णक नाम
नाम चन्दन ये ॥ झाटलि मोर वृक्षका वन ये १०९ मनु
से स्वायम्भू मनुजान ॥ मुखा तैज सावर्तनि मान ११०
सृपाटी तोलभेद परवीन ॥ कर्कन्धु वृक्ष बेरीका चीन
१११ यष्टिक लाठी नाम बखान ॥ शाटी शारी कपड़ा
मान ११२ कटी कमरका नाम बखान ॥ चतुरदासका कहना
मान ११३ कुटी कुटी नाम ये चीनों ॥ स्त्रीलिङ्ग पुंलिङ्ग
दोनों ११४ (इति स्त्रीपुरुषशेषसंग्रहवर्ग्गः– दोहा)
ये षष्ठी विभक्तांतका पूर्वकसेना शब्द ॥ होता स्त्री हि
नपुंसक समझि लेहु सब अब्द ११५ (चौपाई) नृ-
सैन नृसेना जानो भिन्त ॥ श्वनिशा श्वनिश निशासो
सन्त ११६ गोशालहि गोशाला जान ॥ गायोंका ये ठान
बखान ११७ इसीप्रकार और भी जानो ॥ चतुरदास की
निश्चय मानो ११८ (दोहा) तीनों लिङ्ग बखान ये खि
नपुंसक शेश ॥ चतुरदास वरणन करे सुनिहो सकल न-

१६२

शरणहूते

शरण हो ... बखानो

देश ... घु नाम

परशुराम ... तये नाम

में कीन्ह १२२ पेटी ना

ताके न १२३ बेरीके फ

है । ... ली जान १२४ ना

वर्ज ... शाडिमि दाडिममू मिन्त

यात

घ ... लिङ्गशेषवर्गः ॥

रेश ११९ (...

पात्र पात्रम्...

पुटी पुटः पु...

जानो ॥ वा...

जन चीन्ह...

बखान...

नार...

...शब्द परोपग परगामी वाच्य लिं...

कलुष ... धहीं सो नहिं वरणीरंग १२६ अम...

कोष ... परिपूरण परवीन ॥ चतुरदास रचन...

रची स... नोहर कीन १२७ ॥

इति ... रामांगजचतुरदासविरचिते ग्रन्थश्रीरघुनाथनामकल्पद्रुम

तृतीयकाण्डेलिंगानुशासनवर्गोनामसप्तमोऽध्यायः ७ ॥

(श्रीगुरुपरंपरा—कवित्त) हंसवंश सनकादि पाटहू पै नारदहि नारदसे निम्बारक वेद के प्रकासी हैं । श्री निवास विश्वपाल पुरुषोत्तम श्रीविलास ताहि स्वरूप रूप माधव अनासी हैं ॥ पद्म श्याम पाट बलभद्र के गोपाल कृपा देवहू के सुन्दर भट्ट आदि के उपासी हैं । पद्मनाभ पाटपै उपेन्द्र चन्द्र वावनभट्ट कृष्णभट्ट पद्माकर श्रवणवेदभ्यासी हैं ॥ भूरिभट्ट माधव श्रीश्याम ते गोपाल भट्ट ताते बलभद्रभट्ट भट्टगोपीनाथ हैं । केशव ते गांगलभट्ट काशमिरी केशौ भट्ट श्रीभट हरिव्यासदेव परशुराम साथहैं ॥ तेहिते हरिवंश देव नारायण श्रीगोविंदशरण श्रीगोविन्दचन्द वेदहू के पाथहैं । गोविन्द